हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

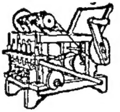

फोन नं० : 3574

बीकानेर : सर्वोदय-स्मारिका

(सर्व सेवा संघ अधिवेशन, बीकानेर
दिनांक 25–27 अगस्त, 88 के अवसर पर)

□

सम्पादक मण्डल :

मूलचन्द पारीक
(संयोजक)
प्रो० अमरनाथ कश्यप
रामदयाल खण्डेलवाल
रामेश्वर विद्यार्थी

□

प्रकाशक :

जिला सर्वोदय मण्डल
सर्वोदय सदन, कोटगेट,
बीकानेर-334001

सर्व सेवा संघ अधिवेशन : स्वागत

(संयोजन समिति)

• श्री भवरलाल कोठारी	स्वागताध्यक्ष
• ,, शिवभगवान बोहरा	सदस्य
• ,, सोहनलाल मोदी	,,
• ,, मूलचन्द पारीक	,,
• ,, सत्यनारायण पारीक	,,
• ,, वासुदेव विजयवर्गीय	,,
• ,, विपिनचन्द्र गोईल	,,
• ,, शम्भूनाथ खत्री	,,
• ,, महावीरप्रसाद शर्मा	,,
• ,, वी. के. जैन	,,
• ,, धर्मचन्द जैन	,,
• ,, इन्दुभूषण गोईल	,,
• ,, एस. डी. जोशी	,,
• ,, अमरनाथ कश्यप	,,
• ,, रामदयाल खण्डेलवाल	स्वागत मन्त्री

(आवरण पृष्ठ : बीकानेर के पल्लू गांव में खुदाई में प्राप्त वीणा वादिनी देवी सरस्वती का चित्र है।)

मुद्रक : मयूर प्रिन्टर्स, जयपुर

सहयोग राशि : पचास रुपए

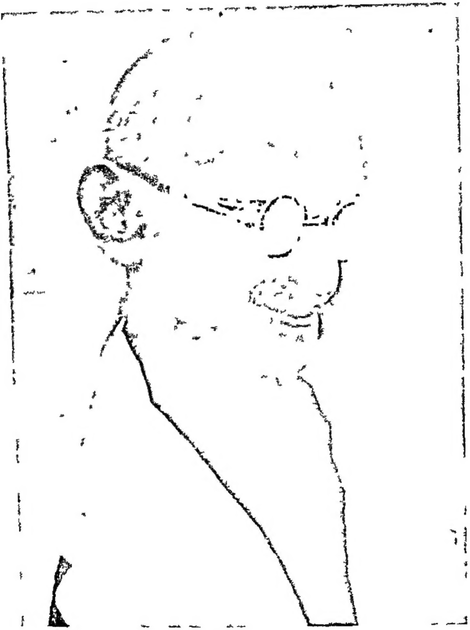

जब राजसत्ता जनता के हाथ में आ जाती है, तब प्रजा की आजादी मे होने वाले हस्तक्षेप की मात्रा कम-से कम हो जाती है। दूसरे शब्दों मे, जो राष्ट्र अपना काम राज्य के हस्तक्षेप के बिना ही शांतिपूर्वक और प्रभावपूर्ण ढंग से कर दिखाता है, उसे ही सच्चे अर्थों मे लोकतान्त्रिक कहा जा सकता है। जहां ऐसी स्थिति न हो, वहां सरकार का बाहरी रूप लोकतन्त्रात्मक भले ही हो, वह नाम के लिए ही लोकतन्त्रात्मक है।

—गांधीजी

मेरी ये बातें सुनकर अनेक लोग पूछते हैं कि आपकी ये बातें कभी सही होने वाली हैं ? मेरा कहना है कि आप करेंगे, तब न होगा ? किये बिना तो कुछ होगा नहीं। यह कोई पचाग मे लिखी हुई ज्योतिष-शास्त्र की बातें नहीं है कि अमुक दिन शुक्र और गुरु एक जगह होंगे, अत अमुक काम होगा या नहीं। ये तो करने की बातें हैं। जब करेंगे, तब होगा और जितना समय आप लगायेंगे उतनी देर लगेगी।

—विनोबा

मैंने हिंसक आन्दोलन भी कि है। उसकी सभी विद्या और दर्शन, जानता हूँ, लेकिन सोच-समझ मैंने हिंसा का मार्ग छोड़ा है हि सामान्य मनुष्य की शक्ति नहीं। शांतिमय तरीके के द्वारा परिवर्तन अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं उसके सिवा जनता का राज्य असम है। आज की परिस्थिति को देख दिल मे आग धधकती है लेकिन के रास्ते कोई काम सधना नहीं है

—जयप्रकाश नार

सम्पादकीय

सर्व सेवा संघ अधिवेशन के आयोजन और राष्ट्रीय ग्राम-स्वराज यात्राओं के शुभागमन के इस अवसर पर यह 'स्मारिका' आपके हाथो में प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता है। जिला सर्वोदय मंडल के तत्वावधान मे अधिवेशन की पूर्व-तैयारी हेतु पिछले दिनो स्थानीय प्रमुख कार्यकर्त्ताओ की जब बैठक हुई, तो उसमें अधिवेशन के अवसर पर स्मारिका निकालने का निश्चय भी हुआ। इसके लिए 'सपादन सलाहकार समिति' का गठन किया गया। कहना न होगा कि इतने अल्प समय में स्मारिका हेतु अधिकारी विद्वानों से रचनायें आमंत्रित करना काफी कठिन कार्य था लेकिन हमारे अनुरोध पर जिन महानुभावो ने उदारतापूर्वक अपने लेख, कविता आदि भिजवाये हैं, हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।

इस स्मारिका में 'चिंतन और विचार' खण्ड के अंतर्गत मौजूदा समस्याओं के कारण और निवारण के बारे सर्वोदय दृष्टि से प्रकाश डाला गया है। इसी प्रकार 'इतिहास और संस्कृति' खंड मे राव बीका की नगरी के पांच सौ साल के उतार-चढावों की झलक है, वही बीकानेर की सांस्कृतिक धरोहर की जानकारी दी गई है। तब यह 'जांगल'प्रदेश तिहरी गुलामी को जकड़ में था। राजाशाही के खिलाफ प्रजा–परिषद के नेतृत्व में यहां की जनता ने जो लम्बा संघर्ष किया, उस पर रोशनी डाली गई है। बीकानेर के दर्शनीय स्थानों का चित्रमय इतिवृत भी दिया गया है। 'बीकानेर में सर्वोदय आन्दोलन' खंड के अतर्गत भूदान-ग्रामदान तथा अन्य रचनात्मक प्रवृतियों की जानकारी दिए जाने का प्रयास है। बीकानेर डिवीजन के ही गंगानगर मे पूज्य विनोबाजी का वर्ष १६६० मे भूदान यात्रा के सिलसिले में अचानक आगमन हुआ था। इस यात्रा मे बाबा के साथ श्री छीतरमलजी गोयल की जो बातचीत हुई, वह विशेप पठनीय है। इस खड मे जिले की जिन रचनात्मक सस्थाओ से हमे उनके प्रगति विवरण प्राप्त हुए वह दिए गये हैं।

मैं संपादक मंडल के भी सभी सदस्यों का कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग और प्रयत्न से विज्ञापन जुट सके, और लेख आदि एकत्रित किये जा सके। इनमे भी सबमे अधिक परिश्रम श्री अमरनाथ कश्यप, श्री रामदयाल खडेलवाल तथा श्री रामेश्वर विद्यार्थी का रहा है। इस अवसर पर मैं प्रेस के सब मित्रो का भी आभारी हूँ जिन के परिश्रम के परिणाम स्वरूप ही यह स्मारिका इस रूप मे प्रकाशित हो सकी। इस अल्प समय मे जैसी भी यह स्मारिका बनी है, आपके सामने है। इसे अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके सुझाव आमंत्रित है।

बीकानेर :
दिनाक : २४-८-८८

—मूलचन्द पारीक

प्रकाशकीय

जिला सर्वोदय मडल गौरव का अनुभव कर रहा है कि सर्व सेवा सघ के अर्द्धवार्षिक अधिवेशन के लिए बीकानेर का चयन किया गया। यह भी सुखद सयोग ही है कि दोनो राष्ट्रीय ग्राम स्वराज्य यात्राए भी इस अवसर पर यहा पहुच रही हैं। देश भर से प्रमुख सर्वोदय सेवक यहा एक साथ बैठकर आदोलन के सिहावलोकन तथा मौजूदा राष्ट्रीय परिस्थिति मे अगले कदम के बारे मे विचार विमर्श करेंगे। कहना न होगा कि देश का जन जीवन आज महगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार तथा हिसक घटनाओ से ग्रस्त है। अमावस्या की इस घोर अन्धेरी रात्रि मे गाधी-विनोबा-जयप्रकाश द्वारा दिखाया गया मार्ग ही हमारे लिए दीपस्तम्भवत् रहेगा। उम्मीद है कि बीकानेर-अधिवेशन मे विचार मथन होकर देश के सामने स्पष्ट और सुनियोजित कार्यक्रम आ सकेगा।

देश के भूदान-ग्रामदान आन्दोलन मे बीकानेर जिले की विशेष स्थिति रही है। देश मे सबसे बडा भूदान यहा मिला और जिला ग्रामदान की घोषणा भी हुई। लेकिन फॉलोअप के अभाव मे ग्रामस्वराज्य की ओर बढना सभव नही हो सका। सतोष का विषय है कि जिले मे खादी-ग्रामोद्योग, गोसेवा तथा अन्य रचनात्मक सस्थाए उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। इस जिले का ऊनी खादी उत्पादन की दृष्टि से देश भर मे विशिष्ट स्थान है। इसी प्रकार अकाल की परिस्थिति मे राजस्थान गो सेवा सघ ने विशेष कार्य किया है। हमे विश्वास है कि सघ-अधिवेशन जिले के रचनात्मक काम को नई दृष्टि से करने हेतु प्रेरति कर सकेगा।

अधिवेशन की व्यवस्था के लिए जिला सर्वोदय मडल ने स्वागत समिति का गठन किया। समिति द्वारा इस अवसर पर 'स्मारिका' प्रकाशन का निश्चय हुआ। इस अल्प अवधि मे स्मारिका जैसी बन सकी, वह आपके हाथ हाथ में है। स्मारिका प्रकाशन के इस कार्य में सपादन सलाहकार समिति तथा सपादक मडल का विशेष सहयोग रहा है। जिले की खादी ग्रामोद्योग सस्थाओ तथा नगर के अन्य व्यापारिक प्रतिष्ठानो ने उदारतापूर्वक हमे विज्ञापन सहायता उपलब्ध कराई है। इन सबके प्रति मडल आभारी है। जिन महानुभावों ने अपनी बहुमूल्य रचनाएं भेजकर स्मारिका के महत्व को बढाया है, हम उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

रामदयाल खंडेलवाल
मन्त्री
जिला सर्वोदय मडल, बीकानेर

श्रद्धेय गोकुल भाई

संत तुम्हारे पद चिन्हों को, राजस्थान नमन करता ।
हर मजदूर गरीब यहां का और, किसान नमन करता ।।
सच पूछो तो गर्वोन्नत है तुम से धरती और गगन ।।

4424

चौडा रास्ता,
जयपुर-302003

बीकानेर जिले का महत्वपूर्ण योगदान

सन्देश

अगस्त के तीसरे सप्ताह मे बीकानेर मे सर्व सेवा सध का अखिल भारतीय अधिवेशन हो रहा है। सर्व सेवा सध की ओर से जन जागरण हेतु आयोजित दोनों 'ग्राम-स्वराज्य" यात्राए भी इस अवसर पर बीकानेर पहु च रही हैं। एक यात्रा पूरब में उडीसा से पश्चिम मे गुजरात तक तथा दूसरी पजाब व कश्मीर से कन्या-कुमारी तक भारत के अधिकाश राज्यों में जायेंगी।

सर्वोदय की इस त्रिवेणी" का सगम सयोग से बीकानेर मे हो रहा है। इस अवसर पर जिला सर्वोदय मडल बीकानेर, की ओर से एक स्मारिका प्रकाशित करने का निश्चय प्रासगिक है। सर्वोदय आंदोलन मे बीकानेर जिले का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिले की अब तक की गतिविधियों तथा राष्ट्र के सामने आज जो ज्वलत प्रश्न हैं उन पर अधिकारी व्यक्तियों की राय इस स्मारिका के जरिये एक जगह उपलब्ध हो सकेगी। अत सर्वोदय आंदोलन को बीकानेर जिले मे तथा राजस्थान में आगे बढाने में स्मारिका मददगार होगी। जिला सर्वोदय मण्डल के इस प्रयत्न की मैं सफलता चाहता हू।

—सिद्धराज ढड्ढा

ठाकुरदास बंग

ग्राम-स्वराज्य यात्रा
प्रवास : कन्नौज (उ० प्र०)
3 अगस्त, 88

सन्देश

'बीकानेर : सर्वोदय स्मारिका' प्रकाशित करने जा रहे हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। सर्वोदय की प्रवृत्तियों में बीकानेर काफी आगे रहा है। सर्वोदय आज की वैश्विक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। पूंजीवाद, साम्यवाद एवं कल्याणकारी राज्य के दिन अब लद चुके। दुनिया ने दीर्घकाल से उसके प्रयोग देखे हैं और दुनिया के दुःख उनके द्वारा नहीं मिटे हैं।

आशा है, बीकानेर का सर्व सेवा संघ अधिवेशन समस्याओं के निराकरण की दिशा खोजने में और इस दृष्टि से सर्वोदय को पेश करने में दीप स्तंभ का कार्य करेगा।

आपका :

—ठाकुरदास बंग

R R Diwakar

Bangalore
25 7 1988

Message

I welcome most heartfully the Trivenisangam in Bikaner A Souvenir on such an occasion is a must

The country is passing through difficult days ane democracy itself seems to be in danger

We who are the equal citizens of this great country must be aware that every one of us is responsible for the all round violent atmosphere which is prevailing

This is the time when we ought to be alert and do everything to restore a climate of peace so that we can solve our problems without bitterness and bloodshed

Sincerely Yours
R R DIWAKAR

लक्ष्मीदास
अध्यक्ष
खादी और ग्रामोद्योग आयोग

ग्रामोदय, इर्ला रोड
विले पार्ले (पश्चिम)
बम्बई–400056

सन्देश

सर्व सेवा संघ के अधिवेशन एवं राष्ट्रीय जन जागरण यात्राओं के त्रिवेणी संगम के अवसर पर 'बीकानेर सर्वोदय स्मारिका' का प्रकाशन एक उत्तम विचार और समीचीन कदम इस माने में है कि उक्त स्मारिका में 'बीकानेर दर्शन' के साथ ही साथ राष्ट्रीय एवं राज्यीय स्तर के प्रासंगिक मुद्दों पर जाने-माने राष्ट्रीय एवं स्थानीय चिन्तकों तथा लेखकों की रचनाओं को स्थान मिलेगा और साथ ही क्षेत्र में काम करने वाली रचनात्मक संस्थाओं का परिचय भी होगा।

मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

—लक्ष्मीदास

पूर्णचन्द्र जैन
अध्यक्ष
राजस्थान गांधी स्मारक निधि

टुकलिया भवन,
कुन्दीगर भैरू का रास्ता,
जयपुर–302003

सन्देश

सर्व सेवा संघ की कार्यकारिणी कमेटी की बैठक तथा संघ अधिवेशन के अलावा, ग्राम-स्वराज्य जन-जागरण हेतु चल रही दो राष्ट्रीय यात्राओं के पड़ाव, भी बीकानेर में दिनांक २४ से २७ अगस्त के बीच महत्व के कार्यक्रम रहेंगे। स्वागत-समिति इस अवसर पर बीकानेर-दर्शन और क्षेत्र की प्रवृत्तियों की परिचायक सामयिक 'स्मारिका' प्रकाशित कर रही है। यह जानकर खुशी है।

'स्मारिका' में राष्ट्र, राजस्थान प्रदेश, क्षेत्र की तथा (जागतिक भी!) समस्याओं, मुद्दों पर लेख रहें, यह अच्छा है। परिस्थिति-परिवर्तन और समस्या-निवारण की दृष्टि से प्रत्यक्ष कार्यक्रम की झलक भी स्मारिका से मिलनी चाहिए। स्मारक, स्मारिका उद्धारक, तारक न हो, जन-शक्ति को सक्रिय न करे, तो वह 'मरसिया गाथा' मात्र होगा।

साथियों को प्रणाम

—पूर्णचन्द्र जैन

दौलतमल भंडारी
अध्यक्ष
राजस्थान गो सेवा संघ

2, म्यूजियम रोड,
जयपुर-302004

सन्देश

बहुत खुशी हुई कि आगामी २५ अगस्त से २७ अगस्त १६८८ तक सर्व सेवा संघ का अधिवेशन बीकानेर में हो रहा है। महात्मा गांधी के बताये हुए मार्ग को छोड़ कर देश दूसरी दिशा में जा रहा है। इसी का नतीजा है कि देश में गरीबी दिन ब-दिन बढ़ती जा रही है। पर देश तरक्की कर रहा है इसका जोर-शोर से प्रदर्शन हो रहा है। देश के बुद्धिजीवियों का यह कर्तव्य है कि जनता को इस बात से अवगत करायें और राज्य को सही रास्ते पर चलने के लिये बाध्य करें।

सर्व सेवा संघ ऐसी संस्था है, जो इस काम को करती आ रही है। इससे जनता को प्रेरणा तो मिलती है लेकिन फिर भी गांधीजी के बताये हुए मार्ग पर चलना दुष्कर प्रतीत होता है। अब समय आ गया है कि जो कुछ अड़चनें हमें इस मार्ग पर चलने में, बाधा के रूप में सामने आती हैं उनको हटा दें।

मुझे पूरी आशा है कि सर्व सेवा संघ का बीकानेर अधिवेशन इस तरफ व्यापक काम करेगा।

—दौलतमल भंडारी

बालविजय
संयोजक
खादी-मिशन

पवनार-वर्धा (महाराष्ट्र)
कैम्प-बीकानेर

बीकानेर जिला सर्वोदय जिला बनाने का प्रयत्न करें

सर्वोदय मंगल तीर्थ है। उसमें व्यक्तिगत तथा सामूहिक चित्त शुद्धि की साधना की प्रेरणा मिलती है। विभेद में अभेद देखने की आध्यात्मिक वृत्ति विकसित होती है। और कारुण्य दृष्टि से भूतमात्र की व्यापक सेवा करने का अवसर मिलता है। इन तीन तत्वों के आधार पर बीकानेर जिला सर्वोदय-जिला (गांधी-जिला) बनाने का प्रयत्न यहां के नागरिक, समाज-सेवक और युवक करेंगे ऐसी आशा है। इस कार्य में सर्वोदय-स्मारिका अवश्य प्रेरक बनगी। बीकानेर निवासियों के प्रयास के लिये

—बालविजय की
शुभकामना

यशपाल मित्तल
अध्यक्ष
सर्व सेवा संघ

ग्राम स्वराज्य यात्रा
प्रवास · पट्टी कल्याण
17 अगस्त, 88

स्मारिका लोकसेवकों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगी

आदरणीय मोदी जी,

आपका 13.7.88 का लिखा पत्र बहुत दिनों के बाद पदयात्रा में मिला। मुझे यह जानकर आनन्द हुआ कि बीकानेर में संघ अधिवेशन के अवसर पर सर्वोदय-स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। स्वराज्य के 40 वर्ष पूरे हो रहे हैं और इक्कीसवीं शताब्दी में जाने की बात हो रही है। इस अवधि में देश निरन्तर अधोपतन की ओर अग्रसर हो रहा है। गरीबी, बेकारी और भुखमरी के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का भी ह्रास चरम मात्रा पर है। गांधीजी का नाम लेते हुए सरकार की नीतियां बिल्कुल विपरीत दिशा में हैं और प्राथमिकतायें भोगवृत्ति को बढ़ाने की ओर। ऐसे समय में सर्वोदय सेवकों के सामने जन-जन तक जाकर लोक शक्ति को जाग्रत करना और बापू के ग्राम-स्वराज्य के विचार को साकार करने के लिए तैयार करने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है। उसी दृष्टि से सर्व सेवा संघ ने पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण राष्ट्रीय ग्राम स्वराज्य यात्राओं का आयोजन किया है। यह यात्रायें भी अधिवेशन के समय बीकानेर पहुंच रही हैं। उससे अधिवेशन की चर्चाओं को और मदद मिलेगी। ऐसे समय में आपकी स्मारिका भी सभी लोक सेवकों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

—यशपाल मित्तल

सुशीला नैयर
अध्यक्षा
अ० भा० नशाबंदी परिषद

सेवाग्राम (महाराष्ट्र)
13-8-88

सर्वोदय सेवकों की जवाबदारी बढ़ जाती है

सर्व सेवा संघ का अधिवेशन 25 से 27 अगस्त तक बीकानेर मे करने जा रहे हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर "बीकानेर : सर्वोदय स्मारिका" का प्रकाशन भी करने जा रहे हैं। स्मारिका के लिए मैं अपनी शुभकामनाएं भेजती हूँ।

आज के युग में जहां चारो तरफ हिंसा, मारा-मारी, स्वार्थ और आपा-धापी का वातावरण देखने को मिलता है, सर्वोदय सेवको की जवाबदारी बहुत बढ जाती है। जिस देश मे महात्मा गाधी और विनोबाजी जैसे सतो ने रास्ता दिखाया और मानव कितना ऊचा उठ सकता है, इसका प्रत्यक्ष स्वरूप दुनिया देख सकी, उस देश को आज की अधोगति से ऊपर कैसे लाना, यह विचार महत्व का है और अत्यन्त आवश्यक भी है। मैं आशा रखती हूँ कि सर्वोदय सम्मेलन मे इस बारे में आवश्यक विचार विमर्श होगा और कुछ ऐसा ठोस कार्यक्रम बनाया जायेगा जिससे हमारी स्वतन्त्रता और हमने जिन मूल्यो के आधार पर स्वतन्त्रता प्राप्त की थी, उनकी रक्षा हो सके। सब भाई-बहनो को मेरा नमस्कार और शुभ कामना।

—सुशीला नैयर

सोमदत्त

खादी ग्राश्रम
पानीपत (हरियाणा)

बीकानेर में खादी का व्यापक काम

सर्व सेवा सघ के सघ ग्रधिवेशन के ग्रवसर पर "बीकानेर : सर्वोदय-स्मारिका" का प्रकाशन किया गया है। सामान्यत. ऐसे ग्रवसरो पर स्मारिका निकालने का रिवाज चल पडा है। पर बीकानेर स्मारिका इस मामले मे कुछ ग्रलग दिखती है कि इसमें बीकानेर के विषय मे जानकारी तथा सर्वोदय के कार्यक्रम के विभिन्न पहलुग्रो पर प्रकाश डाला गया है।

बीकानेर मे खादी का व्यापक काम हो रहा है। शहर मे भी ग्रौर ग्रासपास के देहात मे भी। खादी काम से हजारों लोगो को रोजगार मिल रहा है। बहुत बडे पैमाने पर। इस काम का महत्व केवल इस बात से नही है कि इससे जरूरतमन्द को काम मिलता है ग्रपितु इसका महत्व इस बात मे विशेष मानना चाहिये कि इससे शुष्क, नीरस तथा ग्रसहाय से बने ग्राम्य जीवन मे जीवन का सचार भी है।

खादी काम के सचालक इस पहलू को हमेशा ध्यान मे रखेंगे यह मेरा निवेदन है।

—सोमदत्त

1
विचार और दर्शन

हम किसी भी देश विशेष के अभिमानी नही । किसी भी धर्म विशेष के आग्रही नहीं । किसी भी सम्प्रदाय में या जाति-विशेष में बद्ध नहीं ।

विश्व में उपलब्ध सद्‌विचारों के उद्यान मे विहार करना यह हमारा स्वाध्याय ।

सद्‌विचारों को आत्मसात करना यह हमारा धर्म ।

विविध विशेषताओं में सामंजस्य प्रस्थापित करना, विश्व-वृत्ति का विकास करना, यह हमारी वैचारिक साधना ।

—विनोबा

चिन्तन और विचार

१ : आखिरी वसीयत	महात्मा गांधी
३ : लोकशक्ति जागरण जरूरी	विनोबा
६ . सच्चे स्वराज्य के लिए सम्पूर्ण-क्रांति	जयप्रकाश नारायण
१० : आज की चुनौतियां और उनका मुकाबला	श्री सिद्धराज ढड्ढा
१६ . स्वराज्य को गगा भूमि पर कैसे लावे ?	श्री राधाकृष्ण बजाज
१६ शराबबन्दी के लिए नई रणनीति	श्री त्रिलोकचन्द जैन
२३ : गांधीनिष्ठ खादी की ओर मुड़ें	श्री जवाहिरलाल जैन
२८ : अपनो के प्रति (कविता)	श्री रामदयाल खण्डेलवाल
२६ : राष्ट्रीय समस्याओं का विकल्प	श्री बद्रीप्रसाद स्वामी
३१ . भूल सुधारने का समय आ गया है	श्री सोहनलाल मोदी
३४ आज की परिस्थिति में कार्यक्रम क्या हो	श्री चिरजीचन्द चौधरी
३७ . राजनीति और लोकनीति	श्री भगवानदास माहेश्वरी
३६ : प्रेम, करुणा, सत्य का अर्चन करो (कविता)	श्री नित्यानन्द शर्मा
४१ : वर्ग-सगठन . अधिकार और दायित्व	श्री पूर्णचन्द्र जैन
४५ : राष्ट्रीय परिस्थिति और सर्वोदय आंदोलन	श्री त्रिलोकचन्द जैन
५० युद्ध वर्जन की आवश्यकता	श्री विपिनचन्द्र
५४ . शांति-सेना का औचित्य	श्री सवाईसिंह
५६ : ग्राम-स्वराज्य यात्रा, क्या और क्यों ?	श्री ठाकुरदास बग
५८ : लेखक परिचय	—
६० : सर्व सेवा सघ परिचय	—

आखिरी वसीयत

निर्वाण से ठीक एक दिन पूर्व, यानि २९ जनवरी, १९४८ को पूज्य बापू ने अपनी 'आखिरी वसीयत' लिखी थी। इस वसीयत में उन्होंने कांग्रेस के भावी स्वरूप लोक सेवकों के कर्त्तव्य, लोकशाही की परिकल्पना और विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं की मान्यता सम्बन्धी दृष्टि अंकित कर अपने सपनों के स्वराज्य का मानचित्र बना दिया था। यद्यपि बापू की वसीयत अभी तक अमल की राह देख रही है, तथापि उसकी प्रासंगिकता आज भी यथावत है। प्रस्तुत है, "आखिरी वसीयत" का अनूदित भाष्य।—स०

"देशका बँटवारा होते हुए भी, राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा तैयार किये गये साधनो के जरिए, हिन्दुस्तान को आजादी मिलनेके कारण मौजूदा स्वरूपवाली कांग्रेस का काम अब खत्म हुआ। यानी प्रचारके वाहन और धारासभा की प्रवृत्ति चलानेवाले तंत्रके नाते उसकी उपयोगिता अब समाप्त हो गयी है। शहरों और कस्बोसे भिन्न उसके सात लाख गांवो की दृष्टि से हिन्दुस्तानको सामाजिक, नैतिक और आर्थिक आजादी हासिल करना अभी बाकी है। लोकशाही के ध्येय की तरफ हिन्दुस्तान की प्रगतिके दरमियान फौजी सत्तापर मुल्की सत्ताको प्रधानता देनेकी लड़ाई अनिवार्य है। कांग्रेसको हमें राजनीतिक पार्टियो और साम्प्रदायिक संस्थाओंके साथ की गंदी होड़से बचाना चाहिए। इन और ऐसे ही दूसरे कारणो से अखिल भारत कांग्रेस कमेटी नीचे दिये हुए नियमोके मुताबिक अपकी मौजूदा संस्था को तोड़ने और 'लोक सेवक संघ' के रूपमे प्रकट होनेका निश्चय करे। जरूरतके मुताबिक इन नियमो मे फेरफार करने का इस संघ को अधिकार रहेगा।

'गांववाले या गांववालों जैसी मनोवृत्तिवाले पांच बालिग मर्दों या औरतोकी बनी हुई हरएक पंचायत एक इकाई बनेगी।

"पास-पासकी ऐसी हर दो पंचायतोंको, उन्हींमेसे चुने हुए नेताकी रहनुमाईमे एक काम करनेवाली पार्टी बनेगी।

"जब ऐसी १०० पंचायतें बन जायें, तब पहले दर्जेके पचास नेता अपनेमे से दूसरे दर्जेका एक नेता चुनें और इस तरह पहले दर्जेके नेता दूसरे दर्जेके नेताके तत्त्वावधानमे काम करें। दो सौ पंचायतो के ऐसे जोड़ कायम करना तब तक जारी रखा जाय, जब तक कि वे पूरे हिन्दुस्तान को न ढंक लें। बादमे कायम की गयी पंचायतो का हरएक समूह पहलेकी तरह दूसरे दर्जे का नेता चुनता जाय। दूसरे दर्जे के नेता सारे हिन्दुस्तानके लिए सम्मिलित रीतिसे काम करें और अपने अपने प्रदेशो मे अलग अलग काम करें। जब जरूरत महसूस हो तब दूसरे दर्जेके नेता अपने मे से एक मुखिया चुनें, जो चुननेवाले चाहे तब तक सब समूहोको व्यवस्थित करके उनकी रहनुमाई करें।

"प्रान्तो या जिलोकी अतिम रचना अभी तय न होनेसे सेवकोके इस समूहको प्रान्तीय या जिला समितियोमे बाटनेकी कोशिश नही की गयी, और किसी भी वक्त बनाये हुए ऐसे समूहको सारे हिन्दुस्तानमे काम करने का अधिकार रहेगा। सेवकोके इस समुदायको अधिकार या सत्ता अपने उन स्वामियोसे यानि सारे हिन्दुस्तानकी प्रजासे मिलती है, जिसकी उन्होने अपनी इच्छासे और होशियारीसे सेवा की।

१ हरेक सेवक अपने हाथो कते हुए सूतकी या चर्खा सघ द्वारा प्रमाणित खादी हमेशा पहननेवाला होना चाहिए। अगर वह हिन्दू है तो उसे अपनेमेसे और अपने परिवारमे से हर किस्मकी छुआछूत दूर करनी चाहिए। और जातियो के बीच एकताके, सब धर्मोके प्रति समभावके, और जाति धर्म या स्त्री-पुरुषके किसी भेदभावके बिना सबके लिए समान अवसर और दर्जे के आदर्श विश्वास रखनेवाला होना चाहिए।

२ अपने कर्म क्षेत्रमे उसे हरेक गाँववालेके निजी ससर्ग मे रहना चाहिए।

३. गाँववालोमेसे वह कार्यकर्ता चुनेगा और उन्हे तालीम देगा। इन सबका वह रजिस्टर रखेगा।

४. वह अपने रोजानाके कामका लेखा रखेगा।

५ वह गावोमे इस तरह सगठित करेगा कि वे अपनी खेती और गृह उद्योगो द्वारा स्वयं-पूर्ण और स्वावलम्बी बनें।

६ गाँववालोका वह सफाई और तन्दुरुस्तीकी तालीम देगा और उनकी बीमारी और रोगोको रोकनेके लिए सारे उपाय काममे लायेगा।

७ हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की नीति के मुताबिक नयी तालीमके आधारपर वह गांववालोकी पैदा होनेसे मरनेतक सारी शिक्षा का प्रबन्ध करेगा।

८ जिनके नाम मतदाताओकी सरकारी सूचीमे न आ पाये हो, उनके नाम वह उसमे दर्ज करायेगा।

९ जिन्होने मत देनेके अधिकार के लिए जरूरी योग्यता अभी हासिल न की हो, उन्हे उसे हासिल करने के लिए वह प्रोत्साहन देगा।

१०. ऊपर बताये हुए और समय समयपर बढाये हुए मकसद पूरे करनेके लिए योग्य फर्ज अदा करने की दृष्टिसे सघके द्वारा तैयार किये गये नियमो के मुताबिक वह खुद तालीम लेगा और योग्य बनेगा।

सघ नीचेकी स्वाधीन सस्थाओ को मान्यता देगा

(१) अखिल भारत चरखा-सघ, (२) अखिल भारत ग्रामोद्योग सघ, (३) हिन्दुस्तानी तालीमी सघ, (४) हरिजन सेवक सघ, (५) गोसेवा सघ,

"सघ अपना मकसद पूरा करने के लिए गाँववालोसे और दूसरो से चदा लेगा। गरीब लोगो का पैसा इकट्ठा करनेपर खास जोर दिया जायगा।" दि० २९-१-४८

इसीलिए हम दण्ड-शक्ति से भिन्न जन-शक्ति निर्माण करना चाहते हैं और यह निर्माण करनी ही होगी। यह जन-शक्ति दण्ड-शक्ति की विरोधी है ऐसा मैं नहीं कहता। वह हिंसा की विरोधी है,लेकिन दण्ड-शक्ति से भिन्न है।

लोक-शक्ति जागरण जरूरी

☐ संत विनोबा

हमे स्वतन्त्र लोक शक्ति' का निर्माण करना चाहिए-ऐसा करने से मेरा मतलब यह है कि हिंसा शक्ति की विरोधी और दण्ड-शक्ति से भिन्न ऐसी लोक-शक्ति हमे प्रकट करनी चाहिए। हमने आज की अपनी सरकार के हाथ मे दण्ड-शक्ति सौंप दी है। उसमे हिंसा का एक अंश जरूर है, फिर भी हम उसे हिंसा' कहना नही चाहते। उसका एक अलग ही वर्ग करना चाहिए, क्योकि वह शक्ति उसके हाथ मे सारे समुदाय ने सौंपी है, इसलिए वह निरी हिंसा शक्ति न होकर दण्ड-शक्ति है। उस दण्ड-शक्ति का भी उपयोग करने का मौका न आये, ऐसी परिस्थिति देश मे निर्माण करना हमारा काम है। अगर हम ऐसा करें, तो कहा जायगा कि हमने स्वधर्म पहचान कर उसपर अमल करना जाना। अगर हम ऐसा न कर दण्ड शक्ति के सहारे ही जन-सेवा हो सकने का लोभ रखें, तो जिस विशेष कार्य की हमसे अपेक्षा की जा रही है, वह पूरी न होगी। समव है कि हम भाररूप भी सिद्ध हो।

दण्ड शक्ति के आधार पर सेवा के कार्य हो सकते हैं और वैसा करने के लिए ही हमने राज्य-शासन चाहा और हाथ मे भी लिया है। जब तक समाज को वैसी जरूरत है, उस शासन की जिम्मेदारी भी हम छोडना नही चाहते। दया या सेवा तो उससे जरूर होगी, पर वैसी सेवा न होगी, जिससे दण्ड शक्ति का उपयोग ही न करने की स्थिति निर्माण हो।

अगर हम उस दया का काम करें, जो निष्ठुरता के राज्य मे प्रजा के नाते रहती और निर्दयता की हुकूमत मे चलती है, तो कहना होगा कि हमने अपना असली काम नहीं किया। इस तरह जो काम दया के या रचनात्मक भी दीख पड़ते हैं, उन्हे हम दया या रचना के लोभ से व्यापक दृष्टि के बिना ही उठा लें, तो कुछ तो सेवा हमसे बनेगी, पर वह सेवा न बनेगी, जिसकी जिम्मेदारी हम पर है और जिसे हमने और दुनियां ने स्वधर्म माना है।

प्रेम की शक्ति

अगर मैं यही रटन रटूँ कि कानून के बिना यह काम न होगा, कानून बनना ही चाहिए, तो मैं स्वधर्म हीन सिद्ध होऊँगा। मेरा वह धर्म नही है। मेरा धर्म तो यह मानने का है कि बिना कानून की मदद से जनता के हृदय में हम ऐसे भाव निर्माण करें, ताकि कानून कुछ भी हो, तो भी लोग भूमि का बँटवारा करें। क्या माताएँ बच्चो को किसी कानून के कारण दूध पिलाती हैं? मनुष्य के हृदय मे ऐसी एक शक्ति है, जिनसे उसका जीवन समृद्ध हुआ है। मनुष्य प्रेम पर भरोसा रखता है। प्रेम से पैदा हुआ और प्रेम से ही पलता है। आखिर जब दुनिया को छोड जाता है, तब भी प्रेमी की ही निगाह से जरा इद-गिर्द देख लेता है और अगर उसके प्रेमी-जन उसे दिखाई पडते हैं, तो सुख से देह तथा दुनिया को छोड चला जाता है। प्रेम की शक्ति का इस तरह अनुभव होते हुए भी उसे अधिक सामाजिक स्वरूप मे विकसित करने की हिम्मत छोडकर अगर हम 'कानून कानून' ही रटते रहे, तो सरकार हमसे जन-शक्ति निर्माण की जो मदद चाहती है, वह मदद मैंने दी, ऐसा न होगा। इसलिए हम दण्ड-शक्ति से भिन्न जन शक्ति निर्माण करना चाहते हैं और वह निर्माण करनी ही होगी। यह जन-शक्ति दण्ड-शक्ति की विरोधी है, ऐसा मैं नहीं कहता। वह हिंसा की विरोधी है, लेकिन दण्ड-शक्ति से भिन्न है।

सत्ता का विभाजन

हम चाहते हैं कि कर्मसत्ता एक केन्द्र मे केन्द्रित न होकर गाव-गाव में निर्माण होनी चाहिए। हर एक गाव को यह हक हो कि उस गांव मे कौन-सी चीज आये और कौन-सी चीज न आये, इसका निर्णय वह खुद कर सके। अगर कोई गाव चाहता हो कि उस गाव मे कोल्हू ही चले और मिल का तेल न आये, तो उसे उस गाव मे मिल का तेल आने से रोकने का हक होना चाहिए। जब हम यह बात कहते हैं, तो सरकार कहती है कि 'इस तरह एक बडे राज्य के अन्दर छोटा राज्य नही चल सकता।' मैं कहता हूँ कि अगर हम इस तरह सत्ता विभाजन, कर्तृत्व का विभाजन न करेंगे, तो सैन्य-बल अनिवार्य है, यह समझ लीजिए। आज तो सेना के बगैर चलता ही नही और आगे भी कभी न चलेगा। फिर काम के लिए यह तय करिये कि सैन्य-बल से काम लेना है और उसके लिए सेना सुसज्ज रखनी है। फिर यह न बोलिए कि हम कभी न कभी सेना से छुटकारा चाहते हैं।

ग्राम-राज्य का उद्घोष

इसलिए हम ग्राम-राज्य का उद्घोष करते हैं और चाहते हैं कि ग्राम मे नियत्रण की सत्ता हो अर्थात् ग्राम वाले नियत्रण की सत्ता अपने हाथ मे लें। यह भी जन-शक्ति का एक उदाहरण है कि गाव वाले अपने पैरो पर खडे हो जाँय और निर्णय करें कि फलानी चीज हमे खुद पैदा करनी है और सरकार से माग करें कि फलाना माल यहा न आना चाहिए, उसे रोकिये। अगर वह नही रोकती या रोकना चाहती हुई भी रोक नही सकती, तो गाव वालो को उसके विरोध मे खडे होने कि हिम्मत करनी होगी। यदि ऐसी जन-शक्ति निर्माण हुई, तो उससे सरकार को बहुत बड़ी मदद पहुँचाने जैसा काम होगा, क्योंकि इसी से सैन्य बल का उच्छेद होगा।

उसके बगैर सैन्य-बल का कभी उच्छेद नही हो सकता।

हम अगर कभी-न-कभी सेना से छुटकारा चाहते हो, तो जैसा परमेश्वर ने किया, वैसा हमें भी करना चाहिए। परमेश्वर ने सभी को अक्ल का विभाजन कर दिया। हर एक को अक्ल दे दी–बिच्छु साप, शेर और मनुष्य को भी। कम-बेशी सही, लेकिन हर एक को अक्ल दे दी और कहा कि अपने जीवन का काम अपनी अक्ल के आधार पर करो। फिर सारी दुनिया इतनी उत्तम चलने लगी कि अब वह सुख से विश्राति ले सका। यहा तक लोगो को शका होने लगी कि सचमुच दुनिया मे परमेश्वर है या नही ? हमे भी राज्य ऐसा ही चलाना होगा कि लोगो को शका हो जाय कि कोई राज्य-सत्ता नही! 'हिन्दुस्तान मे शायद राज्य-सत्ता है या नही है'—ऐसा लोग कहने लगें तभी वह हमारा अहिंसक राज्य शासन होगा। ★

★

रचनात्मक सस्थाए सोचें

क्या हमारी सस्थाए अब भी अपनी पुरानी लीक पर चलते हुए कुछ सेवा और विकास के काम से अपने को सतुष्ट करेंगी ? कुछ पुराने मठों की हिफाजत और नये मठों की स्थापना करेंगी ? या देश को इस आसन्न सकट से बचाने के लिए ग्रामस्वराज की स्थापना के निमित्त गाँव-गाँव की लोकशक्ति प्रगट करने के लिए अपने को न्योछावर करेंगी ? यदि हमने इस परिस्थिति को नजरअन्दाज किया, थोडा भी समय हमने खोया तो परिस्थिति हमारे हाथ से बाहर होगी। हमारी ये सस्थाएँ, हमारे ये रचनात्मक काम, ये सब के सब देश की इस ढहती हुई दीवार के मलबे में दबकर समाप्त हो जायेंगे। इसलिए कालपुरुष की इस आवाज को समय से सुनो, समझो, पहचानो और तत्परता से कदम बढ़ाने के लिए तैयार हो जाओ। और एक बार गूंज होने दो – बापू के उस सपने के ग्रामस्वराज की।

—आचार्य राममूर्ति

शासन के द्वारा समाज में क्रांति, और वह भी सम्पूर्ण क्रांति, दुनिया में आज तक नहीं हुई है। क्रांति तो जनता के द्वारा ही होती है।

सच्चे स्वराज्य के लिए सम्पूर्ण–क्रांति

☐ जयप्रकाश नारायण

5 जून, 1974 को पटना के गांधी मैदान की विशाल जनसभा में बोलते हुए सहज ही मेरे मुँह से पहली बार 'सम्पूर्ण क्रांति' शब्द निकल पड़े थे। इस सम्पूर्ण-क्रांति के उद्देश्य बहुत दूरगामी हैं: भारतीय लोकतन्त्र को वास्तविक तथा सुदृढ बनाना, जनता का सच्चा राज कायम करना, समाज से अन्याय, शोषण आदि का अन्त करना, नैतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रांति करना और नया भारत बनाना है। ऐसा यह एक संपूर्ण क्रांति का आन्दोलन है।

यह बड़ा कठिन काम है, परन्तु करना ही है क्योंकि यह युगधर्म की पुकार है। समाज और व्यक्ति के जीवन के हर पहलू में क्रांतिकारी परिवर्तन हो और व्यक्ति का तथा समाज का विकास हो, दोनों ऊँचे उठें। केवल शासन बदले इतना ही नहीं, व्यक्ति और समाज दोनों बदलें। इसलिए मैंने इसको सम्पूर्ण क्रांति कहा है।

व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई

इतना तो स्पष्ट है कि यह कोई गद्दी की, सत्ता हथियाने की लड़ाई नहीं है, बल्कि व्यवस्था–परिवर्तन, प्रक्रिया–परिवर्तन और नव निर्माण की बात है। यह क्रांति समस्त जनता की क्रांति है। उसका मोर्चा केवल राजधानियों में नहीं है, बल्कि हर गांव और हर शहर में है, हर कार्यालय, विद्यालय और कारखाने में है, यहां तक कि हर परिवार में है। इन सब मोर्चों पर सम्पूर्ण क्रांति की लड़ाई हमें लड़नी है। जहा-जहा लोगों के समूह रहते और काम करते हैं तथा जहां लोगों के परस्पर सम्बन्ध आते हैं, ऐसी सब जगहें लड़ाई का मोर्चा है और यह मोर्चा हर व्यक्ति के अपने अन्दर भी है, क्योंकि अपने पुराने और गलत संस्कारों से भी हमें लड़ना है।

हम नया समाज बनाना चाहते हैं, इसलिए हम सरकार और समाज, शिक्षा और चुनाव, बाजार और विकास की योजना, हर चीज में परिवर्तन चाहते हैं। हमारी बेकारी, महगाई आदि समस्याओं का समाधान भी तब तक नहीं हो सकेगा, जब तक की आर्थिक विकास और योजनाओं की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन न हो। जब तक तिलक-दहेज, छूआछूत, ऊँच-नीच के भेदभाव दूर नहीं होते और जब

तक हम यह अच्छी तरह नहीं समझ लेते कि खुदगर्जी के स्थान पर पारस्परिक मदद और सहयोग से ही हम सब ऊँचे उठ सकते हैं, तब तक न सामाजिक-न्याय हासिल हो सकेगा, न भ्रष्टाचार मिट सकेगा। ये सब सवाल आज की व्यवस्था के साथ और एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। इन सबमें परिवर्तन लाये बिना सम्पूर्ण-क्रांति कदापि होने वाली नहीं है।

गांधी की क्रांति का अगला-चरण

इस क्रांति के लिए लोक-शक्ति का जागरण गांधी का सपना था और यही उनकी साधना थी। सत्ता को परिवर्तन का माध्यम न मानकर सेवा, सहकार और संघर्ष को उन्होंने सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाया था और यही कारण था कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद गांधी ने कोई पद स्वीकार नहीं किया, बल्कि कांग्रेस को विघटित कर जनसागर में कूद पड़ने की सलाह दी थी। अतः सम्पूर्ण क्रांति का यह आंदोलन गांधीजी की मृत्यु के साथ अधूरी रह गई क्रांति का ही अगला चरण है, ऐसा कह सकते हैं। बापू के स्वातंत्र्य-संग्राम का मैं एक सिपाही रहा हूँ और उन्हीं से यह सीखा हूं कि क्रांति, सरकारी शक्ति से नहीं, जन-शक्ति से होगी। शासन के द्वारा समाज में क्रांति, और वह भी सम्पूर्ण-क्रांति, दुनिया में आज तक नहीं हुई है। क्रांति तो जनता के द्वारा ही होती है।

गांधीजी की बात पर बिल्कुल ध्यान न देने का परिणाम यह हुआ कि जन-शक्ति निरन्तर कुंठित होती गई। अन्त में स्थिति यहां तक पहुँची कि लोकतन्त्र में 'तन्त्र' ही दानवाकार दिखाई देने लगा, 'लोक' कहीं लुप्त हो गया। इसलिए आज हम देखते हैं कि देश की आजादी के इतने वर्ष बीत गये पर हमारे समाज के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक ढांचे में कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं हुआ। यदि हम आज के सामाजिक-आर्थिक विकास को लें तो बड़ी भयानक तस्वीर सामने आएगी। देश की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। गरीबी भी बढ़ रही है। आज भी 40 प्रतिशत से भी अधिक लोग गरीबी की रेखा के नीचे हैं। भोजन-वस्त्र के अलावा पेयजल, मनुष्य के रहने लायक मकान चिकित्सा-सेवा आदि जैसी न्यूनतम आवश्यकताएँ भी अभी उपलब्ध नहीं हैं। देश में अधिकांश भागों में गांव पर अब भी ऊँची जातियों का, बड़े और मझोले भूमिपतियों का कब्जा है। यद्यपि भारत के अधिकांश गांवों में छोटे और मझोले भूमिपतियों, भूमिहीनों, पिछड़े वर्गों तथा हरिजनों का ही बहुमत है। फिर भी उनकी स्थिति आज दयनीय है। इसी प्रकार भूमिसुधार तथा वासभूमि, काश्तकारी-कानून की क्रियान्विति तथा प्रशासनिक-भ्रष्टाचार के निराकरण आदि की समस्याएँ हैं।

ये सब काम सरकार के वश के नहीं हैं। इसके लिए व्यापक जन-जागरण और संघर्ष आवश्यक है। इस परिस्थिति को बदलने के लिए गांव-गांव में क्रांति की ज्योति जलानी होगी। जिसके लिए व्यापक लोक-शिक्षण की जरूरत है। इसलिए मैं चाहता हूं कि सम्पूर्ण क्रांति के विचार को किस तरह गांव-गांव तक फैलायें, इस पर गहराई से सोचा जाए और मात्र विचार न फैलायें बल्कि गांव की रचना को बदलें और लोकशिक्षण द्वारा, जन-शक्ति के द्वारा बदलें, प्रेम से बदलें लेकिन आवश्यकता हो तो सत्याग्रह का शांतिमय

सघर्ष का भी सहारा लें।

शातिमय संघर्ष ही एक मात्र साधन

मेरा पक्का विश्वास है कि सामाजिक श्रौर प्रार्थिक समानता का सघर्ष शातिमय ही होना चाहिए। इसमे जो सघर्ष है वह गरीबो के सगठन के लिए तथा उनके प्रतिपादन के लिए है किन्तु उसका साधन तो शातिमय ही होना चाहिए। हालाकि मैं तो यही कहता हू कि ऊपरवालो की उदारता पर निर्भर रहकर बैठे रहना काफी नही है, लेकिन इसमे अगर हिंसा का प्रयोग होगा तो समझ लेना चाहिए कि बहुत बुरा होगा, इससे सघर्ष पीछे जाएगा। इसकी ओर हमे विशेष ध्यान रखना होगा, वरना हिंसा–प्रतिहिंसा की श्रृंखला बन जाएगी। अगर ऊपर वाले हिंसा करें तो भी उसके जवाब मे नीचे वाले हिंसा न करें। अगर हिंसा होगी तो उसके फल दोनो को जरूर भुगतने होगे। हिंसा को किसी भी अवस्था मे होने से रोकना ही चाहिए, अन्यथा इसमे गरीबो का ही नुकसान होगा। यह सघर्ष, शातिमय सघर्ष के रूप मे, असहयोग क रूप मे, सत्याग्रह के रूप मे हो सकता है।

एक बात हमे अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि जिस प्रकार का ससदीय-लोकतन्त्र भारत ने स्वीकारा है, हमारे लोकतन्त्र की कल्पना उससे कही अधिक व्यापक और गहरी होगी। अभी जो पाश्चात्य कल्पना है, लोकतन्त्र की, उसमे आर्थिक-तन्त्र की कल्पना नही के बराबर है। फिर भी एक गरीब देश, जहा के लोग इतनी बडी सख्या मे अनपढ हैं, वहां यह लोकतन्त्र टिका रहा, तीस वर्षों से यह हमारे लिए और देश की जनता के लिए गौरव की बात है। अब यह लोकतन्त्र सच्चे अर्थों मे जनता का राज बने इसके लिए क्या-क्या करना चाहिए, उसका स्वरूप क्या होना चाहिए इन बातो पर और विचार करना चाहिए। यह बात भी हमें अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि सत्ता के केन्द्रित होते जाने मे बहुत बडा खतरा है। इसीलिए हमारा ध्यान अब तक उपेक्षित रही स्थानीय स्वायत्तशासी-सस्थाओ की ओर जाना चाहिए। ग्राम, प्रखण्ड और जिला स्तर की ये स्थानीय स्वायत्तशासी-सस्थाएँ ही हमारे लोकतन्त्र की बुनियाद को मजबूत बनाएगी। सत्ता हथियाने, तानाशाही लादने की वृत्ति के विरुद्ध ऐसी विकेन्द्रित *व्यवस्था ही ढाल बन सकती* है। इसलिए हमारा झुकाव सत्ता के विकेन्द्रीकरण की ओर होगा। इसके परिणाम स्वरूप, आम जनता के जीवन को प्रभावित करने वाले सवालो पर निर्णय लेने की प्रक्रिया मे देश के दूर-दराज के गाव वालो को भी शामिल किया जा सकेगा। लेकिन साथ साथ यह भी समझ लेना चाहिए कि लोकतन्त्र की बुनियाद को ग्राम स्तर पर मजबूत करने के काम मे राजनैतिक दलो की अधिक रुचि नही होगी। यह काम तो सर्वोदय-कार्यकर्ताओ *तथा अन्य निर्दलीय*-तत्वो को ही करना होगा। शायद यह भी हो सकता है कि जनता की शक्ति बढने लगे तो उल्टे वह दल वालो को अपने लिए खतरे के रूप मे दिखाई दे। इसलिए यह काम तो निर्दलीय तत्वो का है। हो सकता है कि इस काम को करते हुए हमे जेल जाना पडे, लाठी खानी पडे, और भी सकट झेलने पडें तो उन सबके लिए तैयार रहना पडेगा, क्योकि नीचे के लोगो की सगठित ताकत का ऊपर के लोग प्रतिरोध करेंगे, इसलिए कष्ट–बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए।

लोकतन्त्र की मजबूती के लिए भी यह जरूरी है कि हम अपने अधिकारों, कर्तव्यों के प्रति सचेत हो जाय, सगठित हो जायं। लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति चेतना के बगैर, लोकतंत्र निर्जीव ढांचे भर रह जाएगा।

जनता निगरानी रखे

अतः जनता इस लोकतंत्र की प्रहरी बने तथा नीचे के कर्मचारी से लेकर मुख्यमंत्री और प्रधानमन्त्री तक सबके काम-काज पर निगरानी रखें। ऐसी परिस्थिति का निर्माण हो कि जनता की इच्छा के विरुद्ध कोई कुछ भी न कर सके। जनता को निरन्तर जागरूक और सावधान रहना है। इसके बिना स्वतंत्रता सुरक्षित नही रह सकती। संपूर्ण क्रांति में तो लोकतन्त्र के एक सर्वथा नए रूप की कल्पना है। जब लोग समाज जीवन के कार्यों मे प्रत्यक्ष हिस्सा ले सकें और 'तन्त्र' 'लोक' को अनुमति और सहमति से काम करता हो, सच्चा लोकतन्त्र तभी संभव है। इसलिए आंदोलन के साथ-साथ बिलकुल नीचे के स्तर से जनता का संगठन खड़ा करने पर भी मैं हमेशा जोर देता आया हू। मैं कहता हूँ कि अपने लोकतन्त्र में हमे एक नयी शक्ति दाखिल करनी है। और वह है, संगठित जनशक्ति द्वारा राज्य-सत्ता पर अकुश रखने की शक्ति।

लोक समितियां गठित करें

इन विचारों के निचोड़ के रूप में ही मैंने ठेठ गांव से लेकर ऊपर तक लोक समितियों के गठन का कार्यक्रम देश के समक्ष रखा है। लोकतन्त्र को प्राणवान और गतिशील बनाए रखने के लिए ऐसे व्यवस्थित और मजबूत संगठन की जरूरत है, इसका ढांचा लोक समितियों के रूप में खड़ा हो सकेगा। ये समितियां शासन की सम्पूर्ण कार्यपद्धति पर प्रहरी के रूप में तथा दायित्व प्रेरक के रूप में काम करेंगी। फिर भी यह बात ध्यान में रखनी है कि लोक समितियों का काम मात्र यही नहीं होगा, उन्हें तो सम्पूर्ण-क्रांति का वाहन भी बनना है। उनका काम तो समाज में हर अन्याय और अनीति के विरुद्ध संघर्ष करना होगा। जाति-पांति और वर्गभेद, कुरीतियों, शोषण, निहित स्वार्थों, ज्यादती के खिलाफ ये समितियां बराबर संघर्ष करती रहेगी। इस प्रकार केवल लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए ही नहीं बल्कि, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक क्रान्ति के लिए अथवा सम्पूर्ण क्रांति के लिए ये समितियां बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य करेंगी।

तभी सम्पूर्ण-क्रांति संभव

लोकसमितियों द्वारा यह सब काम होगे तभी गांव की सामान्य जनता समझेगी कि सम्पूर्ण क्रान्ति हो रही है, और स्वराज्य का सच्चा सुख गरीब से गरीब के घर भी पहुँच रहा है। जब सम्पूर्ण क्रांति होगी, तभी सर्वोदय होगा और जहां सर्वोदय नही है, वहां सम्पूर्ण क्रांति नही है। वास्तव मे जो दबे हुए लोग हैं उन्हें ऐसा लगे कि हमारे लिए नया सवेरा हुआ है और हमको एक ऐसा मौका मिला है कि हम अपनी पीठ सीधी कर सकें, अपने अधिकारों की मांग कर सकें, अपने अधिकारों के लिए लड़ सकें। तभी सम्पूर्ण क्रांति संभव है। ☐

सर्वोदय सेवक सत्ता और दल की राजनीति से दूर रहें पर जनता की राजनीति यानि लोकनीति को आगे बढाने मे उन्हें सक्रिय हिस्सा लेना चाहिए।

आज की चुनौतियाँ और उनका मुकाबला

☐ श्री सिद्धराज ढड्ढा

अक्सर ऐसा कहा जाता है कि रचनात्मक कार्यकर्त्ताओ का राजनीति से कोई सरोकार नही है। पर राजनीति आज सारे जीवन पर हावी हो रही है, और उसके कई पहलू ऐसे हैं जो चिंता भी पैदा करने वाले हैं। हम यह भी जानते हैं कि मनुष्य जीवन को अलग-अलग बाडो मे बाटकर नही रखा जा सकता। जीवन समग्र है, उसके विभिन्न पहलू एक-दूसरे से सबधित हैं और एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं।

राजनीति मे भी हमारी दृष्टि अधिकतर भारतीय परिस्थिति पर केन्द्रित रहती है। पर राजनीति आज जागतिक हो गई है। हमारे सामने जो चुनौतियाँ हैं वे अधिकतर जागतिक ही हैं।

लोकशाही या जनतत्र इस युग का मुख्य राजनीतिक मूल्य है। लेकिन लोकशाही स्वय आज खतरे मे है—भारत मे ही नही लगभग सर्वत्र। लोकशाही के अन्तर-विरोध अब खुलकर सामने आ गये हैं। जनतत्र का आगे का मार्ग लगभग सभी जगह अवरुद्ध सा हो रहा है। जहा लोकतंत्रीय व्यवस्था चल रही है वहा भी वास्तव मे सत्ता एक छोटे से वर्ग के हाथ में केन्द्रित हो गई है।

पार्टियां—सत्ता हथियाने का माध्यम

सिद्धान्त की दृष्टि से लोगो की सत्ता ही लोकशाही का प्राण है। पर आज शायद ढूढने पर भी कही लोकसत्ता के दर्शन नही होगे। ससदीय शासन प्रणाली पार्लियामेन्टरी डेमोक्रेसी लोकतत्र की मुख्य प्रणाली मानी जाती है। एक निश्चित अवधि मे आम चुनाव होते हैं, लोग अपने प्रतिनिधि चुनते हैं, और इस प्रकार लोगो द्वारा प्राप्त अधिकार के बल पर ये लोकप्रतिनिधि सरकारें बना कर राष्ट्रो का शासन चलाते हैं। पर चुनाव स्वय आज कितने दूषित हो गये है, उनकी प्रक्रिया कितनी विकृत हो गई है, इसका विस्तार करने की आवश्यकता नही है। इसी तरह, पार्टी-पद्धति भी वास्तविक लोकतत्र का वाहक बनने मे लगभग असमर्थ सिद्ध हो रही है। पार्टिया केवल किसी न किसी प्रकार सत्ता को हथियाने का माध्यम रह गई

हैं। नाम से अलग-अलग होते हुए भी विभिन्न पार्टियो का राजनीतिक चरित्र करीब करीब एक सा ही है।

इस प्रकार, सब जगह सत्ता किसी न किसी रूप मे कुछ थोड़े से लोगो के हाथ मे चली गई है, वह वापस जनता के हाथ में कैसे आये यह हमारे सामने मुख्य चुनौती है। यह केवल किसी एक देश का नही, जागतिक प्रश्न है।

भारत दुनिया का सबसे बडा लोकतन्त्र कहा जाता है पर सत्ता का केन्द्रीकरण यहा अत्यधिक है। लोगो की प्रभुसत्ता यहा केवल सविधान की पक्तियो मे अकित है। बल्कि, आजादी की लडाई के दिनो मे, खासकर गाधीजी के नेतृत्व में और उनकी प्रेरणा से, जो आन्तरिक शक्ति इस देश की जनता में प्रगट होने लगी थी, वह भी आजादी के बाद समाप्त हो गई। यह कहना गलत नहीं होगा कि पिछले चालीस वर्षो मे लोगों की ताकत को उनकी अस्मिता को, योजनापूर्वक समाप्त करने की कोशिश की गई है।

प्रदेशों की स्वायतत्ता का प्रश्न

भारत एक विशाल और अत्यत प्राचीन सभ्यता वाला देश है। आजाद भारत का सविधान बनाते समय सविधान के निर्माताओ ने समझ-बूझकर इस राष्ट्र की कल्पना राज्यो के एक सघ यूनियन आफ स्टेटस के रूप मे की थी, हालाकि उस समय मुल्क के बटवारे से उत्पन्न समस्याओ को और जागतिक परिस्थिति को ध्यान मे रखते हुए देश की केन्द्रित सत्ता को अधिक मजबूत बनाने की आवश्यकता थी। फिर भी सविधान के निर्माताओ की यह दृष्टि बिल्कल उचित थी कि सत्ता लोगो के जितनी नजदीक होगी उतना ही लोग उससे फायदा उठा सकेंगे और स्वय भी उसे अधिक प्रभावित कर सकेंगे। पर इन चालीस वर्षों मे इस देश के सत्ताधिकारी इससे बिल्कुल विपरीत दिशा मे काम करते रहे। आज भारत की राज्य सरकारो की स्थिति नगरपालिकाओ जैसी हो गई है, जबकि होना यह चाहिए था कि नगरपालिकाओ की, बल्कि गाव-गाव की ग्रामसभाओ की हैसियत "स्वायत्त राज्य" की तरह होती। न सिर्फ राजनीतिक दृष्टि से भारत की प्रदेश सरकारें उत्तरोत्तर कमजोर हुई हैं, उनके आर्थिक अधिकार और आर्थिक अभिक्रम भी धीरे-धीरे सकुचित कर दिये गये हैं। पजाब जैसी उग्र समस्या के मूल मे भी देखा जाय तो प्रदेशो की स्वायतत्ता और अभिक्रम का प्रश्न ही मुख्य है। आसाम समेत पूरे पूर्वाचल की भी यही समस्या है और झारखण्ड की भी।

भ्रष्टाचार:राजनीति की ज्वलंत चुनौती

भ्रष्टाचार भारतीय राजनीति की दूसरी प्रमुख चुनौती है। नीचे से ऊपर तक व्यापक भ्रष्टाचार एक ऐसा तथ्य है जिसे दर-गुजर नही किया जा सकता। भ्रष्टाचार केवल घूस देने या लेने वाले व्यक्तियो की नैतिकता-अनैतिकता का या लाभ हानि का ही प्रश्न नही है, भ्रष्टाचार ने हमारे सारे जन-जीवन को खोखला कर दिया है, उसकी नैतिक बुनियादों की धज्जिया उडा दी हैं, विकास की प्रक्रिया को अवरूद्ध कर दिया है। भारतीय समाज के पुराने नैतिक अधिष्ठान के बावजूद इस देश मे भ्रष्टाचार पर काबू क्यो नही पाया जा सका इसका कारण पिछले दिनो साफ जाहिर हो गया है। आज से दस-पन्द्रह बरस पहले

हो जयप्रकाशजी ने साफ शब्दो मे कहा था कि भ्रष्टाचार की गगोत्री दिल्ली मे है। आज वह बात नि सदिग्ध हो चुकी है, चाहे सत्ता के बल पर और कायदे कानूनो के दावपेच से उसे छिपाने की कितनी भी कोशिश की जाय, सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर बैठे हुए लोग राजनेता, बड बडे अधिकारी और व्यापारी हथियारो जैसे सौदो में भी, जिनका देश की सुरक्षा से सीधा सबध है, करोडो-अरबों रुपया जब दलाली के नाम से ले लेते हैं, तब बाकी क्या बचा? भ्रष्टाचार आज की भारतीय राजनीति की सबसे ज्वलत चुनौती है।

आज के सत्ताधारियो के द्वारा जनतांत्रिक व्यवस्था के प्रमुख अगो का भी अवमूल्यन किया जा रहा है। ससद, न्यायपालिका, प्रेस आदि ऐसी व्यवस्थाए हैं, जिनका मजबूत होना और स्वतत्र रहना जनतत्र को कायम रखने के लिए आवश्यक है। लेकिन पिछले पन्द्रह-बीस बरसो मे इन सब को कमजोर करने, इनकी स्वतन्त्रता को समाप्त करने और इन्हे बेकार करने की कोशिशें योजनापूर्वक होती रही हैं। हाईकोर्ट, और सुप्रीमकार्ट के जजो की नियुक्तिया, उनके तबादले, नियुक्तियो मे उनकी वरीयता की अवहेलना आदि बातो से हम परिचित हैं।

नागरिक स्वतन्त्रता का हनन

इसके अलावा किसी न किसी बहाने, नये नये कानून बनाकर सरकार अपने हाथ मे ऐसे अधिकार ले रही है जो नागरिक की स्वतत्रता और उसके मौलिक अधिकारो को सकुचित और समाप्त करते जा रहे हैं। "मीसा" या उसका रूपान्तर "राष्ट्रीय सुरक्षा कानून" तो था ही जिनके अन्तर्गत किसी को भी बिना मुकदमा चलाये जेल मे बंद किया जा सकता है, लेकिन आतकवाद आदि समस्याओ से नि टने के नाम पर बनाये गये कठोर कानून, विशेष अदालतें, "समैरी ट्रायल," सेना और अर्द्ध सैनिक बलो तथा पुलिस आदि को तत्काल किसी को भी गोली से उडा देने के अधिकार– ये सब आम बातें होती जा रही हैं।

आज की राजनीति से जिसका गहरा सबध है ऐसी एक और समस्या है–सरकार के द्वारा शराबखोरी, नशीली चीजो के व्यापार, जुआ-घर, लाटरी आदि व्यसन तथा नाईट-क्लब्स, कैसीनो आदि नामो से वेश्यालयो को प्रोत्साहन। जनता की चेतना को सुलाये रखने मे, उसके विवेक को कुठित करने मे, उसके मनोबल को तोडने मे, ये सब चीजे बहुत काम की होती हैं। जनता वस्तुस्थिति को ठीक से समझ न सके, समझकर भी विद्रोह न कर सके, नैतिक दृष्टि से कमजोर हो जाय–यह सत्ताधिकारियों के लिए वाछनीय है और शराब, व्यसन आदि इस उद्देश्य की पूर्ति मे मददगार होते हैं।

आज की राजनीति ने इस तरह हमारे सामने अनेक चुनौतिया खडी कर दी हैं। जागतिक और राष्ट्रीय दोनो स्तर पर परिस्थिति आज विस्फोटक है। हमारी चिंता का मुख्य विषय है कि इन चुनौतियों का मुकाबला कैसे किया जाय?

लोकशक्ति जागरण जरूरी

आज की चुनौतियो का मुकाबला करना हो तो लोकशाही को जागृत और सगठित करना होगा। आज परिस्थिति ऐसी बन गई है कि इन चुनौतियो का अलग-अलग हल सभव नही है। ये बुराइयां आज की व्यवस्था

का अंग बन गई हैं और उसे टिकाये हुए है। इसलिए उन्हें बनाये रखना सत्ताधारियों का निहित स्वार्थ बन गया है। वे उनके विरोध को हर संभव तरीके से कुचलने और उसे नाकामयाब करने की कोशिश करते हैं। और सत्ता इतनी केन्द्रित तथा मजबूत हो गई है, उसके पीठबल के परू में जो सैनिक शक्ति है वह भी तकनीकी दृष्टि से इतनी अभेद्य हो गई है कि किसी बाहरी बल से उसे तोड़ा नहीं जा सकता। समाज की आंतरिक शक्ति अर्थात् लोगों की संगठित चेतना और शक्ति ही उसे बेकार कर सकती है और उस पर अंकुश लगा सकती है।

गांधीजी का सपना

गांधीजी इस बात को अच्छी तरह समझते थे। इसलिए उन्होंने कहा था कि हमारा पहला काम इस देश के गांवों को मजबूत बनाने का होना चाहिए। लोकशाही तो क्या, आजादी भी तभी टिक सकेगी। देश के आजाद होने के बाद गांधीजी का चिंतन स्वाभाविक ही देश के निर्माण के लिए उठाये जाने वाले कदमों के बारे में चल रहा था। उनकी हत्या हुई उसके पहले दिन ही उन्होंने कांग्रेस महासमिति के सामने अपनी ओर से पेश करने के लिए एक नोट तैयार किया था। लगभग दो पृष्ठ के इस छोटे से दस्तावेज में उन्होंने मुद्दे की बात को सार रूप में रख दिया था। आजादी की लड़ाई के उस समय के अधिकांश नेताओं की दृष्टि यहीं तक सीमित थी कि एक बार अंग्रेजों का शासन समाप्त हो जाय और शासन की बागडोर उनके हाथों में आ जाय तो फिर आगे देश के निर्माण और विकास का काम वे राजसत्ता के जरिये, जैसा चाहेंगे वैसा कर लेंगे। पर गांधीजी जानते थे कि अगर सामान्य जनता की, एक-एक मतदाता की, शक्ति को नहीं जगाया गया, उसे संगठित नहीं किया गया, तो निहित स्वार्थों वाले लोग सत्ता पर कब्जा जमा लेंगे और मिली हुई आजादी भी जनता की दृष्टि से बेकार हो हो जायगी। इसीलिए गांधीजी ने अपने उस वसीयतनामे में इस बात पर जोर दिया था कि **"शहरों और कस्बों से भिन्न, भारत के सात लाख गांवों की दृष्टि से सामाजिक, आर्थिक और नैतिक आजादी हासिल करना अभी बाकी है"**। इसके आगे उन्होंने एक सारगर्भित वाक्य में यह महत्वपूर्ण चेतावनी भी दे दी थी कि **"लोकशाही के ध्येय की ओर बढ़ने की इस यात्रा में सैनिक सत्ता पर नागरिक सत्ता की प्रधानता का संघर्ष अनिवार्य है।"** सैनिक सत्ता, यानी हिंसा पर आधारित राजसत्ता, और नागरिक सत्ता यानी अहिंसा, सहयोग और परस्पर की चिंता (शेयरिंग) पर आधारित व्यवस्था। विनोबाजी और जयप्रकाशजी ने इसी नागरिक सत्ता को "लोकनीति" और "लोकशक्ति" जैसे शब्दों से इंगित किया था।

सैनिक सत्ता और नागरिक सत्ता के बीच का यह संघर्ष आज की दुनिया की एक मुख्य समस्या है। सत्ता का केन्द्रीकरण, लोगों का दमन और शोषण, तथा भ्रष्टाचार आदि जो राजनीतिक चुनौतियां आज हमारे सामने खड़ी हैं वे नागरिक सत्ता पर राजसत्ता या सैनिक सत्ता के हावी होने का ही परिणाम हैं। इसीलिए गांधीजी ने राजसत्ता के बजाय नागरिक सत्ता को प्रधानता देने और उसे मजबूत करने पर जोर दिया था। उसी छोटे से दस्तावेज में उन्होंने यह भी बता दिया था कि इसके लिए गांव-गांव में क्या करना चाहिए

ग्रौर किस तरह करना चाहिए।

सात लाख ग्राम-गणराज्यो का संघ

गाधीजी ने भारत राष्ट्र की कल्पना ही "सात लाख ग्राम-गणराज्यो के महासघ" के रूप मे की थी। भारत का हर गाव सगठित और मजबूत हो, ग्रौर वह अपने ग्राप मे एक स्वायत्त, स्वशासित, समृद्ध तथा स्वावलम्बी इकाई हो। ऐसे गाव-गाव की पचायतो के प्रतिनिधियो को लेकर ही उत्तरोत्तर ऊपर केन्द्र तक की व्यवस्था की जाय ताकि वह जनता के प्रति जिम्मेदार रहे। इन चालीस बरसो मे हमने इससे बिल्कुल उल्टा किया है। गावो को निचोडकर उन्हे कगाल परावलम्बी ग्रौर लाचार बना दिया है तथा सत्ता को अत्यधिक केन्द्रित कर लिया है। उसे समाज से-यानी उसके अपने स्वाभाविक आधार से काट दिया है।

इतिहास के अनेक थपेडो के बावजूद भारतीय समाज ग्रौर उसकी सभ्यता अब तक टिकी हुई रही है, इसका मुख्य कारण यह है कि इस समाज के नेताग्रो ने शुरू से इस बात को समझ लिया था कि कोई भी समाज लोगो की ग्रातरिक शक्ति, परस्पर सहयोग ग्रौर नैतिकता के बल पर ही टिक सकता है, केवल कायदे-कानून या सैन्यबल से नही। गाधीजी ने जो ग्राजाद भारत को इमारत को सशक्त ग्रौर स्वायत्त गावो की मजबूत नीव पर खडा करना चाहा था, वह किसी सनक के कारण नहीं बल्कि इस पुरानी समझ के कारण। भारतीय राष्ट्र को फिर से अपनी जडो से जोडने के लिए।

ग्राम स्वायत्तता का प्रश्न

अगर हमे ग्राज की समस्याग्रो का निराकरण करना हो तो गावो की चेतना को जागृत करके उनकी शक्ति को सगठित करके, अपनी व्यवस्था खुद सम्भालने के लिए उन्हें तैयार करना होगा। पचायत-राज की ग्राज की योजना की तरह नहीं, बल्कि वास्तव मे गांव की व्यवस्था गाव वालो के हाथ मे सौंप कर। ग्राज की ग्राम पचायतें ग्रौर उससे ऊपर की सस्थाए तो उसी प्रातिनिधिक ढाचे के अग हैं जिसके अन्तर्गत एक बार प्रतिनिधियो को चुन देने के बाद देश के दैनन्दिन व्यवस्था मे लोगो का कोई हाथ नही रहता। व्यवस्था मे अगर लोग सचमुच कही सीधा हाथ बटा सकते हैं या सक्रिय भाग ले सकते हैं तो वह जगह केवल गाव ही हो सकती है-जहा लोग साथ रहते हैं, काम करते हैं ग्रौर ग्राज भी बहुत हद तक एक-दूसरे के सहारे जीते हैं। ग्राज की ग्राम-पचायतें दो-चार गावो के प्रतिनिधियो को लेकर बनती हैं ग्रौर उनको कोई अधिकार भी नहो रहते। अधिक से अधिक वे केवल सफाई रोशनी का इन्तजाम करने वाली समितिया मात्र हैं। गांधीजी के अनुसार, हर गाव की ग्राम सभा को, ग्रौर उसकी कार्यकारिणी के रूप मे ग्राम पचायत को, अपने गाव की व्यवस्था, प्राकृतिक ससाधनो की देखभाल ग्रौर उनका उपभोग करने का पूरा अधिकार होना चाहिए। ज्यों-ज्यो गाव से ऊपर की ग्रोर बढते जाय त्यो त्यो उन स्तरो पर उत्तरोतर कम कार्य ग्रौर सत्ता होनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था मे हर स्तर पर लोगो की व्यवस्था को पूरी जिम्मेदारी उठाने का मौका मिल सकेगा।

लोकशक्ति का संगठन

ग्राज के सविधान मे या कायदे-कानून मे

परिवर्तन किये बिना यह कैसे सभव होगा ? और कानून बनाना जिनके हाथ मे है वे यह करेंगे नही । इसलिए इसका एक ही इलाज है कि गाव-गाव मे लोग खुद सगठित होकर अपनी व्यवस्था को सभालना शुरू करें। जागृत और सगठित लोकशक्ति के प्रभाव से फिर कानून-कायदे और आज की व्यवस्था का ढाचा भी बदलता जायगा ।

पर यह ध्यान मे रखना आवश्यक है कि लोकशक्ति का काम स्थानीय क्षेत्र या स्थानीय मामलो तक सीमित नही रहना चाहिए । अपनी स्थानीय जिम्मेदारी सभालने के साथ साथ लोगो को मतदाता की हैसियत से निर्वाचन क्षेत्रो के स्तर तक सगठित होकर आज की राजनीति मे सक्रिय हिस्सा लेना चाहिए । केवल चार-पाच बरस मे एक बार वोट देकर चुप हो जाने के बजाय अपने प्रतिनिधियो से सतत सपर्क रखना होगा,उन पर प्रभाव डालना होगा तथा वे अपने मतदाताओ की इच्छा के अनुसार काम करें यह देखते रहना होगा । सर्वोदय सेवक सत्ता और दल की राजनीति से दूर रहे पर जनता की राजनीति यानि लोकनीति को आगे बढाने मे उन्हे सक्रिय हिस्सा लेना चाहिए ।

यह भी ध्यान मे रखना चाहिए कि राजनीति को अर्थनीति से अलग नही रखा जा सकता । राजनीतिक सत्ता की तरह आर्थिक सत्ता भी अत्यधिक केन्द्रित हो गई है । गाव के हाथ मे कुछ नही रहा । गाव की सारी अर्थ व्यवस्था को बाजार के जाल मे जकड लिया गया है । आर्थिक मामलो मे पराधीन होते हुए राजनीतिक क्षेत्र मे जनता स्वायत्त नही हो सकती । अत गाव की प्रशासनिक व्यवस्था अपने हाथ मे लेने के साथ-साथ गाव को अपनी आर्थिक योजना भी खुद बनानी होगी, गाव मे पैदा होने वाले कच्चे माल का प्रशोधन घरेलू और ग्रामीण उद्योगो द्वारा गाव मे ही कर लेना होगा और यथासभव बाजार के नियन्त्रण से अपने को मुक्त करना होगा । गावों को अपनी बुनियादी आवश्यकता की पूर्ति यथासभव गाव मे अपने पुरुषार्थ से कर लेनी होगी, तभी गाव राजनैतिक स्वायत्तता का भी सही मानें मे उपभोग कर सकेंगे और वास्तव मे आजाद होगे । O

चौडा रास्ता, जयपुर

लोकसेवक का उत्तरदायित्व

लोकशिक्षक तथा लोकसेवक पक्षनिष्ठ राजनीति या सत्ता की स्पर्धा से मुक्त रहें, यह अनिवार्य है । ऐसे सत्ता निरपेक्ष लोकसेवक वर्ग की देश को अत्यधिक आवश्यकता है । किन्तु देश के सुलगते प्रश्नों पर चिंतन ही न करना, किसी भी अन्याय का सगठित प्रतिकार न करना और जब राष्ट्रीय प्रश्नों की छानबीन के लिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य की चर्चा करने की आवश्यकता हो, तो भी खामोश रहना यह केवल अवांछनीय ही नहीं अनर्थकारी है ।

—विमला ठकार

विपक्ष वाले सत्ता परिवर्तन की बात करते हैं, लेकिन उससे काम नहीं चलेगा, ग्रामूल-व्यवस्था परिवर्तन चाहिए ।

स्वराज्य गंगा भूमिपर कैसे आवे ?

☐ श्री राधाकृष्ण बजाज

आज तक हम माग करते आये कि गांवो को स्वशासन के अधिकार दिए जावें । गावो को नित्य जीवन के पूर्ण अधिकार मिले, ग्राम-स्वराज्य हो । शेष सत्ता यथावत केन्द्र के पास रहे । आज केन्द्र याने एकतत्र । प्रधानमत्री करे सो कायदा । जनतत्र के नाम पर एकतन्त्र का अनुभव ४० साल लिया । अब आमूल परिवर्तन चाहते हैं, कि सार्वभौम सत्ता जो आज तक केन्द्र मे रही, वह गावो मे आवे । देश के सही मालिक गाव ही हैं । सविधान उन्ही को समर्पण है । सार्वभौम सत्ता गाव मे आवे एव ग्राम दें उतनी सत्ता प्रदेश या केन्द्र के पास रहे । यह पूण स्वराज्य की माग है । सत्ता की गगा काग्रेस रूपी हिमालय में अटकी है, उसे गाव गाव मे बहाना है । गावो के लोगो मे व्यावहारिक बुद्धि और कार्यशक्ति अधिक होती है, वे दीर्घकालीन योजना बना सकेंगे, चला सकेंगे । देश को सही दिशा मे आगे बढा सकेंगे । विपक्ष वाले सत्ता परिवर्तन की बात करते हैं, लेकिन उससे काम नही चलेगा । आमूल व्यवस्था-परिवर्तन चाहिए ।

निर्णय सर्व सम्मति से

५१ प्रतिशत बहुमत से निर्णय की आज की पद्धति झगडो की जड है, उसे बद करके सब सम्मति या प्राय सर्व सम्मति से (Unanimity) निर्णय हो । ३ या ४ की बहुमति से निर्णय न हो । पच बोले परमेश्वर । ५ से अधिक उपस्थिति हो तो प्राय सर्व सम्मति (Near Unanimity) से निर्णय हो । प्राय सर्व सम्मति याने २० प्रतिशत से अधिक विरोध न हो । याने ८० प्रतिशत सहमति हो । मौन रहे उनकी सहमति मानी जाय, मौन सम्मति लक्षण ।

हर हाथ को काम—हर पेट को रोटी

आज देश मे २७ करोड लोग भूखे सोते हैं, उनकी आमदनी ५०) रुपए मासिक से कम हैं, उन्हे पेटभर खाना देना हो तो उनकी आमदनी कम से कम १५०) रुपये मासिक बढानी होगी । उसके लिये अन्न-वस्त्र प्रोसेसिंग उद्योगो मे यत्रीकरण बद करके कृषि गोपालन, खादी ग्रामोद्योगो का सहारा लगे, तभी सबको रोजी रोटी दे

सकेंगे। केवल कताई-बुनाई पॉवर से करवाना बंद करके हाथ से करवायी जाय तो लगभग ४ करोड़ लोगों को काम मिल सकता है। कुल यन्त्रों का निषेध नहीं है। केवल अन्न-वस्त्र के उद्योगों में भी जो मानव-शक्ति एवं पशुशक्ति से हो सकें, उनमें यंत्रों का दखल बंद किया तो २७ करोड़ को रोजी रोटी दे सकेंगे। उद्योगीकरण तो बेकारी ही बढ़ायेंगे।

सुरक्षा व्यवस्था के भूत पर नियंत्रण

आज सुरक्षा व व्यवस्था के लिए अस्सी प्रतिशत खर्च हो रहा है। सुरक्षा चोर की होती है, या साव की यह भी प्रश्न है। सुरक्षा-व्यवस्था का भूत सबको खा रहा है, इस पर नियन्त्रण करना आवश्यक है। ५० प्रतिशत से अधिक खर्च इन पर न हो तभी ५० प्रतिशत खर्च विकास कार्यों के लिये बच सकेगा। लेकिन आज की सरकार से यह होना संभव नही। अनेक हित संबंधों से दबी है। आमूल व्यवस्था परिवर्तन से ही यह संभव है।

स्थाई ऊर्जा का स्त्रोत : गाय-बैल

गोरक्षा के लिए आवश्यक है कि संपूर्ण गोवंश हत्या बंदी एवं मांस मात्र की निर्यात। बन्दी का केन्द्रीय कानून बने। उत्तम बैल और पर्याप्त दूध देने वाली देशी नस्लों का संवर्धन हो। गो दूध को भैंस दूध से अधिक भाव मिले, एवं केमीकल फर्टिलायजर्स-जंतुनाशकों पर पाबन्दी लगे।

अकाल का स्थाई हल

स्वराज्य के बाद करोड़ों वृक्ष कट गए। उससे भूमि के भीतर पानी जाना रुक गया। कुंवे भी सूखने लगे। आवश्यकता है कि वर्षा का आधा पानी रोका जाए। वृक्षों को बढ़ाया जाय, उसके लिए बड़े-बांधों का मोह छोड़कर छोटे-छोटे हजारों बांध, खेत तलैया, खेतों में मेढ, हर गांव में नदी नाले पर बांध आदि छोटे-छोटे साधन अपनाये जावें।

नैतिक मूल्यों की रक्षा

कोई भी देश नैतिक मूल्यों की रक्षा बिना आगे नही बढ़ सकता। सरकारी कानून बहुत थोड़ा नियन्त्रण रख सकते हैं। मानव पर मुख्य नियंत्रण नैतिक मूल्यों का ही रहता है। स्वतंत्रता का अर्थ ही है, खुद का नियन्त्रण याने नैतिक तत्वों का नियंत्रण। यह भी आवश्यक है, अनैतिक तत्वों को बढ़ावा देने वाली शराब पर पाबंदी लगे।

सबके लिए समान कानून हो

भारत सेक्यूलर एवं निरपेक्ष धर्मराष्ट्र है। यहां सब धर्मों का समान आदर हो। किसी धर्म का अनादर न हो। इस देश का एक ही धर्म माना जाय मानव-धर्म। धर्म के नाम पर आज जो विभिन्न कानून हैं,उनकी जगह सबके लिए समान सामाजिक-आर्थिक कानून बनाये जावें। जो कुल देशवासियों पर वे समान रूप से लागू हों। धर्म के नाम पर कोई भेदभाव न हो। धर्म के आधार से कोई मायनॉरिटी न मानी जाय, न किसी धर्म को विशेष रियायत दी जाय। सब धर्मों को अपने शास्त्रानुसार पूजा-पाठ की स्वतन्त्रता रहे। अन्य धर्मों को निंदा या अनादर करने वाले को सजापात्र माना जाय।

आंदोलन कार्यक्रम

सवाल है कि कार्यक्रम क्या हो जिसे सब मिलकर चला सकें। अभी तक के अनुभव से हमारे सामने निम्न कार्यक्रम आये हैं। हम

सबको तय करना है कि इन मे से लेने है या अन्य कोई सुझाव हैं ?

(१) गोदूध का इस्तेमाल बढाना। हर घर मे गोदूध का ही इस्तेमाल हो एव गोदूध को भैंस दूध से रुपया आठ आना अधिक भाव दिया जाए। गोदूध हर प्रकार से मानव स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभकारी है। यह होगा तो करोडो दुधारू गायो का पालन होता रहेगा।

(2) रोको भाई रोको आदोलन पिछले १०–१२ साल से देशभर मे चालू है। काफी स्थानो पर उसका प्रयोग भी हुआ है। हजारो गायें रोकी गई। लेकिन गायो को कहा रखा जावे, इस समस्या का हल न होने से यह आदोलन धीमा पड गया।

(3) **जतुनाशकों का बहिष्कार :** पेस्टीसाईड्स (जतुनाशको) के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति घट रही है। साग सब्जी, अन्न, दूध मे जहर फैल रहा है। हर मानव को स्लो पायझनिंग चला है। इससे बचने के लिए आवश्यक है कि इनका बहिष्कार किया जाय। जतुनाशको का बहिष्कार होता है तो गोबर-गोमूत्र के खाद की कीमत बढेगी। हर किसान खाद के लिए एक-दो गाय जरूर रखेगा। यह होगा तो कतल से रोकी गई गायो को रखने का प्रश्न हल हो जायेगा।

(4) **सासद सत्याग्रह** • सवाल यह है कि गोवश हत्या बदी का केंद्रीय कानून बनाने के लिए सरकार पर दबाव कैसे डाला जाय। पिछले ४० साल से दबाव डालने का एक ही मार्ग चला आ रहा है कि सभा, जुलूस, हड ताल, आदि बड-बडे प्रदर्शन किये जाव। इनसे काम न बने तो हिंसा का सहारा लिया जाय। अनुभव भी यही है कि हिंसा वालो की बात सरकार जल्दी सुनती है। हमारी अहिंसा की नीति मे हिंसा की बात बैठ नहीं सकती।

अहिंसक प्रतिकार के लिए गाधीजी ने हमे असहयोग और सत्याग्रह ये दो रास्ते बताये हैं। हमारा रास्ता रहेगा कि सासद और विधायको के समक्ष चुनाव क्षेत्र की जनता द्वारा अपनी माग रखी जावे और सासदो से हस्ताक्षर लिये जावें कि वे इन मागो के लिए अपनी पार्टी मे एव सरकार (सासद विधान सभा) मे प्रयत्न करते रहेगे।

जो हस्ताक्षर न करे उसके निषेध का प्रस्ताव ग्राम सभा मे पास किया जाए। और उसमे कहा जाय कि, जनता की बात न मानने वाला हमारा प्रतिनिधि नही है। उसे सासद एव विधानसभा का त्यागपत्र दे देना चाहिए। इस कदम से बहुत कुछ काम हो जाना चाहिए। इसका असर न हो तो सासद के यहा सौम्य सत्याग्रह कर सकते हैं। सासद एव विधायको के जरिये सरकार पर पूरा जोर डाला गया तो कानून बनाने के लिए सरकार को मजबूर होना होगा।

ये चार कार्यक्रम हैं। (१) सासद-सत्याग्रह से गोवश हत्याबदी कानून बनाने मे एव स्वराज्य गगा को भूमि पर लाने मे मदद होगी। (२) रोको भाई रोको आदोलन से बेकानूनी कतल से गोधन बचेगा। (३) कीट नाशको के बहिष्कार स भूमि की उर्वराशक्ति बचेगी, मानव सूक्ष्म जहर से बचेगा एव देशी खाद की कीमत बढगी, बूढी गायें बचेंगी। (४) गोव्रत-गोदूध प्रचार से गोसवर्धन-गोपालन बढगा, गाय-बैल मजबूत बनेगे। इस प्रकार चौतरफा गोरक्षा ग्रामरक्षा एव देशरक्षा की यह योजना है। सब मिलकर एक साथ ताकत लगावेंगे तो अशक्य भी शक्य हो सकेगा। आज दुनिया त्रस्त है, जमाने की हवा हमारे अनुकूल बहने वाली है●

मतदाताओं को चेतना जागृत कर उनको सत्याग्रह की शक्ति के आधार पर जन आन्दोलन खडा करना होगा। तब ही शराब समर्थक शासन व्यवस्था को बदला जा सकेगा।

शराबबंदी के लिए नई रणनीति

☐ श्री त्रिलोकचन्द जैन

राजस्थान मे श्रद्धेय श्री गोकुलभाई जी ने शराबवदी के लिए लगातार बारह वर्षों तक सघर्ष किया। जिसके परिणामस्वरूप जनता सरकार ने ३० मई १९७९ को राज्य मे पूर्ण शराबवदी लागू करने की घोपणा की थी। तदनुसार पहली अप्रैल, १९८० से प्रदेश मे पूर्ण शराबवदी लागू हो गई थी। इस प्रकार राज्य के वयोवृद्ध सर्वोदय नेता स्व श्री गाकुलभाई भट्ट के नेतृत्व मे शराबवदी आन्दोलन ने सफलता की मजिल प्राप्त की। राज्य की जनता ने, विशेप रूप से गरीव एव श्रमिको की वस्तियो ने राहत की श्वास ली। उनके घरो के आगन मे सुख एव शान्ति मुस्कुराने लगी। महिलाओ एव बच्चो का रोजमर्रा के कलह से मुक्ति मिलने लगी। खुशहाली धीमे-धीमे उनके घरो मे झाकने लगी। लेकिन यह कैसा विधि-विधान है कि गरीबो की यह खुशहाली शासन-व्यवस्था को स्वीकार नही हुई।

जब शराबबंदी समाप्त हुई।

ज्यों ही जुलाई, १९८१ मे श्री शिवचरण माथुर राज्य के मुख्यमन्त्री बने, उन्होंने प्रदेश की जनता को सर्व प्रथम एक अनीतिपूर्ण तोहफा भेंट किया। उन्होने १२ अगस्त को एक अध्यादेश जारी कर शराबवदी को समाप्त कर दिया। ऐसा लगा कि जैसे शराब के ठेकेदारो ने ही जोड-तोड कर उन्हे मुख्यमन्त्री के पद पर पहुँचाया हो। सत्ता सम्भालते ही उन्होने शराब के ठेकेदारो के सामने घुटन टेक दिए। श्री गोकुल भाई भट्ट की तपस्या पर क्रूरतम प्रहार किया। गरीब जनता की खुशहाली को निममता से छीन लिया। गरीब जनता के स्वास्थ्य, महिलाओ-बच्चो पर होने वाले अत्याचारो और सडक पर चलने वालो की तनिक भी चिन्ता किए बिना, विनाश के मुँह मे धकेल दिया।

इस घटना से श्री गोकुलभाई के मन को बडा आघात लगा। शराबवदी समाप्त कर सरकार ने यह साफ जाहिर कर दिया कि वह लोक-कल्याण एव नैतिक विकास के कार्यक्रमो के प्रति कितनी नफरत करती है। माथुर सरकार ने सविधान के निर्दे-

शक तत्वों का खुले आम अपमान किया, उनकी निरुपयोगिता सिद्ध की। मद्यपान जैसी बुराई को पुन समाज मे प्रतिष्ठित करने के लिए तत्परता पूर्वक कदम उठाया। इससे शराबबंदी आन्दोलन मे लगे हुए कार्यकर्ताओ को बडा झटका लगा। क्योकि १२ वर्षो तक बराबर कडे सघर्ष के बाद एक बुराई को मिटाने की दिशा मे रचनात्मक कदम उठाया गया था। कार्यकर्ताओ मे एक उत्साह था। वे शराबबंदी के सुपरिणाम लाने मे लगे हुए थे। इन दो वर्षो मे सभा-सम्मेलनो द्वारा लाखो लोगो तक शराबबंदी का सदेश पहुँचाया था। लगभग एक लाख लोगो ने शराब न पीने के सकल्प लिए। सब कार्यकर्ता शराबबंदी को स्थायित्व प्रदान करने के कार्यक्रम मे जुटे हुए थे। लेकिन सब पर पानी फिर गया।

गोकुलभाई का उपवास

श्री गोकुलभाई ने फिर से आन्दोलन का बिगुल बजाया। १२ सितम्बर, १९८२ को जिला मुख्यालयो पर सरकार की नीति के खिलाफ प्रदर्शन हुए। १५ सितम्बर को विधान-सभा पर विशाल प्रदर्शन आयोजित किया गया। स्थान-स्थान पर शराब के ठेको पर पिकेटिंग हुए। श्री गोकुलभाई भट्ट ने पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरागाधी से शराबबंदी के मसले पर बातचीत करने के लिए मुलाकात की। कुछ भी बात नही बैठी। तब १५ फरवरी ८३ से श्री गोकुलभाई ने १५ दिन का उपवास प्रारम्भ किया। उपवास के तीसरे दिन राज्य के मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर प्रधानमत्री के सकेत पर श्री गोकुलभाई से मिलने आए। उन्होने राज्य मे शराबबंदी लागू करने का कार्यक्रम बनाने के लिए एक समिति का गठन करने का प्रस्ताव श्री गोकुलभाई के समक्ष रखा तथा उपवास छोडने के लिए अनुरोध किया। श्री गोकुलभाई ने मुख्यमन्त्री से यह आश्वासन चाहा कि यह समिति राज्य मे पूर्ण शराबबंदी का कायक्रम घोषित करेगी, सभावना नही खोजेगी। इस पर मुख्यमंत्रीजी ने अपनी सहमति प्रकट की। श्री गोकुलभाई ने मुख्यमंत्री के वचन पर एक सत्याग्रही के नाते विश्वास कर लिया और उपवास छोडने का निश्चय किया। मुख्यमंत्रीजी ने तत्कालीन वित्तमंत्री श्री बृज-सुन्दरजी शर्मा की अध्यक्षता मे एक समिति का गठन किया। जिसके श्री चन्दनमल वैद, श्री नवलकिशोर शर्मा, श्री दौलतमलजी भडारी एव श्री छीतरमल जी गोयल सदस्य बनाए गए। यह भी निश्चय रहा कि यह समिति ३० सितम्बर, ८३ तक अपनी रिपार्ट प्रस्तुत कर देगी। लेकिन आश्चर्य है कि इस समिति की अवधि बढती गई। सदस्य बदलते गए। **आश्चर्य है कि ५ वर्ष के बाद भी यह समिति एक इन्च भी आगे नहीं बढ़ी। इस समिति की एक या दो बैठकें हुई होगी। सन् ८५ के बाद तो इसकी बैठक नहीं हुई।**

बस्सी में शराबबंदी आन्दोलन

सरकार एक तरफ स्वय शराब बनाती है, बेचती है। कराडो रुपया कमाती है। दूसरी ओर शराब के ठेकेदारो द्वारा शराबबंदी कार्यकर्ताओ पर दमन चक्र चलवाती है। शराबबंदी कार्यकर्ताओ ने जयपुर, सिरोही, अजमेर, नागौर, उदयपुर, झुझुनू, जोधपुर, पाली, अलवर, जिलो मे आन्दोलन किया। जहाँ पर शराब की दूकानो पर स्त्री-पुरुषो के घेरने लगे और दूकानें बद कराई गई। जयपुर की बस्सी तहसील मे शराबबंदी

आन्दोलन चला। पचायतो ने शराब की दुकानें हटाने के लिए प्रस्ताव किए। पचायत समिति के प्रस्ताव हुए। प्रस्ताव मुख्यमत्री को दिए गए। लेकिन राजस्थान सरकार ने एक नही सुनी। बल्कि पचायती राज की अवमानना की। बस्सी के ठेके को आन्दोलन करके हटाया गया। श्री गोकुलभाई ने "शराब ढोलो, बोतल फोडो' का नारा दिया। आन्दोलनकारियो ने गावो, नगरो मे इस नारे को लेकर उपर क्त जिलो मे आदोलन किया और दुकानें बन्द कराई।

जयपुर जिले मे सबसे अधिक दुकाने वद हुई। कई कार्यकर्ताओ पर ठेकेदारो के असामाजिक तत्वो द्वारा जुल्म ढाए गये। कार्यकर्ताओ पर मुकदमे लगाए गए। फतहराम का टीबा, गगापोल के ठेके पर शराबबन्दी के कार्यकर्ता श्री जुगलकिशोर जोशी की हत्या कर दी गई। फिर भी शराबबन्दी के लिए ग्राम सकल्पों का दौर चला। अलवर, झुझुनू, अजमेर सिरोही, जोधपुर जिले के गावो मे शराब न पीने, न बिक्री करने तथा शराब न बनाने देने का सकल्प किया। इस प्रकार कार्यकर्ता शराबबन्दी के लिए ठेके हटाने एव ग्राम सकल्प करवाने का अपनी शक्ति के अनुसार कार्यक्रम चलाते रहे।

किन्तु पीडा जब होती है जब प्रशासन निष्ठुर हो जाता है। एक स्थान से दुकान हटाते है तो आबकारी विभाग पास ही दूसरे स्थान पर तुरन्त शराब की बिक्री का लाइसेन्स दे देता है। आबकारी विभाग ने शराब की दुकानें खोलने के नियम बना रखे है। विद्यालयो, धार्मिक स्थलो, सार्वजनिक स्थानो, राष्ट्रीयमार्गों, बस स्टेण्डो पर शराब की दुकानें नही खोली जा सकती। लेकिन इस नियम की खुले आम अवहेलना हो रही है। ७५ प्रतिशत दकानें ऐसे ही स्थानो पर हैं। बाड ही खेत को खा रही है। तब क्या किया जाए? आज तो सरकार के सहयोग से शराब का सैलाब आया हुआ है।

शराब : आय का साधन

सरकार आय के लालच मे पागल हो रही है। जब राजस्थान बना था, तब दो तीन प्रतिशत लोग शराब पीते थे। लेकिन आज २० प्रतिशत पीने लगे है। उस समय आबकारी की आमदनी दो करोड रुपये थी। आज शराब से सरकारी आय सवा सौ करोड तक पहुच गई है। जनता की जेब से शराब पर लगभग सात सौ करोड रुपये खर्च होते है। राज्य सरकार की मेहरबानी से जनता इस दुर्व्यसन मे फसती जा रही है। सरकार शराब पीने को खुशहाली का पैमाना मानने लगी है। तब ही तो वह शराबबदी की बात नही करती। इससे कोई सरोकार नही कि सडको पर दुर्घटनाएँ हो, महिलाओ पर अत्याचार हो, उनकी अस्मत लूटी जाए, हरिजनो एव गरीबो की इज्जत पर हमला हो। जनता का स्वास्थ्य खराब हो। ऐन-केन प्रकारेण सरकारी खजाने मे पैसा आना चाहिए। इसलिए जनता की जेब पर शराब का पजा फैलाया जा रहा है। जनता को मदहोश कर उसे लूटन का पूरा इतजाम कर लिया है। इस प्रकार सरकार द्वारा शराबबदी तोडकर समाज मे योजना बद्ध तरीके से अनैतिकता, विलासिता एव भ्रष्टाचार को बढावा दे रही है ताकि जनता मे चिन्तन शक्ति का ह्रास हाता चला जाए। वह ऐशो आराम मे डूबी रह। सोचने समझने

की ताकत खोकर उसकी निर्णय लेने की शक्ति कमजोर हो जाए। अपराधवृत्ति में डूबकर वह निराश एव अक्षम हो जाए ताकि उसमे अन्याय, शोषण एव भ्रष्टाचार का प्रतिरोध करने की क्षमता ही समाप्त हो जाय।

सोवियत सघ मे मद्यनिषेध

सोवियत साम्यवादी दल के महासचिव श्री गोर्वाच्याव न पार्टी की २७ वी कान्फ्रेंस मे बढती हुई शराबखोरी क खिलाफ जिहाद का एलान किया। क्योकि रूसी समाज के सामन भयकर आर्थिक, एव सामाजिक सकट आ खडा हुआ। भ्रष्टाचार से जर्जरित समाज को शराब से उबरने के लिए दृढ सकल्प के साथ कदम उठाए। जिसके पहले वर्ष मे ही उत्साह-जनक परिणाम आए। मद्यपान चालीस प्रतिशत कम हो गया। शराब का उत्पादन उत्तरोत्तर घटता जा रहा है। शराब पीकर वाहन चलाने वाले पर १०० रुबल जुर्माना किया गया। शराबबन्दी के लिए उठाए गए कदमो से सोवियत सरकार को ६०० करोड रुबल की हानि छ महिनो मे हुई। सोवियत रूस के सविधान मे शराबखोरी क खिलाफ कोई निर्देश नही होने के बावजूद श्री गोर्वाच्योव ने साहस पूर्वक शराबबन्दी की ओर कदम उठाया। एक सर्वेक्षण के अनुसार आज श्री गोर्वाच्योव के इस आन्दोलन को ७५ प्रतिशत देशवासियो का समर्थन प्राप्त है।

हमारे देश म भी १९४७ म आबकारी राजस्व ५० करोड वार्षिक था। वह आज बढकर २५०० करोड वार्षिक हो गया। हर वर्ष ५०० करोड स अधिक का इजाफा होता है। पीने वालो की सख्या ५ प्रतिशत से बढकर ३० प्रतिशत हो गई है। समाज म भी धीरे-धीरे अपराधवृत्ति पनपती जा रही है। वह हिंसक होता जा रहा है। भ्रष्टाचार का विष उसके खून मे घुलता जा रहा है। यहां पर तो सविधान के निर्देशक तत्वों मे यह उल्लेख होने, कांग्रेस दल के विधान मे नशे पर प्रतिबन्ध होने के बावजूद भी कांग्रेस दल की सरकार शराब के प्रचार मे सक्रियता से सहयोग दे रही है। यहां तो साम पित्रोदा जैसे लोग युवा कांग्रेस के शिविरों मे शराब पीने का निलज्जतापूर्वक प्रचार करते हैं।

व्यवस्था परिवर्तन आवश्यक

आज शराबबन्दी का प्रश्न उसी रूप म खडा है। वह दिनोदिन जटिल होता जा रहा है। शराबबन्दी आन्दोलन का धीरे-धीरे यह मानस बनता जा रहा है कि शराबखोरी को बढावा देने वाली सरकार क सामन अनुनय विनय करने से कोई परिणाम नही निकलने वाला है। क्योंकि आज की शासनिक व्यवस्था निहित स्वार्थो की जकड मे पूरी फँस चुकी है।

अब तो शराबबन्दी आज की शासनिक व्यवस्था को बदलने से ही सम्भव है। इसके लिए मतदाता को सघर्ष के लिए तैयार करना होगा। सरकार की शराब प्रचार नीति के खिलाफ मतदाता को सगठित कर आन्दोलन को जनाधार देने का कार्यक्रम चलाना होगा। मतदाताओ की चेतना जागृत कर उनकी सत्याग्रह की शक्ति के आधार पर जन आन्दोलन खडा करना होगा। तब ही शराब समर्थक शासन व्यवस्था को बदला जा सकेगा। इसके लिए अब नई रणनीति तैयार कर शराबबन्दी आन्दोलन को इस मोर्चे पर सगठित करना होगा। तब ही प्रदेश मे पुन शराबबन्दी लागू हो सकेगी। ☆

गोकुल बस्ती, दुर्गापुरा (जयपुर)

खादी में व्यक्तिगत और क्षेत्रीय स्वावलम्बन को अपनाना होगा तथा खादी से सम्बन्धित सभी लोगों मे और चुने हुए क्षेत्रों की ग्राम जनता में खादी का आदोलन सगठित करना होगा ।

गांधी-निष्ठ खादी की ओर मुड़े

□ श्री जवाहिरलाल जैन

रचनात्मक कार्यक्रम की पूर्ति ही स्वराज्य है-यह मानकर गाधी जी ने देश को अपने जीवन काल मे 18 रचनात्मक कार्यक्रम दिये जो जनता के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और व्यक्तिगत जीवन की सशक्त और समृद्ध पुनर्रचना के आदोलन थे । इनमें खादी-ग्रामोद्योग का कार्यक्रम-आर्थिक-सामाजिक दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण था । यह कार्यक्रम प्रारम्भ से अन्त तक गाधी जी की देखरेख और मार्गदर्शन मे चला और जितनी शक्ति और जितना समय गाधी जी ने इसमे लगाया उतना, किसी भी कार्यक्रम मे नही लगाया । उनका मानना था कि चर्खा सूर्य है । अन्य सब कार्यक्रम इसके चारो और घूमने वाले तथा इससे प्रकाश पाने वाले ग्रह हैं ।

गाधी जी ने कपास से लेकर पोशाक के बीच की सारी प्रक्रिया और उसके औजार पुन: खोजे । उन सबका स्वयं अभ्यास किया और उन पर भावी शोध-खोज के लिए व्यवस्था की । उन्होने यरवडा चक्र के नाम से पडे चर्खे का आविष्कार भी किया । इस कार्यक्रम को चलाने के लिए उन्होने अ० भा० चर्खा सघ की स्थापना की व स्वय उसके अध्यक्ष बने और कांग्रेस के सबसे बडे नेताओ को अपने-अपने प्रान्त मे इसके प्रतिनिधि-एजेन्ट के रूप मे नियुक्त किया । उदाहरण के लिए जवाहर लाल नेहरू और राज गोपालाचार्य उत्तर प्रदेश और मद्रास के खादी-प्रतिनिधि थे । जमनालाल बजाज अजमेर और राजपुताना की रियासतो मे खादी के एजेन्ट थे । राजेन्द्र बाबू इस काम को बिहार मे सम्भालते थे ।

खादी : स्वाधीनता की पोशाक

गाधी जी खादी को व्यक्ति से लेकर पूरे राष्ट्र तक की स्वाधीनता, आत्म-सम्मान और स्वावलम्बन की पोशाक मानते थे । वे प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए कातना आवश्यक मानते थे । इस सबध मे उनका यह सूत्र प्रसिद्ध ही है– कातो–समझ बूझ कर कातो । जो काते वे पहनें, जो पहनें वे जरूर कातें । जैसा कातें वैसा पहनें ।' चर्खा सघ गाधी जी की नीति के अनुसार चलने का बराबर प्रयत्न

> गांधीजी के पहले भी लोक-कल्याण के कार्यक्रम चलते थे और उनके समय मे भी ऐसे कार्यक्रम चलते रहे, लेकिन वे सब 'परोपकार' के कार्यक्रम थे। गांधीजी के कार्यक्रमों मे एक बड़ा फर्क था। उन्होंने उनका अनुबन्ध समाज परिवर्तन की प्रक्रिया के साथ जोड़ा। सशस्त्र क्रांति मे जो स्थान सैनिक प्रशिक्षण का होता है वही स्थान अहिंसक प्रतिकार में रचनात्मक कार्य का था।
>
> —दादा धर्माधिकारी

करता था। कार्यकर्त्ताओ के लिए खादी पहने और कातना अनिवार्य था। कतवारी-बुनकरो मे खादी पहनने पर पूरा जोर दिया जाता था। उस समय स्वावलम्बी खादी इस रचनात्मक कार्य का अव्यक्त महत्वपूर्ण अग थी। गाधी जी और विनोबा जी दोनो इसके प्रबल समर्थक तथा प्रेरक थे।

खादी-ग्रामोद्योग कमीशन का प्रादुर्भाव

स्वाधीनता के बाद चर्खा सघ भग कर दिया गया और खादी ग्रामोद्योग का सारा काम भारत सरकार द्वारा नियुक्त अखिल भारत खादी ग्रामोद्योग बोर्ड ने तथा बाद मे खादी ग्रामोद्योग कमीशन ने सम्भाल लिया।

धीरे धीरे खादी ग्रामोद्योग कमीशन ने खादी को मुख्यत उद्योग तथा व्यापार के रूप मे विकसित किया और उसका सामाजिक उपयोग अधिक लोगो को रोजगार देने के रूप मे माना गया। यद्यपि खादी कमीशन राज्य खादी बोर्ड तथा खादी सस्थाओ के सचालको और कार्यकर्त्ताओ से खादी पहने की अपेक्षा रखी गयी। पर सरकारी उद्योग-व्यापार और सरकारी अनुदान-सहायता के दृष्टिकोण की प्रमुखता के कारण खादी पहनने की शर्तें लगभग बेमानी हो गयी। आजकल इस शर्त का उपयोग स्वय को और दूसरों को धोखा देने मे होता है। इस सरकारी कागजी हुक्म का न कोई विरोध करता है और न कोई बहुत पालन करता है।

अधिक कुशल व्यवस्था, अधिक कुशल तकनीक, अधिक टिकाऊ तथा अधिक सुन्दर उत्पादन और अधिक कुशल विक्रय कला और विज्ञान-तकनीकयुक्त मिल उद्योग को बराबरी की स्पर्धा मे खादी कभी नही टिक सकेगी। और धीरे-धीरे इसे यन्त्रोद्योग की तरफ जाना ही पडेगा और अन्त मे खादी पूरा यात्रिक तथा बडा शहरी उद्योग बन कर रह जायेगी। और जब तक खादी उद्योग ऐसा नही बनेगा तब तक वह किसी न किसी प्रकार के सकटो मे पडता-निकलता ही रहेगा। अन्त मे यह मिल उद्योग से अधिक रोजगार भी नही दे सकेगा।

यदि हम खादी को जीवित, स्वस्थ और प्रिय बनाना चाहते हैं तो हमे इसे मिल के वस्त्र की बराबरी और स्पर्धा की कोटि से उठा लेना ही होगा। इसे खादी पहनने वालो की आत्मीय बना देना होगा। यह तभी सम्भव है जब खादी के साथ हमारा श्रम और प्रेम जुड़े। हमारे श्रम-पसीने और प्रेम से सिक्त खादी कपडा नही रहेगा वह हमारी प्रिय राष्ट्रीय पशोाक बनेगी। तब हमारी अपनी मोटी खादी के मुकाबले मे दूसरा कपडा हमे पसन्द ही नही आयेगा। हमारा शरीर दूसरे कपड़े को स्वीकार ही नही करेगा। तभी गाधी का वह सूत्र सार्थक होगा—जो काते वह पहने तथा जो पहने वे अवश्य कातें।

व्यक्तिगत और क्षेत्र स्वावलम्बन

इसके लिए हमे खादी मे व्यक्तिगत स्वा-

वलम्बन तथा क्षेत्रीय स्वावलम्बन को अपनाना होगा। तथा खादी से सबधित सभी लोगो में और चुने हुए क्षेत्रो की ग्राम जनता मे खादी का आदोलन सगठित करना और चलाना होगा। इसमे हमारे ग्राम कार्यकर्ताओ और खादी सस्थाओ को जुडना होगा। खादी मिशन और सब सेवा सघ की खादी समिति और सभी प्रदेशो के मध्यवर्ती खादी सगठनो को इसमे पहल करनी होगी। सारे प्रदेशो के खादी प्रखण्डो मे जाकर वहा की सस्थाओ, कार्यकर्ताओ, कतवारी-बुनकरो और खादी उपभोक्ताओ का सबोधीत करना होगा और खादी के सारे उत्पत्ति केन्द्रो, बिक्री केन्द्रो, वस्त्रागारो, तथा अन्य कार्यालयों मे कताई मण्डलो का गठन करना होगा। प्राथमिक शालाओ माध्यमिक शालाओ मे कताई को औद्योगिक कार्यक्रम मे दाखिल कराना होगा। इस आन्दोलन का वर्तमान प्रचार-साधनो का भी समुचित उपयोग करना होगा ताकि देश मे इस कार्यक्रम क उपयुक्त वातावरण व लोगो म उत्साह पैदा हो सके।

इस आदोलन के कुछ कदम सुझाये जा सकते हैं —

(क) प्रत्येक खादी-सस्था व्यक्तिगत तथा क्षत्रीय-स्वावलम्बन के कार्यक्रमो को अपनाने का प्रस्ताव मान्य करे। सस्था के सदस्य, पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता व्यक्तिगत वस्त्र-स्वावलम्बन का सकल्प करें। सस्था के प्रत्येक केन्द्र पर यह कार्यक्रम चले। प्रतिदिन कार्यारम्भ के समय कम से कम आधे घटे का समय प्रार्थना, कताई, और स्वाध्याय के लिए निश्चित किया जाय। चरखो, पूनी, अन्य आवश्यक सामान तथा कताई सिखाने की समुचित व्यवस्था केन्द्र व्यवस्थापक करें।

(ख) उत्पत्ति केन्द्र पर कताई मण्डल के साथ-साथ सूत लेकर आने वाली कतवारियो के साथ सम्पर्क तथा उनसे वर्ष मे लगभग दो किलो सूत लेकर बदले म उनकी आवश्यकता और उनकी पसन्द का लगभग १५ मीटर कपडा देने की व्यवस्था की जाय। कतवारियों के परिवारो मे खादी-प्रवेश और कताई-प्रवेश का प्रयत्न किया जाय। बुनकरो के साथ सम्पर्क करके उनम या उनकी स्त्रियो मे कताई-प्रवेश का प्रयत्न किया जाये। प्रति बुनकर एक थान प्रति वर्ष अपने कपडो के लिए उसकी बुनाई की मजदूरी के बदले मे देने का गणित निकाला जाय।

(ग) बिक्री केन्द्रो पर कताई मण्डल प्रारम्भ किये जाये। वहा के सभी खादी उपभोक्ताओ से सम्पर्क किया जाय और उन्हें कताई मण्डल मे विशेष आमंत्रित के रूप मे शामिल किया जाय। धीरे-धीरे उनमे वस्त्र-स्वावलम्बन के लिये

गाधी के रचनात्मक कार्यक्रम की एक अन्य विशेषता थी, उसमे से होनेवाली चित्त-शुद्धि। वह एक साधना थी, उसका एक सामाजिक मूल्य था अपना। क्योकि गाधी का प्रतिकार भी प्रतिपक्षी का हटाता नहीं था, उसे अपनाता था इसलिए प्रतिपक्ष को अपनाने के लिए चित्त शुद्धि की जो विशद भूमिका चाहिए उसकी दीक्षा इस रचनात्मक कार्यक्रम से मिले, ऐसा इसका प्रयोजन था।

—दादा धर्माधिकारी

कातने का शौक पैदा किया जाय और उन्हें १५ वर्ग मीटर खादी वस्त्र स्वावलम्बी के रूप में दी जाय।

समग्र विकास कार्यक्रम

(घ) खादी संस्था का प्रत्येक उत्पत्ति केन्द्र खादी के साधन तथा समग्र विकास के लिए कम से कम एक गाव चुने और उसमें परिवार तथा ग्राम स्वावलम्बन के कार्यक्रम को योजनापूर्वक चलाये। प्रत्येक संस्था का लक्ष्य एक पूरे प्रखण्ड को इस कार्यक्रम में शामिल करने का रहे। साथ ही खादी के साथ ग्रामोद्योग, गृहोद्योग तथा ग्रामीण कला कौशल भी जुड़ ताकि प्रखण्ड में प्राप्त लगभग सारे कच्चे माल को प्रखण्ड की आवश्यकता अनुसार पक्के माल में बदला जा सके और गावों की जनता को अधिक से अधिक रोजगार अपने क्षेत्र में अपने गाव में दिया जा सके।

(ङ) प्रत्येक खादी संस्था अपने प्रखण्ड में ग्रामीण उद्योगीकरण की मध्यवर्ती इकाई बने। प्रखण्ड के समग्र तथा सघन विकास के आयोजन पूर्ति तथा मूल्यांकन में वह मित्र, दार्शनिक की भूमिका प्राप्त करे।

(च) यही भूमिका प्रदेश के मध्यवर्ती खादी-ग्रामोद्योग फेडरेशन की प्रदेश की सारी खादी संस्थाओं के बीच रहे। एक तरफ वह प्रत्येक संस्था को इस कार्यक्रम को गहरा और व्यापक करने की प्रेरणा और प्रोत्साहन द। दूसरी तरफ प्रदेश की खादी संस्थाओं के बीच आपसी व्यवहार और संबंध पारस्परिक सहायता सहयोग और समन्वय के आधार पर चलें, इस दिशा में जागरूक और प्रयत्नशील रहे। तीसरे राज्य के विकास विभागों, राज्य खादी बोर्ड, और राज्य के खादी ग्रामोद्योग कमीशन से निकट सम्पर्क रख कर अधिक से अधिक साधन, सहायता, तकनीकी मार्गदर्शन संस्थाओं को प्राप्त करायें। कठिनाई तथा संकट में उनकी मदद करे।

(छ) प्रदेश खादी बोर्ड तथा भारतीय खादी ग्रामोद्योग कमीशन प्रारम्भ में स्वावलम्बन की खादी को वर्तमान उद्योग व्यापार की खादी के समान ही मान्यता दे, पर साथ ही स्वावलम्बन की खादी के स्वरूप और आवश्यकताओं के अनुरूप इसके नये आर्थिक पैटर्न और सहायता के ऐसे स्वरूप भी निश्चय कर जिन से इस खादी का उत्पादन और वितरण सरलता से हो सके। और हर कताई अथवा बुनाई करने वाले नागरिक को निश्चित परिमाण की खादी अपनी कताई अथवा बुनाई के श्रम के बदले में मिल जाय। इसके लिए आवश्यक कच्चा माल वह स्वयं जुटा लेगा।

कताई-बुनाई उद्योग

(ज) प्रादेशिक सरकारें सरल कताई-बुनाई उद्योग को प्राथमिक शाला से लेकर हाई स्कूल तक एक आवश्यक उद्योग के रूप में स्वीकार करें। और पन्द्रह वर्ग मीटर का एक तैयार स्थान हाई स्कूल की व्यवहारिक परीक्षा में विद्यार्थी की सफलता का मापदण्ड माना जाय।

मिशन का उत्तरदायित्व

(ऋ) खादी मिशन इस अखिल भारतीय आंदोलन की प्रेरक और सचालन शक्ति बने। भारत की सारी ग्रामोण जनता वस्त्र स्वावलम्बी और सारे गांव व ग्राम स्वावलंबन और समग्र विकास मे शामिल हो। इसलक्ष्य को ध्यान मे रखकर खादी स्वावलंबन की योजना बनाई जाय, उपयुक्त सगठन का निर्माण किया जाय, खादी ग्राम-योग की प्रत्येक सस्था तथा सहकारी समिति मे इसका प्रारम्भ किया जाय। इसके लिए समुचित साघन आर्थिक व मानवीय जुटाये जायें। एक, तीन या पाच वर्ष की योजना बनाकर लक्ष्य तय किये जायें और उनकी पूर्ति करायी जाये।

खादी मिशन इस योजना मे के प्रचार और प्रोत्साहन का केन्द्र बने। प्रत्येक वर्ष के अंत खादी मिशन अपने काम की पूरो रिपोर्ट खादी जगत के सामने तथा मिशन की वार्षिक सभा मे प्रस्तुत करे और अगले वर्ष की कार्य योजना और लक्ष्य भी घोषित करें।

बजाज नगर, जयपुर

कम्युनिस्ट होने का दावा करता हूं

साम्यवादियों और समाजवादियों का कहना है कि वे आर्थिक समानता को जन्म देने के लिए कुछ नही कर सकते। उसके लिए प्रचार भर कर सकते हैं। इसके लिए लोगो मे द्वेष या वैर पैदा करने और उसे बढाने मे उनका विश्वास है। उनका कहना है कि राज्य-सत्ता पाने पर वे लोगो से समानता के सिद्धान्त पर अमल करवायेंगे। मेरी योजना के अनुसार राज्य लोगो की इच्छा पूरी करेगा, न कि लोगों को आज्ञा देना या अपनी आज्ञा जबरन उन पर लादेगा। मैं घृणा से नही परन्तु प्रेम की शक्ति से लोगो को अपनी बात समझाऊंगा और अहिंसा के द्वारा आर्थिक समानता पैदा करूंगा। मैं सारे समाज को अपने मत का बनाने तक रुकूंगा नहीं—बल्कि अपने पर ही यह प्रयोग शुरू कर दूंगा। इसमें जरा भी शक नही कि अगर मैं ५० मोटरों का तो क्या १० बीघा जमीन का भी मालिक होऊं, तो मैं अपनी कल्पना की आर्थिक समानता को जन्म नही दे सकता। उसके लिए मुझे गरीब बन जाना होगा। यही प्रयत्न मैं पिछले ५० सालो से करता आ रहा हूं। इसीलिए मैं पक्का कम्युनिस्ट होने का दावा करता हूं। अगरचे मैं धनवानों द्वारा दी गयी मोटरो या दूसरे सुभीतो से फायदा उठाता हूं, मगर मैं उनके वश मे नहीं हूं।

—गांधीजी

"अपनों" के प्रति

☐ रामदयाल खण्डेलवाल

आदर्श महात्मा गाधी के, अरु सत विनोवा के चिन्तन ।
जे पी. की सप्त क्राति मे सर्वोदय का पाते दर्शन ।।
यह दर्शन पूरा "दर्शन" है, जो ग्रामस्वराज्य को लायेगा ।
पर प्रश्न चिन्ह यह उभर रहा, यह सब कैसे हो पायेगा ।।

जब तक ये आदर्श हमारे, तन-मन मे नही मचलेंगे ।
जब तक अपने "विकृत" मन को, हम "सुकृत" मे नही बदलेंगे ।।
तब तक इन आदर्शों से, होगा अपना निर्माण नही ।
तब तक मित्रों 'आदर्शों' में, हम भर पायेंगे प्राण नही ।।

जब तक अपनी कथनी-करणी के, अन्तर को नही पाटेंगे ।
जब तक इन आदर्शों को, जन-जन में नही बाटेंगे ।।
जब तक विपरीत आचरण पर, "अपनो" से हो विद्रोह नही ।
जब तक विपरीत प्रसगो पर, "अपनो" का टूटे मोह नही ।।

जब तक सवा और त्याग, का हमको भान नही होगा ।
जब तक इनके परिपालन मे, अपना बलिदान नही होगा ।।
जब तक इन बलिदानो का, कोई आधार नही होगा ।
तब तक गाधी के भारत का, सपना साकार नही होगा ।।

जब लक्ष्य, दिशा और कार्यक्रम, तीनो ही गाधी जता गया ।
कैसे करना, यह क्रिया सहित जे पी ने हमको बता दिया ।।
फिर नई-नई भाषाओं मे, न जाने क्यो हम अटक रहे ।
वाद और प्रतिवादो मे, कुछ पता नही क्यो भटक रहे ।।

परिणाम की चिन्ता किये बिना, जो पैर बढाये जाते है ।
क्राति का वरण वही करते, वे ही कुछ कर दिखलाते हैं ।।
अतएव प्रार्थना है सबसे, अब "करो-मरो" का नारा दो ।
इस "नारे" के परिपालन मे, बस तन-मन भरा सहारा दो ।।

सर्वोदय सदन, गोगागेट, बीकानेर

आज की सारी समस्याओं का मूल कारण
केन्द्रीय राज्य और अर्थ-व्यवस्था है।

राष्ट्रीय समस्याओं का विकल्प

□ श्री बद्रीप्रसाद स्वामी

हमारा देश इस समय अनेक समस्याओ से घिरा हुआ है। भारतीय जनता की आजादी, जान व माल तीनो खतरे मे घिर गये हैं। इन्सान हर रोज गाजर-मूली की तरह समाप्त किया जा रहा है। चाहे पजाब के आतकवादी हो, चाहे बिहार के नक्सलाईटस् हो, इन खुले आम होने वाली हत्याओ को सरकार रोक नही पा रही है। इनके अलावा हवाई जहाज, रेल, ट्रक व कार आदि की दुर्घटनाओ द्वारा आये दिन सैकडो आदमी अपनी जान खो रहे हैं। इनमे अधिकतर दुर्घटनाएँ शराब के नशे व लापरवाही के कारण होती हैं। महगाई व भ्रष्टाचार देश व्यापी हो ही चुका है। देश मे अनेक जगह अधिकारो के प्रश्न को लेकर जो हिंसक आन्दोलन चल रहे हैं, इससे देश की एकता व अखण्डता खतरे मे पडी हुई है जबकि पडौसी देश आपसी समझौते के बजाय उनका सहयोग कर रहे हैं। इस प्रकार देश की सारी परिस्थिति भयकर रूप धारण कर चुकी है और सरकार के काबू से बाहर होती जा रही है। इसलिए आज देश के सभी सगठन इन समस्याओ को हल करने के लिए सही विकल्प की तलाश कर रहे हैं।

सत्ताधारी काग्रेस रूस और अमेरिका से प्रेरणा लेकर इस देश को २१ वी सदी तक पश्चिम पद्धति पर विकसित देश बनाना चाहती है। विपक्ष के राजनैतिक दल एक होकर सत्ता बदलने का प्रयास कर रहे हैं एव देश की गाधी, विनोबा, जे पी को मानने वाली सबसे बडी जमात के लोग अपने अपने ढग से देश के अनेक गावो मे सेवा व सर्वोदय का कार्य कर रहे हैं। जिसका सरकार व समाज पर कोई प्रभाव नजर नही आ रहा है। हालाकि विचार सबको पसन्द है। परन्तु सर्वोदय जगत के लोग भी जरूर ऐसे विकल्प की खोज मे हैं। जिसको सभी लोग निकट भविष्य मे अमली रूप देकर राष्ट्र की समस्याओं को हल कर सकें।

विकेन्द्रित समाज-व्यवस्था

इस सारी परिस्थिति मे सरकार और समाज के सामने हमको कोई ऐसा कार-गर विकल्प प्रस्तुत करना चाहिए जिससे कि राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याऐं हल हो सकें

तथा राष्ट्र हित मे सब एक होकर देश को आगे बढा सकें। आज की सारी समस्याओं का मूल कारण केन्द्रीय राज्य–व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था है। चाहे वह राष्ट्र की एकता व अखण्डता से सबधित हो, चाहे बेकारी और भ्रष्टाचार का प्रश्न हो, चाहे ऊर्जा और पर्यावरण की समस्या हो, इन सभी का एक मात्र हल विकेन्द्रित समाज-व्यवस्था ही हो सकता है, जो कि आज के युग की व समाज की माग है। लोकतन्त्र के वास्तविक विकास हेतु भी इसके अलावा कोई उपाय नही है। (१) इसलिए चाहे सत्ता पक्ष हो चाहे, विपक्ष हो तथा सर्वोदय समाज रचना मे लगे लोग हो, सबको चाहिए कि इस देश की सभी समस्याओ का हल करने के लिए विकेन्द्रित राज्य व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था को शीघ्र साकार करें। (२) जहा तक नर-हत्या व हिंसा की समस्या को हल करने का प्रश्न है यह प्रश्न अहिंसक ढग से ही प्रयास करने पर हल हो सकते हैं। इसलिए सभी को चाहिए कि अहिंसक आन्दोलन देश व्यापी सब मिल कर करें एव विकेन्द्रित सत्याग्रह के स्वरुप को विकसित करें।

सरकार को चाहिए कि लॉटरी, शराब व नशे की वस्तुएँ, अश्लील साहित्य, गन्दे गाने व फिल्मे तथा साहित्य को सख्ती से शीघ्र रोकें। देश मे इनके खिलाफ जबरदस्त जन आन्दोलन खडा किया जावे।

(३) जहा तक राजनैतिक दलो का प्रश्न है, वे अपने विचार का प्रचार अवश्य करें परन्तु देश भर के मतदाताओ को शिक्षित व सगठित करने मे शक्ति लगावें ताकि सगठित मतदाता जिस विचार से प्रभावित होगे उस विचार का उम्मीदवार वे निश्चित कर सकेंगे। अगर सत्ता, समाज व सर्वोदय वाले सभी से इस दिशा मे प्रयत्न करें तो इस देश मे निश्चित तौर पर ईमानदार व सज्जन व्यक्तियो की राष्ट्रीय सरकार बन सकती है।

(४) जहां तक बेकारी निवारण का प्रश्न है, देश भर के समस्त गावो से कच्चा माल पक्का बनकर ही बाहर निकले। छोटी मशीनों द्वारा गृह उद्योग व ग्रामोद्योग इस देश मे विकसित किये जायें, तो निश्चित तौर पर गाव की गरीबी व बेकारी दूर हो सकती है। इसके लिए हर गाव व नगर की नीचे से योजना बननी चाहिए।

(५) जहा तक गावों के आपस मे झगड़े व विवादो का प्रश्न है, लोग पुलिस व अदालत से आज काफी परेशान हैं, इसलिए देश भर मे शीघ्र ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि गांव के झगड़े गाव मे निपटाये जा सकें।

उक्त पाचो कदमो को उठाने के लिए हमारे देश के समस्त गाधी-विनोबा व जे पी के विचारो से प्रभावित सभी नागरिक व नव युवक एक मच पर आयें और मतभेदो को भूलकर मिलकर कार्यक्रम सर्वोदय समाज रचना के लिए बनायें। सर्व सेवा सघ को चाहिए कि इस बार के सर्वोदय समाज सम्मेलन के पूर्व देश की समस्त रचनात्मक शक्ति को सगठित करने का प्रयास करें तथा देश भर मे सैकडो जगह गाव से प्रखण्ड स्तर तक जगह-जगह ग्राम-स्वराज्य व नगर-स्वराज्य को साकार करने हेतु उक्त कदम उठायें जा सकें। लोक सेवक, शान्ति सैनिक व सर्वोदय-मित्र मिलकर शक्ति लायें ताकि प्रयोग के अनुभव के आधार पर देश भर में समाज व सरकार को उक्त दिशा मे ले जाया जा सके।

स्वामी सदन, मकराना, (नागौर)

हमने विरोध नहीं किया अत: आज की देश की परिस्थिति के लिए यदि कोई अधिक जिम्मेवार जमात है, तो वह यह सर्वोदय की जमात ही है।

भूल सुधारने का समय आ गया है

□ श्री सोहनलाल मोदी

गाधीजी जब दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे तो इस देश मे अनेक विद्वान और देशभक्त व्यक्ति काग्रेस को अपनी सेवायें दे रहे थे। बडे बडे विद्वतापूर्ण प्रस्ताव पारित किये जा रहे थे और सरकार से निवेदन-आवेदन किये जाते थे लकिन विदेशी सरकार उनकी उपेक्षा करती जा रही थी।

गाधीजी ने भारत मे आकर देश का भ्रमण किया, जनता का मानस पहचाना और परिस्थितियो को समझकर देश के सामने सत्य, अहिंसा, त्याग और रचनात्मक कार्यक्रमो का नया कार्यक्रम दिया। भयभीत और निराश जनता मे निर्भयता और अन्याय के प्रतिकार की शक्ति जगाई। केवल निवेदन-आवेदन के स्थान पर असहयोग और सत्याग्रह के नये कार्यक्रम दिये। गाधीजी के नेतृत्व मे हमने आजादी प्राप्त की, केवल इतना ही नही बल्कि गाधीजी ने एक नया जीवन दर्शन एव नई समाज रचना की कल्पना भी हमे दी।

गाधीजी का सपना

गाधीजी नही चाहते थे कि भारत मे पार्टी और पालियामेन्ट का शासन हो। उन्होंने पालियामेन्ट को बोलती हुई दुकान' और 'वेश्या' तक बताया था और कहा था कि पालियामेन्ट की हिंसा आज की हिंसा से अधिक खतरनाक होगी, जिसे आज हम देख रहे हैं। वे चाहते थे कि भारत के गाव स्वावलबी और स्वयशासी हो। नई समाज रचना की प्राथमिक इकाई हो। सीधे मतदाताओ के प्रतिनिनिधियो से गांव मे ग्राम-स्वराज्य और दिल्ली मे लाक स्वराज्य की स्थापना हो। इसका पूरा चित्र उनके अ तिम वसीयतनामे मे प्रकट किया गया है। फरवरी १६४८ के पहले सप्ताह मे उन्होने सेवाग्राम में काग्रेस कार्यकर्ताओ की बैठक रखी थी, जिसमे वे प्रकट करने वाले थे कि काग्रेस को भग कर दिया जाय। कुछ लोग अतरिम सरकार का कार्य सम्हालें और बाकी सब काग्रेस कार्यकर्ता उनके साथ गावो मे चलें। लोक सेवक सघ बनाया जाय। गाव-गाव मे जाकर मतदाताओ की सूचियां बनाई जाय और उनको सगठित किया जाय। मतदाताओं के प्रतिनिधियो से गाव मे ग्रामस्वराज्य और दिल्ली मे लोक स्वराज्य की स्थापना हो।

लेकिन हमारा दुर्भाग्य रहा कि गाधी जी ३० जनवरी, ४८ को ही हमारे बीच से उठा लिये गये और हमारे राजनेताओं ने गाधी जी के रास्ते को छोडकर दुनिया के अनेक देशों मे चल रहे दलगत प्रजातत्र को ही अपनाया। जिसके परिणाम आज दुनिया के अनेक देश तथा हम भोग रहे हैं।

विषम परिस्थिति

आज देश मे जो परिस्थितियां बनी हैं, उसकी चर्चा करने की भी आवश्यकता नही। सारे लोग यह जानते हैं कि आज हिंसा, अराजकता, भ्रष्टाचार, महगाई, बेरोजगारी, कुशिक्षा, शराबखोरी, गाय का कत्ल, सम्प्रदायवाद, सस्कृति का ह्रास और युद्ध के खर्च दिन दूने और रात चौगुने बढते जा रहे है।

इस सबके लिए क्या केवल राजनेता, काग्रेस या विरोधी दल ही जिम्मेवार हैं? इसके लिये सबसे अधिक जिम्मेवार वे लोग हैं जो अपने आपका गाधी के अनुयायी मानते हैं।

गाधी के बाद जब गाधी जी के बताये रास्ते को छोडकर सरकार गलत रास्ता अपना रही थी तो हम मौन रहे। क्योकि हमारे पारिवारिक सबध उनसे थे, जो उस समय सत्ता की बागडोर सम्हाले हुए थे। हमने मोह, आसक्ति और भ्रमवश उस समय के शासन को अपना शासन माना, उनके गलत कामो का विरोध नही किया। हम मानते रहे कि हमारे ही साथी हैं, इनको कुछ समय देना चाहिये। जबकि हम गाधी जी की यह बात सुन चुके थे कि अग्रेज सरकार को निकालना आसान था, अब अपने ही लोगो के साथ लोकशाही का सघर्ष कठिन होगा।

पर गांधीजी के बाद जब सरकार और राजनेता गलत रास्ते पर जा रहे थे तब हम मौन रहे। हमने विरोध नहीं किया अतः आज की देश की परिस्थिति के लिये यदि कोई सबसे अधिक जिम्मेवार जमात है, तो वह यह सर्वोदय की जमात ही है।

विनोबाजी ने गाधी जी के विचार को आगे बढाया। भू-दान, ग्रामदान, जिलादान, सपत्तिदान, शाति सेना से लेकर सर्वोदय-समाज रचना का दर्शन दिया। उसकी मान्यता अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र तक कराई। लेकिन हम अपने देश मे इस विचार को कार्यान्वित नहीं करा पाये क्योकि हमने सत्ता की ओर देखने व उस पर नियत्रण रखने से आखें मूद ली। अविरोधी भाषा बोलने का निर्णय लिया।

हमारा यह मोह-भग सन् ७४ मे जे. पी. ने किया। उन्होने हमे अपने कर्तव्य का भान कराया। सत्ता को गलत रास्ते जाने से रोकने का प्रयास किया। दिसम्बर, ७६ मे जसलोक अस्पताल से अपना बयान जारी कर उन्होने कहा था कि हम भारत मे दल रहित लोकतत्र की स्थापना करना चाहते हैं लेकिन आज तो देश मे दलगत प्रजातत्र ही समाप्त होने को हैं। निहित स्वार्थ और तानाशाही लागू होने को हैं। अतः हमे पहले दलगत प्रजातत्र को ही बचाना होगा। उन्होने तानाशाही की चुनौती चुनौती स्वीकार की और विरोधी दलो को सगठित कर प्रजातत्र की रक्षा हेतु सत्ता के हाथ बदले और आगे का कार्यक्रम दिया कि गाव-गाव और मौहल्ले-मौहल्ले मे लोक समितिया गठित की जाय और सत्ता पर नियत्रण कायम किया जाय व लोकशाही के

लक्ष्य की ओर बढा जाय । लेकिन जे. पी हमारे बीच नही रहे । हमने फिर दलो के गठबधन की सरकार से गाधी के रास्ते की अपेक्षा रखी । उसके परिणाम भी हमने देखे ।

आज देश और कुल दुनिया मे यह परिस्थितियां पैदा हुई हैं कि चन्द निहित स्वार्थी लोग एव अ तर्राष्ट्रीय मल्टीनेशनल कपनिया कुल दुनिया का सरकारो व समाज व्यवस्था पर हावी हैं । आज के राजनैतिक दल व सरकारें उनके हाथ की कठपुतली मात्र बनकर रह गये हैं । हमारे देश की भी यही परिस्थिति है । अब यह आशा रखना गलत है कि आज की दलगत सरकारें व विपक्षी दल देश को इस सकट से उबार सकेगें । आज के सकट के मुकाबला करने की शक्ति और नव समाज रचना की योजना और उसका कार्यक्रम यदि कोई दे सकता है, तो वह सर्वोदय की जमात ही है ।

पर दुर्भाग्य है कि हमारा नेतृत्व करने के लिये आज गाधी, विनोबा, जयप्रकाश जैसा कोई नेतृत्व नहीं हैं । हमने गण-नेतृत्व के विचार को स्वीकार किया है । हमने उज्जैन के सर्वोदय सम्मेलन मे प्रस्ताव पारित कर परिस्थिति परिवर्तन के विचार को भी मान्य किया है । लेकिन हम उसके अनुरूप एक कार्यक्रम बनाकर उस पर शक्ति लगाने को एकजुट नहीं हो पा रहे हैं ।

हमारी शक्ति आज विभिन्न कार्यो मे बटी है । कोई नशाबदी मे शक्ति लगा रहे हैं, कोई गोरक्षा में, कोई सपूर्ण क्राति क्षेत्रो के विकास मे, कोई खादी-ग्रामोद्योग मे, तो कोई सघन क्षेत्रो में, तो कोई सरकारी विकास योजनाओ के भ्रम मे फसे हैं ।

सर्व सेवा संघ-अधिवेशन

बीकानेर का यह एक ऐतिहासिक सम्मेलन है । यदि हमने एक राय होकर कोई कार्यक्रम नही बनाया, तो इतिहास हमे माफ नही करेगा । आज देश की परिस्थितिया जहा बहुत ही अधकार मे हैं, वहा आज सर्वोदय विचार के लिये बहुत बडी अनुकूलता भी है । आज कल, देश के लोग दलगत राजनीति व आज की व्यवस्था से निराश हैं । समूचा जन मानस परिवर्तन चाहता है । कोई विकल्प सूझ नही रहा है । यदि कोई विकल्प पेश किया जा सकता है तो गाधी विचार एव सर्वोदय की जमात के ही द्वारा पेश किया जा सकता है । आम जनता को भी सर्वोदय की जमात से ऐसी अपेक्षा है । ऐसे मे यदि बीकानेर के इस अधिवेशन मे हम एक राय होकर कार्यक्रम बनाकर सारी शक्ति लगाने का निर्णय ले पायें तो कुल दुनिया और देश को नई दिशा दे सकेंगे ।

हमने अतीत मे बडी भूलें की हैं, उसके परिणाम आज हम भोग रहे हैं । आज भूल सुधारने का मौका आया है । हमे अपनी भूल सुधारनी है और गण-नेतृत्व को सार्थक बनाना है । यदि हम यह कर सके तो बीकानेर का यह सम्मेलन ऐतिहासिक होगा । यदि हम ऐसा न कर सके तो इतिहास हमे दोषी करार देगा कि गाधी विचार तो महान एव युग की माग है लेकिन उसे कार्यान्वित करने वाली जमात . ।●

सर्वोदय सदन, गोगा गेट, बीकानेर

कुछ समय से विपक्षी नेता कांग्रेस का स्थान लेने के लिए एकजूट होने में प्रयत्नशील हो रहे हैं, पर सफलता की उम्मीद कम है।

आज की परिस्थिति मे कार्यक्रम क्या हो

☐ श्री विरदीचन्द चौधरी

आज हमारे देश की विषम परिस्थिति सरकार की गलत नीतियों व राजनैतिक नेताओ व पार्टियो मे अनैतिकता के प्रकोप के कारण हुई, उससे आम जनता न केवल असतुष्ट है, पर दु:खी भी है। उसको कोई ऐसा विकल्प नही मिला है, जिसकी ओर वह आगे बढ सके और अपनी समस्या मुलझा सके। समय-समय पर अपना रोष चुनावो मे किसी हद तक प्रकट करके ही संतोष मान लेती है। कुछ समय से विपक्षी नेता कांग्रेस का स्थान लेने के लिए एकजूट होने मे प्रयत्नशील हो रहे हैं, पर सफलता की उम्मीद कम है। अगर हो भी जायें तो मूल रूप से नीतियो मे कुछ खास परिवर्तन होगा, ऐसी आशा करना उचित नही लगता।

इन परिस्थितियो का विकल्प सर्व सेवा सघ को निकालना चाहिये, क्योकि उसकी स्थापना गाधीजी के सुझावानुसार और विनोबा जी के आदेशानुसार हुई थी किन्तु काग्रेस सरकार से तालमेल रखकर रचनात्मक कार्यों मे जो सरकारी सहायता के प्रलोभनवश खादी-ग्रामोद्योग व बुनियादी शिक्षा के कार्य मे साठ गाठ हो गयी थी और सरकार द्वारा स्थापित खादी ग्रामोद्योग कमीशन व बुनियादी शिक्षा के लिए स्थापित बोर्ड मे हमारे रचनात्मक नेताओं ने भाग लिया था, वह प्रयोग असफल रहा। आज कल ये सस्थाए केवल सरकारी सस्थाए बन चुकी हैं, भले ही उनमें खादीधारी लोग ले लिए गए है।

भूदान-ग्रामदान का महत्व

पू० विनोवा जी द्वारा भूदान आदोलन ने फिर से गांधी विचारधारा को प्रवाहित किया और राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने बोध गया सर्वोदय सम्मेलन मे अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा था कि **"देश अंधेरे में फस गया था, हमको इस आंदोलन ने रोशनी प्रदान की है"** और इस आदोलन के चलते हुए ग्रामदान, प्रान्तदान, श्री जयप्रकाश जी का जीवनदान, यलवाल कान्फ्रेन्स का सर्वसम्मत प्रस्ताव व डाकू आदि समस्याओ का हल अहिंसक तरीके से समर्पण आदि हुए, उससे तीव्रता महसूस हुई पर राजनैतिक कुतर्कों व स्वार्थी नेताओ ने गलतफहमियां फैला दी और आग-

स्वराज्य की ओर बढ़ते हुए कदम ढीले पड़ गए। पूज्य विनोबा जी भी इसको ईश्वरीय संकेत मानकर भूदान आंदोलन को कोल्ड स्टोरेज मे डाल कर चुप हो गए, किन्तु श्री जयप्रकाश बाबू की हृदयाग्नि इसको सहन नही कर सकी और उन्होने इस भ्रष्ट सरकार को फेंकने का संकल्प कर लिया। अपने आंदोलन को सपूर्ण क्रांति की सज्ञा दी। सर्व सेवा सघ के नेता भी इससे प्रभावित हो गए। बहुमत ने पूज्य विनोबा जी की सलाह का उल्लघन करते हुए श्री जे. पी. के आंदोलन को समर्थन देने का निर्णय लिया उसके दो ग्रुप बन हो गए जो आज तक विद्यमान हैं।

श्री जे पी. के बिहार आदोलन के फलस्वरूप एमरजेन्सी, गिरफ्तारियां, फिर इन्दिरा जी द्वारा चुनाव, उनकी हार आदि से हम सब परिचित हैं। उस लहर ने एक प्रकार की शांति का दर्शन दिया। उस चुनाव की जीत, गाधी समाधि के सम्मुख शपथ आदि से आशा हुई कि अब गाधी युग शुरू हो रहा है। मैने स्वय ने श्री जे. पी जब 1974 में हैदराबाद पधारे थे, तब पूछा था कि उन्होने राजनैतिक पार्टियो के जिस खिचड़ी ग्रुप को अपने सहयोग के लिए स्वीकार किया है, वह क्या उचित है, तब उन्होंने भी बडे मार्मिक शब्दो मे कहा था कि-आज देश मे राजनीतिक दलो के अलावा कोई अन्य सगठन नही है जिसका सहयोग ले सकें अत: मैं इनकी नीतियो को बदलने की कोशिश कर रहा हूं अन्यथा असफलता तो है ही और वही हुआ।

रचनात्मक कार्य की अवहेलना

इसके बाद जो कुछ हुआ, उसका जिक्र करने की जरूरत नही। हम सब परिचित हैं। जे पी. भी निराश हुए। भगवान ने उनको भी बुला लिया। यही पर मेरी समझ से सर्व सेवा सघ विचलित हो गया और फिर अपने उत्तरदायित्व का ख्याल किए बिना राजनैतिक परिवर्तन के लिए प्रचार आदोलन पर अधिक जोर देने में ही लगा रहा और रचनात्मक कार्य की अवहेलना शुरू कर दी। इस कारण सर्व सेवा सघ मे मेरे जैसे जो तटस्थ सहयोगी थे, उनका असतोष बढ़ता गया और सब सवा सघ से खिचते गये। आज जो उनके समर्थको व कार्यकर्ताओ की सख्या मे ह्रास हुआ है, उसको नजरअन्दाज करने से काम में सफलता नहीं मिलेगी।

खुशी की बात है कि अब यह बात इन आदोलन प्रेरित नेताओ मे कुछ सहमति ले आई है। हम आशा करें ऐसा कार्यक्रम स्वीकार करने मे सफल हो जाए, जिससे गाधी विचार-धारा के सब लोग एकजूट होकर देश की परिस्थिति को बदलने मे सहायक हो जायें। इस सम्बध मे मेरे निम्न सुझाव हैं :-

(1) राजनैतिक परिवर्तन की आवश्यकता को किसी प्रकार कम न समझकर इसका प्रचार रचनात्मक सेवा कार्यक्रम के साथ जोडा जाये न कि स्वतत्र। मुख्यतः हर हाथ को काम, हर पेट को रोटी मिल सके उन कार्यक्रमो पर पूरा जोर दिया जाये। इसी से विचारो की सफाई होगी और जनशक्ति का निर्माण होगा, जिससे जन आदोलनो की शक्ति बढेगी अन्यथा सर्वोदय का भी एक नया राजनैतिक ग्रुप बनने का खतरा पैदा हो गया है।

(2) हमारे कार्यक्रमो मे जन आधारित रहने को ही प्रमुख मानकर हमको जो भी स्थान व कार्य अनुकूल पडे, ग्रामस्वराज्य के उद्देश्यो की पूर्ति हेतु रचनात्मक सेवा के माध्यम से वहा बैठ जायें।

(3) हमारे सघ अधिवेशन व सर्वोदय समाज सम्मेलनो की अवधि क्रमश: एक वर्ष व तीन वर्ष कर दी जाए और इसके स्थान में जिल्लेवार, प्रान्तवार व क्षेत्रीय अधिवेशनो की सख्या बढाकर जनता से सीधा सम्पर्क स्थापित करने की योजनाए बनाई जाए और उनके साथ सर्व सेवा सघ कार्यकारिणी के पदाधिकारी भाग लेकर उनका मार्गदर्शन करें। जहा-जहा आवश्यकता लगे खासकर क्षेत्रीय सभाओ के साथ सघ की कार्यकारिणी सभा भी रख सकते हैं।

(4) देश मे अन्य गाधी विचारधारा की सस्थाओ जैसे गाधी निधि, गाधी शान्ति प्रतिष्ठान, गो सेवा सघ, आचार्य कुल व खादी सस्थाओ का पुन: सगठन किया जाय, जिससे हमारा सम्पर्क व पस्पर सहयोग बना रहे। इन सस्थाओं को भी व्याज व किराये की आमदनी से, चालू खर्च न लेकर जन सहयोग से धन एकत्रित करने की जिम्मेवारी लेनी चाहिए और सचित धन पूंजीगत खर्च के ही उपयोग मे लाना चाहिए।

(5) देश भर में सर्व सेवा संघ के मार्ग दर्शन से आश्र म नमूने की सस्थाएं बनें और गांव-गांव मे आजकी ज्वलन्त समस्याए उदाहरणार्थ -गौहत्याबंदी, शराबबन्दी व बुनियादी शिक्षा जैसे कार्यक्रम हाथ मे लिए जाएं।

(6) ऐसी सब सस्थाओ के सम्मेलन स्वतन्त्र रहते हुए भी एक लगातार निर्धारित समय और एक जगह बुलाने की प्रथा डाली जाए, इससे कार्यकर्ताओ का व्यक्तिगत सम्पर्क, समय व धन की बचत होगी। आज तो एक सार्वजनिक कार्यकर्ता का सारे वर्ष का समय इन सम्मेलनों मे भिन्न-भिन्न जगह व भिन्न-भिन्न समय रहने मे ही खप जाता है।

(7) आज की जो यात्राओ का आयोजन है, उसमे पर्याप्त समय हर स्थान पर देकर स्थानीय सगठन खडे किये जायें, जिससे फॉलो अप का कार्यक्रम चालू रह सकता है।

इन सुझावो के अलावा भी अन्य सुझावो का भी स्वागत किया जाए। आशा है सर्व सेवा सघ के वरिष्ठ नेता बीकानेर अधिवेशन मे इस पर ध्यान देंगे। ●

दोमलगुडा, हैदराबाद

जो अनुष्ठान आत्म-प्रशंसा, परनिंदा और असत्याचरण से हो रहा है, उसका प्रतिफल जनहित में भला कैसे होगा ?

राजनीति और लोकनीति

☐ श्री भगवानदास माहेश्वरी

राजनीति और लोकनीति को सही अर्थों में समझना है, तो हमें पीछे लौटकर महाभारत के तीन पात्रों पर नजर डालना विषय के स्पष्टीकरण के लिए अच्छा होगा। यद्यपि लोकनीति जैसा शब्द उस समय प्रचलित नही था, पर श्री वेदव्यासजी ने मामा शकुनि का चरित्र-चित्रण करते हुए जैसे आज की राजनीति को नगा करके रखा हो। धर्मराज युधिष्ठिर जो लोकनीति के पर्याय कहे जा सकते हैं, को मामा शकुनी बार-बार हराते हैं, उनका सर्वस्व अपहरण तक का उपक्रम होता है, और अंत में महाभारत की नौबत उपस्थित होकर लोकनीति की विजय होती है। राजनीति के प्रमुख पक्षधर दुःशासन द्वारा भरी सभा मे चीर-हरण और राज्याश्रित भीष्म-द्रोण का मौन, श्री व्यासजी ने राजनैतिक उच्छृंखलताओं का जो निरूपण किया है, कलम तोड़कर रख दी है। उधर लोकनीति की इतनी बड़ी साख को प्रमाणित किया जाना कि गुरु द्रोण ने उन समाचारो की पुष्टि राजा युधिष्ठर से ही चाही। लोकनीति और राजनीति का अंतर समझने के लिये महाभारत से उपयुक्त कोई ग्रन्थ नहीं हो सकता।

आज के राजनैतिक जीवन पर भी अब जरा नजर डालें, तो आपको यह समझते देर नहीं लगेगी कि जो अनुष्ठान आत्म-प्रशंसा, पर-निंदा और असत्याचरण से हो रहा है, उसका प्रतिफल जनहित में भला कैसे होगा ? शुद्ध साध्य के लिये साधन शुद्धि का आग्रह महात्मा गांधी करते रहे, जिन्हें नहीं मानकर हमने सस्ते सौदे किये। कहना नही होगा कि हमारी उसी कमजोरी का ही तो प्रतिफल आज की समस्याएँ है, जो पुनः महाभारत के लिये भूमिका बनाती हैं। हम उन समस्याओं में जो हूबहू दुर्योधनी राजनीति का प्रतिपादन करती है, का विश्लेषण यहां नही भी रखें

सर्वोदय को केवल एक राजनीतिक या आर्थिक दर्शन के रूप मे नहीं देखा जा सकता । वह समूह-जीवन के रूपातरण से सम्बन्ध रखता है । जब तक सर्वोदय कार्यकर्ताओं का जीवन और उनकी कार्य पद्धति मन से ऊपर उठकर सत्य, प्रेम और करुणा पर आधारित नहीं होती, जब तक वे उस भूमिका को अदा नहीं कर सकेंगे, जिसकी पूर्ति के लिए नियति उनका इन्तजार कर रही है ।

—विमला ठकार

तथापि कोई भी महाभारत का अन्त लोकनीति को परिष्कृत करेगा हमे नही लग रहा । अत: सत्य व अहिंसा की कसौटी पर प्रचलित राजनीति की पराजय की दिशा क्या हो, हमे अपनी मानसिकता सुस्पष्ट करनी है । हमारे काम मे लेखक, कवि, वक्ता, विचारक, पत्रकार याने साहित्यकार आदि की बहुत बडी सहायता हो सकती है, पर विचार के अनुसार आचार नही, कथनी से करनी का सम्बन्ध नही अत. उनकी कृतिया मनोरजन के सिवा निकम्मी हैं, राजनीतिज्ञो का अट्टहास बेमतलब नही है ।

गांधी-मार्ग अपरिहार्य

लेकिन जब राजनीति ने दशो-दिशाओ को प्रभावित कर रखा है और महाभारत को हम सस्ता सौदा मानते हैं, पुनः महात्मा गाधी की शरण हमे जाना पडेगा, जिन्होने स्वतत्रता सग्राम का नेतृत्व करते समय सत्य-अहिंसा का परिपालन मनसा, वाचा, कर्मणा करके शत्रु पक्ष को प्रथमत: नैतिक मात दी । महात्मा गाधी ने राजनीति का आत्म-चरित्र ही बदल देना चाहा । स्वराज्य के बाद जब वे नही रहे, सत्ता जिनके हाथ रही, की कमजोरी थी कि वे महात्मा गाधी द्वारा परिष्कृत राजनीति को आगे बढ़ाते । अत: जब गाधीजी मे आस्था रखने वालो ने राजनीति की गिरती साख को समझा उन्होने "लोकनीति" जैसा शब्द प्रचलित कर जन-मन को यह समझने की सहजता तो दी ही है कि कौन व्यक्ति किन विश्वासो का प्रतिपादक है ।

मानना होगा कि आज 'राजनीतिज्ञ' एक गाली हो गई है क्योकि वह दुश्चरित्र को प्रतिपादित करता है । लोकनीति के पक्षधर माने तटस्थ सज्जन शक्ति । जन-मानस के लिए इस अन्तर को समझना सामान्य बात नही है पर राजनीतिज्ञो का पलडा आज निश्चय ही भारी है, वे निर्लज्ज भी हैं, बुरे कामों के साझेदार कहलाने मे भी उन्हे गर्व है, क्योकि सत्ता-सपत्ति व साधन उनके पास हैं, जबकि लोकनीति वाले अल्पसख्यक वही नहीं हैं । लेकिन जो वातावरण है वह देशव्यापी तो है ही, जागतिक भी है । लोकनीति द्वारा लोक-विश्वास सपादन कर नैतिक पूंजी बना लेना वर्तमान राजनीति की निश्चित मात है । "युद्ध माहीं हारबे को प्रथम कारण आतुरी" हम अपने मार्ग पर आस्थापूर्वक चलना है । ●

जैसलमेर (राजस्थान)

—★—

प्रेम, करुणा, सत्य का अर्चन करो

□ श्री नित्यानन्द शर्मा

कौनसा सन्दर्भ अब अवशेष है ।
भेष है ना वेश है ना, देश है ।।

(१)

पेट ही बस, पेट है इन्सान का ।
चिन्ह तक भी है नहीं ईमान का ।।
आज, बदली सभ्यता का जोर है ।
आज उल्टी गिनतियों का दौर है ।।

आचरण कोई नहीं निज देखता—
भाषणों में लिप्त पर उपदेश है   कौनसा

(२)

सत्य पर सरकार का अधिकार है ।
भाषणों में शान्ति की भरमार है ।।
फाईलों में प्रेम रहता बन्द है ।
कुर्सियों पर हर तरफ जयचन्द है ।।

स्वावलम्बन के सुनहरे स्वप्न का
बच गया अब कौनसा सन्देश है   कौनसा

(३)

देश का गौरव रहा कुछ भी नहीं ।
संस्कारों में बचा कुछ भी नहीं ।
हर तरफ है, लोभ की परछाईयाँ ।
पड चुकी है चेतना में झाईयाँ ।।

अर्थ, तृष्णा, और पद की होड में—
क्लेश, कुंठा, द्वेष का परिवेश है ·····कौनसा

(४)

हर तरफ विकसित दमन की राह है।
हर प्रताडित को प्रलय की चाह है॥
क्या करे कोई, किसी से कामना।
है स्वयं को ही कठिन पहिचानना॥

क्या करोगे न्याय को अब ढूंढ कर—
आज की फरियाद भी निस्तेज है ·····कौनसा

(५)

चाहते हो, तोडना इस जाल को।
देखना, उन्नत स्वयं के भाल को॥
प्रेम, करुणा सत्य का अर्चन करो।
क्रान्ति को निज स्वच्छ मन अर्पण करो॥

हैं कठिन, पर है असम्भव कुछ नहीं
सिर्फ वर्जित क्रान्ति मे आवेश है ···कौनसा

आनन्द-भवन जयलाल मुंशी मार्ग,
जयपुर–30 2001

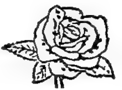

समाज के अन्य किसी भी वर्ग के मुका-
बले किसान वर्ग मे परस्परावलंबन की
भूमिका होना ज्यादा जरूरी है ।

वर्ग–संगठन : अधिकार और दायित्व

☐ श्री पूर्णचन्द्र जैन

मानव ही सिर्फ ऐसा एक प्राणी है–जिसमे समुदाय सस्था बन गई है । कीडी से कुजर तक छोटे-मोटे–बडे प्राणियो मे समूह बनकर रहना तो पाया जायेगा । लेकिन जाति, धार्मिक मान्यता, वर्ग, पेशे वगैरह के आधार पर समुदाय सगठित करना, उसकी आचार मर्यादाए स्थिर कर लेना, व्यक्ति-परिवार-समष्टि की बारीकियो मे जाना, मात्र मानव की बुद्धि का करिश्मा है ।

कहने को कहा जा सकता है और वह ठीक भी शायद होगा कि बदर, हाथी, गीदड, कबूतर, कव्वे, भेडिये, चीटी, मधुमक्खी आदि मे भी समूह-जीवन का एक स्वरूप दिखाई देता है ।

इस की चर्चा मे यहा नही पडना है । इतना सकेत काफी होगा कि समूह और समुदाय मे भारी अन्तर है । एक ही जाति के पशु, पक्षी, कीट-पतगे आदि प्राणी एक क्षत्र मे अक्सर कुछ समय इकट्ठा हो जाते हैं, साथ कूद–फाद करते, यहा तक कि अपने मे से एक नर, मादा, या बच्चे के मरने पर, शोक-सा मनाते देखे जा सकते हैं । भेडिये तो सूनी रात मे समूह-गीत ही एक तरह गाते हैं । लेकिन यह समूह-मात्र है समुदाय, सगठन, सस्था नही ।

मानव जाति मे भी लोगो की भीड, और लोगो के समाज, उनके सगठन, उनकी सस्था के अन्तर को तो सब ही देखते, जानते, समझते हैं ।

मानव है कि उसमे व्यक्ति का महत्व है, चाहे वह किसी जाति, धर्म व क्षत्र का हो । वही उसमें व्यक्ति के साथ उसकी समष्टि का, उसके छोटे–बडे समुदाय या सगठित समाज का भी अस्तित्व है जो अपना महत्व रखता है । एक के कारण, व्यक्ति व समष्टि दोनो में से किसी दूसरे को नकारा नही जा सकता ।

मानव एक सांस्कृतिक प्राणी

इस भूमिका के साथ और इस पृष्ठ भूमि मे जो वर्ग सगठन आज तक बने, या आज बन रहे हैं तथा भविष्य मे भी बनते-बिगडते रहेगे उनके अधिकार और दायित्वो के बारे मे यहा कुछ कहना है ।

जैसा कि ऊपर कहा गया, तन्त्र-विशेष मे, गाव-नगर-महानगर मे, एक व्यक्ति का अपना महत्व है। उसके कुछ अधिकार, कुछ दायित्व, उसके छोटे-से परिवार मे ही नही, अच्छे वडे समाज या समुदाय मे घोषित-अघोषित, किन्तु स्थिर से, हाते हैं। वे कुछ काल मे और कुछ अवधि तक मान्य तथा न्याय-सगत हो जाते हैं। फिर क्षेत्र के अलावा जाति, धर्म, लिंग पेश आदि पर आधारित समाजो का दायरा होता है। वहा भी व्यक्ति व्यक्ति और समाज-समाज मे परस्पर व्यवहार के अन्तर्गत कुछ दायित्व तथा अधिकार हाते हैं।

राजशाही या एकतन्त्र, तथा लोकशाही व लोकतन्त्र मे, दायित्व और अधिकार के आयाम, स्वरूप, मूल्य अच्छाई बुराई के मापदण्ड काफी अलग-अलग या भिन्नता लिये हुए होते हैं। उनमे बडा अन्तर हाता है। एक ओर व्यक्ति और दूसरी तरफ उत्तरदायी समाज दोनो मे भी, अधिकारो को लेकर, अक्सर द्वन्द्व, विरोध, सघर्ष परस्पर खडा हो जाता है। एक व्यक्ति या एक समाज-विशेष अपने हित और अधिकार को दूसरे व्यक्ति या दूसरे छोटे-बडे समाज के हितो-अधिकारो के मुकाबले मे, अधिक महत्त्व देता है, दूसरे के हितो को प्रतिद्वन्द्वी मान लेता है। ऐसे मे दोनो एक दूसरे का नष्ट करने मे ही परस्पर की समस्या का हल मान लेते है।

लेकिन "मानव मानव एक समाना" की भावना-युक्त व्यापक समुदाय, समाज जब मानने लगा है और आध्यात्मिक-वैज्ञानिक-सामाजिक (एक शब्द मे "सास्कृतिक") विकास के कारण, व्यक्ति तथा समुदाय का जीवनादर्श "वसुधैव कुटुम्बकम्" जब उभरने लगा है तब किन्ही भी व्यक्तियो, उनके समाजो के कैसे भी सगठनो की प्रतिद्वन्द्विता और विरोध की भूमिका को छोडकर परस्पर सहयोग तथा पूरक की भूमिका पर आना होगा, मौजूदा आत्मघाती दृष्टि छोड परस्परजीवी आस्था और अवस्था लाने को कटिबद्ध हाना होगा।

यह तथाकथित धर्म के नाम पर बने हुए सगठनो, समुदायो के लिए जितना आवश्यक है उतना ही मालिक-मजदूर, जमीदार-किसान, वगैरह वर्ग-सघर्ष व वर्ग-भेद के आधार पर बने सगठनो समाजो के लिए भी वह परिवर्तन आज आवश्यक तथा आने वाले कल के लिए अनिवार्य हो गया है।

अधिकार और कर्तव्य का निर्वाह

इसके लिए व्यक्ति की भाति वर्ग-सगठन को अधिकारो के प्रति जागरूक होने के साथ अपने कर्तव्य, अपने दायित्व के पालन के लिए भी सजग और तत्पर होना चाहिये, होना होगा। आज चाहे मालिक-मजदूर व्यापारी-उपभोक्ता आदि सस्थाओ को देखें अथवा शिक्षक-शिक्षार्थी सगठनो को भूस्वामी-बधुआ मजदूर सगठन आदि को, यह सब मानवता और समाज-जीवन को विकसित करने की एवज उसे विकृत करने वाले और एक-दूसरे के लिए मारक सिद्ध हो रहे हैं।

व्यापारियो या उद्योगपतियों के सगठन को ले। बडे-से-बड इस वर्ग के अधिकाश व्यक्ति और सगठन, टैक्स की छूट, पूजी की सहायता, बचत का बडा भाग अपने लिए लिए सुरक्षित रखने या अपने मे ही बाट लेने,

उनका माल न बिके तो उसके निर्यात की छूट, वगैरह का अधिकार व सुविधाएं प्राप्त करने का उचित-अनुचित दावा समाज से, नाम की लोकतांत्रिक लेकिन अधिकतर अनुत्तरदायी सरकार से, करते रहते हैं। स्वय को तथा समाज व सरकार को भ्रष्टाचार व शोषण के रास्ते ले जाते हैं। लेकिन यह संगठन या उनके सदस्य, मिलावट, चोरबाजारी, जमाखोरी, टैक्सचोरी, वगैरह करते है तो उसकी रोकथाम इनके दोषी व्यक्तियो को स्वय दण्डित करने, वैसा आन्तरिक अनुशासन व अकुश कायम करने का दायित्व नही निभाते, आवश्यक व्यवहार-शुद्धि व्यापारिक स्वच्छता और आचार-मर्यादा का मार्ग अपनाना अपना कर्त्तव्य नही मानते। सगठन मे नियम कुछ बने भी हो तो उन्हे अमल मे नही लाते। विपरीत इसके दोषी व्यक्ति को गलत तरीके से बचाने की कोशिश करते हैं, अपराध या दोष पकडने वाले व्यक्ति को निंदित करते, यहा तक कि उसकी हत्या तक कर डालते हैं।

. मजदूरो के सगठन वेतन व पारिश्रमिक की वृद्धि, चिकित्सा-मकान-अवकाश-भत्ते की सुविधाए प्राप्त करने, वैसी माग बराबर बढाते जाने का अहिंसक-हिंसक आन्दोलन करने को तत्पर हो जाते हैं, चाहे राष्ट्र के सामान्य नागरिक के मुकाबले उन्हे काफी ऊचा पारिश्रमिक, पुरस्कार, वेतन मिलता हो। मजदूर सगठन का सदस्य शराब-जुआ-व्यभिचार-सट्टा मे फिजूल खर्ची करता, कमाई का दुरुपयोग उससे होता है, तो सगठन के आन्तरिक अनुशासन से, समझाइश से, उसे गलत राह से हटाने का प्रयत्न तक नही होता। अधिकारो का आग्रह और कर्त्तव्य के प्रति उदासीनता के परिणामस्वरूप व्यक्ति-सदस्य और संगठन दोनो बिगड़ते तथा व्यापक समाज ही विपन्न होता जाता हैं।

विद्यार्थी सगठन सिनेमा, रेल-बस यात्रा आदि मे रियायतें चाहते हैं जब-तब छुट्टियो की माग करते हैं, छात्र-वृत्तिया पाने की कोशिश करते हैं, अध्यापक-आचार्यो को कोसते हैं, लेकिन अपने सदस्यो को सच्चरित्र, परिश्रमी समाज सेवी, कर्तव्य परायण, बनाने की ओर ध्यान तक नही देते। लडकियो से छेड-छाड, सिनेमाघरो तथा रेलयात्रा मे तोड-फोड वगैरह के लिए दोषी छात्र-सदस्यो को सुधारने, दण्डित करने, की अपनी कोई जिम्मेदारी या जरूरत नही समझते। शिक्षक और शिक्षार्थी सगठनो को तो ऐसी पद्धति अपनानी और हिम्मत करके कहना चाहिये कि हमारे दोषी साथियो को पुलिस, प्रिंसिपल, वगैरह के पास ले जाने की आवश्यकता नही, हमारे आन्तरिक अनुशासन द्वारा हम इन्हे सभालेंगे, सुधारेंगे।

किसान संगठन

किसान वर्ग के सगठन बनें। अपने हित और अधिकार के लिए वे जागृत, सगठित, सक्रिय हो। जमीन पर जिस प्रकार उन्हे खून-पसीना बहाना पडता है उसका उचित मुआवजा, पारिश्रमिक उन्हे मिलना ही चाहिए। वे अपना अन्य वर्गो की तरह काम बंदी या हडताल भी नही कर सकते क्योंकि गाव-समाज के अलावा उनकी अपनी रोजी-रोटी, पशु-पालना व रक्षा, उनकी दिन-प्रतिदिन की मेहनत पर ही निर्भर है। कोई निश्चित पगार या निर्धारित वेतन उन्हे नही मिलता। किसान वर्ग को समझना होगा कि, अन्न आदि आवश्यक वस्तुओ के उत्पादन होने, एक तरह

समाज के "प्राथमिक अन्नदाता" होने, के कारण वे समाज के प्रति अधिक उत्तरदायी है। अन्य मजदूर, विद्यार्थी वगैरह वर्ग की भांति किसान वर्ग के लिए खेती का काम बद रखने हडताल करने, का कदम उठाना अधिक समय तक व्यावहारिक और सभव नही होगा। समाज उसे बर्दाश्त नही करेगा। उसकी सहानुभूति वे खो दगे।

किसानो का सगठन यह माग करने का अधिकारी है कि उनकी उपज का पूरा मूल्य उन्हे समाज से मिले। समाज उदासीन हो या उपेक्षाय करने वाला हो तो सरकार अपने कानून से, अपनी व्यवस्था से उसकी पूर्ति कराये। लेकिन किसान सगठन को भी यह देखना होगा कि राष्ट्र की या अपने परिवार के साथ, पडौस व चारो ओर के अपने ग्राम–समाज समूह की, अन्न वगैरह प्राथमिक आवश्यकता की, खाद्य पदार्थ की पूर्ति लायक उत्पादन प्रथमत वह करता है या नहीं। घन के लोभ मे अफीम, तम्बाकू, मिर्च-मसाले वगैरह विलास और भोगो की चीजें पैदा करने मे ही तो नही लगा है। ऐसा करता है तो किसान के द्वारा स्वय को और समाज को गिराने वाला, व्यसनी बनानेवाला काम ही उसका होगा। किसान सगठन स्वय इसे रोकें अन्यथा व्यापक समाज से उस सगठन के सघर्ष की स्थिति बनेगी।

जा खेती करना नहीं जानता उसके पास जमीन न रहे, प्रथमत बेजमीन किसान को तथा फिर कम भूमिवाले को वह मिले, यह माग करने का, ऐसी स्थिति बदलने के लिए तीव्र आन्दोलन करने का, किसान वर्ग को अधिकार है। लेकिन कुछ किसान बहुत अधिक जमीन अपने पास रखे अथवा कुछ किसान परिवारो ने खेती का घन्धा ही छोड दिया हो, दूसरे काम अपना अपना लिये हो तब भी अनुत्पादक वर्ग की तरह जमीन के मालिक बने रहे यह स्थिति किसान सगठन को स्वय सुधारनी चाहिए। खेतीहर मजदूर को पूरी मजदूरी मिले, और वह शोषण का शिकार न बना रहे यह किसान वर्ग के सगठन का दायित्व होना चाहिए। ग्रामदान कार्यक्रम ने जमीन की मिलकियत वगैरह की विषमता को मिटाने का क्रान्तिपूर्ण विचार और हथियार किसान वर्ग और सबधित वहा के समाज को दे दिया है। यह न अपना कर किसान वर्ग भी सघर्ष और हिंसा का गलत रास्ता अपनायें, सरकार की तरफ देखता रहे, परमुखापेक्षी बने, सकीर्ण दिशाहीन राजनैतिक दलो को चपेट मे आये, अपने को और समाज को परेशानी मे डाले, इस अवांछनीय स्थिति को बदलने की ओर किसान सगठन को देखना चाहिए।

परस्परावलंबन जरूरी

समाज के अन्य किसी भी वर्ग के मुकाबले किसान वर्ग मे परस्परावलबन की भूमिका होना ज्यादा जरूरी है। यह व्यक्ति और समाज के वर्ग सगठनो मे अधिकार के साथ कर्त्तव्य बोघ की भावना से ही सभव है। लोकतन्त्र मे इसकी ओर अधिक आवश्यकता है। ●

टुकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर-3

सर्वोदय आन्दोलन को नई करवट लेने का साहस करना होगा। समाज परिवर्तन के लिए अहिंसक शक्तियो को जोडकर सम्पूर्ण-क्रांति मे नियोजित करना होगा।

राष्ट्रीय परिस्थिति और सर्वोदय आन्दोलन

☐ श्री त्रिलोकचन्द जैन

आगामी २५ से २७ अगस्त, ८८ तक बीकानेर (राजस्थान) मे सर्व सेवा सघ का अर्द्ध वार्षिक अधिवेशन होने जा रहा है। प्रदेश के सर्वोदय नेता श्री गोकुलभाई भट्ट के स्वर्गस्थ होने के पश्चात पहली बार देश के प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ता राजस्थान मे एकत्रित होगे। सव सेवा सघ राष्ट्र के सर्वोदय विचार एव आन्दोलन को समर्पित लोक सेवको का सगठन है। जो गत चालीस वर्षो से महात्मा गाधी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय समाज रचना के लिए कार्यरत है। एक ऐसी समाज रचना जिसमे न आर्थिक शोषण हो, न सामाजिक अन्याय हो, न जातिगत एव साम्प्रदायिक विभेद हो, न वर्ग-सघर्ष हो, आर्थिक एव राजनीति सत्ताओ का केन्द्रीकरण न हो, न विषमता हो। बल्कि समाज मे समता हो, स्वतन्त्रता हो, विकेन्द्रित आर्थिक, सामाजिक एव शासन व्यवस्था हो। समाज पारस्परिक सहयोग एव भाई-चारे पर आधारित हो, जिसकी बुनियाद सत्य एव अहिंसा पर स्थिर हो।

संकट गहराने लगा है

लेकिन जब भी देश की परिस्थितियो का आकलन करते हैं, तो जिस व्यवस्था मे हम रह रहे हैं, अपने को एक अजीब परिस्थिति एव दुविधा मे पाते हैं। ऐसा लगता है कि एक ओर सर्वोदय आन्दोलन खडा है, दूसरी ओर सारी समाज-व्यवस्था अन्धेरी गली में भटक गई है और समाज में सकट भीषण रूप से गहराता जा रहा है। एक नई सस्कृति–उपभोगवादी सस्कृति–राष्ट्र के जन जीवन पर हावी होती जा रही है। ग्राम स्वराज की कल्पना सूखती जा रही है। अहिंसक समाज रचना की बात सोची थी। हिंसा एव आतकवाद का प्रसार होता जा रहा है। सच्चाई एव ईमानदारी के स्थान पर समाज मे भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, काला बाजारी का आधिपत्य जमता जा रहा है। इनसे निकलने वाली व्यवस्था एव मूल्यो को मान्यता मिलती जा रही है। नैतिकता के मानदण्डो की महत्ता समाप्त प्राय है। समाज मे अनुशासनहीनता एव अराजकता फैलती जा रही है। सामाजिक व्यवस्थाए टूट रही हैं। योजनाबद्ध आर्थिक विकास के कार्यक्रमो ने विषमताओ

एव गरीबी को बढावा दिया है। शोषण के चक्र को तेज किया है। बेरोजगारी एव महगाई निरन्तर बढती जा रही है। अर्थ-व्यवस्था एव आर्थिक स्रोत सिमट कर मुट्ठी भर उदयोगपतियो एव बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के हाथो मे खिसक गए है तथा उनकी पकड उत्तरोत्तर मजबूत होती जा रही है। ग्रामीण क्षत्रो मे गरीब के हाथ मे जो भी था, वह खिसकता जा रहा है। वह अपने श्रम की बिक्री के लिए बाजार मे कतार लगाए खडा है। मानव श्रम भी मण्डी मे सौदे की वस्तु बन गया है। जमीन छोटे छोटे किसानो के हाथ से निकलती जा रही है। ग्रामीण धन्धे समाप्त होते जा रहे है। ग्रामीण विकास के कार्यक्रम भ्रष्टाचार एव राजनैतिक निहित स्वार्थ के दुश्चक्र मे फसकर निष्फल हो रहे हैं।

दश की राजनैतिक परिस्थितिया भी विकट होती जा रही हैं। लोकतन्त्र की मजबूती के लिए जहा सत्ता का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए था। मतदाता एव प्रतिनिधियो की हैसियत बढनी चाहिए थी। वहा सत्ता एक व्यक्ति के हाथ मे केन्द्रित हो गई है। लोक-तन्त्र की ओट मे तानाशाही पनप रही है। राजनीतिक दलो मे व्यक्तिवाद, वशवाद एव जातिवाद के नए समीकरण बन रहे हैं। काला धन, भ्रष्टाचार, एव आतकवाद ने चुनाव की सार्थकता एव जनतान्त्रिक व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। लोकतान्त्रिक सस्थाए, न्याय-पालिका, राष्ट्रपति राज्य-पालो ससद, विधान-सभाओ तथा चुनाव आयोग सबकी विश्वसनीयता एव उपादयता का अवमूल्यन होता जा रहा है। ये सस्थान अपनी गरिमा खाते जा रहे हैं। नागरिक स्वतन्त्रता की सवैधानिक व्यवस्था अर्थहीन हो गयी है।

गंभीर सकट उपस्थित

नागरिक अपने बुनियादी अधिकार ही खो चुका है। वह तो बेचारा एव निरीह हो गया है। प्रस की स्वतन्त्रता पर क्रूर प्रहार हो रहा है। पत्रकारो की हत्याए एव अपहरण हो रहे हैं। दुनिया का सबसे बडा जनतान्त्रिक देश तानाशाही, अफसरशाही, पुलिसशाही एव फौजशाही मे बदल रहा है। नागरिको का सम्मान घट रहा है। और इनका रुतबा बढ रहा है। तत्र फूलता जा रहा है और लोक सूखता जा रहा है।

शासन मे अत्यधिक केन्द्रीयकरण की वृत्ति बढती जा रही है। जो दश को विखण्डन की प्रक्रिया की ओर धकेल रही है। उग्रवादी, आतकवादी एव विघटन-कारी शक्तियाँ पनप रही है। जिन्होने देश के सम्मुख पुन गम्भीर सकट खडा कर दिया है।

सामाजिक मोर्चे पर भी राष्ट्र मे हिंसा, लूटपाट एव अनाचार का साम्राज्य छाया हुआ है। हरिजनो पिछडी जाति के लोगो महिलाओ पर आए दिन अत्याचार हो रहे हैं। समाज जातियो एव सम्प्रदायो मे विभा-जित हो हिंसक एव आक्रामक होता जा रहा है। गरीब लोग दमन की चक्की मे बेरहमी से पिस रहे हैं। महिलाओ पर खुले आम अत्याचार हो रहे हैं। उन्हे जलाया जा रहा है। आत्महत्या के लिए मजबूर किया जा रहा है। शराबखोरी अनैतिकता एव अनाचार बढ रहे है। पैट्रोल एव डीजल के लिए गौ-वश को नष्ट किया जा रहा है। किसानो की खेती एव जीवन के आधार को

तोड़ा जा रहा है। पुलिस के अत्याचार बढ़ रहे हैं। तस्करी एव दादागिरी बढ रही है। बाजारू सस्कृति पनप रही है। भौतिकवादी सभ्यता परिवारो को तोड रही है।

आज की विकट समस्याओ एव विस्फोटक परिस्थिति के निराकरण के प्रसग मे क्या सर्वोदय आन्दोलन यह अनुभव नही कर पा रहा है कि कही उसके कार्यक्रम की व्यूहरचना मे कमी तो नही रह गई है। कोई चूक तो नही हो गई है। गाधी ने सर्वोदय समाज रचना का विचार दिया। इसके लिए कार्यक्रम दिए। आजादी के बाद विनोबाजी ने भूदान-ग्रामदान से ग्राम-स्वराज आदोलन द्वारा उसको माजा, कई आयाम जोडे और उसका उदात्त स्वरूप प्रकट किया। रचनाकाल मे अहिंसक प्रक्रिया की प्रतिष्ठा जमाई। विचार एव दर्शन का सर्वागीणता प्रदान की। उसका विकास किया। ग्रामदान से ग्राम स्वराज का एक सागोपाग कार्यक्रम सामने आया। विनोबाजी ने सारे देश मे पैदल घूम-घूमकर समग्र क्राति की अलख जगाई। विचार ने जन मानस को स्पर्श किया। जिसने जनता मे एक नई सामाजिक व्यवस्था की आकाक्षा जगाई। जिससे लोकमानस आन्दोलित हुआ। लेकिन परिस्थितियो को बदला नही जा सका।

संपूर्ण क्राति का आह्वान

जे पी की सम्पूर्ण क्राति के आह्वान ने सर्वोदय आदोलन को नयी ऊर्जा दी। किन्तु उस समय आपातकालीन परिस्थितियो मे लोकतन्त्र को कायम रखने की बडी चुनौती सामने खडी हो गई। इसलिए शक्ति उसमे लग गई। विनोबा भूदान-ग्रामदान आदोलन के द्वारा अहिंसा की ऐसी प्रखर लोकशक्ति प्रकट करना चाहते थे, जिसके प्रवाह से व्यवस्थाए नीचे से स्वत बदलती चली जाए। उन्होने लोक सेवको मे यह धारणा जमा दी कि क्राति न कानून से होगी न हिंसा से। फ्रास रूस एव चीन की क्राति ने नव समाज व्यवस्था का दर्शन प्रस्तुत किया। पहले हिंसक क्राति द्वारा शासन व्यवस्था बदली और फिर समाज व्यवस्था। लेकिन विनोबा ने विचार परिवर्तन की अहिंसक प्रक्रिया द्वारा पहिले समाज व्यवस्था को बदलने का आदोलन चलाया। ताकि परिवर्तन का अभिक्रम जनता के हाथ मे रहे। उसी के अभिक्रम से व्यवस्थाए नया स्वरूप लेती चली जाए। समाज की बुनियाद से अद्भुत क्राति का प्रवाह शासन निरपेक्ष समाज व्यवस्था स्थापित करेगा। जिसको साम्यवादी राज्य विहीन समाज व्यवस्था कहते हैं। इस कारण लोक सेवको की प्रतिज्ञाओ मे शासन निरपेक्षता का तत्व दाखिल हो गया। आज इस परिधि को तोडना लक्ष्मण रेखा को लाघने जैसा दुष्कर कार्य हो गया।

विगत तीस वर्षो से यह सस्कार दृढ हो गया। इस कारण शासन व्यवस्था का परिवर्तन सर्वोदय आदोलन की दृष्टि से ओझल हो गया। जबकि शासन की समाज पर पकड उत्तरोत्तर कडी होती गई। जिसके परिणाम स्वरूप समाज शासन सापेक्ष बनता गया। सर्वोदय आदोलन की व्यूह रचना में यह भूल हो गई कि वह शासन व्यवस्था को बदलने के प्रति निरपेक्ष रह गया। इसलिए लोक चेतना की मुख्यधारा नही बन सका।

जब हम लोकतान्त्रिक समाज व्यवस्था मे रहते हैं। राष्ट्र ने उस जीवन पद्धति को स्वीकार किया है। अहिंसक समाज रचना मे

सामाजिक व्यवस्थाए लोकतान्त्रिक स्वरूप से भिन्न नही हो सकती । क्योकि लोकमत की चेतना से शान्ति पूर्वक परिवर्तन लोकतान्त्रिक पद्धति से ही सम्भव है । हिंसक क्राति मे श्रद्धा रखने वाले हमारे देश के साम्यवादी विचार-धारा ने भी लोकतान्त्रिक पद्धति से समाज परिवर्तन की प्रक्रिया को मान्य किया है । लेकिन सर्वोदय विचारधारा न लोकतान्त्रिक तरीके से शासन-व्यवस्था को बदलना गैर-जरूरी माना । इसी कारण सर्वोदय ग्रादोलन व्यवस्थाग्रो के परिवर्तन मे ग्रप्रभावी सिद्ध हो रहा है । इसलिए शासन परिवर्तन की बात कहते हुए सकोच होता है । क्योकि वह सत्ता की राजनीति हो जाती है जिससे उसको 'ग्रलर्जी' है ।

ग्रसहयोग ग्रौर सत्याग्रह

महात्मा गाधी ने ग्रसहयोग एव सत्याग्रह द्वारा ग्रन्याय के प्रतिकार एव समाज परिवर्तन के दो शस्त्र दिए थे ग्रौर जिसके बल पर राष्ट्र की स्वाधीनता प्राप्त की थी तथा राष्ट्र मे राजनैतिक परिवर्तन सभव हुग्रा । वे निरु-पयोगी हो गए। इस कारण सर्वोदय ग्रादोलन व्यवस्था परिवर्तन का ग्रादोलन नही बन सका । सर्वोदय ग्रान्दोलन के पक्षातीत रूभान ने उसे देश की समस्याग्रों के प्रति भी तटस्थ बना दिया । समस्याग्रों के टकराव से बचने की वृति बना दी । हिंसक सघर्ष के भय ने जनता से सीधे सम्पर्क मे ग्रवरोध खडा कर दिया ।

सर्वोदय ग्रादोलन मे लगे हुए लोक सेवक यह क्यो नही समझ पा रहे हैं कि लोकतान्त्रिक समाज व्यवस्था मे परिवर्तन के ग्रौजार उसकी लोकतान्त्रिक सस्थाग्रो को ही बनाना होगा । क्योकि लोकतन्त्र मे कानून का शासन होता है । जो जन प्रतिनिधियो की स्वीकृति से बनते हैं । लोकतन्त्र मे कोई भी शान्तिपूर्ण ग्रादो-लन तब तक परिवर्तन की प्रक्रिया को सिद्ध नही कर सकता, जब तक कि वह विधान सभाग्रो एव ससद मे कानून बदलने एव बनाने की शक्ति नही प्राप्त कर लेता है । जब तक ग्रादोलन के उद्देश्यों मे विश्वास रखने वाले लोकमत का प्रतिनिधित्व ससद मे नही हो पायेगा । इस राजनीतिक प्रक्रिया को ग्रपनाना होगा । जिन्हे चाहे मतदाता मण्डल कहे या ग्राम स्वराज समिति कहे । चाहे इसे लोकनीति की राजनीति कहे । किन्तु सत्ता की राजनीति से निरपेक्ष रहकर लोकतन्त्र मे व्यवस्था परिवर्तन सभव नही हो सकेगा । यह तीस वर्ष का ग्रनुभव साफ जाहिर करता है सर्वोदय ग्रादोलन को ग्रब छुई-मुई की मानसिक स्थिति से मुक्त होना होगा । भाले से बाटिया सेकने की तकनीक को छोडकर सीधे ग्राच मे हाथ जलाने की प्रक्रिया ग्रपनानी होगी । इसकी रणनीति तैयार करनी होगी ।

इस सन्दर्भ मे सर्व सेवा सघ के चित्रकूट-सम्मेलन मे पारित प्रस्ताव को पुन दोहराना होगा । उसे बदली हुई परिस्थितियो के ग्रनु-कूल एव प्रासगिक बनाना होगा । सर्वोदय ग्रादोलन को ग्राज की परिस्थितियो से निपटने के लिए ग्रसहयोग एव सत्याग्रह का मार्ग पुन पकडना होगा । सर्वोदय ग्रादोलन को सम्पूर्ण क्राति के लिए नई व्यूह रचना कर जन चेतना जगाने तथा जन शक्ति सगठित करने के कार्यक्रम हाथ मे लेने होगे ।

राजनैतिक कार्यक्रम का प्रश्न

ग्राज ग्राम ग्राम एव पचायत स्तर तक ग्रन्यान्य शक्तिया भी सक्रिय हैं । निहित स्वार्थ

तथा कालेधन, शराबखोरी एव दादागिरी की हिंसक शक्तिया अपना प्रभाव क्षेत्र बढाती जा रही हैं। राजनैतिक दलो की पहु च भी ग्रामो तक हैं। क्योकि पचायतो के चुनावो तक मे पच, सरपच अप्रत्यक्ष रूप से दल के सदस्य या समर्थित व्यक्ति होते हैं। इसलिए सर्वोदय विचार मे निष्ठा रखने वालो का भी सगठन ग्राम-स्वराज या 'स्वराज सगम' के नाम से खडा करना ही बेहतर होगा। उसमे ही ऐसे लोक सेवक प्रेरक शक्ति का काम कर सकते हैं, जो गाधी विचार के मूल्यो की रक्षा के लिए सीधे सत्ता की राजनीति मे न उलझें। तब ही आज की राजनीति, समाजनीति एव अर्थनीति को नई दिशा दी जा सकेगी। **किन्तु सर्वोदय (गांधी) विचार का अब राजनीतिक स्वरूप प्रकट करना होगा। राज-नीति से परहेज करने की वृत्ति छोड़नी होगी। परिधि पर बैठे रहने से आज की परिस्थितियां नहीं बदली जा सकेंगी। क्योंकि शासन की नीतियों का विस्तार घर के चूल्हे तक पहुंच गया है। इसलिए व्यवस्था परि-वर्तन का माध्यम भी सवैधानिक ढांचे में ढू ढना होगा। तब ही इस ढाचे को भी बदला जा सकेगा।**

गाधी जी ने राजनीति से परहेज नही किया था। बल्कि अपनी सत्य की खोज की तपन से उसे शुद्ध किया था। वे सत्ता की राजनीति को शेष राजनीति से अलग नही मानते थे। न वे उसे अनैतिक मानते थे। कोई भी क्रांति-कारी ऐसा नहीं मान सकता। उनकी मान्यता थी कि भौतिकवादी समाज मे जब राज्य-व्यवस्था आत्म विहीन राजनीति को प्रोत्साहन देती है तो प्रशासनिक सस्थाए नीति विहीन सत्ता का केन्द्र बन जाती हैं। इसलिए उन्होने सारे राजनैतिक स्वरूप को सत्य एवं अहिंसा का आधार देने का प्रयत्न किया। इसीलिए साधनो की शुद्धि पर जोर दिया। सत्ताओ के विकेन्द्रीकरण की बात कही तथा अन्याय के प्रतिकार के लिए सत्याग्रह का शालीन मार्ग सुझाया।

अहिंसात्मक आंदोलन

गाधी जी ने बडी सख्ती से चेतावनी दी थी कि स्वशासन एव स्वायत्तता के अधिकार मागने से नही मिलेंगे। न सत्ता मे स्थित विशिष्ठ वर्ग उपहार स्वरूप देगा। जनता को ग्राम-स्वराज के लिए अहिंसात्मक आन्दोलन का रास्ता अपनाना होगा। अपने देश के प्रभावशाली उच्चवर्ग की सामाजिक, आर्थिक संकल्पनाओ एव व्यवस्थाओ को बदलने के लिए नए सिरे से प्रबल सघर्ष करना होगा। इसके लिए सर्व सेवा सघ को बिना परहेज के अपनी मान्यताओ के अनुरूप समाज व्यवस्था लाने एव आज की शोषण एव अन्याय मूलक अलोकतान्त्रिक व्यवस्थाओ को बदलने के लिए सत्याग्रह की शक्ति का आव्हान करना होगा। उसकी साधना करनी होगी।

इसलिए सर्वोदय आन्दोलन को नई करवट लेने का साहस करना हागा। समाज-परिवर्तन के लिए अहिंसक शक्तियो को जोड़कर सम्पूर्ण क्रान्ति मे नियोजित करना होगा। राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो का तकाजा है कि सर्व सेवा सघ अपने कार्यक्रमो को नई दिशा देवे। नई करवट लें। ●

गोकुल दुर्गापुरा (जयपुर)

वर्तमान युद्धो की जड राष्ट्रीय श्रम-विभाजन मे है, जिसमे एक औद्योगिक पूंजीपति शासक धडा दूसरे धडे की राष्ट्रीय पूंजी हडपने की कोशिश करता है।

युद्ध वर्जन की आवश्यकता

☐ श्री विपिनचन्द्र

युद्ध का प्रश्न हमें इस विवाद को हल करने की तरफ ले जाता है कि व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मौजूद सामाजिक इकाइयो के मध्य मौजूद समस्याओ को, विवादो को हल करने का कौन सा प्रभावी तरीका इस्तेमाल मे लाया जाये। निश्चय ही सुसगत तर्क एव ऐतिहासिक वैज्ञानिक तथ्यो की मौजूदगी को नजर अदाज कर अन्तर्राष्ट्रीय मानव समाज के सपूर्ण हितो को प्राथमिकता पर न रखकर अपने अपने राष्ट्रीय, पार्टी, ग्रुप, व्यक्ति एव अन्य सामाजिक इकाईयो के हितों को प्राथमिकता देकर अपने पक्ष मे मसले को हल करने का तरीका फिर युद्ध से विवाद तय करने की ओर ले जाता है और ऐसा लगने लगता है कि युद्ध मानव समाज की एक स्वाभाविक प्रवृति है और यह असभव है कि युद्ध समाज मे न रहे। युद्ध के समर्थन का यह तर्क अपने पीछे प्रभुत्ववाद की प्रबल आकाक्षाओ को छिपाये हुए हैं। इसकी जड सम्पूर्ण हितो के समक्ष आशिक या कुछ के हितो को प्राथमिकता देने के असतुलन में निहित है।

युद्ध का मतलब, विभिन्न राजनैतिक धडो या बडे सगठित ताकतवर धडो के बीच धरती, समुद्र या आकाश मे सशस्त्र या अन्य अनुचित विध्वसक तरीके से किया जाने वाला सघर्ष या मुकाबला है।

युद्ध का आधार अपने-अपने समय मे प्रचलित श्रम विभाजन मे है जिससे राज्यों, वर्गों व लोगो के समूहो के बीच विरोधाभास पैदा होता है। मानव जाति के सामाजिक सगठनों के बीच विभिन्न प्रकार के युद्धो का कारण एक तरफ वैज्ञानिक टेक्नोलोजिकल रचनातत्र के विकास का स्तर नीचे होना रहा है जिससे ज्यादा बडे मेहनत की जरुरत रही है तथा उसका फल नाकाफी निकलता रहा है, तो दूसरी तरफ इस तकनीक के ठीक सचालन के लिये छोटी-छोटी आत्मनिर्भर सामाजिक इकाईयों की आवश्यकता रही है जैसे पहले के गण कबीले, मध्ययुगीन सल्तनतें

ग्रौर वर्तमान राष्ट्रीय राज्य । इस तरह के हालात ने ऐसा श्रम-विभाजन (ग्रौर फलस्वरूप सामाजिक सम्बन्ध) पेश किया, जिसने स्वावलंबी सामाजिक इकाइयों (उदाहरण के लिये वर्तमान राष्ट्रीय राज्यों व उनके वर्गो) को एक दूसरे की सामाजिक सम्पत्ति छीनकर ग्रौर लूटकर धनवान बनने के लिये युद्ध करने को तैयार किया ।

युद्ध उद्योग का महत्त्व

वर्तमान युद्धों की जड़ राष्ट्रीय श्रम-विभाजन में है जिसमें एक ग्रौद्योगिक पूंजीपति शासक यहां दूसरे घटे को राष्ट्रीय पूंजी हड़पने की कोशिश करता है । इससे दो महा-शक्तियों (इसमें एक का नेतृत्व ग्रमेरिका व दूसरे का नेतृत्व रूस करता है) के विश्व स्तर पर नाटो-वार्सा के रूप में दो युद्ध गुट कार्यरत हैं ग्रौर विवादों को ग्रपने-ग्रपने हितों में हल करने के लिए प्रभुत्व की होड़ ने प्राथमिकता ली हुई है । इन परिस्थितियों में मानव जाति को भारी एवं पेचीदा मुश्किलों में डाल दिया है । क्योंकि इसमें युद्ध उद्योग ने महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर लिया है । नतीजतन, प्राकृतिक, वैज्ञानिक टैक्नोलोजी व ग्रन्य संसाधन व स्रोतों को भारी मात्रा में मानव विनाश की प्रक्रिया की ग्रोर खींच लिया है ग्रौर साथ ही परमाणु रासायनिक, जैविक ग्राधुनिक हथियारों के निर्माण ने सम्पूर्ण मानवता ग्रौर पृथ्वी के खात्मे की ग्रवस्था तक ले जाकर खड़ा कर दिया है ।

युद्ध के कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि पिछले ५५०० वर्षों में इस पृथ्वी पर कुल युद्धों की संख्या लगभग १५,००० यानि प्रति वर्ष २ से ३ युद्ध रही है । इन युद्धों में कुल मानवीय हानि लगभग ३ ग्ररब ५४ करोड़ की हुई है । पिछले ५५०० वर्षों में शांति का समय २९२ वर्ष रहा है । १७वीं, १८वीं तथा १९वीं शताब्दियों में यूरोप के युद्धों में कुल मृत्यु ३३ लाख, ५२ लाख व ५५ लाख हुई । इस सदी में प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१९१८) में मानवीय हानि लगभग ९५ लाख की मृत्यु, २ करोड़ घायल तथा १ करोड़ की भूख व बीमारी से मरे । द्वितीय विश्व युद्ध (१९३९–४५) में कुल मानवीय हानि ५ करोड़ ४८ लाख लोग मरे । ४० देशों की सीमाग्रों पर युद्ध लड़ा गया तथा सभी महाद्वीपों के ६१ देश व विश्व की ८० प्रतिशत जनसंख्या इसमें शामिल हुई । जर्मनी, इटली, जापान, रूस, ग्रमेरिका ग्रौर ब्रिटेन द्वारा कुल खर्चा तुलनात्मक कीमतों में ११ खरब डालर था ।

विनाश पर व्यय

प्रथम विश्व युद्ध में युद्धरत राज्यों के राज्य बजटों में से कुल सेना का खर्च मौजूदा कीमतों में २ खरब ८ ग्ररब डालर था । २०वीं सदी के पहले ग्राधे वर्षों में युद्धों की तैयारी जारी रखने में कुल खर्चा ४७०० ग्ररब डालर था जिनमें से ४००० ग्ररब डालर दूसरे विश्व युद्ध के खाते में ग्राता है । इस राशि से विश्व की सारी जनसंख्या को ५० वर्षों तक पर्याप्त भोजन दिया जा सकता है या ५० करोड़ परिवारों को ग्रच्छे व सुन्दर मकान दिये जा सकते हैं ।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद १५० क्षेत्रीय युद्ध लड़े गये हैं । विश्व में ६०,००० परमाणु ग्रायुद्ध मौजूद हैं, जिनकी कुल विस्फोटक क्षमता १६ ग्ररब टन टी. एन

टी है। इससे सम्पूर्ण पृथ्वी ६ बार तबाह हो सकती है तथा ५ लाख वैज्ञानिक व तकनीशियन इस काम मे लगे हैं कि मानव जाति को जल्दी से जल्दी कैसे समाप्त किया जा सकता है। आज विकासशील देशो मे ३७०० व्यक्तियो के पीछे एक डाक्टर है तथा हर २५० व्यक्तियो के पीछे एक सैनिक है।

इस प्रकार वैज्ञानिक एव तकनीक का मानव-जाति के हित मे समुचित व सम्पूण उपयोग न कर पाने के कारण विभिन्न न हल होने वाली सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं जैसे-परमाणु हथियार व ऊर्जा, पर्यावरण प्रदूषण, आर्थिक असमानताए, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, कुपोषण आदि जो इस प्रबल आवश्यकता को प्रकट करती हैं कि यथासभव पूरे मानव समाज से सामाजिक समस्याओ, विवादो को हल करने के तरीके के रूप मे युद्ध को काम मे न लाया जाये और न लाना पडे। इस प्रबल आवश्यकता के होते हुए क्या मानव समाज इसे प्राप्त कर सकेगा।

जनवादी विश्व सरकार

फौरी स्तर पर जब तक राष्ट्रीय श्रम विभाजन और दो महाशक्तियो के प्रभुत्व की जगह अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन और दुनिया की एक जनवादी विश्व सरकार (जिसमे विश्व की जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि हो, ऊपर से लेकर नीचे तक सभी निकायो का चुनाव हो, चुने हुए प्रतिनिधियो को वापस बुलाने का अधिकार हो तथा विधान पालिका के साथ-साथ न्यायपालिका तथा कार्यपालिका का भी चुनाव हो) की प्रधानता कायम नही होती। तब तक राष्ट्रीय, क्षेत्रीय आदि युद्धो की सम्भावना बनी रहेगी। वैज्ञानिक, ऐतिहासिक तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि विश्व मे मानव समाज मे राष्ट्रीय श्रम विभाजन से अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन तथा पूजी के अन्तर्राष्ट्रीयकरण की ओर की प्रक्रिया गतिशील है और सामाजिक जनवादीकरण और सामाजिक न्याय की ओर आधुनिक वैज्ञानिक टैक्नोलोजिकल आविष्कारों ने सैद्धान्तिक, व्यवहारिक गति को ज्यादा तेज किया है।

वैज्ञानिक टैक्नोलोजिकल क्षेत्र में जो नये आविष्कार हुए हैं, उनमे कायक्रम नियन्त्रित मशीनो (कमप्यूटर, रोबोट आदि) इलेक्ट्रोनिक्स और उसके लघुरूपो, प्रजनन, प्रौद्योगिकी कृषि के रासायनीकरण, ऊर्जा के नये स्रोतों व नये कच्चे माल, भारी मशीनो, दूर-सचार, पेट्रोकेमिकल्स, ऑटो मोबाइल्स के साथ-साथ अन्तरिक्ष व सामुद्रिक क्षेत्र की खोज मे भी तेज विकास किया है, जिसकी मुख्य दिशा यान्त्रिकीकरण से आंशिक ऑटोमेशन व आटोमेशन की ओर है। जिसके कारण समूचे विश्व मे खासकर विकसित औद्योगिक देशो मे अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक समूहों ने जन्म लिया है और विकसित हो रहे हैं। (१) अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ वर्ग :—यानि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, ट्रेड यूनियन, अर्थतन्त्र, योजना, विज्ञान, टेक्नो लोजी, इन्जीनियरिंग प्रवन्ध, प्रशासन, सस्कृति, कला, लेखन आदि के विशेषज्ञ। (२) अन्तर्राष्ट्रीय कुशल मजदूर :—यानी पूर्ण मेकेनाइज्ड और अर्ध स्वचालित उद्योगो मे नयी तकनीक से प्रशिक्षत ओपरेटर। (३) मध्यम वर्ग —यानी विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय ऐजेन्सी व उद्यमो मे मध्यम कर्मचारियो की विभिन्न श्रेणिया।

इन परिस्थितियों मे युद्ध वर्जन कोरी कल्पना नहीं माना जा सकता बल्कि वैज्ञानिक-सामाजिक तथ्य इस दिशा की पुष्टि करते हैं कि मानव समाज का आगे का विकास युद्ध वर्जन की ओर अवश्यभावी है और यह सम्भावना हमसे तकाजा करती है कि हम इस दिशा की लोक चेतना को विकसित कर, सगठित कर, अपना समय व शक्ति लगाकर, इसको यथार्थ रूप देने मे अपना योगदान दें।

पूजी के आधुनीकरण अथवा अन्तर्राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया आगे बढी है। यह निम्न तथ्यो से जाहिर है -रूस व चीन द्वारा पश्चिम पूजी के लिये द्वार खोलना, पश्चिमी विकसित देशो के बीच पूजी प्रवाह मे वृद्धि, अल्प विकसित देशो के विदेशी कर्जों मे वृद्धि, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, आदि जैसे अन्तर्राष्ट्रीय सस्थाओ की अधिक भूमिका।

राजनैतिक एव आर्थिक क्षेत्रीय सगठनो की स्थापना, जैसे कि छह कैरेबियन देशो के राजनैतिक सघ, सार्क, यूरोपीय पार्लियामेंट आदि तथा इसके साथ-साथ विश्व मे नयी जनवादी पार्टियो का उदय होना। मानव समाज की राजनैतिक, आर्थिक, सास्कृतिक गतियों के अन्तर्राष्ट्रीयकरण की ओर बढते कदम ने विभिन्न देशो के अन्तर सम्बन्धो व अन्तरनिर्भरता को और ज्यादा बढाकर राष्ट्रीय समस्याओ को और अधिक अन्तर सम्बन्धित व अन्तरनिर्भर बना दिया है और उपर्युक्त न हल होने वाली समस्याएँ जिन्होने अन्तर्राष्ट्रीय रूप ग्रहण कर लिया है, न इन समस्याओ को हल करने के लिये एक कारगर विश्व केन्द्र की अधिक जरूरत को जन्म दिया है।

विश्व केन्द्र की आवश्यकता

कारगर विश्व केन्द्र की जरूरत इस तथ्य से भी जाहिर होती है कि हर देश मे लोग अपनी-अपनी सरकार पर दबाव डाल रहे हैं कि सभी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ किसी ऐसे विश्व मच के जरिये हल की जाये, जिसमे तमाम राष्ट्रीय राज्यो को बराबरी का दर्जा हासिल हो, नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक-व्यवस्था के मुद्दे पर उत्तर-दक्षिण का सम्मेलन बुलाने, निरस्त्रीकरण की मांग, अन्तरिक्ष आदि मुद्दो पर विश्व सम्मेलन बुलाने की कई देशो की माग।

इन परिस्थितियो मे युद्ध-वर्जन कोरी कल्पना नही माना जा सकता बल्कि वैज्ञानिक सामाजिक तथ्य इस दिशा की पुष्टि करते हैं कि मानव समाज का आगे का विकास युद्ध वर्जन की ओर अवश्यभावी है और यह सम्भावना हमसे तकाजा करती है कि हम इस दिशा की लोक चेतना को विकसित कर, सगठित कर, अपना समय व शक्ति लगाकर इसको यथार्थ रूप देने मे अपना योगदान दें।

●

बोतीना गुप्ता, बीकानेर

★

समाज की छोटी हिंसा को सरकार की बडी हिंसा से दबाने का प्रयास हिंसा को ही और कई गुना बढ़ाने में होता है।

शान्ति—सेना का औचित्य

☐ श्री सवाईसिंह

इस समय देश की स्थिति पहले से कही अधिक सकटपूर्ण बनी हुई है। चारो ओर हिंसा का वातावरण बना हुआ है। कही सरकार की हिंसा तो कही समाज की हिंसा। जो हिंसा राष्ट्र को जकडती जा रही है वह सामान्य नही रह गयी है, और न तो केवल अपराध कर्मियो तक सीमित है। पिछले कुछ वर्षो मे हिंसा ने स्पष्ट राजनैतिक आयाम विकसित किये है। पजाब मे आतकवादी अलग राष्ट्र की माग पर डटे हुए है, तो बिहार की 'लाल सेना' दलितो-शोषितो के नाम पर लडाई लड रही है। बिहार मे अन्य भी कई जातियो ने अपनी-अपनी सेनायें बना ली है। धार्मिक आधार पर देश म सेनायें बन चुकी है, जो लगभग हर जगह अपना पैर फैलाने लगी हैं। हिन्दु मुसलमान, ईसाई, फारवड बैकवड, हरिजन आदि की सेनाए तैयार है या तैयार की जा रही है। सबके पास हथियार है। ऐसा लगता है कि कानून का नही, कत्ल का राज है। हर तरफ अनैतिकता, भ्रष्टाचार और लूट को खुली छूट मिली हुई है। नेता वूथ लूटता है, क्रान्तिकारी बम फेंकता है, अधिकारी रिश्वत लेता है, व्यापारी मुनाफाखोरी, चोरबाजारी, शोषण और मिलावट करता है—आखिर बच ही क्या गया है?

शोषण की शक्तियों का पोषण

इस स्थिति का क्या उपाय है? सरकार पुलिस फौज के सिवा दूसरा कुछ जानती नही। लेकिन हम देख रहे हैं कि समाज की छोटी हिंसा को सरकार की बडी हिंसा से दबाने का प्रयास हिंसा को ही और कई गुना बढाने मे होता है। उससे हिंसा कम नही हो रही है। फिर ४० वर्षों मे देश के प्रशासन ने अपना ऐसा चरित्र विकसित कर लिया है कि वह हिंसा का दमन और शोषण की समस्त शक्तियो, सगठनों, और प्रवृत्तियो का आश्रयदाता और पोषक बन गया है। उसकी व्यवस्था नीचे से ऊपर तक सगठित असत्य और हिंसा पर टिकी हुई है। आम नागरिक को अगर जीना है तो इन सरकारी और गैर सरकारी बन्दूको को स्वीकार करना है। आखिर वह जाए कहां?

हिंसा की यह नयी चुनौती अप्रत्याशित है। इसलिए इसका रास्ता भी अप्रत्याशित होगा। आग से आग बुझाई नहीं जा सकती है। आग पानी से बुझाई जा सकती है। सामंती और सरकार की सगठित हिंसा का मुकाबला गरीबो की हिंसा नहीं कर सकती। इसका एकमात्र रास्ता है अहिंसक लोकशक्ति। इसे गाव–गाव मे लोगों को समझाना होगा। गांव को सगठित तथा 'एक और नेक' बनाना होगा। —आचार्य राममूर्ति

मौजूदा राज्य सत्ता ने अपनी गलत नीतियो से सामाजिक, आर्थिक ,राजनैतिक परिवर्तन के सारे शान्तिपूर्ण रास्ते बन्द कर दिये है। समय-समय पर सरकार ने सगठित हिंसा के सामने समर्पण कर यह साबित भी कर दिया कि वह उस रास्ते को ही मानती है जैसे—मिजोरम, गोरखालैंड आदि। लेकिन उन क्षेत्रो की आम जनता को आखिर क्या मिला? राज्य सत्ता आज चन्द लोगो के हितों की पूर्ति मे जुटी हुई है।

अहिंसक लोकशक्ति

आज की महत्ती आवश्यकता है हिंसा के विरुद्ध अहिंसा की शक्ति खडी करने की। दैनन्दिन जन-जीवन मे राज्य-शक्ति का हस्त-क्षेप जितना कम होगा, अहिंसक लोकशक्ति का विस्तार उतना अधिक होगा। गाधीजी ने अहिंसक-पुलिस की बात कही थी। वे स्वय कलकत्ता के हिन्दु-मुस्लिम दगे मे अकेले आदमी की सुरक्षा-सेना थे, और इसमें सफल भी हुए।

अगर आज हम देश को बचाना और नया राष्ट्र बनाना चाहते है तो अहिंसक लोक-शक्ति खडी करनी होगी। यह शक्ति शान्ति-सेना के रूप मे हो सकती है जो इतनी प्रशि-क्षित और सुसगठित हो कि देश के दैनन्दिन जीवन के नियमन और सचालन की जिम्मे-दारी अपने ऊपर ले सके। यही शान्ति सेना हमारी अहिंसक पुलिस फोर्स होगी।

शान्ति सेना का मुख्य काम अशान्ति-शमन तो होगा ही, साथ ही शान्ति की शक्ति से पुनर्निर्माण, तथा शान्ति की शक्ति से अनीति का प्रतिकार-ये दोनो भी उसके समान महत्व के काम होगे। शान्ति सेना सामाजिक क्रिया मे नैतिक मूल्यो का अभ्यास प्रस्तुत करेगी। इस प्रकार सेवा, पुनर्निर्माण, तथा प्रतिकार की हर स्थिति मे शान्ति सेना अहिंसा की सगठित सेना के रूप मे काम करेगी। इस समय राष्ट्रीय जीवन का कोई अग, क्षेत्र या स्तर नही रह गया है जहा अहिंसा की सगठित शक्ति प्रकट करने की आवश्यकता न हो। राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान की दृष्टि से अहिंसा का कोई विकल्प नही रह गया है। गाव से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक कडीवद्ध (चेन के रूप मे) शान्ति सेना के सगठन खडा करने की आवश्यकता है। ☐

गोकुल, दुर्गापुरा (जयपुर)

ग्राम-स्वराज्य यात्रा : क्या और क्यों ?

□ प्रो० ठाकुरदास बग

चालीस वर्षों के स्वराज्य मे भारत गाधी-विरोधी दिशा मे गया है। सत्ता का केन्द्रीयकरण उत्तरोत्तर बढता ही गया और नागरिक अधिकार क्षीण होते गये। हाल के सविधान के ५९वें सशोधन से नागरिक का जीने का मूलभूत अधिकार भी समाप्त हो गया है। क्या समाज मे या राजकारण मे, अर्थनीति मे या व्यसनो मे, सब तरफ अनैतिकता का साम्राज्य बढ रहा है, मानो, सत्य-अहिंसा द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम और सत्याग्रह द्वारा स्वराज्य प्राप्ति भारत मे हुई ही न हो। सामान्यजन को लोकतन्त्र मे न अधिकार का पता है, न कर्त्तव्यो का। शिक्षित सही-गलत अधिकारो की ही बात करते हैं—कर्त्तव्य की बात अपवाद स्वरूप है।

सत्याग्रह का दीप

ऐसे भीषण अमावस्या के अन्धकार मे लोगो का सामाजिक, सास्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक शिक्षण करने की जरूरत है और रचनात्मक कार्यक्रम एव अहिंसक प्रतिकार यानी सत्याग्रह का दीप जलाकर एक नया पथ प्रदर्शित करने की, एक नई हवा बनाने की और बहाने की जरूरत है जिससे कि इस तूफान मे सारा कचरा उड जावे। इसके लिए बापू के, विनोबा के, जयप्रकाश के बताये हुए रचनात्मक कार्यक्रम जैसे-शराबबन्दी, गोरक्षा, गाव का कारोबार गाव मे चलाना, पुलिस-अदालत मुक्ति, असरकारी खादी, मानव निर्मित रेशो के कपडो की होली, ग्रामोपयोगी वस्तुओ के स्वीकार के (चीनी, जूते, साबुन, खाद) एव केन्द्रित वस्तु-बहिष्कार के सकल्प एव कुछ नये कार्यक्रम जैसे वृक्षारोपण, नयी पद्धति से कम्पोस्ट खाद का निर्माण आदि गावो मे और नगरो मे शुरू करने की आवश्यकता है। इनके साथ फसल का वाजिब दाम न मिले तो बाजार से असहयोग, स्थानीय भ्रष्टाचार के विरुद्ध अहिंसक प्रतिकार आदि करने से वातावरण शोषणमुक्त और स्वच्छ बनने मे मदद होगी। ये सब कार्यक्रम नीचे से प्रारम्भ हो। इनको ऊपर से उचित कानून की एव शासन की नीतियो की मदद मिले और लोकतन्त्र सही दिशा मे चले, इसलिए मतदाताओ के सगठन यानी मतदाता परिषदें बनाकर, जहा शक्ति प्रकट हो वहा लोक उम्मीदवार का प्रयोग किये जाने का विचार फैलाना चाहिए। इनका पोषक-सर्वोदयी साहित्य के, पत्रिकाओ के व्यापकतम प्रचार-प्रसार की जरूरत है। अन्त शुद्धि के लिए प्रार्थना, ध्यान, स्वाध्याय आदि को बल पहुचाने की जरूरत है।

इन सब बातो का सन्देश देश भर मे, खासकर अपने सघन क्षेत्रो मे, सावजनिक

सभाओ द्वारा एव कार्यकर्ता-बैठको द्वारा पहुचाने के लिए एव कम्पोस्ट खाद का निर्माण, होली आदि कृतिपरक कार्यक्रम कर एक व्यापक माहौल बनाने के लिए —

(१) हर सघन क्षेत्र मे जल्द से जल्द दो-तीन माह की पदयात्राए निकाल कर हर गाव मे पहुचकर ग्राम-स्वराज्य का सन्देश पहुचाया जाय,

(२) इन्हें बल पहुँचाने के लिए प्रान्तीय पदयात्राएँ (या वाहन यात्राए) चले, और

(३) देश भर मे ग्राम-स्वराज्य का व्यापक वातावरण बनाने के लिए और ऊपर के सघन क्षेत्रो के कार्यक्रमो का बलवान बनाने के लिये पूव पश्चिम, आसाम से पोरबंदर और उत्तर-दक्षिण पठानकोट से कन्याकुमारी राष्ट्रीय वाहन यात्राए चले। राष्ट्रीय यात्राए हर सघन क्षत्रा मे, अन्य स्थानो के साथ-साथ जावे और वहा आवश्यकतानुसार एक या दो चार दिन रहकर ऊपर के कार्यक्रमा के साथ फालोअप का भी प्रबन्ध करें। ५-६ माह की ऐसी यात्रा से देश के सब सघन क्षेत्र एव अन्य कई स्थान कवर हो सकते हैं।

लोक शक्ति निर्माण

इन यात्राओ में ग्रामसभा या लोक समिति का एव शान्ति सेना का गठन कर ऊपर बताये हुए कार्यो मे से कोई कार्य करन का सकल्प लेवें। इस प्रकार सक्ल्प से स्वराज्य की ओर हम आगे बढें। इससे गावो में और नगरो मे असन्तोष को और ऊर्जा को रचनात्मक दिशा मिलेगी, लोक शक्ति निर्माण होकर राष्ट्र-निर्माण होगा और गाधी के हिन्द-स्वराज्य का सपना साकार होने मे मदद होगी।

इन यात्राओ से ऊपर के काम तो होगे ही, साथ साथ पुरान कार्यकर्ताओ की निराशा टूटेगी, वे सक्रिय होगे, नई शक्तियों की खोज होकर नये लोग इस काय से जुडेंगे और अर्थ-सग्रह होगा। राष्ट्रीय यात्राओ मे अथ सग्रह के लिये पहले से इकट्ठा की हुई थैली अपण करना और सभा स्थान पर झोली घुमाने का कार्यक्रम किया जाये। प्राप्त अर्थ सग्रह मे से राष्ट्रीय यात्रा का खच बादकर शेष रकम सर्व सेवा सघ, प्रदेश सर्वोदय मण्डल एव सघन क्षेत्र मे सम प्रमाण मे बाटी जाय।

राष्ट्रीय यात्रा मे सव सेवा सघ के अध्यक्ष, पूव अध्यक्ष, प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ता निरन्तर ६ माह या अधिक से अधिक समय रहे। राष्ट्रीय यात्रा सर्व सेवा सघ के तत्वावधान म चले। ऐसी यात्रा मे कोई वरिष्ठ साथी लगातार रहन को तैयार न हो और मेरी सवाओ की आवश्यकता हो तो इस कार्य को महत्वपूर्ण मानते हुए इसमे आसाम से पोरबदर की यात्रा मे पूरा समय रहने को मैं तैयार हूँ। ●

*

लेखक परिचय

१. श्री सिद्धराज ढड्ढा	वरिष्ठ सर्वोदय सेवक । चौड़ा रास्ता, जयपुर-३
२. श्री जवाहिरलाल जैन	कुमारप्पा ग्राम-स्वराज्य शोध संस्थान के निदेशक बी-१६०, यूनिवर्सिटी मार्ग, जयपुर-१५
३. श्री बद्री प्रसाद स्वामी	राजस्थान समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष स्वामी सदन, मकराना, (नागौर)
४. श्री छीतरमल गोयल	राजस्थान खादी ग्रामो. संस्था संघ के अध्यक्ष अजबघर का रास्ता, जयपुर-३
५. श्री राधाकृष्ण बजाज	अ. भा. कृषि गो सेवा संघ के अध्यक्ष गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र)
६. श्री त्रिलोक चन्द जैन	राजस्थान प्रदेश नशाबंदी समिति के मंत्री गोकुल, दुर्गापुरा (जयपुर)
७. श्री पूर्णचन्द्र जैन	राजस्थान गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष टुंकलिया भवन, कुन्दीगर भैरू का रास्ता, जयपुर
८. श्री सोहन लाल मोदी	क्षेत्रीय समग्र लोक विकास संघ के अध्यक्ष सर्वोदय सदन, गोगा गेट, बीकानेर
९. श्री रामदयाल खण्डेलवाल	क्षत्रीय समग्र लोक विकास सघ के मत्री सर्वोदय सदन, गोगा गेट, बीकानेर
१०. श्री बिरदीचन्द चोधरी	समर्पित सर्वोदय सेवक दोमुलगुड़ा, हैदराबाद
११. श्री भगवानदास माहेश्वरी	जैसलमेर जिला खादी-ग्रामोदय परिषद के अध्यक्ष जैसलमेर

१२. श्री अमरनाथ कश्यप	समाजवादी चिंतक और लेखक हिन्दी विभागाध्यक्ष, रामपुरिया कॉलेज, बीकानेर
१३ श्री सत्यनारायण पारीक	स्वतन्त्रता सेनानी और विचारक बीकानेर
१४. श्री यज्ञदत्त उपाध्याय	चिंतक और समाज सेवी किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर
१५. श्री ठाकुरदास बंग	सर्व सेवा सघ के पूर्व अध्यक्ष गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र),
१६. श्री मूलचन्द पारीक	स्वतत्रता सेनानी तथा प्रमुख खादी सेवक बीकानेर
१७. श्री नित्यानन्द शर्मा	सुकवि और रचनात्मक कार्यकर्ता आनन्द भवन, जयलाल मु शी मार्ग, जयपुर
१८ श्री विपिनचन्द्र	प्रबुद्ध चिंतक और समाज सेवी चौतीना कुआ, बीकानेर
१९ श्री शुभू पटवा	पत्रकार और समाज सेवी मीनासर (बीकानेर)
२०. श्री सवाईसिंह	प्रदेश शाति सेना सयोजक किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर

एक परिचय :

सर्व सेवा संघ

सर्व-सेवा सघ गाधीजी द्वारा या उनकी प्रेरणा से स्थापित रचनात्मक सस्थाओ तथा सघो का मिला-जुला सगठन है ।

हिन्दुस्तान की आजादी के बाद स्वय गाधीजी की प्रेरणा से फरवरी, १९४८ मे देश के रचनात्मक कार्यकर्ताओ का एक सम्मेलन सेवाग्राम मे होने वाला था। गाधीजी भी उसमे मौजूद रहने वाले थे । सम्मेलन मे मुख्यत॰ रचनात्मक सस्थाओ के एक मिले जुले सगठन के बारे मे विचार किया जाने वाला था, ताकि सब मिलकर समग्र दृष्टि से नवीन और अहिंसक समाज-रचना के लिए काम कर सके । लेकिन सम्मेलन के एक सप्ताह पूर्व अचानक गाधोजी हमारे बीच से उठ गये। वह सम्मेलन फिर सेवाग्राम मे ही ता० १३ से १५ माच, १९४८ तक हुआ । उसी मे गाधीजी की प्रेरणा से स्थापित सस्थाओ तथा सघो का सम्मिलित सगठन बनाना तय किया गया । नये सगठन का नाम अखिल भारत सर्व-सेवा सघ रखा गया ।

आगे जाकर सर्व-सेवा सघ मे—१. गोसेवा सघ २ अखिल भारत ग्रामोद्योग सघ, ३. महारोगी सेवा मण्डल, ४ अखिल भारत चर्खा सघ और ५ हिन्दुस्तानी तालीम सघ विलीन हो गये ।

अहिंसक समाज मे सगठन का स्वरूप व कार्य व्यवहार कैसा हो, इसे ध्यान मे रखते हुए जनवरी १९५९ मे विधान मे कुछ मूलगामी परिवर्तन किये गये । ऐतिहासिक दृष्टि से आज सर्व-सेवा-सघ रचनात्मक सघो का मिला-जुला सगठन तो है ही, सशोधित नियमो के सन्दभ मे वह देश भर मे फैले हुए लोकसेवकों का एक सयोजक सघ भी बन गया है ।

संघ को तीन विशेषताएं

"आज हर कोई कहता है कि सर्व-सेवा सघ फैले, क्योकि वह पक्षमुक्त है, इसलिए सुरक्षित है । ऐसा आशीर्वाद राजनैतिक पार्टी वालो को नही मिलता है । लेकिन सर्व-सेवा-सघ को यह आर्शीवाद प्राप्त है ।

'इस तरह सर्व सेवा सघ की तीन विशेषताएं हैं—

१—वह पक्ष मुक्त है, २—सर्वसम्मति से काम करता है, और ३—आपसे काम कराता है ।"

-विनोबा

राजस्थान समग्र सेवा संघ

राजस्थान मे स्व० ठक्कर बापा तथा श्री श्रीकृष्णदास जाजू की प्रेरणा एव मार्ग-दर्शन मे अनेक कार्यकर्ता रचनात्मक कार्यक्रमो मे लगे हुए थे तथा सर्वोदय विचार के आधार पर नव-समाज रचना हो, इसके लिए चिंतनशील थे । उसी समय गाधीजी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी पूज्य विनोबा जी भूदान-ग्रामदान के जरिये अहिंसक सर्वोदय समाज रचना का विचार प्रारम्भ कर चुके थे । इन परिस्थितियो की पृष्ठ-भूमि मे प्रदेश के कार्यकर्त्ताओ की शक्ति को सगठित करने, उसे सर्वोदय आदोलन मे नियोजित करने तथा कार्यकर्त्ता एव कार्यक्रमो मे एकसूत्रता लाने के लिए स्व० श्रीकृष्णदास जाजू को प्रेरणा से 2 अक्टूबर 1953 का भीलवाडा जिले के ग्राम-विद्यालय सुवाणा मे आयोजित प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर 'समग्र सेवा संघ' का गठन किया गया । श्री जाजूजी ही इसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये ।

उद्देश्य और कार्यक्रम

(क) सत्य और अहिंसा की बुनियाद पर ऐसा समाज कायम करना जिसमे किसी का शोषण न हो, सबको प्रतिष्ठा व प्रधानता हो, जनता ग्राम-जीवन की अभिमुख बने, ग्राम जनता की खासकर देहात की गरीब जनता की विधायक कार्यों द्वारा सेवा करना व जोवन-शिक्षण देना, जिससे ग्राम-सजग स्वावलम्बी, सम्पन्न व निरोग हो और उन्हें आत्मशक्ति का भान हो ।

(ख) राजस्थान मे इस समय या भविष्य मे उपरोत उद्देश्य से चलने वाले सर्वोदय के अगभूत विधायक कामो मे सुसबद्धता लाने तथा उन्हे व्यवस्थित रूप से आगे बढाने की दृष्टि से कार्यकर्त्ताओ तथा सस्थाओ का मार्ग-दर्शन करना ।

(ग) इन उद्देश्यो की पूर्ति के लिए सभा, शिविर, सम्मेलन आदि का आयोजन व केन्द्र, शाखा आदि की स्थापना करना तथा उनके लिए आवश्यक अर्थ-सग्रह करना ।

(घ) सघ अखिल भारत सर्व सेवा सघ की निर्धारित रीति-नीति के अनुसार व उनके मार्ग-दर्शन मे कार्य करेगा ।

इस प्रकार समग्र सेवा सघ' आरम्भ मे उक्त उद्देश्यो की पूर्ति के लिए जन आधारित अपना कार्यक्रम चलाता रहा, बाद मे 'सर्व सेवा सघ' के परिवर्तित विधान व नियमावली के अनुसार अपने विधान मे आवश्यक परिवर्तन करते हुए तथा लोक-सेवक व सर्वोदय-मित्र बनाकर, प्राथमिक, जिला सर्वोदय मडल सगठन कार्यक्रम चलाते हुए करता रहा है ।

रचनात्मक कार्यों मे सहयोग व सहभाग

समग्र सेवा सघ ने निम्न रचनात्मक कार्यक्रमो मे सहयोग किया है ।(1) भूदान-ग्रामदान (2) नशाबन्दी आदोलन (3) गारक्षा (4) मतदाता शिक्षण लोक उम्मोदवार (5)शिविर सम्मेलन (6) 'ग्राम राज' प्रकाशन एव सत्साहित्य प्रसार (9) शाति सेना (10)लोक अदालत (11) सम्पूर्ण क्रान्ति हेतु सघन क्षेत्रो का विकास (12) सर्वोदय पत्र द्वारा जन जागरण आदि ।

सघ जिलो मे सर्वोदय मण्डलो द्वारा सर्वोदय आन्दोलन सगठित करता है । इस समय प्रदेश के चौदह जिलो मे सर्वोदय मण्डल कार्य कर रहे हैं । ☐

रचनात्मक कार्यकर्ता को इस संकट की घड़ी मे अपने मन की दुविधा से ऊपर उठकर ग्राम जनता के साथ जुड़ना होगा ।

फिर विचार-मंथन का समय आ गया है

☐ डा० शांतिस्वरूप डाटा

सर्व सेवा सघ या सर्वोदय समाज ने इस देश मे गाधी, विनोवा और लोक नायक जयप्रकाश के बताये हुये मार्ग पर चलकर इस देश मे एक ऐसे समाज की, एक ऐसी व्यवस्था को स्थापित करने का निश्चय किया है, जो शोषण-विहीन, ग्राम-स्वावलम्बन, और अहिंसक सामुदायिक अभिक्रम के द्वारा उत्पन्न हो ।

सर्वोदय समाज का निरन्तर यह प्रतीति होनी चाहिये, कि हम अपने लक्ष्य को तरफ सतत बढ रहे हैं, या नही ? सन् 1974 मे लोक नायक जयप्रकाश नारायण को 20 वर्ष तक निरन्तर भूदानमूलक क्राति का काम करने के बाद ऐसा अहसास हुआ, या अनुभूति हुई कि समाज-व्यवस्था के परिवर्तन के जिस लक्ष्य को लेकर विनोवा के नेतृत्व मे चले थे, उसमे कही ठहराव आ गया है, और धीमे-धीमे लक्ष्य भी धु धला पडता जा रहा है । जयप्रकाश जी ने देखा कि भू-दान ग्राम-दान या खादी उत्पादन और अन्य रचनात्मक प्रवृत्तियो मे लगे कार्यकर्त्ता और सरकारी विभागो मे काम करने वाले कर्मचारियो से उनकी मनोदशा अलग नही रह गई है ।

ऐसे माहोल मे सन् 1974 मे जे. पी. के नेतृत्व मे जो जन आन्दोलन चला, वह सर्व विदित है और यह भी सभी को विदित है कि बिहार आन्दोलन की तेजस्विता के कारण ही देश मे सघर्ष का वातावरण बना और श्रीमती इन्दिरा गाधी की लोक सभा सदस्यता से मुक्ति, जो इलाहाबाद हाई कोर्ट के एक न्यायधीश के एक निर्णय द्वारा भ्रष्टाचार क आरोप म हुई था, उसने चिन्गारी का काम किया, और देश मे श्रीमती इन्दिरा गाधी ने 70 करोड जनता पर इमरजेन्सी थोप दी । इस इमरजेन्सी क पहले शिकार महान् देश भक्त जयप्रकाश ही बने और उनके साथ-साथ लाखो लोगो को इमरजेन्सी की यातनायें सहनी पडी, जिनमे सर्वोदय के सैकड़ो प्रमुख कार्यकर्त्ता थे ।

18 महीने की यातना के बाद सन् 1977 मे फिर दूसरी क्राति हुई और लोक-नायक जयप्रकाश ने केन्द्र की सत्ता इन्दिरा-सरकार से छीनकर जनता सरकार के हाथ मे सौंप दी ।

परन्तु यह एक दुर्भाग्य की बात रही, कि जिस दूसरी क्राति का वाहक जे. पी. ने जनता पार्टी को बनाया था, उसमे पूरी सफलता न मिल सकी, और बीच मे ही यह पार्टी आपसी कलह के कारण टूट गई, और क्राति का वह मिशन अधूरा रह गया।

इसके पश्चात सन् 1984 के दिसम्बर महीने मे इस देश ने श्रीमती इन्दिरा गाधी का निर्मम हत्या से उत्पन्न सहानुभूति के फलस्वरुप देश की बाग-डोर फिर एक बार उसी परिवार के युवा सदस्य राजाव गाधी को प्रचण्ड बहुमत दकर सौंप दा। प्रारम्भ मे कुछ आशायें भी जगी, लेकिन थोड़े दिन बाद ही जनता का इस व्यक्ति व शासन से मोह भग होना प्रारम्भ हो गया। बहु राष्ट्रीय कम्पनियो का प्रसार व उन पर निर्भरता बड़ी तेजी स बढने लगी। महगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी तीनो ने ही देश को आम जनता का पूरी तरह से अपने खूनी पँजो म फसा लिया। लोगो को महसास हुआ कि इस व्यक्ति को न कोई नीति है, न कोइ कार्यक्रम, सिर्फ विदेशो मे बार-बार यात्रायें करके अपनी धूमिल और निष्क्रिय छवि को उजला करने का प्रयास, इस गरीब देश के करदाताओ के पैसे से कर रहा है, किसी भी समस्या से अनभिज्ञ अपने दून स्कूल के सहपाठियो को साथ लेकर इस विशाल देश पर वाम पथ और दक्षिण पक्ष दोनो को बेवकूफ बनाकर शासन भोगना चाहता है।

सन् 1987 मे जब स्वीडन के रेडियो ने बोफोर्स तोपो मे दलाली के रहस्य का उद्घाटन किया, तब से एक के बाद एक रक्षा सौदो मे व अन्य व्यापारिक सौदो मे जिस प्रकार राजीव व राजीव के मित्रो की लिप्तता पाई गई, उससे तो सारे देश की जनता का मानस ही विद्रोह कर उठा है।

रक्षा सौदों में दलाली

तत्कालीन वित्त मन्त्री श्री वी. पी सिंह का उनकी ईमानदारी व इन आर्थिक घोटालो असली अपराधो को पकडने का आकाक्षा के कारण उनको वित्त मत्रालय से हटा दिया गया। उन्हे रक्षा मत्रालय दिया गया, लेकिन रक्षा सौदो मे जो अरबो रुपया की दलाली और कमीशन राजीव के मित्रो ने ली थी, उसकी खोज-बीन करने के कारण श्री वी पी. सिंह को राजीव मन्त्रिमण्डल से हमेशा के लिए स्तीफा देना पडा, और बाद मे काग्रेस से भी विदा लेनी पडी।

आज हमारे बीच मे जे पी तो नही है, लेकिन इसका अर्थ यह तो नही है, कि वी. पी ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध जो देश के नागरिको का आव्हान किया है - उसको अनसुना कर दें। आज देश को परिस्थिति किसी भी दृष्टि से सन् 1974 से अधिक विषम व भयकर है। भ्रष्टाचार, महगाई व बेरोजगारी ने तो बडो बडो को झक-झोर दिया है, और

प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की नातजुर्बेकारी पंजाब समस्या, श्रीलंका समस्या, और असम समस्या को किस दिशा की तरफ ले जाएगी, इसका कुछ ठिकाना नही है । वर्तमान सरकार को देश की जनता न सिर्फ भ्रष्ट व अक्षम मानती है, बल्कि दिशाहीन और निष्क्रिय भी मानती है ।

ऐसे राष्ट्रीय संकट की घडी मे 25-27 अगस्त को सर्वोदय आन्दोलन से जुडे सैकडो कार्यकर्ता बीकानेर मे इकट्ठे होंगे, और अपने कार्यक्रम के बारे मे गम्भीर विचार विमर्श करेंगे । आचार्य राममूर्ति जी जो सर्वोदय जगत के मूर्धन्य नेता हैं, उन्होने अपना एक विचार बिहार मे रखा है । उनका कहना है, कि सर्वोदय की सज्जन-शक्ति अगर वी पी सिंह की जन शक्ति से जुड जाये, तो फिर एक बार देश मे गांधी और जे पी के सपने साकार हो सकते हैं ।

रचनात्मक कार्यकर्ता को इस संकट की घडी मे अपने मन की दुविधा से ऊपर उठकर आम जनता के साथ जुडना ही होगा, तभी उसके अभिक्रम और तेजस्विता मे वृद्धि होगी । सभी सर्वोदय मित्रों से नम्र आग्रह है, कि वे विचार मंथन व हृदय मंथन इस अधिवेशन मे करें और फिर एक बार सन् 1974 म जैसे आन्दोलन की बाग-डोर बिहार मे सम्भाली थी, उसी तरह सारे देश के आगामी संघर्ष की बागडोर को वे सम्भालें । □

मनु मार्ग, अलवर

लोग कहते हैं कि सर्वोदय के मुट्ठीभर लोग क्या कर लेंगे ? बिहार-आन्दोलन से क्या हुआ ? भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठायेंगे तो क्या होगा ? होगा क्या ? होगा यह कि मुट्ठीभर लोग जो सर्वोदय के नाम से अभी जिन्दा हैं, इस देश मे इस बात के प्रमाण हैं कि भारत की आत्मा अभी मरी नही है, जीवित है ।

—आचार्य राममूर्ति

2

बीकानेर : इतिहास और संस्कृति

□

मुझे इस बात की प्रतीति हो चुकी है कि हमें जिस जगह पहुँचना है, मानव कल्याण के जिस ध्येय को हमें सिद्ध करना है जिस तरह का मानव समाज हमें बनाना है, आज की परम्परागत राजनीति के जरिये वह बन नहीं सकेगा।

सम्पूर्ण क्रान्ति सरकार के द्वारा कभी नहीं हो सकती। ऐसी क्रांति तो लोक-शक्ति के द्वारा ही हो सकती है। इसलिए मेरी दिलचस्पी लोक चेतना जगाने और लोक-संगठन खड़ा करने में रही है।

—जयप्रकाश नारायण

इतिहास और संस्कृति

१ बीकानेर : ऐतिहासिक विहगावलोकन

श्री अमरनाथ कश्यप

७ बीकानेर . समन्वय और सहिष्णुता के परिप्रेक्ष्य मे

"

६. बीकानेर : साहित्य, सस्कृति एव शिक्षा के सदर्भ मे

"

१२ बीकानेर के दर्शनीय स्थल

श्री अमरनाथ कश्यप

श्री मूलचन्द पारीक

२१ जब बीकानेर जाग उठा
(स्वतत्रता सग्राम की झलक)

श्री मूलचन्द पारीक

३३ चरखा-करघा और खादी

श्री सत्यनारायण पारीक

३६. बीकानेर जिला-एक दृष्टि मे

—

बीकानेर : ऐतिहासिक विहंगावलोकन

❑ श्री अमरनाथ कश्यप

भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर बसा बीकानेर इतिहास, सस्कृति तथा पुरातत्व अवशेषो की दृष्टि से प्राचीन काल से ही अत्यन्त समृद्ध रहा है। कभी सरस्वती और ईषद्वती नदिया इसके उत्तर मे प्रवाहित होती थी। हडप्पा और मोहन जोदडो कालीन सभ्यता के अवशेष भी इस सभाग के कालीबगा, पीलीबगा, दुलमाणी, भद्रकाली, वडपोल तथा रगमहल आदि स्थानो मे प्राप्त हुए है, जो इसकी प्राचीन सस्कृति का उद्घोष करते है। पौराणिक काल के ग्रन्थो मे इस क्षत्र को सारस्वत देश, जागल देश, कुरु जगल तथा मद्र जगल आदि नामो से अभिहीत किया गया है।

बीकानेर की स्थापना

राव बीकाजी द्वारा इस प्रदेश मे अपना राज्य स्थापित करने से पूर्व जागल देश मे पाच जातियो—सिहाणकोट मे जोहियो, जागलू मे साँखलों, पूगल मे भाटियो, छापर—द्रोणपुर मे मोहिल चौहानो तथा नोहर भादरा मे जाटो का आधिपत्य था। जोधपुर के राव जोधा के पुत्र राव बीका बहुत पराक्रमी और शूरवीर थे। एक दिन वे अपने चाचा कांधलजी से एकात मे कोई मशवरा कर रहे थे। पिता ने परिहास मे कहा कि चाचा भतीजा क्या किसी नये राज्य की स्थापना हेतु मुहीम की तैयारी कर रहे है? कहा जाता है यही बात बीका को लग गई। उन्होने राठोडो की सेना लेकर भाटियो पर चढाई कर दी। मार्ग में देशनोक की लोक देवी करणी माता का आशीर्वाद उन्हे प्राप्त हुआ। भाटियो ने बीका को रोकने हेतु जैसलमेर के रावल कलिकर्ण को सहायता भी ली। घमासान युद्ध मे कलिकर्ण मारा गया और भाटी पराजित हुए। नापा साखला के परामर्श पर वर्तमान स्थान पर अप्रेल 1488 मे अक्षय तृतीया के दिन बीकानेर नगर की स्थापना हुई। मारवाड के राठोडो ने बीका से पूर्व भी जागल देश मे राज्य स्थापना के अनेकानेक प्रयास किये थे। परन्तु स्थानीय शक्तियो के असहयोग के कारण राव वीरम देव, गोगादेव और चूण्डा के प्रयास असफल रहे। साहसी और चतुर बीका ने वैवाहिक सम्बन्धो, समझौतो और स्थानीय देवी-देवताओ के आशीर्वाद की नीति अपनाई जिससे वे एक सगठित और सबल राज्य की स्थापना मे सफल हो सके।

अपने उद्‌भव से सन 1950 मे राजस्थान राज्य के निर्माण तक बीकानेर मे 22 राजाओ का राज्य रहा जिसे इस दोहे मे व्यक्त किया गया है —

बीको, नरो, लूणसी, जैतो कल्लो राय
दलपत सूरो करण सो, अनूप सरूप, सुजान
जोरो गज्जो, रार्यासिह, परतापो सुरतेश
रतनसी, सरदारसिह, डू गर गग शादु ल नरेश

बीकानेर के शासको की वीरता, राजनीतिज्ञता, कला प्रियता और सहिष्णुता ने इस क्षत्र को सदैव सम्माननीय बनाया। बीकानेर के तीसरे राजा राव जैतसी के राज्यकाल मे स 1591 मे बाबर के पुत्र कामरा ने यहां आक्रमण किया। इस युद्ध मे राव जैतसी ने अत्यन्त शौर्य और रणकुशलता का प्रदर्शन किया था। विख्यात चित्रकार ए. एच मूलर ने इस रात्रिकालीन युद्ध का एक सजीव चित्राकन किया है, जो बीकानेर सग्रहालय मे प्रदर्शित है। इसी युद्ध मे चिंतामणि जैन मदिर की मूर्तिया भी खण्डित हुई थी।

चौथे राजा कल्याण सिंह जोधपुर नरेश से पराजित होकर सिरसा की ओर चला गया था। वहीं उसने अपना स्थाई निवास भी बना लिया था, किन्तु कुछ ही समय बाद कूटनीति से उसने शेरशाह सूरी की मदद से पुन बीकानेर पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

छठे राजा रार्यासिह का काल राजनैतिक गतिविधियों तथा आर्थिक सम्पन्नता और कलात्मक समृद्धि का काल रहा है। राजा रार्यासिह ने अकबर से मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर लिये। वह अकबर के दरबार मे 4000 हजारी मनसबदार थे। उन्होने आधे मारवाड और गुजरात को जीत लिया था। रार्यासिह ने काबुल, सिंध और सिरोही मे भीषण युद्धो मे सफलता प्राप्त की। काबुल मे उन्होने फरीद नामक शासक को हटा कर मुगल साम्राज्य का विस्तार किया। सिरोही और सिंध के शासको को भी उसने परास्त किया और दिल्ली का करदाता बनाया। जोधपुर, उत्तर-पश्चिम और दक्षिण के युद्धो से बीकानेर के राज्य कोष को काफी सम्पदा प्राप्त हुई। इस धन से स्थापत्य एव ललित कलाओ का विकास हुआ। जूनागढ़ का ऐतिहासिक किला तथा अनेक कलापूर्ण महल रार्यासिह के समय मे ही निर्मित हुए। रार्यासिह स्वय विद्यानुरागी थे तथा विद्वानों के सम्मानकर्ता एव सरक्षण दाता थे। उन्होने स्वय ज्योतिष रत्नमाला पर टीका लिखी थी एव 'आयुर्वेद महोत्सव' की रचना की।

रार्यासिह के भाई प्रख्यात कवि पृथ्वीराज (पीथल) अकबर का दरबारी कवि था। महाराणा प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार करने के लिए अकबर को पत्र द्वारा सदेश भेजा था लेकिन पीथल ने ही पत्र की विश्वसनीयता पर सदेह प्रकट कर स्पष्टीकरण के लिए अकबर को राजी कर प्रताप को निम्नाकित शब्दो मे जोश भरा पत्र लिखा था—

पातल जो पतशाह बोले मुख हुतौ वयण।
मिहर पिछम दिस माह, उगे कासप राव उत् ॥
पटकू मू छां पाण, कै पटकू निज तन करद।
दोजो लिख दीवाण, इण दो महली बात इक ॥

मूलर ने इस प्रसग के दो अत्यन्त सुन्दर

चित्र बनाए हैं जो बीकानेर अजायबघर की चित्र दीर्घा मे प्रदर्शित हैं।

रायसिंह ने लाहौर से दिल्ली दरबार मे आ बसे कुछ विख्यात चित्रकारो को भी अपने राज्य मे आश्रय दिया जिनमे आलीरजा और रुकनुद्दीन के नाम उल्लेखनीय हैं। इकहरी, नवरंगी, मृगनयनी नारियो के इनके चित्रो मे मुगल एव राजस्थानी शैली का अनुपम समन्वय है जिसे 'बीकानेरी शैली' से सम्बोधित किया जाता है। इसमे लाल नीले व हरे रंगो का प्रयोग, पुरुष आकृतियो मे लम्बी जुल्फें, मुगल शैली की पगडिया, ऊँट और हरिण आदि का बहुतायत से प्रयोग है।

"जय जंगलधर पातशाह"

यहा के नौवें राजा करण सिह शूरवीर एव अत्यत पराक्रमी व्यक्तित्व के धनी थे। औरगजेब की सेना अटक नदी पार कर राजपूत रजवाडो पर जब आक्रमण किया चाहती थी तो उन्होने शाही बेडे को ध्वस्त कर धर्म एव क्षत्र रक्षण का पौरुष प्रदर्शित किया। इस पर अन्य राजाओ ने उन्हे 'जय जगलधर पातशाह' की उपाधि से सम्मानित किया था।

करणसिह के पुत्र अनूपसिह बीकानेर के अत्यन्त उल्लेखनीय शासक हुए। वे पराक्रमी, कूटनीति और विद्या व कलानुरागी व्यक्ति थे। वे औरगजेब के प्रमुख सेनापतियो मे से एक थे। मराठो व दक्षिण की अन्य मुहीमो में उन्हे भेजा गया था। 1670 से 76 तक शिवाजी के साथ लडे गये युद्धो मे वीरता का परिचय देने हेतु उन्हें 'महाराजा' की उपाधि और खिलअत प्रदान की गई थी। सन् 1678 मे औरगाबाद के शासक को उन्होने युद्ध मे परास्त किया था। भाई पदमसिह की सहायता से आदूणी के विद्रोह का दमन किया। बीजापुर के सिकन्दर पर जब औरगजेब की सेना ने चढाई की, तब भी शाहजादा आजम बहादुर खा आदि के साथ अनूपसिह भी उनके साथ थे। इस युद्ध मे सिकन्दर को आत्म-समर्पण कर मुगलो की अधीनता स्वीकार करनी पडी। पुरस्कार स्वरूप अनूपसिह को सक्खर का शासक बनाया गया। सन् 1786 मे जब गोल-कुण्डा पर चढाई की गई और नौ माह के घेरे के बाद भी सफलता नही मिली तो जुल्फीकार खा को पेशावर से बुलवाया गया, वह अनूप सिह के साथ युद्ध में भाग लेने वहाँ पहुँचा और मुगलो की विजय हुई। इस युद्ध मे अनूपसिह के भाई पदमसिह तथा अमर सिह ने ऐसी वीरता प्रदर्शित की थी कि मुहीम के पश्चात लौटती हुई सेना की अगवानी स्वय बादशाह औरगजेब ने की तथा इन वीरो के बख्तरबद पर लगे खून के धब्बो को स्वय अपने हाथ से साफ किया। इस प्रसग का एक सुन्दर चित्र बीकानेर अजायबघर की चित्र दीर्घा मे विद्यमान है।

> सन् 1574 में रायसिंह बीकानेर की गद्दी पर बैठे। वे विद्यानुरागी भी थे। एक बार दक्षिण में नियुक्त होने पर उन्होंने निर्जन स्थान पर एक फोग का बूटा देखकर भावमय दोहा कहा —
>
> तू सै देशी रूखडा, म्हे परदेशी लोग।
> म्हाने अकबर तेडिया, तू क्यों आयो फोग।।

अनूपसिंह विद्यानुरागी एव विद्वानो के आश्रय दाता थे । उन्होने स्वय अनूप-विवेक (तत्रशास्त्र,) काम-प्रबोध (काम-शास्त्र) श्राद्ध प्रयोग चितामणि तथा अनूपोदय नामक गीत गोविंद की टीका लिखी थी । उनके सरक्षण मे साहित्य साधना करने वाले विद्वानो मे विद्यानाथ सूरि, मणिराम दीक्षित, भद्रराम, अनन्त भट्ट, श्वेताम्बर उदयचद प्रभृत रचनाकारो के नाम उल्लेखनीय हैं। सस्कृत भाषा व साहित्य के साथ वे राजस्थानी के भी अनन्य प्रेमी थे । उन्होने शुक-सारिका का भाषानुवाद सुग्रा बहोतरी तथा बैताल पच्चीसी का काव्य मिश्रित मारवाडी गद्य मे अनुवाद करवाया । उनके दरबार मे अनेक सगीतज्ञो को भी प्रश्रय मिला । शाहजहाँ के दरबार के प्रसिद्ध सगीताचार्य के पुत्र भाट भट्ट ने सगीत अनुपाकुश, अनूप सगीत विलास, अनूप सगीत रत्नाकर आदि ग्रथो की रचना की । मु शी देवी प्रसाद ने अनूप सिंह द्वारा स्वय रचित ग्र थो की विस्तृत सूचि लिखी है जिसमे वैद्यक, ज्योतिष, सगीत, धर्म-शास्त्र, कर्म-काण्ड एव पूजा-अर्चना सम्बन्धी बहु सख्य रचनाए सम्मिलित हे ।

अनूप सिंह को भवन निर्माण एव स्थापत्य कला का भी बडा शौक था । अनूपगढ का सुदृढ किला तथा जूनागढ का अनूप महल मुगल शैली की स्थापत्य के अनूठे एव सुन्दर नमूने है । अनूप महल बीकानेर के दीवाने खास की तरह वर्षों तक प्रयुक्त होता रहा है । सोने के पानी की नायाब चित्रकारी करने वाले उस्ता कारीगरो को भी उन्होने प्रश्रय दिया । लकडी के दरवाजो और शहतीरो पर बेलबूटो का मत्रमुग्ध बनाने वाला सुन्दर कार्य भी उनके समय म हुआ । सर्वधातु की अनेक सुन्दर मूर्तिया आज भी तैंतीस करोड़ देवताओ के मन्दिर मे सुरक्षित हे ।

महाराजा श्री गंगासिंह

बीकानेर राज्य के राजाओ मे सर्वाधिक बुद्धिमान, दूरदर्शी कूटनीतिज्ञ, प्रजावत्सल और जन कल्याणकारी शासक महाराज गगासिह हुए । इस काल मे बीकानेर की चहुमुखी उन्नति हुई जो बीकानेर राज्य के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है ।

आधुनिक बीकानेर के जनक महाराजा गगासिंह बीकानेर के राजाओ मे सर्वाधिक योग्य, प्रजावत्सल और कल्याणकारी थे । नो वर्ष की छोटी वय मे ही 13 अगस्त 1887 को उनका राज्यारोहण हुआ । 1889 मे उन्हे मेयो कॉलेज अजमेर मे अध्ययन हेतु भेजा गया । वे कुशाग्र बुद्धि थे । अंग्रेजी विषय तथा वाद-विवाद मे उन्हे विशेष रुचि थी । अतः वक्तृता कौशल बचपन से ही प्राप्त था । पाच वर्ष बाद 1895 मे वे बीकानेर वापस लौटे । आगे की शिक्षा दीक्षा सर ब्रियान एगरटन के सरक्षण मे यहीं हुई । पटवारी से लेकर प्रधान मन्त्री तक के दायित्व निर्वाह का शिक्षण उन्हे दिया गया । 1898 मे ले. कर्नल बैल की कमान मे सैन्य प्रशिक्षण हेतु उन्हे देवली भेजा गया । लौटने पर सादुॅल लाइट इन्फैन्ट्री की कमान ग्रहण की । सात जुलाई 1897 मे प्रतापगढ की राजकुमारी से उनका विवाह सम्पन्न हुआ ।

सन् 1899-1900 मे राज्य मे भीषण अकाल पडा जिसमे उन्होने उदारतापूर्वक राहत सेवाए प्रदान की । फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने उन्हे "केसर-ए-हिन्द" का खिताब

बीकानेर जिनका ऋणी है

तपोधन श्री श्रीकृष्णदास जाजू

प्रमुख खादी नेता
श्री बलवन्त सावलराम देशप

स्वतन्त्रता सेनानी
श्री रघुवरदयाल गोईल

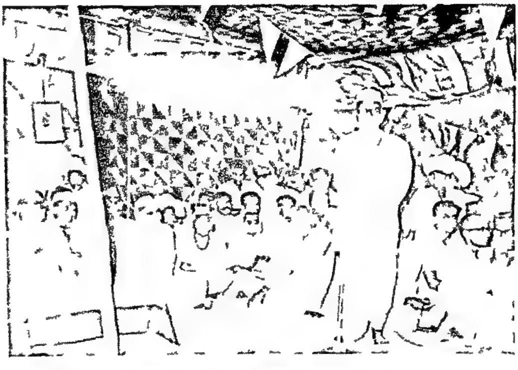

बीकानेर मे आयोजित कार्यकर्ता सभा का दृश्य। चित्र मे तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबर भाई, श्री राधाकृष्ण बजाज, श्री ब सा देशपांडे दिखाई दे रहे हैं।

प्रदान किया । सन् 1900 1901 मे गगा रिसाला के साथ बक्सर युद्ध मे भाग लेने वे चीन गए ।

गंग नहर का अवतरण

सन् 1903 मे सतलज नदी से अपने राज्य मे पानी लाने की योजना बनाई और सतत् प्रयासो के पश्चात अतत. बीकानेर मे गग नहर लाने मे सफल हुए । **इसी से उन्हे आधुनिक भागीरथ भी कहा जाता है ।** मूल नहर की लम्बाई 84 5 मील है । सहायक नहरें 634 मील लम्बी हैं। यह नहर 6,20,000 एकड भूमि को सिंचित करने वाली विश्व की प्रथम कक्रीट निर्मित नहर है । बीसवी सदी के प्रारम्भ मे अपर्याप्त साधनो और सुविधाओ वाले राज्य में ऐसी अनूठी योजना की क्रियान्विति अपने समय से बहुत आगे की बात थी, जो महाराजा गगासिंह की दूरदर्शिता, प्रजावत्सलता और योजना क्षमता की परिचायक है । भाखरा नहर की पूर्व योजना भी गगासिह जी के समय मे ही बनी थी ।

सिल्वर जुबली समारोह

सन् 1910 मे बीकानेर मे मुख्य न्यायालय की स्थापना हुई । इस प्रकार कार्यकारी और न्याय व्यवस्था को पृथक-पृथक रखने का श्रेष्ठ उदाहरण भी उन्होने बहुत पहले कायम किया । सन् 1911 मे उन्होने दिल्ली दरबार मे हिस्सा लिया । देशभक्त गोपालकृष्ण गोखले से इसी समय मैत्री सबध स्थापित हुए । इसी वष वे लन्दन मे जार्ज पचम के राज्यारोहण मे शरीक हुए । सन् 1913 मे बीकानेर मे विधान सभा की स्थापना हुई । 1912 मे उनके 25 वर्ष के शासनकाल के सपूर्ण होने के फलस्वरूप सिल्वर जुबली समारोह सपन्न हुआ । उन्होने हिन्दी को राज्य भाषा घोषित किया । हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु **'नागरी भण्डार'** जैसी सस्था का निर्माण किया ।

सन् 1917 में विश्व युद्ध मे सम्मिलित होने फ्रास और मिश्र गए । गगा रिसाला ने युद्ध मे प्रसिद्धि अर्जित की । 1916 में भारतीय नरेशो का जो सगठन बना था, गगासिह इसके प्रथम मानद सचिव बनाए गए । 1921 में वे नरेन्द्र मण्डल के प्रथम चान्सलर बने ।

गगासिह जी ने अपने राज्य में अनेक कल्याणकारी योजनाए लागू की । सन् 1928 मे राज्य में पचायतो की स्थापना की । उन्होने बाल-विवाह की कुरीति को बद करने हेतु कानून बनाया तथा इसी वर्ष जीवन बीमा योजना का प्रारम्भ हुआ । 1929 मे बीकानेर मे अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा का प्रारम्भ किया गया । शिक्षा प्रदान करने हेतु लडके व लडकियो के लिए महारानी स्कूल लेडी एल्गिन, महारानी सुदर्शन कॉलेज, नोबल्स स्कूल, सादुंल स्कूल तथा फोर्ट स्कूल की स्थापना की गई । 1937 मे उनके 50 वर्ष के राज्यकाल के उपलक्ष में धूमधाम से स्वर्ण जयन्ति मनाई गई । इस अवसर पर पी. बी एम अस्पताल का निर्माण हुआ । इसमे टी. बी. तथा एक्स-रे के आधुनिक वार्ड भी बनाए गए । अत्यन्त भव्य स्टेडियम बनवा कर खेलो को प्रोत्साहन दिया गया । इसी के फलस्वरूप बीकानेर फुटबाल व क्रिकेट मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाडियो को तैयार कर सका । सन् 1937 मे ही श्री जयनारायण

ख्यात के सम्बन्ध मे सर डी एम. फिल्ड को प्रसिद्ध एतिहासिक पत्र लिखा, जो उनकी पारखी दृष्टि का परिचायक है।

भवन निर्माण और स्थापत्य

श्री गगासिह् को भवन निर्माण एव स्थापत्य कला का भी अत्यन्त चाव था। सुरम्य पब्लिक पार्क और उसका कलात्मक मुख्य द्वार, लालगढ के सुन्दर प्रासाद, विजय भवन की अनूठी इमारत, नगर पालिका भवन, गगा थियेटर आदि इमारतें गगासिह् द्वारा ही बनवाई हुई हैं।

अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे भी महाराजा गगासिह ने पर्याप्त ख्याति अर्जित की थी। सन् 1924 मे उन्होने राष्ट्र सघ में भारत का प्रतिनिधित्व किया। सन् 1930 में राष्ट्र सघ मे विश्व बधुत्व और शाति के प्रयासो पर बल दिया। इग्लैंड की गोलमेज सभाओ में उन्होने भारतीय नरेशो का प्रतिनिधित्व किया तथा भारत को स्वायतत्ता प्रदान करने पर बल दिया। 2 फरवरी 1943 मे बम्बई मे उनकी मृत्यु हुई। इस प्रकार महाराज गगासिह् एक कर्मयोगी, प्रगतिशील तथा कुशाग्र बुद्धि एव प्रजापालक कुशल शासक थे।

★

वडो देश वीकाणरो

मुलक जिण नीपजै, मोठ बाजर अनमघा।
मतीरा अर काकडी, सरस काचर सुगधा।
ऊडा पाणी पीवजै, आघण दे इधकेरा।
जठ कमला जु ग, बडा वितु ड वछेरा।

धजबध कमध हीदु धरम, अमल नहीं असुराणरो।
सुरताण कहै सहुको सुणो, वडो देस वीकाणरो।।

वीका काधल विकट, वले नारायण वरदाई।
वीदावत वरीयाम, सभ ध्रम लीया सदाई।
मारी ओपमा भडा, जिकै भाज न जाण।
सो नगरा सावत, प्रसध समद्रा परमाणं।

करणेल मान रीछा करो, सैंहठो राज सुजाणरो।
सुरताण कहै सहु को सुणो, वडो देस वीकाणरो।।

—कवि सुरतान

बीकानेर : समन्वय और सहिष्णुता के परिप्रेक्ष्य में

15 वी शताब्दी के उतरार्द्ध मे ही यह क्षेत्र अनेक जातियो, धर्मों व सम्प्रदायो का आश्रय स्थल बन चुका था। हिन्दू धर्म की विभिन्न शाखाओ के अतिरिक्त इस्लाम व जैन धर्म भी यहा प्रवेश पा चुके थे। बीकानेर की स्थापना के समय जैन धर्म यहा विकसित अवस्था मे था। भाण्डासर का मन्दिर इस तथ्य का प्रबल प्रमाण है। राव बीका ने यहा की जातियो के पारस्परिक सास्कृतिक सम्बन्धो को बढावा दने के लिए गोदारा जाटो के मुखिया से राज्याभिषेक के समय टीका लगवाने की परम्परा का सूत्रपात किया जो क्षेत्रीय सामाजिक एकता का प्रतीक बनी। बीका तथा उसके वशजो ने अन्य अधीनस्थ जातियो जैसे-जोहिया, भाटी, मोहिल, चौहान इत्यादि की सास्कृतिक धरोहरो को सम्मान प्रदान किया। यहा के प्रचलित धार्मिक विश्वासो का भी बीकानेर के राज घराने ने सदैव आदर किया। देशनोक की चारण लोक देवी करणी की शिक्षाओ से देवी-शक्ति पूजा का प्रचार यहा तेजो से हुआ। बीकानेर नरेश स्वय इसके भक्त बने। मुकाम मे सत जाम्भोजी की शिक्षाओ से विश्नोई सम्प्रदाय का उद्भव हुआ जिन्होने वनस्पति और वन्य जीवो के सरक्षण का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया। नाथो की एक शाखा जसनाथी का भी इसी समय प्रादुर्भाव हुआ। ये सभी यहा के धर्म-निरपेक्ष वातावरण के विधायक बने। नव मुस्लिम जोहियो तथा भाटियो ने अपनी धार्मिक क्रियाओ को सम्पन्न करने मे कभी विघ्न नही पाया। बीकानेर राज्य कोष से मुस्लिम सतो को भी निर्वाह भत्ता सदैव दान मे मिलता रहा।

"देशोल्पवारिद्रु नगो जाङ्गल स्वल्परोगद "
—भावप्रकाश

अर्थात् जिस देश मे जल, वृक्ष और पर्वतादि कम हों, वह अल्परोग उत्पन्न करनेवाला (जागल देश) कहलाया है।

आयुर्वेद शास्त्रकारों की इस परिभाषा-कसौटी पर बीकानेर एकदम खरा उतरता है। न जल का बाहुल्य, न वृक्षों की प्रचुरता और पहाड तो नाममात्र को भी नही। आस-पास ऊँचे-ऊँचे रेतीले टीले, वृक्ष-विहीन खुले मैदान, चिलचिलाती तेज धूप और लुओं के थपेडों ने इस निर्जली भूमि पर आनूप देशोत्पन्न व्याधियों से ग्रसित मानव को आरोग्य प्रदान किया है। इसलिए "मरुभू आरोग्य कराणाम्" कहकर इसका वदन किया है।

बीकानेर राज्य मे बहुत से दीवान, मत्री व अन्य अधिकारी जैन मतावलम्बी थे। कर्मचन्द बछावत, हिन्दूमल आदि जैन दीवान थे।

राजा रायसिंह ने गुजरात अभियान के समय बहुत सो जैन मूर्तियो को बचाया व बीकानेर लाकर सुरक्षित रखा। जब बादशाह जहांगीर जैन मुनि मानसिंह से अप्रसन्न हो गया तो रायसिंह ने ही उसके प्राणो की रक्षा की। महाराज सूरत सिंह ने जोधपुर के नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध गुरु आयश नाथ के शिष्य घुणी नाथ को बीकानेर मे प्रश्रय दिया। वैष्णव सम्प्रदाय यहा सदा से ही लोक-प्रिय रहा। लक्ष्मीनाथ जी, दाऊजी, तथा रतन बिहारी जी के सर्ववन्द्य मन्दिर इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। कृषि, व्यवसाय, भूमिकर तथा दुर्भिक्ष व अकाल सहायता का लाभ सभी–जातियो को बिना किसी भेदभाव के सदैव मिलता रहा। महाराजा गगासिंह ने गुरुद्वारा व गिरजाघर के निर्माण मे भी आर्थिक सहायता दी। बीकानेर के राजमहलो के दरवाजो पर तैनात होने वाले अधिकाश प्रहरी मुसलमान थे। सभी सतो व पीरो का यहा सदैव आदर हुआ। बाबा रामदेव तथा महर्षि कपिल के पावन मन्दिर राजकीय अनुदान पर निर्मित हुए। कोलायत सरोवर व घाटो के निर्माण मे राज्य ने सहायता दी। गजनेर के राजमहल मे ही मुस्लिम पीर का मजार बनाया जा सका, जहा आज भी प्रतिवर्ष मेला लगता है। सन् 1946 में जब हिन्दू-मुस्लिम दंगे देश भर में व्याप्त हो गए थे तो यहा के शासक शार्दुल सिंह की विशेष सतर्कता से पूववत साम्प्रदायिक सद्भाव का अनूठा उदाहरण कायम रह सका और भारत विभाजन भी यहा कटुता व घृणा फैलाने मे सफल नही हो सका। इस प्रकार यहा प्रकृति की अनुदारता से त्रस्त भूमि के निवासियो ने अपनी उदारता से भारतीय सस्कृति के समन्वयात्मक श्रेष्ठ तत्वो का परिचय दिया।

लोकमानस द्वारा स्वीकृत लोकोक्तियां

सीयाले खाटू भलो, उन्हाले अजमेर।
नागाणो नित रा भलो, सावण बीकानेर॥

मारवाड नर नीपजे, नारी जैसलमेर।
तुरी तो सिंधी सातरा, करहल बीकानेर॥

ऊँठ, मिठाई अस्तरी, सोना, गहणो, साह।
पाच थोक पिरथी सिरै, वाह बीकाणा वाह॥

हापड रा पापड काबुल रा मेवा।
मकराणै रो माठो, बीकानेर की सेवा।

सोरठियो दूहो भलो घोडी भली कुमैत।
नारी बीकानेर री, कपडो भलो सुपेत॥

बीकानेर : साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा के संदर्भ में

बीकानेर राज्य की स्थापना के प्रारम्भिक ाल से वर्तमान समय तक यह विपुल साहित्य नन का क्षेत्र रहा है । यहा वार्ता, काव्य, ़का ग्रन्थ, आयुर्वेद ज्योतिष, अलकार छद शास्त्र, धर्म-शास्त्र सगीत, प्राचीन अभिलेख, विज्ञप्तिया आदि का प्रचुर परिमाण मे प्रणयन होता रहा है । राव कल्याण सिंह (वि. स. 1600-1680) के राज्य मे सदाशिव भट्ट तथा गोकुल प्रसाद त्रिपाठी प्रभृत विद्वान थे । भट्ट कृत 'राव विनोद' लोक व्यवहार व पाक शास्त्र सम्बन्धी अनूठा ग्रन्थ है । राजा राय सिंह ने जोतिष रत्नमाला, आयुर्वेद महोत्सव आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे । महादेव कृत रायसिंह-सुधा-सिन्धु, गोपाल व्यास लिखित 'अनुभव सार', जय सोम रचित 'कर्म चद्र-वशोत्कीर्तनम्' इस काल की अनूठी कृतिया है । राजा करणसिंह के समय मे गगानन्द मैथिल रचित 'कर्ण भूषण', मुद्गल कृत 'कर्ण तोष' तथा होसिग भट्ट की 'कर्ण वतस' उल्लेखनीय रचनाए हैं । भट्ट की रचना मे ामाजिक स्थिति का व्यापक चित्रण है तथा उन्होने साधुओ और वल्लभ-मार्गी सम्प्रदाय की कुरीतियो पर तीव्र प्रहार किया है । राजा अनूपसिंह के काल मे हरिदेव व्यास का 'अजित विज्ञप्ति लेख' मुनि उदयचद रचित 'पाण्डित्य दर्पण', राय ज्योतिषी लिखित 'मुहूर्त चितामणि' महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं । महाराज गजसिंह के समय मुनि क्षमाकल्याण का 'होलिका चरित्र' तथा खरतर गच्छ गुरु पट्टावली' लिखे गये । महाराज गगासिंह के समय प. देवी प्रसाद शास्त्री ने 'शतचडी यज्ञ विधानम्' और गगासिंह कल्प-द्रुम' की रचना की । रतन नगर निवासी प. हनुमान प्रसाद शास्त्री भी इसी काल हुए । वे व्याकरण और आयुर्वेद के मूर्धन्य विद्वान थे। 'सस्कृत रत्नाकर' और 'भारती' आदि सस्कृत पत्रिकाओ मे आयुर्वेद सम्बन्धी अपने अनेक शोध परक लेख प्रकाशित हुए हैं । श्री विद्याधर शास्त्री का 'हरना मामृतम' मे भारतीय सस्कृति और आदर्श जीवन पद्धति की सुन्दर झलक चित्रित है । शास्त्री जी का 'विक्रमाभ्युदयम' भी श्रेष्ठ चम्पू काव्य है । शास्त्री जी के अनुज डॉ दशरथ शर्मा ने इतिहास और शोध विषयक अनेक ग्रन्थ सम्पादित किए हैं जिनमे 'दयाल दास की ख्यात II,' 'क्यांम खा रासो' पवारवश दर्पण, इन्द्र प्रस्थ प्रबंध, अमरसिंहाभिषेक काव्य मुद्रा राक्षस पूर्व सकथानक, रास और रासान्वयी काव्य, ओझा निबध सग्रह आदि प्रमुख हैं । इनके अतिरिक्त उनके 400 से अधिक स्फुट लेख, शोध निबध आदि विविध पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुए हैं ।

तैस्सीतोरी का योगदान

बीकानेर मे साहित्य साधना करने वाले प्रवासी विद्वान डा. लुइजी पियो तैस्सीतोरी का नाम अत्यन्त उल्लेखनीय है । जिन्होने राजस्थान और बीकानेर राज्य के अनेक अलभ्य अनछुए ऐतिहासिक अभिलेखो व

शिलालेखो को प्रकाशित कर इस क्षेत्र के इतिहास को नवीन आयाम दिये । उन्होने 21 वर्ष की आयु मे इटली की फ्लोरेन्स युनिवर्सिटी से एम ए किया और वही से 'रामचरित मानस' विषय पर डाक्टररेट प्राप्त की। बगाल की एशियाटिक सोसाइटी द्वारा आमन्त्रित किए जाने पर वे 8 अप्रेल 1914 को भारत पहुचे । वे वार्डिक एण्ड हिस्टोरीकल सर्वे ग्राफ राजपूताना के अधीक्षक नियुक्त हुए । 26 जुलाई को वे जोधपुर पहुँचे और यहा से बीकानेर आये । 5 वर्ष तक वे इस क्षेत्र मे कार्यरत रहे । 22 नवम्बर 1919 को बीकानेर में ही उनका निधन हुआ ।

> प्रागैतिहासिक काल में बीकानेर राज्य के उत्तर में सरस्वती व दृषद्वती के अन्तराल में अन्तर्हित एक प्राचीन सभ्यता और सस्कृति थी। कुछ समय पूर्व श्रीगगानगर मण्डल में स्थित कालीबग के स्थान पर केन्द्रीय पुरातत्व विभाग व स्वीडन के पुरातत्वज्ञो के निर्देशन मे होनेवाले उत्खनन कार्य से यह सिद्ध हो चुका है कि इस सस्कृति का हड़प्पाकालीन–सस्कृति से सीधा सबध था। इस स्थान की प्राप्त सामग्री से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनीतिक जीवन का भी परिचय प्राप्त होता है।

बीकानेर में डा. तैस्सितोरी ने वृहत जैन खरतर गच्छीय आदि कई भण्डारो का अवलोकन किया । उन्होने नगर नगर, गाव-गाव घूम कर पुराने शिलालेख, सिक्के, मूर्तिया तथा अन्य ऐतिहासिक सामग्री का सग्रह किया, जिनके बल पर आज का बीकानेर म्यूजियम खडा है । उनके शोध कार्यों का विवरण बगाल की एशियाटिक सोसाइटी ने अपनी सन् 1914, 1915, 1916 व 1917 की चार रिपोर्टो मे प्रकाशित करवाया है । सोसाइटी द्वारा प्रकाशित तीन ग्रन्थो—वेली क्रिसन रूक्मणी री वचनिका राठौड रत्नसिह जी, महसदासोत री खिडिया जगा री कही, एव 'छद राउ जैतसी रो भीढू सूजे रो कया' मे से तीसरा ग्रन्थ उनके द्वारा बीकानेर राज्य के इतिहास के प्रति की गई एक बडी सेवा है। तैस्सितोरी के अन्य निवन्धो मे बीकानेर राज्य की मारवाडी भाषा पर विशद प्रकाश पडा है ।

बीकानेर के सरस्वती पुत्रो मे डा श्री छगन मोहता, श्रीअगरचद नाहटा, श्रीनरोत्तम दास जी स्वामी तथा श्री नाथूराम खडगावत का नाम भी उल्लेखनीय है । श्रीअगरचद जी ने अपने जीवन काल मे हजारो हस्त–लिखित ग्रन्थो का सग्रह किया जो अभय ग्रथागार मे आज भी सुरक्षित हैं । किसी एकल व्यक्ति द्वारा किया गया यह अनूठा कार्य है । श्री नरोत्तम दास जी ने व्याकरण, छद, अलकार तथा राजस्थानी भाषा विषयक अनेक पुस्तको की रचना कर साहित्य की श्री-वृद्धि मे योग दिया । श्री नाथूराम खडगावत ने इतिहास एव पुरातत्व के क्षेत्र मे श्रेयष्कर कार्य किए । 38 वर्ष की आयु मे 'इडियन हिस्टोरिकल रेकार्ड कमीशन मे उन्हे बीकानेर का प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया । 1958 मे वे राजस्थान के पुरालेखा विभाग के निदेशक नियुक्त किए गए । उन्होने '1857 के आंदोलन मे राजस्थान की भूमिका' विषय पर शोध भी किया । पुरा लेखा विभाग को समृद्ध करने मे उन्होने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । 'राज-

स्थान श्रृ द एजेज' नामक योजना का क्रियान्वयन भी उन्होने सफलता पूर्वक किया। उन्होने इतिहास परिषद' की स्थापना मे प्रशसनीय सहयोग दिया।

वर्तमान समय मे भी बीकानेर नगर मे साहित्य रचना का उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न हो रहा है। स्व शम्भुदयाल सक्सेना, श्री हरीश भादाणी, श्री रामदेव आचार्य, श्री यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र,' श्री नन्द किशोर आचार्य प्रभृत लेखक हिन्दी तथा डा मनोहर शर्मा, श्री अन्नाराम सुदामा, श्री सावर दैया, श्री शिवराज छगाणी आदि राजस्थानी साहित्य की श्रीवृद्धि मे उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं। बीकानेर के उस्ता श्री हसीमुद्दीन का ऊँट की खाल पर सोने की चित्रकारी के काम के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। अल्ला जुलाई बाई को गायकी के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिले।

खेलों के क्षेत्र मे भी बीकानेर ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतिभाओं को जन्म दिया है। महाराजा करणीसिह ने तीरदाजी मे अन्तर्राष्ट्रीय खेलो मे भारतीय टीम के कप्तान के रूप मे प्रतिनिधित्व किया। इनकी पुत्री राज्य श्री भी महिला तीरदाज के रुप मे राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कर सकी। फुटबाल के प्रसिद्ध खिलाडी भारतीय टीम के कई वर्ष तक कप्तान रहने वाले मगन सिह यही के निवासी हैं। चैनसिह तथा स्व चुन्नी लाल का नाम भी भारत के श्रेष्ठ खिलाडियो मे रहा है। आज राष्ट्रीय स्तर के कार्टू निष्टो मे भी बीकानेर के सुधीर तैलग तथा पकज गोस्वामी के नाम लिए जा सकते हैं। ●

हिन्दी विभागाध्यक्ष
रामपुरिया महाविद्यालय, बीकानेर

रोचक पतंगबाजी

एक ओर जहाँ सारे देश मे पतगबाजी ग्रीष्म मे और जयपुर मे मकर सक्रान्ति के दिन होती है, वहाँ बीकानेर मे पतगें बीकानेर स्थापना दिवस के अवसर पर उडाई जाती हैं। इसके पीछे महत्वपूर्ण कारण यह है कि राव बीका जी ने नगर की नींव रखने के बाद उसकी खुशी में एक बडा साजिन्दा उडाया जो कि आज भी उडाया जाता है। तब से चिन्दे के साथ-साथ पतगे भी उडने लगीं। चिन्दा एक प्रकार की बडी पतग ही होता है, यह कपडे का बना होता है तथा इसे बास की पवटियो से खडा कर सर पर पहनने वाली पगडी से बाध कर उडाया जाता है। उडाने से पूर्व उसकी विधिवत पूजा होती है। चिन्दोनुमा इस पर साथिया बनाकर कुकुम छिडका जाता है। यह चिन्दानुमा बडी पतग केवल हवा मे ही उड सकती है। अक्सर देखा गया है कि स्थापना दिवस के दिन शाम को हवा अवश्य तेज होती है, जिससे चिन्दा उडाने की रस्म पूरी हो सके। जब चिन्दा हवा मे उड जाता है तो उसे छोडते हैं फिर पकडते हैं, इस प्रकार यह छोडने-पकडने का क्रम आठ से साठ वर्ष तक की आयु वालों के बीच बडे मजेदार ढग से चलता रहता है। यदि इस दिन किसी कारणवश हवा कम होती है तो लोगों द्वारा समवेत स्वर में गाया जाता है–

> ख्वरा दादी पाणी ला
> टाबरियाँ रा चिन्दा उडा।

बीकानेर के दर्शनीय स्थल

★ जूनागढ का किला

बीकानेर राज्य के छठे राजा रार्यासह ने इस सुदृढ एव कलात्मक किले का निर्माण करवाया । मुख्य भाग 'सूरजपोल' पर उत्कीर्ण प्रशस्ति से विक्रम स १६४५ (ई सन् १५८८) मे फाल्गुन माह शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन मगलवार को गढ का शिलान्यास किया गया ज्ञात होता है । पाच वर्षों मे मत्री कर्मचन्द बछावत की कुशल देखरेख मे किला बन कर तैयार हुआ । यह स्थापत्य की दृष्टि से ईरण या धन्व दुर्ग की कोटि मे आता है ।

१०७८ गज की परिधि मे ३० फीट चौडा प्राचीरो से घिरा हुआ यह किला सात प्रोल और प्रोतोलिकाओं से सुशोभित है । जयसलमेर के पीले पत्थरो से निर्मित मुख्य सूरजपोल (पूर्वीद्वार) राजा रार्यासह द्वारा बनवाया गया है । करणपोल, दौलतपोल और फतेहपोल राजा करणसिंह द्वारा निर्मित हैं । दक्षिणी पश्चिमी और उत्तरी द्वारो को क्रमश चादपोल और ध्रुवपोल कहते हैं । रतनपोल का निर्माण महाराजा डूगरसिंह जी के द्वारा करवाया गया । सूरजपोल के सामने वीर प्रवर जयमल और पत्ता की यादगार स्वरूप हाथी पर मूर्तिया बनी हैं, जो अत्यन्त शुभ मानी जाती हैं ।

किले का स्थापत्य दर्शनीय है । समय-समय पर शासको द्वारा किले के महलो की वृद्धि होती रही है । प्राचीनतम रायनिवास, हरिमन्दिर, हजूरी गेट राजा रार्यासह द्वारा निर्मित हैं । जालिया गुजराती शैली मे हैं तथा पत्थर मे तराश कर बनवाई गई हैं । इन पर मोर, कमल, कीर्तिमुख और हाथीमुख उत्कीर्ण हैं, जो हिन्दू शैली के प्रतीक हैं । इन महलो के निर्माण मे जयसलमेर के पीले और लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है ।

आगरा और दिल्ली के मुगल महलो या आमेर के राजपूत महलो की तरह ही जूनागढ किले की रचना हुई है । महलो और उनके बडे दालान नुमा हाल कमरो की बनावट मुगल स्थापत्य की याद दिलाती है, जिसके सर्व सुदर उदाहरण महाराजा अनूप सिंह द्वारा निर्मित करण महल और अनूप महल है । करण महल मुगलो के दीवाने आम तथा अनूप महल दीवाने खास की याद दिलवाते हैं । बादशाह महल, जोरावर महल फूल महल, गज मदिर और चदर महल कला के श्रेष्ठ नमूने दीख पडते हैं । शीश महल की भव्यता एक बार पुन हमे आगरा के शीश महल की याद दिला देती है । सूरतसिंह के पुन रतनसिंह ने अपने लिए 'फूल महल की साल' को बनवाया, जिसमे काच और सोने का कलात्मक कार्य है ।

चित्रकला की दृष्टि से महलों के दरवाजे,

घरन और दीवालो पर बीकानेरी शैली दृष्टिगत होती है। फूल महल मे कृष्ण की विभिन्न लीलाओ और रागरागनियो का अभूतपूर्व समागम किया गया है। विष्णु, लक्ष्मी, उमा, माहेश्वरी आदि के चित्र भी महलो मे देखने को मिलते हैं। फूल महल के पास का दक्षिणी-पश्चिमी बरामदा भी शाही जन्तुओ और शिकारो के चित्रो से भरा है।

सरदार निवास, छत्तर महल, लाल निवास और महाराज गगासिह का दरबार हाल स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। गगा निवास की लाल पत्थर की कारीगरी तथा उस पर उत्कीर्ण रास लीला कला के अत्यन्त सुन्दर उदाहरण हैं।

गढ के करणी सग्रहालय मे दक्षिण के युद्धो से लाई हुई कासे की मूर्तिया, राव बीकाजी द्वारा जोधपुर से लाई गई कलात्मक वस्तुएँ तथा पदमसिह जी की १२ सेर वजन की ऐतिहासिक तलवार तथा अन्य प्राचीन हथियार महत्वपूर्ण सग्रह हैं।

महलात के प्रागणों के सामने एक नौबतखाना १६ वी सदी के गुजराती-राजपूत परम्परा के अनुरूप बना है। किले के बाहर पूर्व मे सूरसागर तालाब का निर्माण सूरतसिंह जी ने करवाया था जो आज जीर्णावस्थामे है। बादल महल में कई फव्वारे हैं, जो मरु भूमि की तपती हुई गरमी मे हवा को ठडा रखते हैं। डूगरसिह द्वारा निर्मित डूगर निवास तथा छत्रमहल का अलकरण युरोपियन शैली मे हुआ है।

वस्तुत. बीकानेर का जूनागढ़ स्थापत्य का अनूठा उदाहरण है तथा इसमे चित्रकला, मूर्तिकला, पत्थर की तराश आदि का अनुपम सगम हुआ है। श्री कर्पूरचद कुलिश ने अपनी पुस्तक 'मैं देखता चला गया' मे लिखा है कि

> 'जूनागढ देखा और आमेर के प्रसिद्ध किले और चद्रमहल को भूल गया। इतिहास की बात करें तो करीब ५०० वर्ष पुरानी है और कितनी घटनाओ से भरी पडी है। पुस्तक की बात करें तो उसका कोई अत नही। सोने और मीने की कारीगरी देखें तो ऐसा लगता है जैसे किसी ने नये फारसी गलीचो को काट कर छतो और दीवारो पर चिपका दिया है।''

देख्या शहर बीकानेर

देख्या शहर बीकानेर,
की ने शहर सगले जेर।
जिसका खूब है बाजार,
मिलते बहुत है नर–नार।
लबी खूब है हर श्रेणी
मिलते लोक सौदा लेणि।
बैठे बहुत साहूकार,
करने वणिज अरु व्यापार।
ताके बिच देखि खूब,
गढी महल है महबूब।।
खेले बहुत है नित मौज,
चके ऊढ आये रोज।।

'बीकानेर-गजल से'

★ बीकानेर म्यूजियम

महाराज गगासिह जी के राज्यारोहण की स्वर्ण जयती समारोह के अवसर पर तत्कालीन गवर्नर जनरल लिनलिथगो द्वारा ५ नवबर १९३७ को 'गगा गोल्डन म्यूजियम' का औपचारिक उद्घाटन हुआ था। पहले यह सागर

महल के समीप था। वर्तमान वृत्ताकार सग्रहालय भवन का उद्घाटन ४ सित. १९५४ को किया गया। इस सग्रहालय मे महाराज गगासिह जी के जीवन सम्बन्धी चित्र व सामग्री कक्ष, कलाकक्ष पट्ट परिधान कक्ष, ऐतिहासिक कक्ष, शस्त्रागार, पुरातत्व कक्ष, चित्रशाला व लोक कला दीर्घा आदि कक्षो मे इतिहास सस्कृति व कला की महत्त्वपूर्ण निधियो का सग्रह है।

प्रथम दीर्घा मे महाराज गगासिह के जीवन से सम्बन्धित तैलचित्र, फोटोग्राफ, विश्व युद्ध के समय उपयोग मे ली गई सामग्री, प्रमाण पत्र व तमगे तथा उनके द्वारा शिकार किए चीता और शेर प्रदर्शित हैं।

कला कक्ष मे लकडी से निर्मित कलात्मक सामग्री, ऊँट की खाल पर भव्य कलात्मक कार्य, शुतुरमुर्ग के अण्ड पर कलापूर्ण कार्य प्रस्तर पर नक्काशी का मनमोहक कार्य युक्त झरोखा व स्तम्भ मोरो की लडत, बीकानेर के बालू से निर्मित स्थानीय कांच की सुदर वस्तुए, इक्का रथ, हुक्का, पीते हुए शाही पुरुष, नोहर के मृण्मय पात्र, प्राचीन वाद्य यत्र ढोलक, नगारा, झाजर, मोरचग, पाबूजी का माटा आदि का प्रदशन सग्रहालय मे है। इससे बीकानेर के कलात्मक स्वरूप का परिचय प्राप्त हाता है।

पट्ट परिधान कक्ष मे बीकानेर जेल मे निर्मित उच्च कोटि के कलात्मक गलीचे और राजाओ की पोशाकें प्रदर्शित हैं।

ऐतिहासिक कक्ष मे बीकानेर के शासको की वोरता, रण कुशलता राजनीतिज्ञता को व्यक्त करने वालो घटनाओ को विख्यात चित्रकार ए एच मूलर ने चित्रित किया है। बीकानेर का पैतृक राज्य चिन्ह विपयक चित्र, राव जैतसिह का कामरान के साथ रात्रिकालीन युद्ध का चित्र, राजा रायसिह द्वारा गुजरात के गवर्नर मिर्जा मुहम्मद के वध का चित्राकन काफी सशक्त हैं। इसी प्रकार प्रताप को पत्र लिखते हुए पीथल का चित्र तथा करणीसिह का अटक के किनारे शाही बेडे को ध्वस करने वाला चित्र भी भावपूर्ण है।

शस्त्रागार कक्ष प्राचीन शस्त्रास्त्रो का अद्भुत सग्रह है। तीर कमान, तुक्के, तलवारें, कटार, छुरी विछुआ, जाभिया बुग्दा गुप्ती, *साग गुर्ज गेडिया तबाल फरसी बदूक तोप* आदि सामग्री अपने क्रमिक विकास के परिचय के साथ प्राचीन योद्धाओ का भी स्मरण कराते हैं। सग्रह मे प्रदर्शित मचलाक किस्म की बदूक, जिसे चलाने के लिए पलीता लगाकर विस्फोट कराया जाता था और फिलटलाक किस्म, जिसे पत्थर के घषण से आग लगाई जाती थी प्रदर्शित हैं। पुरानी टापीदार कारतूसी-बदूक तथा ८ फिट लम्बी रामचगी बदूक भी यहाँ विद्यमान है।

अनेकविध तलवारें

सग्रहालय मे फारसी, अरबी, गुजराती, धूप, खुरासानी, कर्ण शाही, हकीम शाही, किरच आदि तलवार हैं। कोफ्त तथा तहनिशान काम की तलवारें भी दृष्टव्य हैं। महाराजा अनूपसिह द्वारा आदूनी की लूट मे प्राप्त एक तलवार की मूठ सर्प, मयूर सिह और हाथी आदि पशुओ की आकृति से निर्मित है। खाण्डा तलवार की ब्लेड पर हनुमान, भैरव गणेश, दुर्गा आदि की आकृतिया उत्कीर्ण

है। एक तलवार की ब्लेड पर शिकार का अंकन है। कटारें भी अनेक प्रकार की हैं। विछुआ, पेशकब्ज, खजर, कमान, जाभिया और छुरी आदि। अन्य हथियारो मे गुर्ज, गेडिया तवाल, फरसी, कुल्हाडी, बलमोरी, जगनोल, हिरणसिगी आदि उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त धातु से बने दर्पण, जिरह बख्तर, तोप, बारूद रखने की सीप तथा कुट्टे की कुप्पिया भी दीर्घा मे प्रदर्शित हैं।

पुरातत्व कक्ष में काली वगा, पीली वगा, भद्रकाली व रग महल आदि से प्राप्त प्रागैतिहासिक काल के अवशेषो में विभिन्न प्रकार के आभूषण जैसे कगन, अगूठी, कान के गहने आदि, मिट्टी और चर्ट के बने खेलने के पासे, मिट्टी के पशु-पक्षी, मानव आकृतिया एव सादे चित्रित मृण्मय पात्र आदि प्रदर्शित है।

मूर्तियो का अमूल्य भंडार

सग्रहालय मे आरम्भिक गुप्तकालीन मृण्मय मूर्तियो का अमूल्य भडार है। रगमहल मे प्राप्त एक मुखी शिवलिग, उमा माहेश्वर, दानलीला, चक्र पुरुष, अजेकपाद, गोवर्धन धर, पीर सुल्तान की थेडी से अपसरा, बडोपल से प्राप्त पुजारिन, प्रेम दृश्य, चितन मग्न आदि मृण्मय मूर्तिया आरम्भिक गुप्तकालीन धार्मिक जानकारी देने के साथ-साथ इस क्षेत्र मे मूर्तिकला के विकास की प्राचीनता पर प्रकाश डालती हैं।

बीकानेर सग्रहालय जैन सरस्वती की १० वी ११ वी शती मे निर्मित मूर्ति के लिए अत्यन्त प्रख्यात है। यह प्रतिमा भारत भर मे विख्यात है तथा सगमरमर पर उत्कीर्ण प्राचीन प्रस्तर प्रतिमा कला की सर्वोत्तम कृत्ति है। अन्य मूर्तियो मे उमा माहेश्वर, नर्तन-गायन, तथा अमरासर गाव मे प्राप्त धातु प्रतिमाएं हैं। कुछ धातु मूर्तियो पर कुटिल लिपि मे लेख भी खुदे हैं।

चित्र दीर्घा मे राजस्थान की विभिन्न चित्र शैली के चित्र प्रदर्शित हैं। १८ वी सदी का बारहमासा का पूरा सैट महत्वपूर्ण है जिन पर गोविन्द कवि के ब्रज भाषा के छद भी अकित हैं। लोक कला दीर्घा मे वस्त्र, चित्र, कुट्टी मिट्टी से निर्मित जन जीवन के मोडल, पाबूजी की पड व अन्य समृद्ध कलात्मक सामग्री है।

☐ गजनेर

१८ वी शताब्दी में बीकानेर के शासक राजसिंह के नाम पर इस गाव तथा झील का नाम गजनेर पडा। गजसिंह जी ने ही यहा सर्व प्रथम शाही भवनो का निर्माण कराया था। भौगोलिक दृष्टि से सारा महल झील के दक्षिणी किनार पर स्थित है। तीन तरफ वृक्षों के झुरमुट झील की शोभा बढाते हैं। वर्षा के समय दूर-दूर से बह कर एकत्र हुआ पानी यहा की प्राकृतिक छटा को मनोरम बना देता है। सर्दी की ऋतु मे इस झील तथा अरण्य मे पनाह लेने के लिए साइबेरिया से प्रति वर्ष कुछ सु दर पक्षी उड कर आते हैं।

स्थापत्य कला की दृष्टि से लाल पत्थर का प्रयोग सु दर लगता है। झील के किनारे डू गर निवास, नई पुरानी स्थापत्य शैली मे निर्मित, सरदार निवास, पुरानी शैली का टैनिस कोर्ट का बरामदा, गगा निवास, शबनम महल और जेठा भुट्टा का मकबरा दर्शनीय हैं। मकबरे के बगल मे घना जगल है, जिसमें

जगली सूअर और काले हिरण विचरण करते हैं। यहा कभी शाही शिकार गाह भी बना हुआ था। महल की छटा को जगली पशु एव घनी वनस्पती और भी मोहक बना देते हैं। मरु भूमि मे इस प्रकार की सुदर प्राकृतिक झील एव सुदर महलात व जगल प्राय अलभ्य दृश्य ही कहे जा सकते हैं। दूर-दूर से सैलानी इस झील के दर्शनार्थ प्रति वर्ष आते रहते हैं।

★ लक्ष्मीनाथजी का मन्दिर

बीकानेर नगर मे वैष्णवो के अनेक मंदिर हैं, जिनमे लक्ष्मीनाथजी का मन्दिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसे बीकानेर के तृतीय शासक राव लूणकरणी ने बनवाया था। यह नगर के दक्षिण मे बीकाजी की टेकरी तथा भाण्डासरजी के मन्दिर के समीप निर्मित है। मन्दिर के चारो तरफ एक विशाल ऊची दीवार का परकोटा है। परकोटे के भीतर मूल मन्दिर सगमरमर से बना है। इसके अष्टकोण स्तम्भो तथा शिखर पर तक्षणकला व तरास का कलात्मक कार्य किया हुआ है। छत पर कली के काम मे देवी-देवताओ की सुदर मूर्तिया चित्रित है। लक्ष्मीनाथ के मन्दिर के प्रागण मे ही कृष्ण–राधा–शिव तथा हनुमानजी के अन्य सुदर मन्दिर है जो लाल पत्थर से बने हैं। महाराजा गगासिह ने मन्दिर के पूर्वी भाग मे एक सुदर बगीचे का निर्माण कराया। मन्दिर के पश्चिम मे एक विशाल गौशाला भी बनी है। रामनवमी और कृष्ण-जन्माष्टमी पर यहा बड मेले लगते है। प्रतिदिन भी सैकडो की सख्या मे श्रद्धालु भक्त यहा उपस्थित होते हैं।

★ भाण्डासर जैन मन्दिर

यह मन्दिर बीकानेर नगर के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इसके पास ही श्री लक्ष्मीनाथजी के मन्दिर के सामने कभी बीकानेर का प्रथम किला स्थापित हुआ था। डॉ गौरीशकर हीराचद ओझा के आधार पर यह मन्दिर भाडा नामक के एक ओसवाल महाजन ने १४६८ वि. स मे बनवाया था। परन्तु भाण्डासर के शिलालेख से यह मन्दिर वि स १५७१ आसोज सुदी २ के दिन राव लूणकरण के राज्यकाल मे बना था। अत भाडासर मन्दिर प्रारम्भिक १६ वी सदी का होना सिद्ध होता है। यह मन्दिर पुरातत्व विभाग की राष्ट्रीय सम्पति के अतगत आता है। इस देवालय मे जैन तीर्थंकर सुमतिनाथ की मूर्ति स्थापित है। मन्दिर मे जैसलमेर के पत्थर का इस्तेमाल हुआ है। यह मन्दिर तीन मन्जिल का है, इसका उत्तग शिखर दूर-दूर से दीख पडता है। मन्दिर की फेरी मे मूर्तिया कलाकृति मे पूर्ण हैं। भव्य त्रैलोक्य दीपक-प्रसाद का जगती स्तम्भ कलाकृति मे अमूल्य कारीगरी का नमूना है। रग मण्डल का गुम्बज और उसकी चित्रकला अत्यन्त आकर्षक है। गुम्बज की चित्रकारी बीकानेर के प्रसिद्ध उस्ताद की कारीगरी द्वारा की गई है,जिसमे जैन कथा साहित्य, रोहणियाचार,उग्रसेन का महल, गिरनार तथा नरक यातना आदि के उत्कृष्ट चित्र अकित हैं। स्तम्भो, टोडियो, शिखर आदि पर तक्षणकला का बारीक व मनोरम कार्य दर्शको को मन्त्र मुग्ध बनाने मे सक्षम है।

★ चिंतामणि जैन मन्दिर

यह मन्दिर बीकानेर के जैन मन्दिरो मे सबसे प्राचीन है और नगर के पुराने भुजिया बाजार मे स्थित है। शिला लेखो के आधार पर बीकानेर राज्य के सस्थापक राव बीका ने इस मन्दिर की नीव डाली और उनकी

स्वर्ग तिथि के तुरन्त बाद ही वि स १५६१ आसाढ सुदि ६ वी रविवार को इसका निर्माण सम्पूर्ण हुआ। इस मन्दिर के मूल नायक आदिनाथ की प्रतिमा वि. स १३८० की है और सर्व प्रथम मडोवर के मूल नायक के रूप मे थी, जिसे बाद मे बीकानेर मे प्रतिष्ठित किया गया। राव जैतसी के राज्यकाल मे स. १५६१ मे बाबर के पुत्र कामरां ने बीकानेर पर आक्रमण किया था। आक्रमण मे उसने इस मंदिर मे प्रतिष्ठित मूल नायक प्रतिमा के परिवार को खण्डित कर दिया था। इस घटना का स्पष्ट उल्लेख मंदिर मे उत्कीर्ण लेख से प्रमाणित है।

★ कोड़मदेसर के भैरूंजी

बीकानेर के प्राचीन स्थानो मे राव बीकाजी द्वारा जोधपुर से लाये गये भैरूंजी की विशाल प्रतिमा पत्थर के एक ऊचे चबूतरे पर प्रतिष्ठित है। यह स्थान बीकानेर नगर से २७ कि.मी उत्तर-पश्चिम मे स्थित है। भैरोजी की मूर्ति के ठीक पाछे ही इस क्षेत्र का एक विशाल तालाब है। दो दिशाओ मे इस पर पक्के घाट बने हैं। साथ ही राजकीय रेस्ट हाऊस की लाल पत्थर से निर्मित आरामदेह इमारत भी बनी है।

★ श्री कोलायतजी का मन्दिर

बीकानेर से ५६ कि मी दूर पश्चिम मे साम्यशास्त्र के प्रणेता महर्षि कपिल की साधना एव निर्वाण स्थली श्री कोलायतजी नामक पावन धाम है। यह कपिल मुनी का सगमरमर से निर्मित सुंदर मन्दिर है। मन्दिर के किनारे पश्चिम दिशा मे विशाल कोलायत झील है, जिस पर तीन तरफ बडे बड पक्के घाट बने हैं। कार्तिक पूर्णिमा को पुष्करजी की तरह यहा भी विशाल मेला लगता है जिसमे लाखो श्रद्धालु राजस्थान ही नही हरियाणा, पजाब आदि प्रदेशो से भी आते हैं। कपिल मुनि महर्षि कर्दम एव माता देवहुति के पुत्र थे। इस क्षेत्र के लोक देव के रूप मे इनकी पर्याप्त मान्यता एव श्रद्धा है तथा उनकी कृपा एवं दयालुता की अनेक किवदंतिया प्रसिद्ध हैं। कपिल मुनि के मन्दिर के अतिरिक्त गगाजी का मन्दिर तथा पच मन्दिर आदि अन्य भव्य व कलात्मक मन्दिर भी यहा बने हैं। कोलायत मे सैकडो धर्मशालाए तथा अन्य निजी मन्दिर भी विद्यमान हैं। सरोवर के समीप चारों ओर विशाल वृक्ष हैं। यहा मोरो की सख्या भी काफी है। सम्पूर्ण बस्ती मे अनूठी शाति और एकाग्रता का वातावरण बना रहता है जो भक्तो को सतोष और आत्मिक शाति प्रदान करता है।

★ देवी कुण्ड

यह स्थान बीकानेर से ८ किलोमीटर पूर्व मे है, जहा बीकानेर के राजाओं की छतरिया हैं। इनमे कुछ इतिहास एव पुरातत्व की दृष्टि से अत्यत महत्वपूर्ण हैं। बीकाजी से लेकर राव जैतसी तक की छतरिया तो लक्ष्मीनाथ जी के मन्दिर से पूर्व टेकरी पर निर्मित हैं और बाद के नरेशों की छतरिया देवी कुण्ड मे सबसे प्राचीन छतरी राव कल्याण मल (सन् १५४२-१५७१) की है जो जयसलमेरी पत्थर से बनी हुई है और १६ वी सदी के स्थापत्य का सुंदर नमूना है। १७ वी सदी की सबसे सुन्दर छतरिया राजा करणसिंह व महाराज अनूपसिंह की है जो १६ स्तम्भो पर खडी है। इन स्तम्भो पर फूल-पत्ती की बेलो व ज्यामि-

तिक आकारो की कलात्मक खुदाई का काम है। छत मे रास लीला का हाथ अंकित है। पुरानी छतरिया लाल पत्थर मे निर्मित है। महाराजा गगासिंह व शार्दुलसिंह की छतरिया सगमरमर से बनी है। शार्दुलसिंह की छतरी आधुनिक शैली का सुदर उदाहरण है।

● देशनोक

बीकानेर रेल मार्ग द्वारा ३३ कि.मी. और सडक मार्ग द्वारा ३० कि.मी. दूर स्थित देशनोक शक्तिपूजा का प्रसिद्ध स्थल है। यहा चारण कुल मे उत्पन्न लोक देवी करणी माता का भारत विख्यात मन्दिर है। मन्दिर का प्रवेश द्वार सगमरमर से बना है, जिस पर नक्कासी का अत्यन्त आकर्षक कार्य है। पशु पक्षियो की आकृतिया तथा बेलबूटे इतने सुंदर ढग से उत्कीर्ण किए गये है कि सजीव से लगते है। करणीजी के द्वारा जोधपुर के दुर्ग का शिलान्यास हुआ था तथा उन्होने राव बीका को जागल क्षेत्र मे राज्य स्थापित करने का आशीर्वाद प्रदान किया था। मन्दिर मे चूहों की बहुलता है, जो करणीजी के काबे कहलाते हैं। चूहों की अधिकता होते हुए भी कभी यहां कोई बीमारी या प्लेग कभी नहीं फैला। इसी कारण यह मन्दिर देश का एक विशिष्ट मन्दिर बन गया है।

● मुकाम

यह बीकानेर जिले मे नोखा तहसील मुख्यालय से लगभग १६ कि मी दूर विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक जाम्भोजी का समाधि स्थल है। यहां उनकी स्मृति मे एक मन्दिर बना हुआ है। प्रतिवर्ष फाल्गुन की अमावस्या को इस मन्दिर के पास बहुत बडा मेला लगता है, जिसमें देश के विभिन्न भागो से विश्नोई आकर सम्मिलित होते हैं।

● शिवबाड़ी

बीकानेर नगर के लगभग ५ कि मी दूर महाराज डूगरसिंह द्वारा निर्मित शिवबाडी मन्दिर है। इस मन्दिर मे शिवलिंग मेवाड के एकलिंगजी के मन्दिर के समान है। प्रतिवर्ष श्रावण मास की दसमी को यहां एक मेला लगता है। मूल मन्दिर के चारों ओर ऊंची दीवार का घेरा है। चारो कोनो पर बुर्जियां भी बनी है। मन्दिर मे बरसाती पानी की विशाल बावडी है। मन्दिर के बाहर दक्षिण पूर्व में समीप ही एक बाग तथा पक्का तालाब है। वर्षा होने पर तालाब भर जाता है तथा तैरने व गोष्ठी का आनन्द लेने सैकडों व्यक्ति यहा एकत्र होते हैं। ●

● पूनरासर

बीकानेर के उत्तर-पूर्व मे ५२ कि.मी की दूरी पर स्थित पूनरासर जी बालाजी का प्राचीन हनुमान मन्दिर है, जहा प्रतिवर्ष क्षेत्र, आसोज, भादवा मे विशाल मेले लगते हैं व श्रद्धालु भक्त यहा दूर-दूर से एकत्र होते हैं। बहुत से यात्री बीकानेर व समीपवर्ती गावो से पैदल भी यहा पहुचते है।

—अमरनाथ कश्यप

बीकानेर : अन्य दर्शनीय स्थल

राजस्थान पुरालेखागार

यहा राजस्थान के प्राचीन ऐतिहासिक रेकार्ड, परवानो, खरीतो, चिट्ठियों व दस्तावेजो आदि का विशाल सग्रह है।

छत्रपति शिवाजी संबधी अनेक दस्तावेज है। शोध कार्य मे रुचि रखने वाले लोग दूर-दूर से देखने आते हैं।

अनूप संस्कृत पुस्तकालय

लालगढ पैलेस मे स्थित इस लायब्रेरी मे विभिन्न विषयो पर ताडपत्रो व प्राचीन लिपि व प्राकृत, अपभ्रश व सस्कृत आदि भाषाओ के प्राचीन ग्र थ उपलब्ध हैं।

अभयजैन ग्रंथालय

यहा १४००० से अधिक हस्तलिखित व प्राचीन ग्र थो का भडार है।

खजांची सग्रंहालय

इसमें दुलर्भ व अप्राप्य चित्रो एव विभिन्न कलमो के अनेक प्रकार के चित्रो का सग्रह है।

बीकाजी की टेकरी

राव बीकाजी का महल व उनका व परवर्ती अनेक राजाओ की छतरियां जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे हैं।

हुसगंसर

लिफ्ट केनाल का पानी यहा से नगर को मिलता है। हरा भरा स्थान है व पिकनिक स्थल है।

कोट गेट

यह नगर का मुख्य लाल पत्थर से बना प्रवेश द्वार है।

विश्वकर्मा मंदिर

लक्ष्मीनाथ जी के मदिर के बाहर सामने की तरफ इस मदिर के लकडी के दरवाजो की कलात्मक खुदाई देखने लायक है।

श्री रतनबिहारीजी मंदिर

जयपुर के शैव महराजा रामसिह जी के दुराग्रह के कारण वल्लभ संप्रदाय की गद्दी जयपुर छोडकर गोस्वामी श्री गोविन्दप्रभू जी अपने दृष्ट स्वरूपो के साथ महाराजा सरदार सिह जी के समय मे बीकानेर पधारे। सवत १६२४ मे श्री राजरतनबिहारी जी का मदिर बना। इसी के पास श्री रसिक बिहारीजी का मदिर है। दोनो कलात्मक मदिर दर्शनीय हैं।

श्री दाऊजी का मंदिर

शहर के भीतरी भाग मे सगमरमर से बना यह वैष्णव मन्दिर दर्शनीय है।

श्री नागणेचीजी का मन्दिर

इस नागणेचीजी के दुर्गा मन्दिर की बडी मान्यता है। राजा महाराजा व आम जनता सभी यहा दर्शनार्थ आते हैं।

बड़ा गणेशजी का मन्दिर

नत्थूसर गेट बाहर गणेश जी का प्राचीन मदिर दर्शनीय है।

श्री मदनमोहन मंदिर

यह वैष्णव मदिर नगर के पश्चिमी बाहरी भाग में स्थित है। इसके साथ राधा बाग है। अन्नकूट व त्योहारो पर बडा उत्सव होता है।

विश्वनाथ मंदिर

यह सगमरमर का बना सुन्दर शिव मदिर ससोलाव तालाब के किनारे है।

तुलसी कुटीर

पब्लिक पार्क के पास तुलसी मन्दिर व उसके सामने गोस्वामी तुलसीदास जी की भव्य प्रतिमा है। भगवान कृष्ण व अन्य देवताओ के इस मदिर मे नित्य प्रवचन व भजन–कीर्तन होते हैं।

सरस्वती मंदिर

स्टेशन रोड पर नागरी भडार भवन मे सरस्वती की बडी भव्य व दिव्य प्रतिमा है। यहा वाचनालय व पुस्तकालय भी हैं।

हनुमान मन्दिर

श्री रतनबिहारी पार्क के पास हनुमान जी का सुन्दर मदिर है जहा, रोजाना बडी सख्या मे दर्शनार्थी आते हैं।

सुजान देसर

यहा रामदेवजी का मन्दिर है—जहा दूर दूर से दर्शनार्थी आते हैं।

पब्लिक पार्क

नगर का सबसे बडा पार्क है। इसमे महाराजा गगासिह व डूगरसिह जी का स्टेच्यू है—जिला कलैक्टरेट व नगर विकास न्यास कार्यालय, गगा थियेटर, विश्नोई धर्मशाला व वन विभाग हैं। फव्वारे लगे हुए हैं व चिडियाघर व जन्तुआलय हैं।

अन्य स्थान

नगर मे अन्य कई मदिर, उपासरे, गुरुद्वारे व मसजिदें है, जो दर्शनीय हैं। साथ ही यहा बीकानेर मिल्क डेयरी, वैटरनरी कालेज, मेडिकल कालेज, डूगर कालेज, जैन कालेज, रामपुरिया कालेज महारानी सुदर्शन कालेज, बिन्नानी कन्या महाविद्यालय, शार्दूल पब्लिक, स्कूल, राजकीय पब्लिक लायब्रेरी, शार्दूल सस्कृत कालेज,प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, भारतीय विद्या मदिर, शोधप्रतिष्ठान व पोलिटैकनिक, टीचर्स ट्रेनिग कालेज, राजकीय मुख्य चिकित्सालय, अनेक उच्च माध्यमिक व बाल विद्यालय व शोध सस्थाए हैं। यहा का स्टेडियम, साइकिल चैपियनशिप प्रशिक्षण स्टेडियम टाऊनहाल, लक्ष्मीनाथजी का मन्दिर का पार्क, ऊन ग्रेडिग सेन्टर, रामपुरियो व डागो आदि लाल पत्थर पर सुन्दर कारीगरो वाली हवेलिया, पुराना असेम्बली हाल, शार्दूल क्लब, मलसेसागर व चौतिना कुआ, ससोलाव व हर्षोलाव घडसीसर सागर, शिव बाडी के तालाब आदि महत्वपूर्ण देखने लायक स्थान है। बीकानेर ऊन की सबसे बडी मडी है और खादी सस्थाओ के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र मे कत्तिन व बुनकरो को काम दिया जाता है। इनका काम भी देखने लायक है। ●

—मूलचन्द पारीक

★

आश्चर्य है कि जिस महाराजा ने जोधपुर के सर डौनल्ड फील्ड को श्री जयनारायण व्यास के साथ सद्व्यवहार की सलाह दी थी वह अपने राज्य मे इतना क्रूर क्योंकर रहा ?

जब बीकानेर जाग उठा

(स्वतन्त्रता सग्राम की झलक)

☐ श्री मूलचन्द पारीक

कोई ५०० वर्ष पूर्व स्थापित बीकानेर रियासत, जो वर्तमान मे राजस्थान राज्य का बीकानेर मडल है, मुगल राज्य व अग्रेजो राज्य के जमाने मे प्रमुख रियासता मे रही है । यह क्षेत्रफल मे भारत की छठी बडी व राजस्थान की दूसरी बडी रियासत थी। मुगल राज्य की तरह अग्रेजी राज्य म भी रियासत ने सबध ठीक रखे । सन् १८५७ के प्रथम स्वतत्रता सग्राम को कुचलने मे अग्रेजो को सहायता देने के उपलक्ष मे रियासत को टी बी का परगना मिला ।

यद्यपि रियासतें पहले मुगल शासन व फिर अग्रेजो के अधीन रही, पर अदरूनी शासन मे छूट होने से उन्होने अपने को स्वतत्र जताने की कोशिश की । महात्मा गाधी के नेतृत्व मे देश मे स्वाधीनता सग्राम ने नई दिशा ली, उसकी आधी का असर बीकानेर रियासत पर भी पड बिना नही रहा । प्रवासी बीकानेरियो, पडोसी राज्यो मे हो रहे आन्दोलनो व जनजागरण तथा अखबारी खबरो के माध्यम से जन चेतना आने लगी । महाराजा गगासिह बीकानेर की गद्दी पर थे । उनका व्यक्तित्व असाधारण था । योग्यता व सूझबूझ के धनी थे । जनता पर उनकी जबरदस्त धाक थी । रेगिस्तान के विकास मे उन्होने सराहनीय कार्य किया था । अपनी अनेक विशेषताओ के लिए वे सदा याद किए जाएगे । वे एक तरफ अपने को रियासत मे म्युनिसिपल बोर्ड, चीफ कोर्ट व असेम्बली स्थापित कर व अन्य कई अच्छे कदम उठाकर प्रगतिशील बताने मे लगे थे और दूसरी तरफ जनजागरण को सख्ती से दबा देते थे । जन प्रतिनिधित्व दर्शाने वाली सभी सस्थाओ मे जनता की कोई आवाज नही थी । आश्चर्य है कि जिस महाराजा ने जोधपुर के सर डौनल्ड फील्ड को श्री जयनारायण व्यास के साथ सद्व्यवहार की सलाह दी थी वह अपने राज्य मे इतना क्रूर क्योंकर रहा ?

बाबू मुक्ताप्रसादजी व षडयंत्र केस

हरिपुरा काग्रेस ने देशी रियासतो मे उत्तरदायी शासन प्राप्ति हेतु जन आदोलनो की सहायता का निर्णय किया । फलत अ भा देशी राज्य लोक परिषद

की स्थापना होने से रियासतों मे जन आंदोलनों को नई दिशा मिली। बीकानेर रियासत मे जागीरी जुल्म बढते जा रहे थे। लन्दन मे राउन्ड टेबुल कान्फ्रेंस मे महाराजा गगासिंह गए हुए थे, वहा बम्बई के गुजराती दैनिक 'जन्मभूमि' के सचालक श्री अमृतलालभाई सेठ के प्रयास से ऐसा साहित्य वितरित हुआ, जिसमे रियासत की प्रगतिशीलता का पर्दाफाश किया गया था और जुल्म व दमन की घटनाओं का वर्णन था,

बीकानर मे फैले भाई—भतीजावाद, भ्रष्टाचार व अन्याय के प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप **'सदविद्या प्रचारिणी सभा'** की स्थापना की गई और बाबू मुक्ताप्रसाद वकील उसके प्रधान व श्री कालूराम बरडिया मन्त्री बने तथा प्रमुख कायकर्त्ताओं मे श्री रावतमल कोचर, श्री, फाल्गुन कोचर, श्री सूर्यकरण आचार्य एम ए श्री भोलाराम व श्री गगाराम श्री भीखाराम वकील व श्री चपालाल वख्शी थे। 'सत्य विजय' व 'धर्म विजय' नामक दो नाटकों के माध्यम से रिश्वतखोरी व अन्याय का पर्दाफाश किया गया। विदेशी कपडो की होली जलाई जाकर स्वदेशी का प्रचार किया गया। मित्र मडल' के द्वारा बाबू मुक्ताप्रसाद ने जन सेवा का काय हाथ म लिया। उनके स्वय सेवको ने मेलो मे सेवा कार्य किया। बीकानेर सरकार इन कार्यों पर सन्देह करने लगी। तत्कालीन अजमेर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्री चाद कर शारदा एव श्री अर्जुनलाल सेठी के बीकानेर प्रवेश पर रोक लगा दी गई। साहसपूर्वक श्री कन्हैयालाल जी कलयत्री द्वारा नव दिवसीय बीकानेर प्रवास मे कांग्रेस के सभासद बनाने व हरिजन सेवा का कार्य करने की खबर पाकर उन्हे निर्वासित कर दिया गया।

सन् १९२७-२८ मे ब्रह्मचर्य महोत्सव पर एटर्नी एट ला प० माधोप्रसादजी शर्मा के निमत्रण पर सुप्रसिद्ध जनसेवी एव गाधीजी के वरद् पुत्र श्री जमनालाल बजाज के रतनगढ आने पर उन्हें गाडी से ही नही उतरने दिया गया और बलपूर्वक हिसार भेजा गया। गाधीजी की अपील पर चुरू मे मे २७ १-३० को स्वतत्रता दिवस मनाया गया व धर्म-स्तूप पर तिरगा झण्डा फहराया गया। अखबारो मे निकले समाचारो मे बीकानेर सरकार कुपित हो उठी। अनेक मनगढन्त आरोपो की रचना की जाकर फरवरी १९३२ मे अनेक व्यक्ति जेल मे डाल दिए गए। इसी वर्ष राज्य मे पब्लिक सेफ्टी ऐक्ट लागू किया गया। बदियो पर राजद्रोह का मुकदमा ताजीरात बीकानेर की दफा ३७७ ।ग। १२४ ।क। व १२० ।ख। के अन्तर्गत चलाया गया। आतक के कारण स्थानीय वकील पैरवी का तैयार नहीं थे और बाहर से वकील बुलाने की इजाजत नही दी गई। अप्रेल १९३२ से प्रारभ इस मुकदमे मे अभियुक्तो की पैरवी स्वर्गीय बाबू मुक्ताप्रसादजी एव रघुवर दयालजी गोयल ने की। स्वर्गीय लोकनायक श्री जयनारायण व्यास ने मदद हेतु डिफन्स कौसिल बनाई। चौधरी रामानारायण, गोविन्दलाल पित्ती, सेठ गोविन्ददास मालपाणी व श्री ब्रजलाल बियाणी ने विरोध किया और महात्मा गाधी व नेहरूजी ने भी पत्र लिखे पर कोई असर नही हुआ। श्री सत्यनारायण सर्राफ को ७ वर्ष, श्री खूबराम सर्राफ को ५ वर्ष, स्वामी

गोपालदास को ४ वर्ष, श्री चन्दनमल बहड को ३ वर्ष, श्री बद्रीप्रसाद सरावगी को २ वर्ष, श्री प्यारेलाल सारस्वत को ६ माह व श्री सोहनलाल शर्मा हैडमास्टर को ३ माह की सख्त सजाएँ दी गई। जेल मे उन्हे कठोर यातनाए दी गई।

कलकत्ता मे प्रजा मंडल की स्थापना

सन् १९३५ मे उदरासर गाव मे किसानो मे पैदा हुए भारी असतोष को सख्ती से दबाया गया। जीवन जाट को गिरफ्तार कर उस पर रु० १०० जुर्माना किया गया। शिष्टमडल को महाराजा से मिलने नही दिया गया। बाद मे श्री मुक्ताप्रसादजी वकील, श्री सत्यनारायण सर्राफ, श्री मघाराम वैद्य व श्री लक्ष्मीदास स्वामी का रियासत से निष्कासित कर दिया गया। सन् १९३५ मे कलकत्ता मे स्व श्रीमती लक्ष्मीदेवी आचार्य की अध्यक्षता मे बीकानेर राज्य प्रजामडल की स्थापना हुई और श्री मघाराम वैद्य ने जन आवाज को बुलन्द किया। स्वदेशी वस्त्र भण्डार के माध्यम से श्री गगादास कौशिक व श्री सोहनलाल कोचर स्वदेशी की भावना जागृत कर रहे थे। उस समय वह स्थान राजनैतिक हलचल का केन्द्र था।

उस समय गाधी-डायरी रखना भी अपराध माना जाता था। छात्रो द्वारा तिलक जयन्ती मनाए जाने पर गहरी छानबीन हुई और अनेक लोग मुसीबत मे पडे। सन् १९३५ मे दौसा से स्थानान्तरित होकर आए चर्खा सघ के श्री देवीदत्त पंत ने खादी भडार के जरिए रचनात्मक काम की नीव डाली। देश मे काग्रेस के बढते प्रभाव का असर यहा भी होने लगा। इस प्रकार राजनैतिक सगठन की स्थापना की भूमिका तैयार हो गई।

प्रजा परिषद की स्थापना

२२ जुलाई १९४२ को बीकानेर मे विधिवत बीकानेर राज्य प्रजा परिषद की स्थापना हुई। श्री रघुवर दयाल गोयल-अध्यक्ष, श्री रावतमल पारीक-मत्री तथा श्री गगादास कौशिक कोषाध्यक्ष बनाए गए। सरकार को प्रजा परिषद मे सबध होने का सन्देह जिन लोगो पर था, उन्हे लालगढ बुलाकर डराया-धमकाया गया। खादी भडार पर रोक लगाकर श्री देवीदत्त पत को निष्कासित कर दिया गया।

२९ जुलाई को श्री रघुवर दयाल गोयल को गिरफ्तार किया जाकर अर्द्धरात्रि को पलाना स्टेशन से गाडी मे बैठाकर निष्कासित कर दिया गया। प्रजा परिषद कार्यालय की तलाशी ली गई। श्री गगादास कौशिक को मोहल्ले के अदर नजरबद कर दिया गया। ८ अगस्त ४२ को बाबू रघुवर दयालजी गोयल ने बम्बई मे काग्रेस के एतिहासिक अधिवेशन मे भाग लिया, जिसमें गाधीजी ने अग्रेजो 'भारत छोडो' का नारा और जनता को 'करो या मरो' का मत्र दिया था। सितम्बर ४२ के निर्वासन आज्ञा तोडने पर उन्हे गिरफ्तार किया जाकर एक साल की कैद व रु. १००० के जुर्माने की सजा दी गई। श्री गगादास जी कौशिक तथा श्री दाऊदयालजी आचार्य भी गिरफ्तार किए जाकर उन्हे कैद व जुर्माने की सजाए दी गई। जेल मे दुर्व्यवहार होने पर उन्होने भूख हडताल कर दी। श्री गोपाल लाल

दम्माणी व श्री रामज आचार्य आदि कई व्यक्ति गिरफ्तार किए गए।

६ दिसम्बर को तिरगा झण्डा ले जाते व नारे लगाते हुए युवक रामनारायण शर्मा को बाजार मे गिरफ्तार कर लिया गया। बाहर से आनेवाले खादीधारियो पर रोक लगादी गई। २६ जनवरी ४३ को झण्डा फहराने पर श्री मघाराम वैद्य व श्री रामनारायण जी शर्मा व श्री भिक्षालाल जी बोहरा को गिरफ्तार कर लिया गया। आर्य समाज को जुलूस निकालने की इजाजत नही दी गई। सरदार शहर के ६५ वर्षीय सेठ नमीचन्द आचलिया को ७ वर्ष की सजा दी गई। यातनाओ व दुर्व्यवहार के कारण उन्होने भूख हडताल कर दी। २ फरवरी ४३ को महाराजा गगासिंह का स्वर्गवास हो जाने से एक युग समाप्त हो गया।

राजबंदियो की रिहाई

बाइसवें व अतिम महाराजा शार्दूलसिंह ने राजगद्दी पर बैठते ही शासन सुधारो की घोषणाए की व राजबदियो को रिहा कर दिया। नए राजा से बडी आशाए बधी थी, पर वे बेकार सिद्ध हुई। सीकर जिले मे जयपुर राज्य प्रजामडल के तत्वावधान मे आयोजित जिला राजनैतिक सम्मेलन की अध्यक्षता बाबू रघुवर दयाल गोयल ने की। उनके भाषण को लेकर लालगढ मे दमनकारी योजनाए बनने लगी। माता कस्तूरबा गाधी स्मारक निधि सग्रह को शका से देखा गया। नगर परिषद के तत्कालीन अध्यक्ष श्री बद्रीदास डागा के प्रजा परिषद के नेताओ से सबध व वक्तव्यो को ना पसन्द किया गया। दिसम्बर ४३ मे फौरेनर्स एक्ट लागू करने पर बम्बई व देश के अन्य भागो मे हुई सभाओ मे तीव्र निंदा की गई।

पुनः गिरफ्तारियां व किसान आंदोलन

२६ अगस्त ४४ को लालगढ पैलेस मे महाराजा बीकानेर व श्री रघुवर दयालजी गोयल की वार्ता असफल होने पर उन्हें तुरन्त गिरफ्तार करके लूणकरणसर मे नजर बद कर दिया गया और श्रीगगादास कौशिक व श्री दाऊदयाल आचार्य को भी गिरफ्तार किया जाकर अनूपगढ किले मे बद कर दिया। उन्हे शीलनभरी अधेरी कोटडियो व बुर्ज के एकान्त मे रखा गया। लूणकरणसर मे पुलिस की सख्त व्यवस्था की गई ताकि डर के मारे कोई श्री गोयलजी से मिल नही सके। लेखक ८ अगस्त ४४ को श्री गोयलजी से लूणकरणसर जाकर मिला और भावी रूपरेखा बनाई जाकर उसकी जानकारी श्री हीरालाल शास्त्री, श्री जयनारायण व्यास, श्री माणिक्यलाल वर्मा व गोकुलभाई भट्ट को पहुचाई गई। बाबूजी के आदेश पर लेखक ने गुप्त छद्म नाम बाबूलाल रखकर काम किया, जिसकी जानकारी कुछ नेताओ व अखबारो को ही थी। श्री गोयलजी का सन्देश पाकर श्री मघाराम वैद्य बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष बने। श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व मे आयोजित नागौर राजनैतिक सम्मेलन मे अनेक कार्यकर्ताओ ने भाग लिया। लेखक ने जयपुर, दिल्ली, कलकत्ता बम्बई व आसाम की यात्रा करके राजनैतिक नेताओ व प्रवासी बीकानेरियो को स्थिति से अवगत कराया। अ०भा० मारवाडी सम्मेलन, कलकत्ता मे श्री सीताराम सेक्सरिया की अध्यक्षता मे सभा हुई, जिसमे श्री बसन्त

लाल मुरारका, श्री तुलसीरामजी सरावगी, श्री ईश्वर दास जालान, श्री रावतमल नेपानी, श्री बजरंगलाल लाठ, श्री सीताराम अग्रवाल आदि अनेक महानुभाव शामिल हुए और नेताजी सुभाषचन्द्र के भाई के सभापतित्व मे श्री विशुद्धानद सरस्वती विद्यालय मे सभा हुई। दोनो सभाओ मे लेखक ने रियासती दमन व कार्यकर्ताओं व किसानो को दी जा रही यातनाओ की जानकारी दी और सभा द्वारा दमन की निंदा करते हुए उत्तरदायी शासन व बंदियो की रिहाई की माग की गई।

भारत के सभी प्रमुख दनिक समाचारपत्रो व साप्ताहिकों मे लेखक द्वारा भेजेगए समाचार छपते रहे, जिससे सभी क्षेत्रो मे बीकानेर की भारी चर्चा रही। लेखक गाहाटी मे श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंह, का से श्री सीताराम अग्र. के साथ मिला। उन्होने राजनैतिक बंदिया के परिवारो को मदद एव किसान आदोलन व यात्रा आदि के व्यय के लिए धनराशि की व्यवस्था की और मदद करते रहे। महाराजा बीकानेर बर्मा युद्ध फ्रट से नवम्बर ४४ मे लौटकर जब कलकत्ता पहुचे तो प्रवासी बीकानेरियो ने राजगढ के श्री ईश्वरदास जालान जो बाद मे पश्चिमी बगाल विधान सभा के अध्यक्ष बने, के नेतृत्व मे दमन का विरोध किया और बंदियो को रिहा करने व उत्तरदायी शासन स्थापना की माग की। नवम्बर, ४४ में ही सुजानगढ मे तेरापथी सप्रदाय के अधिवेशन मे लोगो को बाहर से बुलाने पर राजनीति के सदेह मे श्री टीकम चन्द जी डागा का २-३ दिन हिरासत में रखा गया।

दूधवाखारा किसान आंदोलन

रियासत मे जागीरी जुल्म से तग किसानो में असंतोष बढता ही गया और सन् १९४५ की ६ मई को बीकानेर मे, १० मई को राजगढ मे किसानो ने जुलूस निकाला व प्रदर्शन किया। चूरू जिले के ग्राम दूधवाखारा के ठाकुर सूरजमालसिह जी महाराजा के ए० डी० सी० थे। वहा किसानो के साथ पशुओ से भी बदतर व्यवहार किया गया। उनकी जमीन व सपत्ति छीनली गई। चौधरी हनुमानसिंह व उनके भाई गणपतसिंह व पूरे परिवार के साथ मारपीट व अमानुषिक व्यवहार किया गया। पुलिस के जमावडे से भारी आतक इलाके मे फैल गया। श्री मघाराम वैद्य व श्री चपालाल उपाध्याय व अन्य साथियो ने दूधवाखारा जाकर जाच की।

किसानो ने महाराजा से फरियाद की, पर कोई सुनवाई नही हुई। जुलाई, ४५ मे श्री मघाराम, श्री भिक्षालाल बोहरा, श्री मुलतान चन्द दर्जी, श्री किशन गोपाल सेवग, (गुटड़ महाराज) आदि गिरफ्तार कर लिए गए। श्री मघाराम की गिरफ्तारी होने पर स्वामी कर्मानद अध्यक्ष घोषित किए गए। बाद मे उन्हे भी गिरफ्तार कर लिया गया और दुर्व्यवहार के कारण जेल मे उन्होने भूख हडताल कर दी। श्री मघाराम वैद्य के परिवार मे औरतो तक की पिटाई की गई। स्वय डी आई. जी पी ने मघाराम जी को बेरहमी से पीटा व जेल मे राजबंदियो को माचा चढाया गया, गुदा मे मिर्चे डाली गई, कई–कई दिन खडा रखा गया। उन्हे लबी भूख हडताल करनी पडी। ६ जुलाई को निकाले गए जुलूस पर लाठीचार्ज किया गया। श्री चपालाल उपाध्याय श्री रामनारायण शर्मा व उनके चाचा श्री राम व शेराराम व श्री मेघराज पारीक आदि गिरफ्तार कर लिए गए।

खादी मदिर राजनैतिक सम्पर्क का मुख्य स्थल था–उसे बद करना पडा । ज्ञानवर्धक पुस्तकालय व एव श्री जीतमल पुरोहित, श्री चपालाल उपाध्याय व श्री दाऊ जी व्यास आदि के प्रयास से खुले तेलीवाडा स्थित राष्ट्रीय वाचनालय पर रोक लगा दी गई। तोड-फोड व गिरफ्तारिया की गई। उस समय बदियो को हल्के नामो से सबोधित करना, हरामखोर कहना, भद्दी गालिया देना साधारण बात थी। दूधवाखारा व राजगढ किसान आदोलन के दमन की जानकारी नेताओ व अखबारो को बाबूलाल के नाम से तार द्वारा भेजी जाती थी। तारघर पर पुलिस तैनात होने पर समाचार जोधपुर से प्रजासेवक के मामा अचलेश्वर प्रसाद जी शर्मा व अजमेर मे श्री चन्द्रगुप्त जी वार्ष्णेय को भेजे जाने लगे और वहा से वे आगे भेजे जाते थे। सरकार परेशान थी।

प्रजासेवक पत्र ने 'जागलू का जगलीपन' अग्रलेख लिखा उस पर रियासत मे उसके प्रवेश पर रोक लगा दी गई और उसे रखना गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। श्रीगगा नगर क्षेत्र मे स्वामी श्री सच्चिदानन्द व राव माधोसिंह, जीवनदत्त शास्त्री व हरिश्चद्र शर्मा ने प्रजापरिषद के सगठन को व्यापक बनाया। जुलाई, ४५ मे गगानगर मे राव माधोसिह को बुलाकर धमकाया गया और न झुकने पर उन्हें २६ जुलाई को निष्कासित कर दिया गया। जून, ४५ मे श्री गोयल को निष्कासित कर दिया। कुछ समय वे नागौर रहे। श्री गोयल जी द्वारा कानपुर मे श्री हीरालाल जी शर्मा के सहयोग से प्रजापरिषद की शाखा स्थापित की गई। कलकत्ता मे काग्रस अध्यक्ष श्री मौलाना आजाद से मिलकर गोयल जी ने उन्हे सारी जानकारी दी। कलकत्ता मे 'आज का बीकानेर' बुलेटिन श्री चपालालजी राका निकालते थे। यह वह समय था जब अग्रेजो द्वारा भारत का शासन भारतियो को सौपने की तैयारी चल रही थी।

किसान आन्दोलन

रियासत मे दमन बढने के साथ किसान भी सगठित होते गए। राजगढ तारानगर, भादरा, चूरू आदि तहसीलो मे सरकार प्रभावहीन होती गई। तहसीलदार व पटवारी को रोटी तो दूर, लोग पानी देने को तैयार नही थे। गावो मे राजकीय कारिन्दो का बहिष्कार होने लगा। प्रजापरिषद के हजारो सदस्य हो गए। रियासत मे प्रजापरिषद पर प्रतिबध लगा दिया गया, तिरगा झडा फहराने की मनाही हो गई। बीकानेर रियासत के दबाव पर जोधपुर व जयपुर रियासतो मे भी प्रजा परिषद व श्री रघुवर दयाल जी पर रोक लगा दी गई। आखिर अलवर मे प्रजापरिषद का कार्यालय लगाया गया। अनूपगढ जिले मे छूटने पर श्री गगादास जी कौशिक व कोषाध्यक्ष श्री मालचन्द जी हिसारिया ने अलवर मे प्रजापरिषद के कार्यों का सचालन किया। लेखक भी बराबर उनके सम्पर्क मे रहा। श्री दाऊदयाल जी आचार्य मरणासन्न स्थिति मे अस्पताल से रिहा किए गए और पुन स्वस्थ होने पर आदोलन व समाचार पत्रो मे लिखने लगे।

जन आदोलन के इस महायज्ञ मे बहुत से लोगो ने काय किया, उन सबके नाम देना सभव नही है। उपरोक्त महानुभवो के अलावा श्री सोहनलाल मोदी, श्री चिरजीलाल स्वर्णकार श्री चन्दनमल वैद, प गिरीशचन्द्र शर्मा श्री लालचन्द, श्री बनवारीलाल वेदी, श्री

बीकानेर के शिष्टमंडल की गांधीजी से मुलाकात

२५ मई, ४६ की रात्रि को दिल्ली में राजस्थान रीजनल कौंसिल की बैठक हुई जिसमें सभी रियासतों के नेताओं ने तय किया कि श्री रघुवर दयाल गोइल एक माह बाद २५ जून ४६ को निषेधाज्ञा भंगकर गिरफ्तारी देवें और २६ जून को रियासत के सभी तहसील मुख्यालयों पर ग्राम सभायें कर विरोध दिवस मनाया जावे। अलवर के मास्टर भोलानाथ को इसकी जिम्मेवारी सौंपी गई। २६ मई को सुबह प्रजा परिषद का शिष्ट मंडल भंगी बस्ती मे रघुवर दयाल जी के नेतृत्व में महात्मा गांधी से मिला, जिसमें लेखक व श्री गंगादास कौशिक व श्री मालचन्द हिसारिया आदि थे। वहां नेहरूजी व राजेन्द्र बाबू भी थे। नेहरूजी ने गांधीजी को अखबारों में प्रकाशित वह गश्ती पत्र पढाया, जिसमें बीकानेर रियासत मे गांधी जी की जय बोलने व गांधी टोपी लगाने पर गिरफ्तार करने का हुक्म छपा था। वहीं पर ग्वालियर रियासत के नेता श्री गोपी किसनजी विजयवर्गीय ने बीकानेर रियासत के शासक वर्ग द्वारा ग्वालियर के शासक को बहकाने की भी गोयलजी से शिकायत की थी।

मोहनलाल सारस्वत, श्री मोहनलाल जैन, चौधरी मोहरसिंह, श्री दौलतराम सारण, श्री भागीरथ मर्दा, श्री अखाराम शर्मा व अनेक किसान कार्यकर्त्ता विभिन्न कार्यक्रमों में पकडे गए व मुसीबतें सहीं। चूरू जिला सामन्त शाही का सर्वाधिक शिकार रहा है, अतः वहां के देहात में विद्रोह जैसी स्थिति पैदा हुई।

राजगढ़ में लाठी चार्ज

मई, ४६ में दूधवाखारा, हमीरवास व चांद कोठी में पुलिस ज्यादतियों से भारी आतंक छाया हुआ था। चौधरी कुम्भाराम आर्य पुलिस सेवा से त्यागपत्र देकर आंदोलन में शामिल हो गए और उन्हे बिना वारन्ट गिरफ्तार कर लिया गया। चौधरी नरसाराम, चौ धैमाराम गिरफ्तार कर लिए गए। चौ. लालचन्द, पं. पतराम, चौ. नोरंगसिह की हमीरवास में निर्मम पिटाई की गई। रियासत मे दमन व गिरफ्तारियां बढ़ रही थी और महाराजा साहब आबू पहाड़ की ठंडी हवा खा रहे थे। बीकानेर व राजगढ़ में किसानों के जुलूस पर निर्मम लाठी प्रहार से अनेक व्यक्ति घायल हुए।

अ. भा. देशी राज्य लोक परिषद

२५ मई, ४६ को अ० भा० देशी राज्य लोक परिषद की जनरल कौंसिल की बैठक आर्य समाज दीवान हाल, चांदनी चौक, दिल्ली में पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता मे हुई, जिसमें लेखक भी उपस्थित था। काश्मीर व बीकानेर रियासतों में हो रहा दमन सर्वाधिक चर्चा का विषय था। सभा में श्री नेहरू ने अपने उदयपुर भाषण का जिक्र किया, जिसमें उन्होने कहा था कि

"जब से मै जेल से छुटकर आया हूं, बीकानेर के बारे में मेरे पास सबसे ज्यादा शिकायतें आ रही हैं। बीकानेर सरकार की तरफ से घटनाओं को गलत ढंग मे छिपाने की कोशिश की गई है। मुझे इत्मीनान है कि बीकानेर सरकार

बिल्कुल गलत रास्ते पर है। वहा जाकर जानकारी करने वालो को रोका गया है। मैने रियासत के प्राइम मिनिस्टर को दुबारा लिखा तो कोई जवाब नही आया। जहा शादी की कु कुम पत्रिकाए राज्य से सैन्सर करानी पडती हैं, वहा पर्दे की ओट मे जनता पर भीषण अत्याचार किए जाते हैं। और उनके प्रतिवाद में मनगढत दलीलें दी जाती हैं, उस राज्य के शासक इन्सान नही हैवान हैं। आखिर ये जुल्म ज्यादती कब तक चलायेंगे।"

बीकानेर पर बोलते समय बीकानेर के दीवान का पत्र पाकर वे गुस्से मे आ गए और उन्होने श्री चपालालजी उपाध्याय के सदर्भ मे रियासतो सरकार की कार्यकर्ताओ को अमानुषिक यातनाए देने पर चेतावनी दी। लेखक द्वारा प्राप्त किया गया गुप्त गश्तीपत्र उसी दिन अखबारो मे प्रकाशित हुआ, जिसमे गाधीजी की जय बोलने, सफेद टोपी लगाने, खादी पहनने व प्रजापरिषद का सदस्य बनाने वालो को गिरफ्तार करने की हिदायत थी।

नेहरूजी को भाषण के दौरान बीकानेर सरकार का तार मिला, जिसमे बताया गया कि राजगढ मे किसानो पर लाठीचार्ज के मामले मे एस पी. बहादुर सिंह को बरखास्त कर दिया गया है। बीकानेर मे जागीरदारो ने तलवारें चमका कर कहा था कि तलवारो के जोर से उन्होने राज लिया है और उसे नही छोडेंगे। उस पर उसी सभा मे सरदार बल्लभभाई पटेल ने ऐतिहासिक व्यग्य कसा था व रियासती नीति स्पष्ट की थी।

गोयलजी व हीरालाल शर्मा की गिरफ्तारी

गोयलजी ने २५ जून, ४६ को निर्वासन आज्ञा तोडकर ऐनताबाद मे गिरफ्तारी दी और २६ जून को रियासत मे सभी तहसील मुख्यालयो पर दमन विरोधी दिवस मनाया गया व गिरफ्तारिया दी गईं। बीकानेर मे श्री रतन बिहारीजी पार्क मे प्रजापरिषद की पहली आमसभा की गई। सभा की अध्यक्षता चादी गाव के पूर्व निवासी आगरा के दैनिक 'सैनिक' के सचालक श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल ने की और अलवर प्रजामडल के नेता मास्टर भोलानाथजी ने सभा को सबोधित किया। श्री हीरा लाल शर्मा ने उत्तरप्रदेश व बिहार के स्वतत्रता सघर्ष का वर्णन करके जोशीला भाषण देते हुए महाराजा की कडी आलोचना की, तो महाराजा समर्थक कुछ तत्वो ने हुल्लडबाजी करके बिजली के तार व लाउडस्पीकर तोड दिए। सभा मे भगदड मच गई। अर्द्ध रात्रि को कुछ लोगो ने प्रजापरिषद के दफ्तर पर हमला करके बोर्ड व कुर्सिया तोड दी व गोयलजी के घर पर पत्थर बाजी व हुल्लडबाजी की गई। श्री हीरालालजी शर्मा को राजद्रोह के अपराध मे धारा 121 डी के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया और बहुत यातनाए दी गई। उन्हे पैरवी हेतु बाहर से वकील लाने की इजाजत नही दी गई। जेल मे ही अदालत लगी और सुनवाई की। श्री गोयलजी ने पैरवी की व लेखक उसमे सहयोगी रहा। परिवार के लोगो से मिलने नही दिया गया और १५ अगस्त ४७ को आजादी मिलने पर भी उन्हे नही छोडा गया। जनवरी, ४८ में उनकी रिहाई हुई।

रायसिंहनगर गोलीकाड

३० जून व १ जुलाई, ४६ को रायसिंह नगर मे जिला राजनैतिक सम्मेलन हुआ। श्री नत्थूराम योगी, श्री रामचन्द्र जैन व प्रा०

जब विनोबाजी बीकानेर आए

स्वतन्त्र भारत मे रियासती शासन मे गाधी-जयती पर हरिजन बस्ती मे सफाई कार्यक्रम रखा गया। कार्यकर्त्ताओं ने हरिजन बस्ती की सफाई की व रामधुन की। सरकार ने प्रजा-परिषद को दबाने के लिए सवर्ण हिन्दुओं और विशेषत ब्राह्मण समाज को उभाडा। रात्रि को ही जगह-जगह पचायतें हुई और उन्होंने हरिजन बस्तियों मे जाने वाले कार्यकर्त्ताओ को जाति बहिष्कृत कर दिया।

श्री छोटूलालजी व्यास, श्री दाऊदयाल आचार्य, श्री गगादत्त रगा, श्री मेघराज पारीक, श्री गूदड महाराज व लेखक आदि अनेक व्यक्ति न केवल जाति बहिष्कृत कर दिए गए बल्कि पब्लिक स्टैंडपोस्टों से उनके घर की औरतों को पानी लेने से व परिवार को मन्दिरो में प्रवेश से रोक दिया गया व बाई बेटी का आना जाना रुक गया। गवर्नर जनरल सी० राजगोपालाचारी, प्रधान मन्त्री श्री नेहरू, सरदार पटेल आदि ने महाराजा को तार दिए, कोई फल नहीं निकला। श्री गोयलजी के आह्वान पर कार्यकर्त्ता सत्याग्रह करने व मौन जुलूस निकाल कर लक्ष्मीनाथ जी मन्दिर तक जाने व कुर्बानी देने को तैयार हो गए। श्री तुलसीराम सरावगी व लेखक प्रजा-परिषद का सन्देश प्रधानमन्त्री कुवर जसवत सिंह को अर्द्धरात्रि को देकर आए। श्री लक्ष्मीनाथ जी के मन्दिर के आगे कार्यकर्त्ता आमरण अनशन पर बैठ गए। सरदार पटेल ने श्री गोकुल भाई भट्ट को हवाई जहाज से बीकानेर महाराजा को समझाने हेतु भेजा, पर कोई परिणाम नहीं निकला। आखिर उच्च कमान ने सत्याग्रह को रोक दिया और आचार्य विनोबा भावे को बीकानेर भिजवाया। हरिजन बस्ती मे उनका प्रवचन सुनने के बाद बहुत से लोगों का हृदय-परिवर्तन हुआ और हरिजनों के लिए मन्दिरों के दरवाजे खुलने तक मन्दिरों का बहिष्कार किया गया व अनशन-कारियों को उन्होंने उठाया। रियासत के समाप्त होने के बाद जाति-बहिष्कार के निर्णय स्वत ही समाप्त हो गए।

केदार, सरदार गुरुदयालसिंह आदि अनेक कार्यकर्त्ता गगानगर जिले मे सक्रिय रहे। सम्मेलन मे लोक सेवा मडल के उपप्रधान श्री अचितराम व पजाब प्रान्तीय काग्रेस कार्य समिति के सदस्य श्री रामदयाल वैद व उत्साही कार्यकर्त्ता श्री फकीरचद आए थे। तिरगा झडा फहराने पर उसे छीनने की कोशिश की गई, पर असफल होने पर पुलिस द्वारा अधाधुध गोलियां चलाई गई और श्री बीरबलसिंह गोली लगने से झडा लिए हुए धाराशायी शहीद हो गए और सिख नौजवान श्री मोहनसिंह व छ अन्य नौजवान जख्मी हुए। गगानगर जिले मे जनता भडक उठी। जनता ने तिरगे से चिढने वाले तत्कालीन गृहमत्री ठा० प्रतापसिह व प्रजापरिषद से गद्दारी कर मत्री बने चौ० ख्यालीसिह को तिरगा झडा पकडने व पूरी रेल गाडी को तिरगे से सजाकर चलाने के लिए मजबूर

बीकानेर जिला-एक दृष्टि में

भौगोलिक स्थिति—	बीकानेर उत्तरी अक्षांस २७.१५ से २६.०५ तथा पूर्वी देशांतर ७१.५३ से ७४ के मध्य स्थित है।
बीकानेर स्थापना—	बीकानेर नगर की स्थापना राव बीका ने विक्रम संवत १५४५ वैसाख सुदो २ (दिनांक १२ अप्रेल, १४८८) के दिन की।
क्षेत्रफल—	४७४२५५१ हैक्टर्स।
जनसंख्या— (१६८१)	नगर—२,८०,३३६ जिला—८,४८,७४६
प्रशासन व्यवस्था—	उपखण्ड-२ (बीकानेर तथा कोलायत) तहसील-४ (कोलायत, नोखा, बीकानेर, लूणकरणसर) नगर पालिका—३ (बीकानेर, देशनोक, नोखा) ग्राम पंचायत—१२२
पर्यटन स्थल—	(१) बीकानेर नगर में—जूनागढ, लालगढ, संग्रहालय, पब्लिक पार्क, मन्दिर श्री लक्ष्मीनाथजी, भाण्डासरजी, रतनबिहारीजो, शिवबाड़ी आदि। (२) अन्यत्र—कोलायत, देशनोक, गजनेर, पुनरासर, कांडमदेसर आदि।
लोक जीवन—	(१) उत्सव—तीज, गणगौर, अक्षय-तृतीया, दशहरा, दीवाली, होली। (२) वाद्य—पूंगी, रावण हत्था, मोरचंग, नड़, घौरू (३) संगीत—ढोली, ढाढी, मांगणियार गायक।
रोजगार—	कृषि, पशुपालन, खादी-ग्रामोद्योग, भुजिया, पापड़, छैने की मिठाई, सुपारी आदि।
पर्यावरण—	(१) वृक्ष—खेजडा, आक फोग, नीम, बबूल (२) पक्षी—तिलोर, मोर, सारस, गोडावण।

बीका नगरी : कल और आज

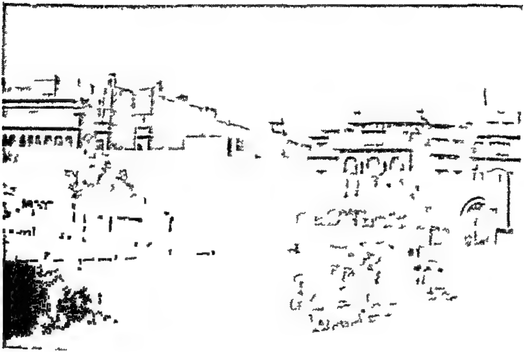

ऐतिहासिक जूनागढ

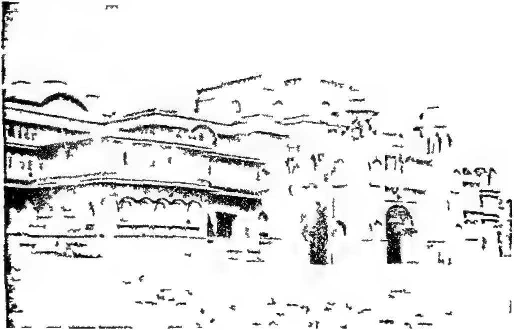

देव धाम

भव्य लक्ष्मीनाथ मन्दिर

मन्दिर श्री रतनबिहारी जी

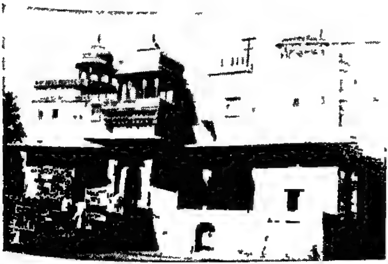

शिव बाडी

थार का धन

☐

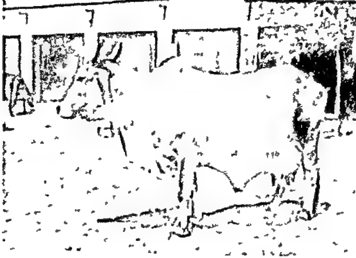

राठी गाय

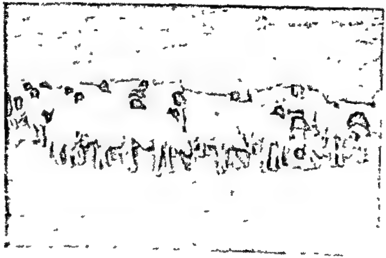

भेड़-समूह

ऊंटों का टोला

आधुनिक बीकानेर
के निर्माता
महाराजा गंगासिंहजी
का स्टेच्यू

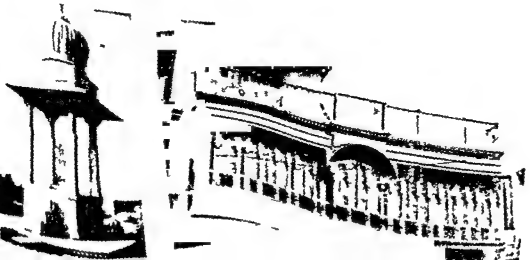

बीकानेर में सर्वोदय आन्दोलन

१. जब विनोबाजी श्रीगंगानगर आए

श्री छीतरमल गोयल

६. बीकानेर मे सर्वोदय आदोलन

श्री सोहनलाल मोदी

१२. आजादी के बाद बीकानेर की उपलब्धि

श्री छीतरमल गोयल

१४. विवाद ग्रस्त छत्तरगढ–भूदान

श्री यज्ञदत्त उपाध्याय

१८. गोचर चरागाह विकास और पर्यावरण चेतना
भीनासर—आदोलन

श्री शुभू पटवा

२५ सस्था—परिचय

संस्मरण :

जब विनोबाजी श्रीगंगानगर आए

—★—

[पूज्य विनोबाजी का माह नवम्बर, ५९ में अचानक श्रीगंगानगर क्षेत्र में पदार्पण हुआ। उन्होंने अपने दो दिन के अल्प प्रवास मे एक सजग प्रहरी के रूप मे प्रदेश मे क्या चल रहा है. उसको समझ लिया और आगे के लिए सचेत किया। राजस्थान के सुदूर उत्तर मे गंगानगर के शिवपुर हैड में उनको दर्शन करने तथा वहां से गंगानगर तक उनके साथ चलने और वहां दो दिन के प्रवास के बाद वापिस पंजाब की सीमा में प्रथम पड़ाव तक जाने का सौभाग्य वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री छीतरमल गोयल को मिला। श्रद्धेय गोकुल भाई जी भी दूसरे दिन वहां पहुंच गए थे। इस यात्रा में बाबा के साथ जो महत्वपूर्ण चर्चाएं हुईं, वे यहां दी जा रही हैं। कहना न होगा कि बाबा का यह संदेश कोई उनतीस साल के अन्तराल के बाद भी आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है। —संपादक]

बाबा के स्वास्थ्य के बारे में पूछने पर उन्होंने हंसकर कहा कि, "२० मील रोज चलने वाले से आप क्या स्वास्थ्य पूछते हैं ?" वे उस दिन दो बार मे २० मील की यात्रा तय करके पहुंचे थे। एक दिन की यात्रा का शायद वह रेकार्ड हो है। राजस्थान के साथ फिर यह कुछ अजीब सा संयोग बना कि दूरी की पूरी जानकारी के अभाव मे बाबा को इतना लंबा चलना पड़ा था।

फिर उन्होंने जोड़ा, "कुछ दिन पहले मेरे पेट मे दर्द फिर कई वर्षों बाद होने लगा था, पर अब नही है" फिर हम सब प्रार्थना-सभा में उनके पीछे पीछे गए।

नई यात्रा पद्धति

उस दिन सायकालीन प्रार्थना-प्रवचन की शुरुआत राजस्थान के साथियों को लक्ष्य करके ही की गई थी। यात्रा की नई पद्धति का जिक्र करते हुए उन्होने कहा कि, "पहले हम लम्बा प्रोग्राम बनाकर आते थे। एक लम्बी तैयारी और कृत्रिमता उसमें रहती थी। अब हम जहां जाते हैं, वहा जैसी स्थिति होती है, वह सहज भाव से सामने आ जाती है। पिछले ८ वर्षों की यात्रा के फलस्वरूप काफी ठोस कार्यक्रम हुआ पर जिसे नेतृत्व कहते हैं वह नही बना। अब हम अपना काम कार्यकर्ताओं को अनुप्रेरित करने और उनका और उनकी योगक्षेम और प्रशिक्षण की व्यवस्था करना मानते हैं। शेष कुल का कुल काम उन्हें करना है। इसलिए मैंने सर्वोदय सम्मेलन भी स्वतन्त्र रूप से करने की बात कही है। अब कार्यकर्ताओ को अधिक स्वतन्त्रता रहेगी।"

प्रार्थना सभा के बाद करीब एक घंटे भर

बाबा के साथ रेस्ट हाउस मे विविध विषयो पर वार्ता हुई। श्री रामचन्द्रजी जैन, श्री मोतीरामजी चौधरी तथा श्री हसराजजी आर्य भी थे। मेरे यह सूचित करने पर कि श्री गोकुल भाई जी अहमदाबाद गए हैं– उन्होने कहा कि ऐसे समाचार ग्रामराज" मे क्यो नही छपते ? फिर वे बोले, "वास्तव मे सभी पत्र एक प्रकार स दरिद्री से हैं। वैसे ग्रामराज ठीक निकलता है फिर भी उसमे सुधार की काफी गु जाइश है। हमारे काम और कार्यकर्ताओ से सबधित सभी मुख्य-मुख्य खबरो को भी स्थान मिलना चाहिए। किसी समाचार को छापने की हमे कला भी आनी चाहिए।"

ग्रामदानी गावो से शादी

ग्रामदानी गावो के निर्माण के सिलसिले मे बाबा ने कहा कि, 'हम कार्यकर्ताओं ने शायद ग्रामदानो से शादी ही कर ली है। वहा मानो हम लोग गृहस्थी बसाकर कोई तेल लूण लकडी की जिम्मेदारी मे फस गए हैं। यह काम करने दीजिए खादी कमीशन का। गाव वाले स्वय भी उठायेंगे। आप क्यों बध गए हैं।'

लोकधारित व्यवस्था

दूसरे दिन प्रात मैं शिवपुर हैड से साथ था। गगनहर के किनारे-किनारे की सडक पर गगानगर शहर की ओर आगे बढ़ने हुए बाबा एक क्षण के लिए रुके और उन्होने जयदेव भाई को चित्रा आदि नक्षत्रो की पहचान बताई और फिर रवाना हाते ही मुझे याद किया। जैसा कि पिछली रात तय हो गया था, राजस्थान मे पिछले ८ महीना के काम की जानकारी दने का मुझे आदेश दिया। मैने सूरजगढ मे बाबा की विदाई के बाद से अब तक होने वाले काम विशेषत शान्तिसेना, ग्रामनिर्माण तथा सर्वोदय-पात्र के बारे मे किये गये प्रयत्नो का ब्यौरा सुनाया। साथ ही शिवदासपुरा मे दो दिन के शिविर और सम्मेलन की चर्चाओ का सार भी बताया। शिविर-सम्मेलन मे जिन परिस्थितियो मे विविध विषयो की चर्चा–किन परिस्थितियो मे हुई यह भी बताया। सब सुनने के बाद कुछ देर मौन रहकर उन्होने कहा–मैंने आपकी बात शून्य भाव सुन ली है पर आपका कुल का कुल काम मेरी निगाह मे जीरो है। लोक आधार पर कितने कार्यकर्ताओं की निर्वाह चलाने की व्यवस्था प्रात मे हुई ? उसका लेखा जोखा भी उन्होंने सूताजलि सर्वोदय-पात्र और सम्पत्तिदान के अको से समझने का प्रयत्न किया। अब तक जो काम हो पाया उसे सुनकर प्रात की अब तक के काम की प्रगति से असन्तोष जाहिर किया।

सबसे पहले उन्होने प्रातीय शिविर सम्मेलन की चर्चा के सदर्भ मे कहा कि सरकार आपके लिए नये-नये कानून बनाकर परिस्थिति पैदा करती जाय और आप लोगो के लिए चिन्तन के नये-नये विषय प्रस्तुत होते जाये। आपका अपना कोई स्वतत्र चिन्तन का विषय नहीं, स्वतत्र काम नही और कोई स्वतत्र हस्ती भी नहीं। आज सरकारी शासन तन्त्र और व्यवसाय तन्त्र स बनी लोक आधारित अर्थ-व्यवस्था पर जब तक हम लोगो का काम चलने की स्थिति नही बनती तब तक वही स्थिति रहने वाली है। बाबा ने अपने मुद्दे स्पष्ट करते हुए कहा कि आप लोगो को यदि इसी प्रकार के काम मे शक्ति लगाना हो तो काग्रेस या पी एस पी

या स्वतन्त्र पार्टी में जाइये और यदि इनमें कोई पसंद नहीं तो स्वतन्त्र पार्टी बनाइये। उस जरिये आपको कम से कम करोडो रुपयों के सेवा के साधन मिल सकते हैं। इस उपालम्भ के बाद बाबा फिर अपने मुद्दे पर आये। "आप लोग क्यों नहीं सोचते कि पार्टियों को भी अपनी प्राथमिक सदस्यता की जरूरत होती है। राजाजी की स्वतन्त्र पार्टी के लिए रुपये की जरूरत है वह तो उन्हें वैसे कुछ ही लोगों से मिल सकता है पर उनको भी प्राइमरी सदस्य चाहिए। उसके बिना कोई पार्टी चलती नहीं। आपको क्या लोकमत नहीं चाहिए? उसका आधार सर्वोदय पात्र नहीं तो क्या हो सकता है? हमारे काम की यही एक मात्र कसौटी हो सकती है। लोकनीति की बात बिना जनता की सद्भावना और सहयोग के कैसे आगे बढ सकती है।"

खादी के काम का जिक्र करते हुए बाबा ने कहा कि, "वे लोग बेवकूफ हैं जो यह समझते हैं कि हमारे गाव स्वावलम्बी हो जायेंगे और समाज की स्थिति ऐसे ही चलती रहेगी। हम हमारे गावों का 'एयर टाइट' में कैसे रख सकते हैं? खादी को भूदान मूलक बनाने की बात पिछले दो वर्ष-तीन से चल रही है। वही प्रस्ताव बार बार दोहराया जाता है। पर उसमें ऐसे क्या मोड़ आयेगा? खादी को भूदान मूलक बनाने का प्रस्ताव बार-बार दोहराने से यह स्थिति नहीं आ सकेगी। सरकार के बल पर चल रही खादी का क्या भरोसा? वह तो कभी भी नई परिस्थिति आने पर कल बन्द हो सकती है और फिर उसमें क्रान्ति करने की बात कर भी कैसे सकते हैं जबकि हमारे निर्वाह का आधार वो नहीं है। हमारा एक प्रकार से निहित स्वार्थ उसमें हो गया है। उसमें क्रांतिकारी परिवर्तन की आशा तब तक नहीं की जा सकती, जब तक कम से कम कार्यकर्ताओं का निर्वाह लोकआधारित नहीं चलता। मैं चाहता हू कि आप सरकार से करोडों रुपये लीजिये, पर एक शर्त मान लीजिये कि कार्यकर्ताओं का निर्वाह लोक आधारित चले।

"मैं कहता हू अपनी चोटी मेरे हाथ मे दे दीजिये, बाकी जो चाहे सो कीजिये। क्या सर्वोदय पात्र, सूताजलि तथा सर्वोदय साहित्य प्रचार का काम खादी क्षेत्र में चलाने से उसकी बुनियाद मजबूत नहीं होगी? पर यह सब कुछ नहीं हुआ तो मैं यही मानकर चलूंगा कि जैसे अन्न या शक्कर के व्यापारियों की भी आज मेरे साथ जो सहानुभूति है, वैसे ही खादी के व्यापारियों की भी है। वास्तव में बिना ठोस वैचारिक आधार के उनकी स्थिति क्या रह जाती है? और केवल व्यवसाय की दृष्टि से ही देखा जाय, तो खादी के व्यापार से अन्न का व्यापार कम महत्व का नहीं है। पर मेरे समझ मे नहीं आता कि खादी वाले यह सब सर्वोदयपात्र, सूताजलि और सर्वोदय-साहित्य का काम क्यों नहीं कर पाते? प्रत्येक गाव मे खादी कार्यकर्ता २५-५० सर्वोदय-पात्र नहीं रखवा सकता, यह बात कैसे मानी जा सकती है?"

इसी प्रश्न के दूसरे पहलू को स्पष्ट करने के लिए बाबा ने कहा कि, "आज हर राजनैतिक पार्टी अपने "सैल" बनाती है। कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार ने केरल में अपने "सैल" बनाये, वे ज्यादा एफिसियेन्सी के साथ बनाये। वह कम एफिसियेन्ट होती तो कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार ही नहीं मानी जाती। पर उसने

कौनसा काम ऐसा किया जो दूसरी सरकारें या पार्टियां नही करती ? कांग्रेस भी अपने "सैल' बनाती है और मैं तो यह कहूंगा कि वह कोई अनुचित नही है। भारत सेवक समाज और साधू सेवक समाज यदि कांग्रस के "सैल' नही हैं तो क्या है ? और खादी मे भी एक प्रकार से कही कही कांग्रेस के "सैल" बने हैं। जब पार्टियां अपने "सैल' बनाती हैं और सरकारी पैसे का उसके लिए अपने दलीय स्वार्थ मे उपयोग करती हैं, तो एक दूसरे से नाराज होती हैं। पर आपका सर्वोदय काम ऐसा है कि यदि आपके 'सल' बने तो किसी को नाराजगी नही होगी बल्कि सभी को खुशी होगी। तो क्या हम लोग ऐसे बेवकूफ हैं जो परिस्थिति का इतना भी फायदा नही उठा सकते ?

"आज खादी का काम हम लोगों के हाथ मे है पर क्या वह हमेशा रहने वाला है ? इसलिए समय रहते चेतने की जरूरत है। हम लोग क्रांति करने चले हैं, पर मोर्चे पर न सिपाही है न उनके भत्ते की व्यवस्था ही है और न गोला-बारूद। यह कैसी लडाई ? **इसलिए देश मे कम से कम ७५ हजार शांति सैनिक खडे करके उनकी लोक आधारित-व्यवस्था करने की मांग मेरी है। सर्वोदय साहित्य ही तो हमारा गोला बारूद है।"**

इस संदर्भ मे बाबा ने राजस्थान मे सर्वोदय साहित्य की बिक्री की व्यवस्था के संबंध मे ब्यौरेवार जानकारी की। उन्होंने खादी का काम राजस्थान के कितने गावों म होता है, यह भी पूछा और कहा,—सर्वोदय साहित्य विक्रय केन्द्र जल्दी से जल्दी खोलना खादी के हर गांव म ग्रामराज और सर्वोदय साहित्य पहुंचाने और सर्वोदय पात्र रखवाने का काम चलना ही चाहिए।

बाबा के उक्त मार्मिक शब्दों को सुनने के बाद कुछ बोलने की अधिक गुंजाइश नहीं थी। मैंने नम्रतापूवक स्वीकार किया कि हम लोग उनके माप दण्ड से काफी हल्के उतरे है, बल्कि हमारा काम अभी नगण्य सा है। अब इस दिशा मे अवश्य आगे बढने का प्रयास करेंगे। मैंने प्रांत की ओर से यह निवेदन किया। मैंने एक बचाव के तौर पर कहा, "बाबा अंतरिम काल तो आप हमे देंगे न ?" तो उन्होंने तुरंत हँसकर जवाब दिया 'क्या आपको ८ महीने का समय मैंने नही दिया ? वह क्या कम है ?' मेरे पास चुप्पी के सिवा और कोई चारा नही था।

अपने उक्त विचारों को एक योजना का रूप देते हुए गंगानगर से श्रद्धेय गोकुलभाई जी से बाबा ने पुन इसी संदर्भ मे कहा कि, राजस्थान मे तीन हजार शान्ति सैनिक चाहिए पर कम से कम शुरूआत के तौर पर ३०० कार्यकर्ताओं को राजस्थान के जीवन स्तर से कम से कम १०० रुपये माहवार देने के लिए ३० हजार रुपये मासिक की व्यवस्था सर्वोदय पात्र और सूतांजलि से होनी चाहिए। और यह काम राजस्थान के प्रमुख शहरों मे, ग्रामदान गावों मे और खादी के क्षेत्र मे शक्ति केन्द्रित करने से आसानी से होना चाहिए। इस योजना का अ मा रूप बतलाने को लेलेजी से हिमाचल मे हुई चर्चा का हवाला देते हुए कहा कि देश मे एक लाख गावों मे खादी का काम चल रहा होगा, ऐसा उन्होंने बताया था। इसलिए २५ लाख सर्वोदय पात्र खादी के क्षेत्र मे रखना मुश्किल नही होगा।

चाहिए। श्री लेलेजी ने भी उसके महत्व को स्वीकार करते हुए इस काम को आगे बढ़ाने की बात कही थी इसलिए सर्व सेवा संघ को इस वर्ष कम से कम १० लाख सर्वोदय पात्रों का लक्ष्य बनाकर चलना चाहिए और पंजाब की संस्थाओं ने तो इस दृष्टि से संकल्प भी किये हैं। राजस्थान उनसे आगे क्यों नही बढ़ सकता यह आप लोगो के सोचने की बात है?"

इस सिलसिले मे उन्होने सर्व सेवा संघ द्वारा निधि-मुक्ति के संकल्प में कई अपवाद करने की नीति से भी अपना असमाधान प्रकट करते हुए कहा कि फिर अपवाद करते-करते यह स्थिति बनी है कि सहायता किस मद के लिए नही लेना, यही प्रश्न रह जाता है।

लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, सहकारी खेती तथा सीलिंग आदि विषयो पर चर्चा करने की आवश्यकता के बारे मे उनसे किये गये प्रश्नों के जवाब मे उन्होने कहा कि, "विचार की सफाई और ज्ञान वृद्धि की दृष्टि से विचार करना हो तो वह की जा सकती है, मगर जब तक आप लोगों का गांवों में प्रवेश नहीं और सर्वोदय-कार्यकर्ता की जो भूमिका होनी चाहिए वही नहीं बन पाती है, तब इन विषयों के प्रकट चिन्तन का किसी पर क्या असर होगा?"

काम की शुरुआत

बाबा की श्रीगंगानगर यात्रा, अज्ञात संचार की नई पद्धति के आधार पर हुई फिर भी काफी सफल रही। कुल मिलाकर राजस्थान मे उनके ६ प्रवचन हुए और १०–१२ हजार आदमियो ने उनके संदेश सुने। इन सबके द्वारा जैसा कि बाबा ने स्वयं ने कहा, 'गंगानगर की कोरी स्लेट पर श्री गणेशायनमः लिखने का काम हुआ और आगे के अ. आ. ई. लिखने की भूमिका तैयार की।" वहां के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं ने बाबा का काम आगे बढाने का निश्चय जाहिर किया है और उनकी एक समिति भी बनी है। ●

इक्कीस साल की उम्र तक बड़ौदा में रहकर इंटर की परीक्षा देने विनोबा बम्बई जाने निकले। सूरत स्टेशन पर उतर कर वे काशी की ओर रवाना हुए। उनके साथ उनका एक ही मित्र था बेड़ेकर, जिसको वे 'भोल्या' कहते थे। काशी में तात्या टोपे की बहन के मकान में एक कमरे में वे रहने लगे। अन्नछत्र में वे भोजन पाते थे और दो पैसे की दक्षिणा भी। उसी दक्षिणा से शाम को दही तथा शकरकन्द खाते थे। गंगा के किनारे वे कविता करने बैठते। उनका मित्र भोल्या तैरते हुए गंगा पार करके वापस आजाता, तब उसे कविता सुनाकर, वे कविता के कागज गंगा में डाल देते।

विनोबाजी की प्रेरणा से बीकानेर में सर्वोदय समाज की स्थापना की गई। इसके द्वारा गांधी अध्ययन केन्द्र तथा अनेकविध सेवा कार्य चलाए गए।

बीकानेर में सर्वोदय आन्दोलन

☐ श्री सोहनलाल मोदी

बात २ अक्टूबर १६४८ की है। गांधी जयंती पर हरिजन बस्ती की सफाई और छूआछूत मिटाने का कार्यक्रम स्थानीय कार्यकर्ताओं ने उठाया। उसको लेकर एक बहुत बड़ा आन्दोलन बीकानेर मे चला। हरिजन ही नही स्व श्री छोटूलाल व्यास तथा अन्य ऐसे लोगो को जिन्होने इस कार्यक्रम मे हिस्सा लिया था, मन्दिर प्रवेश से रोका गया। इस पर श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर मे २१ दिन तक उपवास व धरना चला। स्वय पूज्य विनोबाजी इस अवसर पर बीकानेर पधारे और उनके प्रयास से वह आन्दोलन समाप्त हुआ। बाबा की प्रेरणा से बीकानेर मे सर्वोदय समाज की स्थापना की गई। इसके द्वारा सत्साहित्य प्रचार, स्वाध्याय के लिए गाधी अध्ययन केन्द्र तथा अनेक विध सेवाकार्य चलाये गए। सन् ६८ मे गोकुलभाईजी द्वारा शराब-बन्दी के लिए उपवास करने पर यहा इक्कीस दिन तक डिस्टलरी और शराब की दुकानों पर धरना-प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

देश के अन्य प्रदेशो की तरह राजस्थान मे भी विनोबाजी का भूदान-आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। सन् १६५५ मे श्रद्धेय गोकुलभाईजी के सम्पर्क और प्रयास से देश का सबसे बड़ा भूदान बीकानेर मे छतरगढ का हुआ। राज्य परिवार के लोगो ने छतर-गढ की वह १,४६,००० एकड भूमि मय किले के सत विनोवा के भूदान आन्दोलन में समर्पित की, जिसमे आज इन्दिरा गाधी नहर प्रवाहित हो रही है। इस भूदान की जमीन के बहुत बडे भाग में अनेक गरीब अनयोदय परिवारो को मुफ्त भूमि आवटित की गई है और वहा सिंचित कृषि हो रही है।

ग्रामदान का व्यापक कार्यक्रम

दिसम्बर १६६६ मे डा० दयानिधि पटनायक, श्री सिद्धराज ढड्ढा, श्री रामेश्वर अग्रवाल, श्री गोकुलभाई भट्ट व प्रदेश के सभी वरिष्ठ सर्वोदय विचारक बीकानेर में खादी मन्दिर में एकत्रित हुए और बीकानेर जिला-ग्राम स्वराज्य समिति का गठन किया गया तथा बीकानेर मे जिलादान के कार्यक्रम की योजना बनी। ३ जनवरी १६७०को कोलायत के दियातरा गाव मे श्री भैरू दान छल्लाणी के प्रयास से कोलायत

प्रखण्ड के प्रखण्ड दान हेतु ३ दिन का शिविर रखकर कार्यक्रम बनाया गया। प्रदेश के करीब ५० कार्यकर्ताओं और दो-तीन सौ ग्रामीण लोगो ने उसमे हिस्सा लिया। उस समय राजस्थान मे सुलभ ग्रामदान एक्ट नही बना था। लेकिन ग्रामदान सकल्प लेकर टोलिया गावो में गई और यह सिद्ध हुआ कि गावो के लोग गाधी के मार्ग पर चलने को तैयार हैं, कमी है तो उनके बीच पहुचकर उन्हें समझाने और उनकी निराशा तोडने वाले प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की। उस समय सब आश्चर्य चकित हो गये जब एक सप्ताह की यात्रा के बाद टोलिया वापस लौटकर दियातरा आयी और अपनी-अपनी रिपोर्ट सुनाई, तो यह पाया गया कि ६८% गावो मे ७५% से अधिक भूमिधारक व भूमिहीन लोगो ने उस ग्रामदान सकल्प पत्र पर हस्ताक्षर किये हैं, जिसमे जमीन की मालकियत विसर्जित की जाती है। इससे कार्यकर्ताओं का उत्साह बढा। पूरे जिले मे जिलादान कार्यक्रम बनाया गया। कार्यकर्ताओं का उत्साह और परिश्रम असाध्य रहा। अप्रैल-मई और जून १६७० म तेज गर्मी के बीच दूर-दूर रेत के टीबो मे बसे गावो मे कार्यकर्ताओं ने पदयात्राएँ की व १५ जून १६७० तक बीकानेर जिले के ८५% गावो मे ८०% से उपर लोगो ने हस्ताक्षर कर ग्रामदान सकल्प पत्र भरे और जून के अन्तिम सप्ताह मे सीकर मे होने वाले सर्वोदय सम्मेलन म श्री जयप्रकाश जी को बीकानेर जिला ग्रामदान भेंट किया गया।

लेकिन वह सब सकल्पित (डीफैक्टो) ही था क्योंकि राजस्थान सरकार ने अब तक सुलभ ग्रामदान एक्ट पारित नही किया था। श्री गोकुलभाई भट्ट द्वारा प्रयास किये जा रहे थे कि राज्य सरकार जल्द से जल्द सुलभ ग्रामदान एक्ट पारित करे। इसी दौरान तत्कालीन मुख्यमत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया द्वारा यह कहा गया कि बीकानेर के पच-सरपच तो ग्रामदान नही चाहते। इस पर बीकानेर जिले के १२३ सरपचो मे से ४ को छोडकर जो गावो मे उपलब्ध नही हो सके बाकी ११६ सरपचो मे हस्ताक्षर का ज्ञापन एक पूरी बस मे पच-सरपचो ने जाकर मुख्य मत्री को दिया कि हमारे नाम से यह गलत कहा जा रहा है कि हम ग्रामदान नही चाहते बल्कि हम तो ग्रामदान के माध्यम से गाव-गाव मे ग्राम स्वराज्य की स्थापना करना चाहते हैं। इस पर मुख्यमत्री श्री सुखाडिया जी ने आश्वासन दिया की जल्दी ही सुलभ ग्रामदान एक्ट असेम्बली मे लाकर पारित किया जायेगा। राजस्थान मे सुलभ ग्रामदान एक्ट पारित हुआ लेकिन उस सब मे एक साल का समय लगा। कार्यकर्ताओं का उत्साह अटूट था। गाव-गाव मे जाकर डीफैक्टो ग्राम सभाएँ गठित की गई। गाव की कार्यकारिणी के चुनाव कराये गये। ग्राम कोष की स्थापना की गई। प्रत्येक प्रखड मे प्रखड ग्राम स्वराज्य समितिया गठित की गई। ग्रामदानी गाव के प्रतिनिधियो से जिला ग्राम स्वराज्य समिति बनी। इस सब कार्यक्रम मे प्रदेश के वरिष्ठ लोग श्री सिद्धराज ढड्ढा, श्री बद्रीप्रसाद स्वामी, श्री जवाहिर लाल जैन, श्री पूर्णचन्द्र जैन, आदि तो निरन्तर एक-एक माह तक इस जिले के गावो मे यात्राएँ करते रहे। इस विचार के लिये समर्पित डाक्टर श्री दयानिधि पटनायक भी अनेक बार बीकानेर पधारे सम्भवत उन्होने अपने सैकडो दिन इस कार्यक्रम मे दिये। आचार्य श्री राममूर्ति, श्री ठाकुर दास बग व अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने भी बार-

बार बीकानेर पधार कर इस कार्यक्रम मे योगदान दिया ।

जिला प्रशासन की स्थिति

बीकानेर जिले के ग्रामदान की हवा इस तेजी से बढ़ी की बिहार मे बिहारदान के लिए पदयात्रा करते हुए सत विनोबा ने भी राजस्थान के लोगो से बिहार मे न आकर बीकानेर जाने को कहा । कायकर्ताओ और गाव के लोगो का उत्साह तो इस चरम सीमा पर था कि सुलभ ग्रामदान एक्ट के पारित होने के इन्तजार मे निरन्तर फॉलोअप के कार्यक्रम चलते रहे। प्रत्येक गाव मे प्रत्येक मकान पर लोहे की नम्बर प्लेट लगाकर विस्तृत पारिवारिक सर्वे की गई और योजनायें बनाई गई कि सुलभ ग्रामदान के बाद कानूनी मान्यता प्राप्त ग्रामदान घोषित कराकर गाव मे ग्रामराज्य की स्थापना कर गाव का नवनिर्माण कैसे किया जाये । इतना ही नही जिला प्रशासन भी इतना भ्रमित हो गया कि उन्होंने जिला स्वराज्य समिति से लिखित जानकारी चाही की आपने पूरे जिले मे जिलादान किया है । इस वर्ष गिरदावरी आप करेंगे या हम, लगान वसूली आप करेंगे या हम । जब उनसे मिलकर उन्हे जानकारी दी गई कि अब तक सुलभग्राम दान एक्ट पारित नही है, यह सब डिफैक्टो है फिलहाल गिरदावरी व लगान वसूली आपको ही करनी है, तो जिलाधीश ने आश्चर्य चकित होकर पूछा कि जिलादान के बाद हमारा क्या स्थान रहेगा । उन्हें बताया गया कि आप रहेंगे लेकिन आप के पास काम बहुत कम रहेगा । गाव सर्वाधिकार प्राप्त अधिकार सम्पन्न इकाई होगी वे अपना काम स्वय करेंगे ।

राज्य सरकार व तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री सुखाडियाजी का विशेष प्रयास रहा। उन्होने एसेम्बली मे सुलभ ग्रामदान एक्ट रखकर सदस्यो से यह निवेदन किया कि गाधी के रास्ते से एक बहुत कडा कार्य होने जा रहा है, आप इस एक्ट को पारित करावें । और राजस्थान सुलभ ग्रामदान एक्ट एसेम्बली मे पारित किया गया ।

नगर-स्वराज्य कार्यक्रम

इसी दौरान बीकानेर के मनीषी दार्शनिक डा श्री छगन मोहता द्वारा जिला ग्राम स्वराज्य समिति मे यह बात रखी गयी कि गाव और शहरो को अलग-अलग नही किया जा सकता । शहर की हवा गांव मे जाती है अत: नगर स्वराज्य का कार्यक्रम भी उठाया जावे । उनकी प्रेरणा से नगर मे नगर स्वराज्य की स्थापना हेतु कार्यक्रम बना । करीब 20 दिन तक नगर के मोहल्ले-मोहल्ले मे कोर्नर सभाएँ कर ग्रामदान की जानकारी दी गई व नगर-स्वराज्य के विचार को समझाया गया और एक निर्धारित तारीख पर आनन्द निकेतन मे इक्ट्ठे होकर नगर स्वराज्य समिति के गठन की सूचना दी गई । नगर के लोगो का उत्साह भी सराहनीय था कि जिस दिन आनद निकेतन मे वह सभा बुलाई गई, हॉल व बाहर का मैदान खचाखच भरा था । लोगो को भीतर घुसने की जगह नहीं थी इस हर्षोल्लास के बीच 'नगर स्वराज्य समिति' का गठन किया गया ।

दुर्भाग्य यह रहा कि गावो और नगर के इस उत्साह पूर्ण माहौल मे हमारे आन्दोलन के वरिष्ठ नेता भी इस प्रकार भ्रमित एव हिप्लोटाईज हो गए कि उनके सामने जब आगामी फॉलोअप का कार्यक्रम ग्राम सभाओ

ग्रौर नगर सभा के ग्रध्यक्ष-मन्त्रियो के प्रशिक्षण की योजना ग्रौर बजट रखा गया, तो उन्होने यह तय किया कि ग्रब हम चम्मच से दूध नही पिलायेंगे (स्पूनफीडिंग नही करेंगे) प्रखड मे प्रखड ग्रामस्वराज्य समितिया वनी हैं, नगर मे नगर स्वराज्य समिति बनी है, वे ग्रपना कायक्रम ग्रौर बजट स्वय बनायगे ग्रौर ग्रपना काय स्वय करेंगे। कुछ कार्यकर्त्ताग्रो द्वारा ये विचार रखे गए कि सुलभ ग्रामदान एक्ट बन चुका है उसके तहत कानूनी मान्यता प्राप्त ग्राम सभाए बनाने ग्रौर एक वर्ष तक उनके सचालन का कार्य फॉलोग्रप के रूप मे हमको करना चाहिए। नेताग्रो का यह भ्रम कि फॉलोग्रप का कार्य हमारा नही है, ईश्वर का है या लोगो का है वे स्वय ग्रपना कार्य करेंगे। ग्रब सस्थाए व हम कार्यकर्ता इसमे ग्रपनी समय, शक्ति, धन नही लगायगे।

निराशा का दौर

हमारी इस भूल का परिणाम यह हुग्रा कि ग्राम-स्वराज्य समितियां व नगर स्वराज्य समितियां स्वय इस कार्यक्रम को नही उठा पाईं ग्रौर वह सारा कार्यक्रम वही तक होकर ग्रधूरा रह गया। हमारा वह भ्रम तब दूर हुग्रा जब बिहार में विनोबा जी ने कहा कि हम ग्रसफल रहे क्योकि हमने फॉलोग्रप नही किया। फिर से इस बात की चर्चा की गई। फॉलोग्रप का कार्यक्रम बनाकर बीकानेर-जिलादान के कार्यक्रम को फिर से हाथ मे लिया जाये, लेकिन तब तक काफी समय बीत चुका था। सारा ग्रादोलन शिथिल हो चुका था। लोगों का उत्साह भग होकर उनमे निराशा छा गई थी। कार्यकर्ता निराश होकर ग्रपने-ग्रपने घरो को लौट चुके थे ग्रतः फिर

काशी मे सस्कृत का ग्रध्ययन करने की विनोबा जी की इच्छा थी। वहा के पडितो को उन्होने सिखाने की विनती की। जवाब मिला, "द्वादश वर्षाणि व्याकरण श्रूयते"– बारह साल व्याकरण सुनना पडेगा। तब कहीं सस्कृत का ग्रध्ययन होगा। विनोबा ने खुद ही पुस्तको की मदद से तीन महीनो मे सस्कृत का ग्रध्ययन पूरा कर लिया।

से वह कार्यक्रम नही उठाया जा सका।

इस सब परिस्थिति मे पुन. बीकानेर जिले मे सर्वोदय के काम को कैसे ग्रागे बढाया जाये इस सब पर चर्चायें हुई। बीकानेर जिले मे ग्राम-स्वराज्य के कार्यक्रम को ग्रागे बढाने के लिये कुछ प्रशिक्षित कायकर्त्ता तैयार करने की योजना बनी ग्रौर ग्रावश्यकता महसूस की गई कि जिले मे एक ऐसे ग्राश्रम की स्थापना हो, जिसमे गाधी-विचार के ग्रनुरूप कृषि, गो पालन ग्रौर ग्रन्य रचनात्मक कार्य चलें ग्रौर उसके साथ-साथ कार्यकर्ता प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी रहे। राजस्थान गो सेवा सघ के माध्यम से छतरगढ मे जुलाई १९७३ मे **कृषि गो सेवा ग्राम स्वराज्य शोध सस्थान** की स्थापना की गयी। मास्टर श्री नृसिहदत्त जी शर्मा ने इस ग्राश्रम को विकसित करने मे प्रमुख भागीदारी निभाई। इसी बीच राष्ट्र की बिगडती हुई परिस्थितियो को देखकर सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाशजी के द्वारा गाधी के ग्रसहयोग,सत्याग्रह ग्रौर ग्रादोलन के कार्यक्रम को हाथ मे लेकर जनता का ग्रभिक्रम जगाने का प्रयास किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान जयप्रकाशजी ने देश भर मे जन-चेतना जागत की। सम्भवत ग्रगस्त १९७४ मे

आज राजनीतिक परिस्थिति यह है कि जिनको आप नेता मानते हैं, वे जनता के नेता नहीं, बल्कि विशिष्ट पक्षों के नेता है। वे अपने अनुयायियों के अनुयायी होते हैं। इस नाते से सारे समाज को मार्गदर्शन नहीं दे सकते। तो मार्गदर्शन कौन देगा? जो सत्ता मे नहीं होगा। मैं चाहता हू कि आचार्य राजनीति से बाहर रहकर समाज का नेतृत्व करें तब भारत की राजनीति सुधरेगी।

—विनोबा

मे जयप्रकाशजी बीकानेर पधारे। बीकानेर के लोगो को भी उन्होने संबोधित कर झकझोरा। बीकानेर मे सर्वोदय समाज रचना की योजनायें बनने लगी लेकिन दुर्भाग्य है कि भारत सरकार एव सत्ता मे बैठ लोगो ने जहा देश को फिर से गाधी के रास्ते पर लौट जाने के प्रयास मे लगे जयप्रकाश जी का साथ देने की बजाय उन्होने विपरीत कदम उठाये। देश मे आपातकालीन स्थिति लागू की गई। जयप्रकाश जी व उनके साथ लगे गाधी विचार के तथा विरोधी दल के सभी लोगो को जेलो मे डाल दिया गया। बीकानेर मे भी करीब ८० कार्यकर्ता जेलो मे रहे। सत्ता गाधी के रास्ते के विपरीत इतनी आगे बढ चुकी थी कि गाधी, विनोबा, जयप्रकाश का नाम भी उन्हें अखरने लगा था। देश को भयभीत व आतंकित कर तानाशाही का समर्थन प्राप्त करने हेतु चुनाव की चुनौती सामने रखी गयी।

जनवरी १९७७ मे होने वाले चुनावो मे भारत की जनता ने यह सिद्ध किया कि वह तानाशाही को नकारती है, और प्रजातन्त्र एव लोकशाही को स्वीकार करती है। इस चुनाव में जनता पार्टी की विजय हुई लेकिन जे पी जेल मे इतने अस्वस्थ और क्षीणकाय हो चुके थे कि जनता पार्टी को गाधी के रास्ते पर नही ले जा सके। हालाकि जे पी ने घोषणाए की थी और अपेक्षाए रखी थी, गाव-गाव व मौहल्ले-मौहल्ले मे लोक समितिया गठित की जायें। सत्ता पर नियन्त्रण कायम किया जाये और गाधी की कल्पना की लोकशाही की ओर आगे बढा जाये। लेकिन विरोधी दलो से बनी जनता पार्टी भी निहित स्वार्थों व अज्ञानवश गाधी की कल्पना की लोकशाही की ओर आगे नही बढ सकी।

विमला ठकार का मार्ग-दर्शन

आपातकालीन स्थिति के बाद पुनः छतरगढ के कृषि गो सेवा ग्राम स्वराज्य शोध सस्थान के कार्यक्रम को आगे बढाने का प्रयास किया गया। उन्ही दिनो सुश्री विमला बहन ठकार अपनी प्रवास यात्रा मे छतरगढ पधारी और उन्होने इस कार्य मे अपना मार्ग दर्शन देना स्वीकार किया। उनके मार्गदर्शन मे पुनः बीकानेर जिले मे ग्राम-स्वराज्य के कार्यक्रम को आगे बढाने की योजना बनी। कार्यकर्ता प्रशिक्षण का कार्य शुरू किया गया। विमला बहन का मार्ग दर्शन हर वर्ष आठ दस दिन मिलने लगा। देश में अनेक लोगो ने छतरगढ मे कार्यकर्ता प्रशिक्षण के कार्यक्रम को आगे बढाने मे योगदान दिया। डा० श्री रामबच्चन सिंह जी स्वतन्त्रता सेनानी श्री रामनारायण जी चौधरी जैसे लोगो का सानिध्य छतरगढ केन्द्र को मिला। सुश्री विमला बहन, दादा धर्माधिकारीजी, श्रीसुब्बारावजी, श्री राधाकृष्ण जी बजाज, श्री सिद्धराजजी ढड्ढा, श्री ठाकुर दास जी बग, श्री अमरनाथ भाई आदि अनेक

लोग समय-समय पर छतरगढ केन्द्र पधारे और कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया । 'कृषि गौ सेवा ग्राम-स्वराज्य शोध सस्थान' फिर से देश के लोगो के लिये एक कर्मस्थली बनी । लेकिन आर्थिक कठिनाइयाँ और गो सेवा सघ द्वारा अपने सेवा और राहत के कार्यक्रमो मे क्राति के इस कार्यक्रम को महत्व न देने पर फिर से यह कार्यक्रम स्थगित हो गयी । रचनात्मक सस्था के माध्यम से क्राति के कार्यक्रम को आगे बढाना सम्भव नही हुआ, अत कार्यकर्ता निर्माण और जिले मे ग्राम स्वराज्य के कार्यक्रम को गति नही दी जा सकी । इस कार्यक्रम मे लगे कार्यकर्ताओ को फिर से यह महसूस करना पडा कि क्रांति का कार्यक्रम राहत और सेवा की सस्थाओं के माध्यम से करना कम सम्भव है । इसके लिये सस्थाधारित नहीं जनाधारित योजनायें ही बनानी होंगी ।

राहत और सेवा कार्य

बीकानेर मे राहत और सेवा के कार्य अनेक सस्थायें कर रही हैं । करीब २५ खादी-ग्रामोद्योग व सहकारी समितिया सात करोड का खादी उत्पादन कर रही हैं । राजस्थान गो सेवा सघ प्रदेश की एक प्रमुख सस्था है जो गौ पालन व गो रक्षण के कार्य मे लगी है । इसी प्रकार अन्य अनेक सस्थायें गौ रक्षा, शिक्षण और समाज सेवा के कार्यों मे लगी हुई हैं ।

लेकिन गाधीजी ने इन सभी सस्थाओ का दर्जा इस दृष्टि से किया था कि ऐसे समाज की रचना करनी है जिसमे कोई सेवा लेने वाला नही हो और सेवको की आवश्यकता न हो । आज अनेक सस्थायें राहत व सेवा कार्य कर रही हैं । सरकार भी अनेक राहत सेवा और विकास के कार्य कर रही है, बावजूद उसके देश मे गरीबी, बेकारी, महगाई, भ्रष्टाचार, हिंसा, अराजकता, विघटनवाद, सत्ता और अर्थ व्यवस्था का केन्द्रीकरण बढता जा रहा है । क्योकि आज हम गाधी की कल्पना की नव समाज रचना (सर्वोदय समाज रचना) के रास्ते से भटक गये हैं । सर्वोदय कार्यकर्ताओ, रचनात्मक सस्थाओ और सरकार के बीच परस्पर समन्वय नही है बल्कि दूरी बढ रही है । यदि हमे गाधी के रास्ते पर लौटना है तो सर्वोदय कार्यकर्ताओ को गाधी-विनोबाजयप्रकाशकी कल्पना के नव समाज रचना के कार्यक्रम को अपनाना होगा ।

सर्वोदय सदन, गोगागेट, बीकानर

यह हवा बदलने के खातिर आंधी की आज जरूरत है ।
लपटों में बैठी दुनिया को गांधी की आज जरूरत है ।।
गूंज रहा है नभ-तल में बापू तेरा सन्देश ।
भूल रहा है किन्तु तुम्हें ही आज तुम्हारा देश ।।

खादी कमीशन, बोर्ड तथा संस्थाओं के संगठित प्रयत्न से बीकानेर जिले ने देश के ऊनी खादी क्षेत्र मे प्रमुख स्थान प्राप्त किया है।

आजादी के बाद बीकानेर की उपलब्धियाँ

□ श्री छीतरमल गोयल

जब अंग्रेजी-भारत मे गाधीजी के आजादी के बिगुल से प्रभावित होकर आजादी के पूर्व अखिल भारत देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना हुई तो राजस्थान की देशी रियासतो मे भी प्रजामडलो द्वारा जनप्रतिनिधि सरकारो की स्थापना के लिए आन्दोलन खडे किये गये। प्रजामडल के नेताओ पर रियासतो द्वारा अनेक प्रकार के अन्याय अत्याचार किये गये। बीकानेर मे स्वर्गीय श्री रघुवरदयालजी गोइल द्वारा इसी प्रकार का सघर्ष किया जाने पर उन्हे वहा से निर्वासित किया गया।

आजादी के बाद सभी रियासतो को जब मिलाकर राजस्थान की स्थापना हुई तो शास्त्री -मत्री मडल मे श्री गोयल साहब को राज्य का कृषि मत्री का काय-भार सौंपा गया।

इसी समय श्री गोयल साहब द्वारा बीकानेर मे रचनात्मक कार्य की शुभ शुरूआत खादी मदिर की स्थापना द्वारा की गई जिसके माध्यम से वहा की पुरातन कताई-बुनाई कला को नया स्वरूप दिया जाने लगा, जो उत्तरोत्तर विकसित होता गया।

खादी उत्पादन मे वृद्धि

आजादी के बाद अखिल भारत खादी कमीशन द्वारा अपने २ खादी उत्पादन क्षेत्र चालू किये गये, इसके अलावा उनका तथा राज्य मे खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की प्रेरणा से राज्य के सीमा क्षेत्र मे तथा बीकानेर जिले मे अनेक खादी सस्थाओ तथा सहकारी समितियो का गठन भी हुआ, जिनके प्रयास से ऊनी खादी उत्पादन मे उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। और उनके जरिए अकाल ग्रसित क्षत्रो मे रोजगार के साधना का विकास हुआ।

इस प्रकार खादी कमीशन, बोर्ड एवं सस्थाओ के सगठित प्रयत्न से बीकानेर जिले ने देश के ऊनी खादी के क्षेत्र मे प्रमुख स्थान प्राप्त किया। सस्थाओ एव समितियो के काम मे आनेवाली कठिनाइयो को दूर करने की दृष्टि से राज्यस्तरीय मध्यवर्ती सगठन के रूप में राजस्थान खादी ग्रामोद्योग सस्था सघ द्वारा वहा कार्डिग फिनिशिग प्लान्ट लगाये गये तथा खादी की थोक बिक्री के लिए वस्त्रागार भी खोला गया। इस प्रकार पिछले ४० वर्षो के बीकानेर जिले के प्रमुख निष्ठावान खादी कार्यकर्ताओ के सतत प्रयत्नो तथा खादी कमीशन बोर्ड एव सस्था समितियो के सगठित प्रयत्न से बीकानेर जिले ने देश के ऊनी खादी क्षेत्र मे प्रमुख स्थान प्राप्त किया है। उनकी इस सफलता के पीछे पुरातन काल से चली आई कताई बुनाई की कला के धनी कत्तिन-बुनकरो का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

राजस्थान गो सेवा संघ

ऊनी कताई-बुनाई के पारगत कारीगरो के अलावा बीकानेर क्षत्र मे गोपालको की भी एक बडी निष्ठावान जमात रही है, जो इस क्षेत्र की गोनस्ल की कठिन दुर्भिक्ष के बीच भी अपनी जान झोक कर रक्षा करते रहे हैं। पिछली अर्द्ध शताब्दी के दौरान बार-बार भयकर दुर्भिक्ष से मुकाबिला करने मे सहयोग देकर गोनस्ल को रक्षा एव गोसवर्धन के लक्ष्य को लेकर राजस्थान गो सेवा सघ की शाखा वहा खोली गई। जब से वहा के मित्रो ने अत्यन्त निष्ठा के साथ गो सेवा के काम को उत्तरोत्तर विकसित किया है और इस वर्ष के भयकर दुष्काल मे जो राज्य मे बेमिशाल सेवा कार्य किया है, वह स्तुत्य है।

भूदान-ग्रामदान आन्दोलन

सत विनोबा की प्रेरणा से जो भूदान-ग्रामदान आन्दोलन देश भर मे चलाया गया, उसमे भी बीकानेर का स्थान राजस्थान प्रदेश मे सर्वोत्कृष्ट रहा है। छतरगढ क्षेत्र मे कई लाख भूमि का भूदान मे प्राप्त होना और बीकानेर जिले के सभी गावो द्वारा ग्रामदान के सकल्प लेकर 'जिलादान'' की घोषणा एक ऐसी गौरवशाली उपलब्धि थी, जिस पर राजस्थान को गर्व होना स्वाभाविक था।

इतिहास की इन श्रेष्ठ उपलब्धियो के सदर्भ मे बीकानेर के मित्रो को अपने भावी कार्यक्रम स्थिर करके उनकी सफलता के लिए निष्ठापूर्वक जुटने का समय है। विश्वास है सर्व सेवा सघ के बीकानेर अधिवेशन से उनके इस कार्य मे नई प्रेरणा मिल सकेगी।/●

मजबधर का रास्ता, जयपुर

एक दुखान्त विवरण

विवादग्रस्त छत्तरगढ़–भूदान

❑ श्री यज्ञदत्त उपाध्याय

राजस्थान का ही केवल नही पर पूरे ही देश का सबसे बडा भूदान छत्तरगढ (बीकानेर) का प्राप्त हुआ। इस भूदान का डढ लाख बीघा (88750 एकड) का एक ही चक मे होना और रेत से अटी-पटी इस भूमि को देखते ही देखते नहरी होने के प्रोसपेक्टस ने इसको सब ही की नजरो मे मे ला दिया। कौडियो की यह भूमि अब करोडो की हो गई। फलस्वरूप सरकार कहने लगी है कि यह भूदान अवैधानिक हुआ। इस पर बाबा (आचार्य विनोबा भावे) ने इस मसले को लेकर उनके पास पहुचे राजस्व राज्य मन्त्री को सुस्मित कहा 'राजस्थानी कारस्तानी"। वस्तुत इसमे राज्य सरकार की साप छछुदर की सी गति हो गई है। न तो इसको लिए बनता है और न ही इसको छोडते। यह (भूदान) बाबा के नाम से जुडा है। इसलिए "सरकार लोगेलिस्टिक होना नही चाहेगी'। ऐसा भी एक प्रसग से प्रदेश के मुख्यमन्त्री जी ने भी मुझको कहा।

इसी असमजस मे 1960 से 1982 तक सरकार ने इस मामले को विचाराधीन बना पडा रखा और इसके भूदान कानून के अधीन भूदान बोर्ड मे विधिवत् वेस्ट किए जाने के बावजूद भी इसके आवटन पर ऐसी पाबन्दिया लगादी कि जिनके होते यहा भूमि लेने वाले को उत्साह नही होता। ऊपर से सरकार का यह आरोप है कि "भूदान बोर्ड भूमि बाटने मे एकदम अक्षम साबित हुआ है' जबकि बोर्ड यह कह रहा है कि "सरकार पाबन्दिया हटाले तो आवटन निश्चित अवधि मे किया जा सकता है" पर सरकार को तो गाली देकर गोली मारना था। उसने सारी अनावटित भूमि हस्तगत करने का आदेश (मार्च 1982) जारी कर दिया। पर इसमे भूदान कानून की जिस धारा का उसने सहारा लिया, वह सरकार को यथेष्ठ सहायक नही हो पाई। इसलिए जब भूदान बोर्ड ने आपत्ति की तो उस समय तो हाथ खेंच लिया लेकिन चार वर्ष तक चुप रहने के बाद गत वर्ष फिर भूमि हस्तगत करने की कार्यवाही प्रारम्भ कर दी।

छत्तरगढ के भूदान क्षेत्र से लगते ही महाजन फील्ड फायरिंग रेन्ज के गावो के विस्थापितो को भूमि दिये जाने का एक अच्छा अवसर सरकार के हाथ लगा ताकि देश की सुरक्षा के नाम पर कोई भी चीं चपट भी न कर सके। हम स्तब्ध रह गये। खास-कर इसलिए कि उक्त विस्थापितो मे से

कमजोर वर्ग और गरीब भूमिहीनों को तो बोर्ड स्वयं ने, बिना मूल्य भूदान भूमि देने का ग्रोफर दिया ही था। बोर्ड के उस ग्रोफर को सरकार ने ठुकरा दिया और उलट कर बोर्ड पर यह आक्षेप लगाया कि बोर्ड ने विस्थापितों को भूमि देने से इन्कार कर दिया। पर जैसा कि ऊपर कहा गया है कि सरकार को तो गोली मारने को गाली देनी थी, सरकार ने भाव देखा न ताव और जिस लक्ष्मण रेखा पर वह 25 वर्ष तक किंकर्तव्य विमूढ सी खडी रही, उसको लाघ गई और जब तक बोर्ड उच्च न्यायालय में पुकार कर उसको रुकवाने पहुचा, तब तक तो छत्तरगढ़ की 11000 बीघा भूदान भूमि भूमिवान विस्थापितों को सरकार ने बिक्री भी कर डाली।

अनैतिक व्यवहार

1975 में जब सरकार ने "इमरजेन्सी" मे प्रथम बार इस भूमि को हस्तगत करने का आदेश दिया था, तब बाबा ने अपने हस्ताक्षर से राजस्थान सरकार के व्यवहार को अनैतिक बताया था। उपरोक्त कदम उठाने पर हम समझ गये कि सरकार ऐसा कोई भेद, नैतिक-अनैतिक के बीच नही करती है। सरकार मे तो गीला-सूखा सब ही जलता है। वस्तुत इस दान मे विविध-सम्मत् होने न होने का फैसला तो किसी निष्पक्ष न्यायविद् या न्यायाधिकरण द्वारा ही कराया जाना था। लेकिन इसके बाद राज्य सरकार ने दूसरा ही मार्ग अपनाया। अनर्गल, सुनी-सुनाई, अपुष्ट भू आवटन सम्बन्धी शिकायतो को ढोल बजाकर भूदान कानून मे ऐसा सशोधन भी कर डाला कि यदि कोर्ट का फैसला सरकार के अनुकूल न हो, तो भी इस भूमि को हस्तगत कर सके। जबकि बोर्ड का कहना है कि भूदान आवटन का सारा काम और खासकर छत्तरगढ का, जो कुछ भी कमोवेशी, बावजूद उस पर लगी पाबन्दियो के, हुआ है, पूर्ण निर्दोष और भूदान योजना के अनुरूप हुआ है। इस भूमि को कैसे भी कर लेने पर ही यदि वह उतरी है तो अलग बात है।

ऊपर इस मामले मे सरकार के भारी असमजस मे पडे रहने की बात कही गई है। यह हकीकत है। पर अब जिस तरह असमजस से मुक्त होने की सरकार चेष्टा कर रही है, वह शासन मे बैठे लोगो के प्रति सद्भाव से मेल नही खाती।

> जिन लोगो ने निष्ठापूर्वक भूदान जैसे कामो के लिए अपना जीवन समर्पित किया है, उनके साथ साहचर्य भाव से समस्याओ पर बात करके अपनी सद्भावी बुद्धि पर चलने के बजाय, हमारे ये मित्र, भूदान-ग्रामदान जैसी योजनाओ को अपने "अधिकारो" पर अतिक्रमण मान बैठे हैं। प्रशासनिक अधिकारियो की बेबुनियाद, अनर्गल बातो पर ही वे कान देते और फैसला लेते हैं। यह दुर्भाग्य की बात है।

विवाद की जड़ में पैसा

यह भी निर्विवाद है कि इस सारे विवाद की जड मे तो पैसा ही है। कोडियो की भूमि करोडो की बनाने मे सरकार का बहुत धन लगा है और लग ही रहा है और इसलिए सरकार इस भूमि की भी कीमत लेना चाहती है। बिना लाग लपेट वह यह भी बोर्ड को लिख चुकी है कि आवटितियो से सरकारी आवटन के नियमो के अनुसार भूमि का मूल्य बोर्ड वसूल करे और सरकार मे जमा कराये। बोर्ड का बाअदब यह कहना रहा है कि यह

भूमि दान मे मिली है। और गरीब भूमिहीनो के लिए विनोबा की झोली मे डाली गई है। इसलिए इसकी कीमत ली गयी तो गरीब इसको कैसे ले पायेंगे? सरकार यह क्यो नही साचती है कि गरीबो को दो जून की रोटी का आधार देने की जिम्मेदारी भी तो सरकार की ही अपनी है। यदि इस भूमि को पैसे वाले ही प्राप्त करेंगे, तो बेचारे गरीब उनके हाली-मजदूर ही बने रहेगे। और यह दुष्चक्र कभी समाप्त नही होगा। फिर सरकार के पास तो अन्यत्र भी बहुत भूमि है जिसे वह कीमतन दे रही है। भूदान मे प्राप्त हुआ यह छोटा सा टुकडा यदि गरीबो के लिए ही रह जाए तो कैसी कल्याणकारी बात हो। यही इसका नैतिक पहलू है।

सरकार यदि इस भूमि के दान के आगे "लीगेलिटी' का प्रश्न चिन्ह लगाती है, तो यह तो उसका अधिकार है। पर फैसला तो ऐसे मुद्दे का सक्षम न्यायालय ही कर सकता है। जबकि सरकार ने तो एकदम विपरीत व्यवहार किया है। भूदान की भूमि को अपनी भूमि की ही तरह, बोर्ड के सारे विरोध के बावजूद, बिक्री करने लग गई और बोर्ड को न्यायालय का द्वार खटखटाने को मजबूर कर दिया। अब तो सरकार को बोर्ड के दावे पर न्यायालय के फैसले की प्रतीक्षा करनी होगी। यदि इसको 'बाईपास" करने की उसने कोई चेष्टा की, तो उसका हमको प्राणपन से प्रतिकार करना होगा।

प्रतिकार का प्रश्न

इसके अलावा भी गरीब को, जिस भूमि पर वह पैदा हुआ है, उस भूमि का सहारा पाने का "मोरल" अधिकार तो है ही। सरकार उस अधिकार को "लीगेलिटी" के चक्कर मे खत्म नहीं कर सकती। और हमारा भी यह कर्त्तव्य है कि उसके इस अधिकार को सरकार द्वारा मान्य करने मे उसकी पूरी मदद करें। इसलिये जिन बेसहारा गरीबो को हमने भूमि दी है ऐसे बेसहारो के पास वह सहारा बना रहे इसके लिये हम अपने को नैतिक दृष्टि से प्रतिबद्ध मानते हैं। यदि ऐसे लागो के इस भूमि के भोगाधिकार को समाप्त किया गया या उसका कु ठित करने की चेष्टा की गई तो हमरो प्राण-प्रण से प्रतिकार करना हो है।

उच्च न्यायालय के निषेधाज्ञा के बाद इस भूमि को हथियाने या बोड के आवटितियो के भोगाधिकार को किसी आडे-टेढे मार्ग द्वारा समाप्त करने की चेष्टा सरकार ने अभी तक तो नही की है और छुट-पुट की है, तो तत्काल आपत्ति उठाने पर कदम वापिस भी ले लिया है। पर आवटितियो के साथ, इसी क्षेत्र के अन्य आसामियो की तुलना मे, राज्य की नीति व उसका व्यवहार एकदम ऐसा भेदभाव पूर्ण है कि जिससे जहा नये लोग भूमि का आवटन लेने मे हतोत्साहित होते हैं वही जो लोग आवटन ले चुके हैं वे स्पष्ट ही दण्डित हो रहे हैं। क्षेत्र के अन्य आसामियो को राज्य से मिलने वाली सामान्य सुविधा-सहायता से भी भूदान आवटितियो का वचित रखा जा रहा है। इसके दो ज्वलन्त उदाहरण –

1 "भूदान क्षत्र के आसामियो के क्योकि आवयापेन्सी राईट्स नही हैं अत- विश्व बैंक से उनको सहायता प्राप्त करने की योजना के अन्तर्गत खालो का निर्माण कार्य वहा नही किया जा सकता।" ऐसा मुख्य अभियन्ता, सिचित क्षेत्र विकास, इन्दिरा गाधो नहर परियोजना, ने १७

फरवरी १६८८ के अपने पत्र से सूचित किया।

2. क्षेत्रीय विकास आयुक्त ने अपने १३-७-८७ के पत्र से जाहिर किया है कि भूदान के आवंटिति सरकार की 'सेप्लर्स' की परिभाषा में नहीं आते — केवल उपनिवेश से भूमि प्राप्त करने वाले ही आते हैं इसलिये विश्व खाद्य योजना के अधीन फ्री राशन की सहायता इन्हें नहीं मिल सकती।

इस तरह के प्रकट भेद-भाव से भूदान आवंटिति काफी सत्रस्त हैं। वे ऐसा सोचने को बाध्य है कि सरकार की यह दमन नीति भूदान को यहां से साम-दाम दंड-भेद निकाल फेंकने के लिये ही कहीं सुनियोजित चलाई जा रही हो। आसामियों को यहां तक आशंका होने लगी है कि कहीं नहरों से पानी देने में भी ऐसा ही व्यवहार उनके साथ न होने लगे।

ऐसे प्रकट या प्रच्छन्न सबही कदमों का भूदान के आसामियों को सगठित होकर प्रतिकार करना होगा। हमको ऐसे प्रतिकार कार्यक्रमों का अलमबरदार बनना होगा।

भूदान जैसे कार्य से जुडे हम लोगों पर यह भारी दायित्व है कि यह भूमि ऐसे ही भूमिहीन गरीब लोगों को दी जाये कि जो वाकई इसके पात्र हों। हम इसके दायित्व के *प्रति सदा सजग रहे हे। अपनी कोशिश में* कुछ भी उठा नहीं रखा है। लेशमात्र भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, लोग-लिहाज प्रवेश न पा सके, यह हमारी कोशिश रही है। फिर भी हजारों कुपात्रों में से कुछ सत्पात्रों को छांटना बडो टेढो खीर साबित हुई है। यह भी एक संगीन कारण है कि इस आवंटन की गति सरकारी आवंटन की सी नहीं हो सकी और न ही हो भी सकती है। इसकी दुरूहता को देखते हुये हम भी यह सोचने को विवश हुये हैं, कि यदि यह दान ही न्यायालय द्वारा अवैधानिक मान लिया जाता है, तो बोर्ड को इससे अलग हो जाने में रच मात्र क्षोभ न होगा। आखिर जिस दायित्व को धर्मपूर्वक निबाहने में हमें इतनी भारी कठिनाई हो रही हो, उसको यह कह कर राहत की सांस लेगें कि "सीधे ही चूटा फूट गया – खाली हो गया हाथ"। भूदान को यह भूमि सत्पात्र को ही मिले इसको हम बखूबी समझते हैं। और इस दशा में कि न्यायालय इस पर बोर्ड के टाईटल को सम्पुष्ट करता है तो सत्पात्रों कोबांटने की प्रक्रिया और भी अधिक कडी की जायेगी और बोर्ड स्वयं चलाकर ऐसे आवंटन निरस्त करेगा कि जिससे किसी भी स्टेज पर भूदान योजना का उल्लघन हुआ पाया जायेगा।

आखिर हमको इस गाथा को अब इस प्रकार प्रकाश में लाने की जरूरत क्यों हुई? हम तो भूदानी हैं यह हमारी आन-बान से सुसंगत नहीं है। हमारा काम तो स्वय ही बोलना चाहिये। उसकी विशेष तौर से सफाई देने को बात पैदा ही क्यों हुई? हाल ही में राजस्थान विधान सभा के प्रांगण से राजस्थान भूदान संशोधन विधेयक पर बोलते हुये तत्कालीन राजस्व मन्त्री बहन ने छत्तरगढ भूदान के प्रसंग से भूदानबोर्ड के काम पर आक्षेप किये थे। समाचार पत्रों में भी वह छपा। लोगों ने उसको पढा और अपना आश्चर्य, दुख और क्षोभ हम पर तीव्रता पूर्वक प्रकट किया। भूदान, भूदान बोर्ड और इसके समर्पित सेवकों की लोक में हो रही अकारण अपकीर्ति को हम पचा न सके। अतः इस दुखद प्रकरण को खोल कर प्रस्तुत करने को विवश हुये हैं।

गोचर चारागाह विकास और पर्यावरण चेतना : भीनासर–आन्दोलन

☐ श्री शुभू पटवा

भीनासर आन्दोलन अभी अपने शैशव काल मे है। अगस्त १९८४ से शुरू हुए इस आन्दोलन को रक्षा-बन्धन (२७ अगस्त ८८) पर चार साल हो रहे हैं। इन चार सालो मे इस आन्दोलन ने देश भर का ध्यान अपनी ओर खीचा है और इसे व्यापक समर्थन और सम्बल मिला है। यह आन्दोलन "गोचर चरागाह विकास और पर्यावरण चेतना भीनासर आन्दोलन' के नाम से जाना जाता है। लघु लोक प्रिय नाम "भीनासर आन्दोलन" है। भीनासर आन्दोलन दरअसल 'गाव के पुनर्जागरण' का आन्दोलन है। भारत की आत्मा गावो मे बसती है। हम जानते हैं कि गाव के जागरण से ही जागृत और चेतन भारत कहला सकता है।

गाधीजी ने इस देश की स्वाधीनता की लडाई मे जन-जन की भागीदारी के लिए चरखे को प्रतीक बनाया और कहा कि चरखे पर नियमित सूत कातने वाला हर व्यक्ति आजादी की लडाई का अनिकेत जाबाज योद्धा है। वह चाहे कही हो। इस तरह बापू ने आजादी की लडाई मे पूरे देश को एकसूत्र मे आबद्ध कर लिया।

'भीनासर आन्दोलन" की दृष्टि भी यही रही। पश्चिमी राजस्थान के 'थार' मरुस्थल के गावो का जीवनाधार कृषि नही होकर पशुपालन रहा है। यहा के सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकार और अर्थ-चक्र पूरी तरह गोचर गाय और पशुधन पर अवलम्बित हैं। यहा का पर्यावरण और परिवेशिकी भी ऐसी ही है। प्रकृति ने इस इलाके मे सूखा, विपुल पशुधन और ऐसी वनस्पतिया एक साथ दे दी, जो एक-दूसरे को सन्तुलित बनाये रखने मे सक्षम है। लेकिन यह सन्तुलन तभी बना रह सकता है, जब हम इसके साथ बेजा छेड़छाड़ नही करें।

आदोलन का महत्त्व

भीनासर आन्दोलन का महत्व यही है कि यहा से एक पहल-एक शुरूआत हुई है। भीनासर की तरह यदि पश्चिमी राजस्थान के गाव अपने गोचर और ओरण की रक्षा और उन्हे हराभरा करने के अभिक्रम मे लग जायें तो 'थार' की सस्कृति अक्षुण्ण रह सकती है और जो अभिशाप 'थार' का है, वह वरदान बन सकता है।

पश्चिमी राजस्थान और "थार की अर्थ-

व्यवस्था को उसके कुदरती रूप मे ही मजबूत किया जा सकता है । भीनासर आन्दोलन की दृष्टि यही है कि हमारा ग्रामीण समाज आत्म-निर्भर बने । आज सरकार पर निर्भरता ने इस ग्रामीण समाज को जर्जर किया है । हमारा ग्रामीण समाज सरकार पर निर्भर रह कर टूटने के बजाय अपने अभिक्रम से अपनी पुरानी सस्थाओ—सस्कारो को जीवित कर नई शक्ति के साथ सगठित हो, ऐसा सभव प्रतीत होता है । "भीनासर आन्दोलन" ने यह साबित कर दिखाया है कि जन अभिक्रम और भागीदारी से जो कुछ दुरूह है, वह सहज सरल हो सकता है ।

भीनासर आन्दोलन के विगत चार सालो की थोडी पडताल करें । इससे पहले हम थोडा गाव के चरित्र को भी देखें ।

गांव का परिवेश

भीनासर—बीकानेर जिले का एक छोटा सा गाव है । बीकानेर शहर से जुडा होने के कारण शासकीय हिसाब से बीकानेर नगर परिषद का कुछ वर्षों से अग मान लिया गया है । पर यह तो प्रशासनिक प्रबन्धन है । गाव की 'आत्मा' मे तो गाव ही बसा है । सन् १९८१ की जनगणना के आधार पर भीनासर की आबादी १०,४५७ है । बीकानेर रेलवे स्टेशन से पाच किलोमीटर की दूरी पर है और बीकानेर-जोधपुर प्रादेशिक राज्य मार्ग (स्टेट हाई वे) पर बसा है-यह गाव । शहर की गोदी मे होते हुए भी गाव का सा परिवेश और सहजता झलकती देख सकते हैं ।

भौतिक दौड की उधेड-बुन ने कपट और छल के नस्तर लगाये हैं, तब भी गाव के लोग प्रेम-स्नेह और सौहार्द के साथ पारिवारिक हेल-मेल से आबद्ध हैं ।

इसी गाव की अपनी गोचर भूमि है । एक उदार मना नागरिक स्वर्गीय बन्शीलाल राठी ने १० फरवरी १९४२ को यह गोचर स्थाई रूप से आरक्षित कराया । तब इस काम के लिए राठी जी ने बीकानेर राज्य कोष मे एक मुश्त दस हजार रुपये जमा कराये । करीब ५२०० बीघा जमीन गोचर चरागाह के रूप मे आरक्षित की गई ।

इसी गोचर चरागाह पर अगस्त १९८४ मे अनाधिकृत-नाजायज कब्जा किये जाने और उस पर एक साथ १५००० सफेदा (यूकिलिप्टस) लगा देने से गाव उद्वेलित हो उठा । गोचर पर नाजायज कब्जे की घटना ने गाव के लोगो को इस तरह क्षुब्ध किया कि जैसा उनके **'अस्तित्व पर अतिक्रमण'** ही हुआ हो । सबल सगठित आवाज और अविराम सघर्ष ने शासन की तन्द्रा को तोडा और जिला प्रशासन को हरकत में आना पडा । जन दबाव के आगे प्रभाव-प्रलोभन और भय बेअसर रहे । प्रशासन ने सीधी कार्यवाही की और बडे नाजायज कब्जे हटे । इस घटना और आन्दोलन की तीव्रता ने कुछ और नाजायज कब्जे भी पिछले वर्ष (१९८७) हटवा दिये और गाव को आमुख करती दिशा मे सम्पूर्ण गोचर क्षत्र पर तारबन्दी करदी गई ।

चरागाह विकास का संकल्प

इस घटना ने गाव को चौंका दिया । गाव का भविष्य फिर अन्धी घाटियो मे न भटक जाये एक आन्दोलन खडा हो गया । आन्दोलन ने रचनात्मक दिशा ग्रहण कर ली । गोचर चरागाह विकास और पर्यावरण चेतना के लिए गाव जनो ने सहर्ष सकल्प लिया ।

रक्षा-बन्धन का पवित्र दिन आन्दोलन

इस पौधशाला की स्थापना २३ सितम्बर १९८५ तदनुसार भाद्रपद शुक्ला दशमी को की गई। यह दिन विश्व इतिहास मे बेमिसाल है। करीब दो सौ अट्ठावन वर्ष पहले जोधपुर से २३ किलोमीटर दूरस्थ खेजडली गांव मे खेजडी पेड की रक्षा के लिए ३६३ स्त्री-पुरुष, बच्चे शहीद हो गये। पौधशाला की स्थापना इसी दिन २१४१ खेजडी के बीज रोपकर की गई।

का वार्षिकोत्सव का दिवस बन गया। इसी तरह हर महीने की बारहवी तारीख नियमित जागरण दिवस बन गया। इस दिन ग्रामजन स्वत सायकाल के समय एकत्र होते है और एक जलती मशाल के साथ मार्च करते हुए मुरली मनोहर मदिर जाते हैं। वहा पूजा अर्चना, रक्षा-कवच स्तोत्र व सभा होती है। सभा मे माह भर की गतिविधियो पर चर्चा की जाती है।

भीनासर मे रक्षा-बन्धन का पर्व गोचर रक्षा की प्रतिज्ञा के रूप मे पर्यावरण की रक्षा का त्यौहार बन गया। भीनासर मे इस दिन केवल बहिन ही भाई की कलाई पर राखी का अटूट धागा बाध कर एक-दूसरे की रक्षा की कामना नही करते-खुले सम्मेलन मे हर भाई भी भाइयो को राखी बाधते है और गाव के गोचर की रक्षा की प्रतिज्ञा दुहराते हैं। एक तरह से यह गोचर की रक्षा नही गाव की-अपनी अस्मिता-अस्तित्व की रक्षा की प्रतिज्ञा है। अपने अभिक्रम को जागृत करने का सामूहिक वचन है। देश मे यह अकेला गांव है, जहां पर्यावरण और चरागाह विकास व रक्षा से बधन (रक्षा-बन्धन, के त्यौहार से जुड गया है।

रक्षा-बन्धन पर्व आयोजन

तीन वर्षों से बराबर रक्षा बन्धन के दिन वार्षिक उत्सव का आयोजन होता है। इस वर्ष भी २७ अगस्त को रक्षा-बन्धन के दिन चौथा वार्षिकोत्सव है। गाव जन सायकाल एक साथ पाच मिनट के लिए अपने-अपने घरो मे थालिया बजाते हैं। इससे समूचा गाव और चारो दिशाए झकृत हो उठती हैं। यह एक रोमाचक दृश्य होता है। थाली की झकार जागृति का प्रतीक है और युद्ध के लिए प्रयाण से पूर्व रणभेरी की मिशाल भी। घरो मे दो दीपक भी जलाते हैं। तम से प्रकाश की ओर उन्मुख होने का प्रतीक है यह। और इसके साथ ही लोग सभा-स्थल पर आना शुरू हो जाते हैं। श्री मुरली मनोहर गो शाला के प्रागण मे एकत्र लोग एक जलती मशाल के साथ गाव के ऐतिहासिक और प्राचीन मदिर मुरली मनोहर मदिर जाते हैं। अगले दिन प्रात काल चरागाह क्षत्र मे श्रमदान किया जाता है और पूरी ५२०० बीघा गोचर की परिक्रमा का अभियान शुरू होता है। गाव के सभी एकत्र लोग और बाहर से आये विशिष्ट जन प्रतीक रूप परिक्रमा मे भागीदार बनते हैं।

पिछले तीन साल से पवित्र गगा गगोत्री से गाव के दो नागरिक जन पैदल कावड लाते हैं। गगोत्री के पवित्र जल, गौरस, और राम सागर के जल के मिश्रण से पूरी गौचर पर "कार' लगाते हैं। जानते है लक्ष्मण ने सीता

चीन में वृक्षारोपण कार्यक्रम

चीन का वनाच्छादित क्षेत्र पहले से बढकर १२ ६ प्रतिशत हो गया है और १९८६ से १९९० के बीच प्रतिवर्ष ५० लाख हैक्टर क्षेत्र में वृक्ष लगाये जायेंगे। चीन का अ तिम लक्ष्य देश को ३०% क्षेत्र को वनाच्छाहित कर देने के है। इस समय देश के जिस १२ २ करोड हैक्टर क्षेत्र में वन हैं। उसमे से ४ करोड हैक्टर क्षेत्र मे वन मानव निर्मित हैं तथा ये वृक्ष पिछले तीन वर्षो मे लगाये गए हैं।

देश की जमीन पर फिर से जगल उगाने की जरूरत को चेयरमेन माम्रो ने १९५५ मे अपने इस आह्वान, 'देश को वृक्षो से ढक दो से रेखाकित कर दिया था।

की रक्षा के लिए एक रेखा खीच दी थी। गाव जन गोचर की रक्षा के लिए गगाजल, गौरस और रामसागर के जल के पवित्र मिश्रण को ताबे के कलश मे भर जनधार मे एक रेखा खीच देते हैं।

इस तरह 'भीनासर आन्दोलन' अपनी परम्पराओ से जुडाव रखता हुआ तथाकथित आधुनिक विकास की अन्धी दौड मे ज्योतिर्मय है। भीनासर आन्दोलन ने जहा एक ओर जन चेतना का निनाद फूका है, वही चरागाह विकास और थार के पर्यावरण की रक्षा के प्रयोग भी शुरू किये हैं।

कुल ५२०० बीघा चरागाह भूमि मे से करीब २६३ बीघा भूमि इन प्रयोगो के लिए सरकार ने श्री मुरली मनोहर गोशाला को सुपुर्द की। यह गोशाला गाव की प्राचीनतम प्रतिनिधि सस्था है। 'भीनासर आन्दोलन' ने गाव, गोचर, गोशाला, गोधन सब को एक सेतु प्रदान किया है। इन सबके पीछे न अन्धी आस्था है और न कूपमडूकता। एक जीवन्त सास्कृतिक सरोकार के साथ आपसी जुडाव का आधार है यह सब। एक सक्रिय मन स्थिति और सुविचारित दृष्टि है। और इसीलिए चार सालो मे उल्लेखनीय कार्य हुए हैं।

इसी चरागाह प्रयोग क्षेत्र म जन सहयोग से एक कुआ निर्मित है। लगभग पौने तीन सो फुट गहरा पानी है। इसे "राम सागर" कहते हैं। अथाह जल है राम सागर मे। बिजली के पम्प से भूतल का पानी ऊपर ले आते हैं। जल ही जीवन है यह इस 'प्रयोग क्षत्र" पर प्रत्यक्ष देख सकते हैं। तीन साल से यहा अस्थाई किस्मो का हरा घास उत्पादन, मरुधरा की उत्तम स्थाई वनस्पति सेवण घास के उत्पादन और खेजडी, बोरडी के पौध तैयार करने का कार्य जन भागीदारी से किया जा रहा है। सेवण घास के 'बुठ" रोपकर आज उससे नियमित घास का उत्पादन लिया जा रहा है।

इसी प्रयोग क्षेत्र मे एक जन पौधशाला है। इस "पीपुल्स नर्सरी" मे मुख्यतः खेजडी के पौधे तैयार किये जाते हैं। इस पौधशाला की स्थापना २३ सितम्बर १९८५ भाद्रपद शुक्ला दशमी को की गई। यह दिन विश्व इतिहास मे बेमिसाल है। करीब दो सौ अट्ठावन वर्ष पहले जोधपुर से २३ किलोमीटर दूरस्थ खेजडली गाव मे खेजडी पेड की रक्षा के लिए ३६३ स्त्री-पुरुष, बच्चे शहीद हो गए। पौधशाला की स्थापना इसी दिन २१४१ खेजडी के बीज रोपकर की गई। राजस्थान मे यह पहली "जन पौधशाला" है, जहा मुख्यत खेजडी के पौधे तैयार किए जाते हैं।

पहले वर्ष प्रतिकूल परिस्थितियों में करीब तीस हजार खेजड़ी के पौधे तैयार किए जा सके। दूसरे वर्ष (१९८७) एक लाख से अधिक पौधे तैयार हुए। ये सभी पौधे वन विभाग को वितरण के लिए सुपुर्द कर दिए गए। इस वर्ष (१९८८) भी करीब एक लाख पौधे तैयार किए गए हैं।

राजस्थान नहर (अब इन्दिरा गांधी नहर) के पानी के साथ-साथ पश्चिमी राजस्थान में सफेदा (यूकेलिप्टस) का फैलाव बढ़ता चला गया। पिछले कुछ सालों में मरुस्थल में करोड़ों यूकेलिप्टस खड़े हो गए। पिछले एक वर्ष में ही राज्य की सरकारी पौधशालाओं में ढाई करोड़ यूकेलिप्टस तैयार किए गए। अकेले बीकानेर जिले में करीब दस लाख यूकेलिप्टस खड़े हैं।

मरुधरा का कल्पतरू

हम जानते हैं यूकेलिप्टस के क्या हानि-लाभ हैं। जो हो यह पेड़ थार के पर्यावरण के अनुकूल नहीं है। सफेदा की हानियों के प्रति लोक चेतना जागृत करने में "भीनासर आंदोलन" राजस्थान में अग्रणी है। सफेदा की हानियों के बारे में राजस्थान में भीनासर ने पहली आवाज उठाई। यह बताया कि सफेदा यहां के जन-जीवन और प्राणी जगत किसी के भी काम का नहीं। ठीक इसके विपरीत खेजड़ी को हम मरुधरा का कल्पतरू कहते हैं। गंभीरतम दुर्भिक्ष में भी यह पेड़ लद-फद खड़ा रह सकता है। इसकी पत्तियां पशुओं का पौष्टिक आहार है। खेजड़ी की छंगाई (लोंपिंग) से पशुओं के लिए पत्ती और टहनियों के रूप में जलावन के लिए घरेलू ईंधन मिल जाता है। इसकी फली-'सांगरी' सब्जी बनाने के काम आती है और इसे उबाल कर सुखा लेने के बाद लम्बे समय तक इस्तेमाल योग्य रखा जा सकता है।

> भीनासर आन्दोलन ने जहां एक ओर जन चेतना का निनाद फूंका है, वहीं चरागाह विकास और थार के पर्यावरण की रक्षा के प्रयोग भी शुरू किये हैं।

'भीनासर आंदोलन" का उद्देश्य थार के पर्यावरण को सन्तुलित बनाए रखने के लिए जन चेतना जागृत करने का तो है ही। लेकिन मात्र कथनी से यह काम नहीं होने वाला। इसी लिए खेजड़ी के लिए "जन पौधशाला" की स्थापना की गई। आज इस पौधशाला की खेजड़ी के पौधे अनेक स्थानों पर "थार के पर्यावरण" का संदेश लेकर पहुंच चुके हैं। पश्चिमी राजस्थान से यूकेलिप्टस को विदा देने के लिए खेजड़ी को लोकप्रिय बनाना इस आंदोलन का प्रमुख ध्येय है।

मैं यहां यह कहना चाहूंगा कि "भीनासर आंदोलन" देश के पर्यावरण आंदोलनों में अपनी पहिचान इसलिए बना सका है कि यह मनुष्य जाति के साथ साथ न बोल सकने वाले पशुधन और न चल सकने वाले पेड़-पौधों की रक्षा और बेहतरी का आंदोलन है। इसीलिए इस आंदोलन को अपनी अस्मिता की रक्षा का आंदोलन कह सकते हैं।

उत्साहजनक प्रतिक्रिया

इस आंदोलन को निकट से देखने और प्रयोगों को समझने के लिए देश भर के प्रमुख लोग भीनासर आते रहे हैं। सभी की उत्साह जनक प्रतिक्रियायें हैं। लेकिन देश के

शीर्ष पर्यावरण कर्मियो मे से एक, मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित पदम श्री श्रीयुत् चन्डी प्रसाद भट्ट भीनासर आदोलन की तुलना हिमालय ,की रक्षा के लिए चल रहे चिपको आन्दोलन से इस तरह करते हैं—' मै मानता हू कि मरुस्थल मे जो कार्य, किया जा रहा है, वह हिमालय से भी अधिक कठिन और दुरुह परिस्थतियों मे हो रहा है। रेगिस्तान म तो वनस्पति के दर्शन ही दुर्लभ हैं। यहा ऐसा कार्य करना साहस और जावट का काम है। क्योकि यहा वनस्पति पेड-पौध, घास-चारा लगाना और सुरक्षित रख दना प्रकृति को चुनौती है "

देश के प्रख्यात पत्रकार श्री प्रभाष जोशी कहते हैं – पर्यावरण' के प्रति भीनासर आन्दालन मे एक विशेष चेतना है और जिम्मेदारी का यह अहसास भी कि अपना पर्यावरण अपने रखे ही ठीक रह सकता है। आन्दोलन के बिना यह सब हो नही सकता। भीनासर का आन्दोलन और वहा की नसरी पश्चिमी राजस्थान के गोचरो-ओरणो को सुरक्षित करने और फिर उन्हे हरे–भरे करने का आन्दोलन बनना चाहिए। भीनासर अगर दूसरी जगह नही फैलेगा तो राजनैतिक आर्थिक विकास के सरकारी माडल का रेगिस्तान उसे लील लेगा। भीनासर को साबित करना है कि पश्चिमी राजस्थान को यहा के लोग अपनी घासों अपने पेड़ों, अपने गोचरों ओरणों और अपने पशुधन से ही बचा सकते हैं। थार को रोकने का तरीका है भीनासर।

भीनासर आन्दोलन का उद्घोष है कि गाव गाव मे एक तुलसी या पौधा और दा खेजड़ी के पौध हर घर मे लगे। पानी की किफायत के सस्कार फिर से पुनर्जीवित किये जायें। जल सचय के परम्परागत स्रोत, वर्षा के जल सचयन का हमारे पुरखो का स्वभाव फिर स जागृत हो। 'एप्राप्रियेट टेक्नोलोजी' का भावाथ नही वास्तविक अथ गाव के जन जन तक पहुचाने की भीनासर आन्दोलन की आकाक्षा है। सही रूप मे भीनासर आन्दालन गाव स्वावलम्बन, स्वायत्तता और सास्कृतिक पुनरुत्थान का वाहक है। गाव के पुनर्जागरण की परिकल्पना और उसके स्वरूप पर भीनासर आन्दोलन चिन्तन–मथन म सलग्न है।

इसी म गाव क गाचर ओरण की रक्षा और विकास की बात निहित है। इस लेखक ने विज्ञान और पर्यावरण केन्द्र, नई दिल्ली के सहयाग से गोचर-ओरण की वतमान दशा पर जो अध्ययन किया है, उसम यह बात उभर कर आती है, कि थार की सस्कृति गोचर ओरण की रही है। पिछले वर्षो मे विकास की नई लहर और बढती आबादी ने इनका विनाश और अनदेखी की है। लेकिन निरन्तर पड रहे अकालो से यह महसूस होने लगा है कि बडी सिंचाई और कृषि योजनाओ की जगह यदि गाव को स्वायत्त इकाई मानकर जन भागीदारी से कुछ काम हाथ म लिए जाय तो बेहतर परिणाम सामने आ सकते हैं।

बीकानेर जिले के अधिकाश गावो मे गाचर ओरण रहे हैं। इस तरह की शुरुआत इसी जिले से की जा सकती है। 'भीनासर आन्दोलन" और उसके प्रयोग इस जिले के गावो के लिए "उत्प्रेरक' हा सकते हैं।

यद्यपि यह कठिन है, पर गाव जनों की

दृढ इच्छा शक्ति के सामने कठिन नही। भीनासर आन्दोलन इस रूप मे भी "मॉडल" की तरह सामने रखा जा सकता है और कुछ गावो मे प्रयोग किये जा सकते हैं।

पशु धन – जीवनाधार

बीकानेर जिला पशुपालन बहुल जिला है। इस समय जिले मे ४,५५,७३६ गायें और १०,७६,६७३ भेडे हैं। दूध और ऊन उत्पादन मे यह जिला प्रदेश मे शीर्ष है। ऊन उत्पादन मे तो भारत मे भी सबसे आगे है। कहने का मतलब यह कि गावो का आर्थिक आधार पशुधन है और पशुधन का जीवनाधार गोचर चरागाह। अत: यह जरूरी है कि गाव के गोचर की सुध लेने की दिशा मे सोचा जाये। यदि समय रहते नही सोचा गया तो परिस्थितियो की विकटता का सामना करना सरल नही होगा।

भीनासर आंदोलन के इन चार सालों के रचनात्मक संघर्ष और अपनी परम्परा मे फिर से लौट आने का एक सार्थक परिणाम यह सामने आया है कि राज्य के वन विभाग ने सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार किया है कि विदेशी प्रजापति के पेड पौधे लगाने का उनका पिछला अनुभव कष्टदायी रहा है। बीकानेर मे ४ से ६ जुलाई तक वनकर्मियों की एक कार्यशाला में अधिकारियों ने स्वीकारते हुए नीतिगत रूप से इस बात पर सहमति दर्शायी कि अब इस क्षेत्र में स्थानीय प्रजातियों को ही प्रमुखता दी जाएगी। खेजडी, बेर, रोहिडा, फोग, सेवरा घामरा ही वनाकरण और चरागाह विकास के आधार होगे। इस कार्यशाला मे भीनासर आदोलन' की अनेक मुखो से चर्चा हुई और वन कर्मियो ने 'प्रयोग क्षेत्र" को आकर देखा। कार्यशाला मे भीनासर आँदोलन और जन भागीदारी पर विस्तार से जानकारी दी गई।

सफदा और विदेशी प्रजातियों के प्रति वन विभाग का जो गाढा मोह था वह अब टूटा है जो भीनासर आदोलन की बडी उपलब्धि है। विदेशी प्रभाव से सराबोर इन लोगों को अपनी परम्परा में ले आना बड़ा कठिन था। पर हमारी अविराम दस्तक तथा परिस्थितियो के तकाजे ने उन्हे अपनी परम्परा मे झांकने के लिए प्रेरित किया है॰ विवश किया है। पर अभी पूरी तरह से कलमर्श साफ नहीं हुआ है अत अविराम दस्तक का सिलसिला जारी है।

मैं पुन दुहराना चाहता हूँ प्रारभ का कथन। "भीनासर आन्दोलन अभी शैशव मे है। उसे तेज चलने के लिए मजबूत पाव चाहिए, अपनी सही मजिल देखने-परखने के लिए दिव्य दृष्टि चाहिए। यह सब हासिल करने का "भीनासर आन्दोलन" का दृढतर सकल्प है। भीनासर आन्दोलन अभी सीखने के चरण पर है। अनवरत सीखने की प्रक्रिया उसे मजिल की पहचान मे सहायक होगी और आन्दोलन चरैवेति-चरैवेति अग्रगामी होता रहेगा – यही भीनासर आन्दोलन का अभीष्ट है। ●

भीनासर, बीकानेर–334403

खादी मन्दिर, बीकानेर

पब्लिक पार्क के पास, बीकानेर । फोन ४५१४, ६७८६, ४७२६

खादी मन्दिर, बीकानेर की स्थापना स्वर्गीय बाबू रघुवरदयालजी गोइल द्वारा उस समय की ऐतिहासिक पृष्ठ,-भूमि के मध्य महात्मा गाधो के ट्रस्टीशिप सिद्धान्तो के अनुरूप देश मे सामाजिक व आर्थिक पिछडे पन को दूर करने के उद्देश्य मे दिनाक २४ मई, १६४३ को अपने समय के राजनीतिक विचारो वाले प्रमुख बुद्धिजीवी नागरिको को लेकर की गई ।

शुरू मे सस्था को अखिल भारतीय चरखा सघ द्वारा सन् १६४४ मे मान्यता प्राप्त हुई जो बाद मे स्वतन्त्रता के पश्चात् खादी तथा ग्रामोद्योग कमीशन अधिनियम १६५६ के अन्तर्गत प्रमाण-पत्र सख्या १५७ द्वारा पजिकृत हुई ।

वर्तमान में सस्था का कार्यक्षेत्र बीकानेर, लूणकरणसर तहसील है । सस्था द्वारा सचालित वतमान मे उत्पादन केन्द्र-बीकानेर, जामसर, खारा, बम्बलू, नौरगदेसर, बेलासर, गाढवाला, दसलसर, शाभासर है तथा इसके अलावा सस्था द्वारा चल इकाई से दूरदराज के गावो के कत्तिन व बुनकरो को घर बैठे रोजगार प्रदान कर रही है ।

स्वर्गीय बाबूजी द्वारा बीजारोपित किया हुआ विशाल वृक्ष अनेक शाखाओ मे फैलकर आज सैकडो दरिद्रनारायणो के आर्थिक व सामाजिक उत्थान व देश के सर्वागीण विकास मे अग्रणी योगदान प्रदान कर रहा है ।

वतमान मे सस्था लगभग ६००० कामगारो को रोजगार देकर पारिश्रमिक प्रदान कर रही है ।

सस्था के प्रमुख उत्पादन-ऊनी खादी, हौजरी, कम्बल हैं । इसके अलावा ग्रामोद्योगी वस्तुओ के उत्पादन पर भी अधिक ध्यान दे रही है । ग्रामोद्योगी इकाईयो मे प्रमुख सुथारी उद्योग लुहारी उद्योग, साबुन उद्योग, चूना उद्योग, तेल घाणी उद्योग, मसाला उद्योग व कुम्हारी उद्योग हैं । इनका उत्पादन स्थान औद्योगिक क्षेत्र बीकानेर है । इसके अलावा औद्योगिक क्षेत्र मे ही सस्था अपने कार्डिग प्लान्ट से ऊनी पिजाई का कार्य तथा अपने फिनिशिग प्लान्ट द्वारा आकर्षक रगो मे रगाई व भलाई का कार्य कर क्षेत्र के व देश के उपभोक्ताओ की सेवा कर रही है । सस्था द्वारा उत्पादित माल के बिक्री भण्डार बीकानेर, लूणकरणसर, सूरतगढ तथा औद्योगिक क्षत्र मे स्थित है ।

अन्य प्रवृत्तिया

१ न्यू माडल चर्खा (सूती व ऊनी) का प्रशिक्षण कार्य ।

२ केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जान वाली

ट्राईसम योजना के तहत ग्रामीण युवको को स्वरोजगार के प्रशिक्षण का कार्य।

३ खादी कार्यकर्ताओ के बच्चो को बहु-उद्देश्य शैक्षणिक सुविधा दिलाने हेतु मानव भारती बीकानेर के द्वारा आर्थिक व रचनात्मक प्रवृत्तियो मे सहयोग।

वर्ष १९७८-८८ की जानकारी (लाखो मे)-

खादी उत्पादन	७७ १४
फुटकर खादी बिक्री	३३ १६
थोक खादी बिक्री (प्रात)	४२ ६८
" " " (पर प्रात)	६८ ३७
ग्रामोद्योग उत्पादन	८६.२३
" बिक्री	८४ ६२
रोजगार कत्तिन	३५ ००
कार्यकर्ता	२.४५
बुनकर	१ ५०
अन्य	१ ५
योग	३९१०

*

वर्तमान मे सस्था के पदाधिकारियो एवम् सचालक मण्डल निम्न अनुसार है—

अध्यक्ष श्री मालचन्द हिसारिया

उपाध्यक्ष उदाराम हठिला

मन्त्री इन्दुभूषण गोईल

सदस्य श्री सोहनलाल मोदी
श्री विभूतिभूषण स्वामी
श्री मोहनलाल सारस्वत
श्री चिरजीलाल स्वर्णकार
श्री सुखदेव सुथार
श्री भवरलाल गडेर
श्री ओंकारलाल स्वामी
श्री सफीमोहम्मद छीपा

ऊनी खादी ग्रामोद्योग संस्थान

रानी बाजार, बीकानेर (राज) फोन . ३५७४

ऊनी खादी ग्रामोद्योग सस्थान की स्थापना वर्ष १९६०-६१ मे हुई और अब वह २८वें वप मे प्रवेश करके आशातीत प्रगति पथ पर है। खादी व ग्रामोद्योग आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष श्री उ न ढेबर की सद्-प्रेरणा, श्री मिश्रीलाल जैन व यति हिम्मत-विजय जी के सद्-प्रयास एव बाद मे श्री राधाकृष्णजी बजाज, श्री रामेश्वरजी अग्रवाल श्री जवाहिरलालजी जैन, श्री भगवानदासजी माहेश्वरी व श्री सोहनलालजी मोदी के मार्ग दर्शन व सहयोग से सस्था का विकास हुआ। सस्थान ने अकाल से सर्वाधिक पीडित व पिछडे हुए क्षेत्र कोलायत तहसील को अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

कोलायत तहसील। विकास खण्ड का क्षेत्रफल ७९४८ वर्ग किलोमीटर एव वर्ष १९८०-८१ के अनुसार जनसख्या ९४३२७ है, जिसमे पुरुष ५०२५३ व स्त्रिया ४४०७४ हैं। इस तहसील मे कोई कस्बा, नगर व नगर-

पालिका नही है और कुल २०३ गावो मे से ५५ गाव गैर आबाद हैं तथा २००० से अधिक आबादी के केवल ६ गाव हैं तथा कुल २७ पचायतें हैं। लोग मुख्यतया पशुपालन पर निर्भर हैं और खादी सहायक धन्धा है। पहले केवल ४६ हैक्टर जमीन बाध के पानी से सिंचित होती थी। पर अब पाकिस्तान की सीमा से लगते हुए क्षेत्र के कुछ गावो को इन्दिरा गाधी नहर का लाभ मिल रहा है। अधिकतर इलाका वर्षा न होने से गत वर्ष अकाल से पीडित रहा। अगर इस क्षेत्र मे ककर, बजरी मुलतानी मिट्टी व फायर की खानें नहीं होती तो आबादी और भी कम होती। साख्य दर्शन के प्रवर्तक कपिल मुनि की साधना-स्थली श्री कोयालत के इद गिद कभी अनेक स्थान ऋषियो के तपस्या स्थल रहे हैं, पर आज यह इलाका अभाव ग्रस्त है। इसी क्षेत्र के मक्कासर ग्राम मे तपोधन श्री श्री कृष्णदास जी जाजू का जन्म व लालन-पालन हुआ था, जिन्होंने आगे जाकर सारे देश मे खादी कार्य को फैलाया था।

इस क्षेत्र मे कताई व बुनाई कार्य को बढाने की बहुत गुजाईश है, पर सडको व यातायात सुविधा की कमी के कारण दूर गावो मे पहुचकर कार्य करना व उसके लिए मकान व सेवाभावी कार्यकर्त्ता जुटाना बहुत कठिन है। संस्था ने इस क्षेत्र मे बीकानेर, नाल व श्री कोलायत केन्द्र प्रारम्भ करके कार्य को फैलाया है। पिछले चार वर्षों मे सालासर, खारी चारनाण, हदा, सियाणा व लिन्दासर में उप केन्द्र बनाए गए, ताकि लोगो को दूर न जाना पडे। इनसे आसपास के गावो के लोग कताई के लिए ऊन व बुनाई के लिए कता सूत ले जाते हैं और तैयार माल वापिस देकर खादी कमीशन की निर्धारित दर से हाथो हाथ भुगतान पाते हैं। सस्ती दर पर उन्हे चर्खे व कर्घे आदि उपलब्ध कराये जाते हैं व प्रतिवर्ष कताई पर बोनस दिया जाता है।

सालासर मे बुनाई शाला भवन बनाकर स्थान की समस्या हल कर दी गई है व अन्य स्थानो के लिए ऐसा प्रयास है। अभी लगभग १५० बुनकर व ५००० कतिन सस्था से जुड हुए हैं। चालू वर्ष मे गडियाला व बाठनोक मे नए उप-केन्द्र खुलेगें। गरीबी रेखा से नीचे के लोगो के लिए ट्रायसम योजनातर्गत श्री कोलायत मे प्रशिक्षण केन्द्र शुरू करने व ग्रामोद्योग क्षेत्र मे चूना भट्टा लगाने व साथ ही होजियरी व रगाई धुलाई कार्य शुरू करने की योजना है। नाल में सस्था का कार्डिगप्लाट चालू होने से ऊन का लेफर तैयार करने मे वह स्वावलम्बी हो गई है। बीकानेर मे नया वस्त्रागार बन गया है और अधिक उत्पादन को खपाने के लिए बिक्री वृद्धि हेतु कदम उठाए गए हैं। अभी सस्थान भवन नाल व श्री कोलायत में बिक्री केन्द्र चल रहे हैं। कोलायत मेले में व रिबेट अवधि मे घडसाना व बीकानेर में प्रदर्शनी लगाई जाती है। अनूपगढ व रायसिहनगर में खादी भण्डार प्रारम्भ किए गए हैं, पदमपुर व पोलीवगा मे भडार खोले गए हैं।

इस प्रकार पिछले छः वर्षों से सस्थान का उत्पादन ढाई गुना व बिक्री में चार गुना से अधिक व रोजगार व्यय में लगभग तिगुनी वृद्धि हुई है। बिक्री में बाहर से मंगाई सूती खादी की बिक्री भी शामिल है। इसमे सस्था में खादी कमीशन की पूंजी मे लगभग पौने दो गुनी व सस्था पूजी मे डेढी से अधिक व

क्षेत्रीय समग्र लोक विकास संघ

सर्वोदय सदन, गोगागेट, बीकानेर

"ग्रामदान से ग्राम स्वराज्य" और सम्पूर्ण क्रांति के स्वप्न को लेकर क्षेत्रीय समग्र लोक विकास संघ का दिनाक १४.११.७१ को गठन हुआ। संस्था मे क्षेत्रीय ग्राम विकास की दृष्टि से स्थानीय कच्चे माल पर आधारित ग्रामोद्योगो का प्रयोग प्रमुख कार्यक्रम है। खादी ग्रामोद्योग कार्य के साथ ही संघ ने सर्वोदय की अन्य प्रवृत्तियो—शराबबन्दी, गो-सेवा, ग्राम स्वराज्य तथा लोक शिक्षण आदि मे बराबर सहयोग किया है। इस संस्था का रजिस्ट्रेशन दिनाक २०.१.७३ को हुआ, जिसका नम्बर २३४ है। संस्था के संस्थापक अध्यक्ष श्री सोहनलाल मोदी तथा मन्त्री श्री रामदयाल खण्डेलवाल हैं।

आरम्भ मे खादी काम के लिए बीकानेर शहर मान्य था। लेकिन अब जैसलसर ग्राम पचायत का क्षेत्र भी मिला है। संस्था का अपना एकमात्र खादी भण्डार छतरगढ मे है। उद्योग विभाग द्वारा औद्योगिक क्षेत्र बीकानेर मे संस्था की एक शेड का आवटन हुआ, जो वर्तमान मे आवश्यकतानुसार परिवर्तन के साथ इसकी अपनी निजी मालकियत है।

प्रारम्भ में संस्था द्वारा होजरी निर्माण और सरजाम कार्यालय प्रारम्भ हुआ। जो कई उतार-चढाव के साथ चलाये गये। इसी बीच संघ को दिनाक १५.११.७८ को खादी कमीशन से खादी कार्य करने हेतु प्रमाण-पत्र प्राप्त हुआ, जो मार्च, १९९० तक के लिए नवीनीकरण है।

इस नवोदित संस्था की प्रगति में अवरोध तब उत्पन्न हुआ, जब आपातकाल होने पर अध्यक्ष तथा मन्त्री दोनो ही जेल चले गये। जेल से बाहर आने पर कार्य का पुनर्गठन किया गया तथा संस्था विकास की ओर अग्रसर हुई, लेकिन इसी बीच वर्ष १९८६ में संघ के प्रमुख कार्यकर्ता जब अकाल राहत कार्यो मे मुख्यालय से राजस्थान गो-सेवा संघ के चारा उत्पादन कार्य हेतु जैसलमेर मे व्यस्त थे कि अचानक संस्था के सरजाम कार्यालय में अग्नि दुर्घटना हो गई, फलतः संस्था को दो लाख रुपये की हानि हुई। सकट की इस घडी मे संघ को संस्था संघ तथा प्रदेश की अन्य संस्थाओ से सहयोग मिला। विशेष रिबेट की अवधि मे खादी बिक्री की अस्थायी व्यवस्था कर फुटकर बिक्री बढाने का प्रयास रहा है। जिसमे ऊँट गाडी द्वारा देहात बिक्री और प्रदर्शनी स्टाल द्वारा स्थानीय बिक्री का कार्यक्रम प्रमुख है।

संघ के कताई केन्द्र—बीकानेर, छतरगढ़, जस्सुसर, जयमलसर, काछनी, मेहरासर तथा वदरासर मे सचालित हैं। संस्था का कार्य १२०० कतवारी तथा २५ बुनकरो मे समाया हुआ है।

वर्ष १९८७–८८ मे संस्था का उत्पादन

१५.२२ लाख रुपये तथा थोक विक्री १८.२५ लाख रुपये और फुटकर खादी बिक्री ५.१४ लाख रुपये की रही। कतवारी-बुनकरों में क्रमश: २.२५ लाख रुपये तथा १.३५ लाख रुपये का पारिश्रमिक वितरण किया गया। अन्य कामगारो को लगभग १ लाख रुपये का रोजगार उपलब्ध कराया गया है। संस्था द्वारा ०.४७ लाख रुपये का सरंजाम उत्पादन तथा विक्री ०.३४ लाख रुपये की हुई। संघ के अन्तर्गत १२ कार्यकर्ता कार्यशील हैं।

वर्तमान मे संघ के १३ सदस्य हैं तथा अभी हाल मे एक विधान परिवर्तन के द्वारा संघ के सदस्यो के अलावा अन्य सदस्यो की भागीदारी भी मान्य की गई है।

वर्तमान संचालक मण्डल

अध्यक्ष : श्री सोहनलाल मोदी

मन्त्री : श्री रामदयाल खण्डेलवाल

सदस्य : श्री चौरूलाल सुथार
श्री बाबूलाल मोदी
श्री शम्भूनाथ खत्री
श्री मूलचन्द पारीक
श्री शिवदयाल गुप्ता
श्री अर्जुनदास स्वामी
श्री गोविन्द शर्मा
श्री महावीर प्रसाद शर्मा
श्री भवरलाल गहलोत
श्री गगाराम कडेला
श्री वी० के० जैन

बीकानेर जिला सर्वोदय मण्डल

राजस्थान मे जिला सर्वोदय मण्डल बीकानेर की सक्रिय भूमिका रही है। इसके तहत और सहयोग से जिले मे सर्व सेवा संघ की रीति नीति अनुसार शराबबन्दी, गोरक्षा, भूदान-ग्रामदान, लोक समिति, नगर स्वराज्य, ग्राम स्वराज्य आधारित जिलादान का प्रयोग, लोक उम्मीदवार की प्रक्रिया, लोक शिक्षण, सघन क्षेत्र प्रयोग, प्राकृतिक चिकित्सा, गाधी जयन्ति एव निर्वाण और बापू श्राद्ध दिवस पर गाधी मेलो एव अन्य कार्यक्रमो का आयोजन तथा राष्ट्रीय ज्वलत मुद्दो पर आयोजित विचार-गोष्ठियो के आयोजनो मे पहल और सहयोग, प्रान्तीय जिला स्तर के सर्वोदय सम्मेलनों तथा राष्ट्रीय प्रादेशिक विभिन्न यात्रा पदयात्राओ का आयोजन आदि कार्य सतत् होते रहे हैं। इन सब कार्यक्रमो मे स्थानीय खादी एव रचनात्मक सस्थाओ का सहयोग रहता रहा है। मुख्य रूप से प्रेरणा के स्रोत श्री सोहनलाल जी मोदी रहे हैं।

तारीख २५.८.८८ से २७.८.८८ को होने वाले सर्व सेवा संघ का अधिवेशन भी मण्डल द्वारा आयोजित है। वर्तमान मे बीकानेर जिले मे निम्नानुसार लोकसेवकों का वर्ष १९८८-८९ के लिए नवीनीकरण हुआ है। तारीख १७.७.८८ को मण्डल का पुनर्गठन हुआ है। जिसके अनुसार सर्व श्री शिवभगवान बोहरा-अध्यक्ष, श्री रामदास खण्डेलवाल, मन्त्री-सर्व सेवा संघ प्रतिनिधि श्री सोहनलाल मोदी तथा प्रदेश सर्वोदय मण्डल (राज. समग्र सेवा संघ)

प्रतिनिधि श्री रामदयाल खण्डेलवाल मनोनीत हुए हैं।

इस वर्ष जिले मे ३७ लोकसेवक बने हैं, जिनकी नामावली निम्न प्रकार है :—

सर्व श्री शिवभगवान बोहरा, सोहनलाल मोदी, रामदयाल खण्डेलवाल, गगाराम कडेला, ओमप्रकाश गुप्ता, लालचन्द शर्मा एस डी जोशी, रामधन वर्मा, बी. के जैन, शिवप्यारी मोदी महावीरप्रसाद वैद्य शर्मा, चोरूलाल सुथार, शिवरतन सुथार उदयवीर प्रसाद विद्दल, भवरलाल कोठारी, रामकृष्ण बिस्सा, रामचन्द्र भादू, ओमप्रकाश गुप्ता, इन्दु भूषण गोईल, कृष्णचन्द्र मिश्रा, चिरजीलाल पारीक, महेन्द्र गहलोत, भवरलाल पारीक, वशीधर शर्मा, बलवत सिंह रावत, कैलाशचन्द्र पाण्डे, आलम सिंह नेगी, शम्भूनाथ खत्री, नृसिंहदत्त शर्मा, हीरालाल मोदी, प्रहलाद जी पुरोहित, किशनाराम, वासुदेव विजयवर्गीय मघाराम चौधरी भागीरथ शिवरान, द्वारकाप्रसाद सोनी, शिवदयाल गुप्ता।

राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सालय केन्द्र

बीकानेर (राजस्थान)

बीकानेर मे गाधी जयन्ती २ अक्टूबर, ५१ को जीवन का लक्ष्य बनाकर स्व देवेन्द्र-दत्त शर्मा ने प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र की स्थापना की और ६ नवम्बर, ७२ तक वे सेवा कार्य सभालते रहे। उसके बाद से श्री महावीर प्रसाद शर्मा वैद्य इसे सभाले हुए है।

इस केन्द्र मे अनेक रोगो से ग्रसित हजारो हताश रोगियो ने उपचार लेकर नया जीवन पाया है। यह चिकित्सा केन्द्र देश मे अस्थमा, श्वास रोग के लिये प्रसिद्ध है। इस केन्द्र मे १५ शैय्याए हैं।

रोगियो की बढती सख्या के कारण बीकानेर जैसे नगर मे आधुनिक सुख-सुविधा से सम्पन्न प्राकृतिक चिकित्सालय की आवश्यकता लम्बे समय से अनुभव की जा रही है। नगरो के विस्तार वायुप्रदूषण, जनसख्या वृद्धि, भयकर महगाई, शुद्ध खाद्यान्नो का अभाव मानसिक तनाव के मौजूदा वातावरण मे स्वास्थ्य-शिक्षा व योग केन्द्रो की महती आवश्यकता है।

बीकानेर–गगाशहर के मध्य मुख्य मार्ग पर लगभग १८ ३०० वर्गगज के भूखण्ड मे प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र का भवन बनाने का सकल्प लिया गया है। निर्माण कार्य का प्रारभ किया जा चुका है।

भावी योजनाओ का सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

(१) प्राकृतिक चिकित्सालय–
इसके अन्तर्गत २०×३० का हॉल, आफिस स्टोर, लेबोरेटरी, स्टाफ कक्ष, स्नानघर, शौचालय एव एनिमा कक्ष आदि प्रस्तावित हैं।
(२) ध्यान भवन ३) ज्ञान भवन
(४) वतमान गोशाला का विस्तार

इसके अतिरिक्त १० कोटेजों के निर्माण, कार्यकर्ता निवास की व्यवस्था तथा अतिथि कक्ष के निर्माण की योजना भी है। इस योजना पर लगभग १० लाख रुपये व्यय होने का अनुमान है।

संस्था का वर्तमान संचालक मण्डल निम्न प्रकार है :—

अध्यक्ष—श्री सोहनलाल मोदी

कार्यकारी अध्यक्ष—श्री वेदप्रकाश चतुर्वेदी

उपाध्यक्ष—श्री द्वारका प्रसाद जोशी

मंत्री—श्री सत्यनारायण वैद्य

सहमंत्री—श्री वली मोहम्मद

कोषाध्यक्ष—श्री बुलाकीदास पुंगलिया

सदस्य—सर्व श्री दाऊलाल व्यास
भवरलाल कोठारी
बनवारीलाल शर्मा
महावीरप्रसाद वैद्य
केशरदेवी शर्मा

राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के अलावा यहां निम्न सस्थान भी उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं।

देवेन्द्र योग सस्थान : स्वर्गीय डा. देवेन्द्रदत्त जी की स्मृति में स्थापित इस सस्थान द्वारा विद्यालयो में योग प्रचारार्थ योग प्रदर्शन तथा अनेक स्थानों पर स्वास्थ्य साधना शिविरों का संचालन किया जा रहा है।

भारतीय चिकित्सा महाविद्यालय : योग सस्थान तथा चिकित्सा केन्द्र के सयुक्त तत्त्वावधान मे सचालित इस विद्यालय में योग, प्राकृतिक चिकित्सा तथा आयुर्वेद के सयुक्त चार वर्षीय पाठ्यक्रम के साथ गोसवर्द्धन, ग्राम विकास, समाजसेवा, शिविर सचालन, गृह उद्योग तथा पाक-शास्त्र आदि अनेको ऐच्छिक विषयो के अध्यापन की व्यवस्था की गई है।

मंगलग्राम योजना : नगर से ७ किलोमीटर दूर *भीनासर में प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण* मे यह बहुउद्देशीय आश्रम योजना चलाई जा रही है जहां गोसवर्धन वनौषधि उद्यान, छात्रावास तथा ज्ञान मन्दिर आदि प्रवृतियो का सचालन होता है।

मंगलमार्ग : स्वास्थ्य, सदाचार, गोसवर्धन एवम् ग्राम विकास का प्रेरक मासिक पत्र सन् १६७७ से प्रकाशित होता आ रहा है।

सपर्क स्थान :

देवेन्द्र योग सस्थान,
मगलग्राम, नोखा रोड,
भीनासर (बीकानेर) राज.

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र,
चोपड़ा स्कूल के सामने,
गगाशहर (बीकानेर) राज.

फोन : ५०८४

×:४:×

बीकानेर की संस्थाएँ व समितियाँ

—●—

१ क्षेत्रीय सीमा वि का खा ग्रा कमीशन, बाहेती भवन, बीकानेर
२ खादी मन्दिर, बीकानेर
३ खादी ग्रामोद्योग प्रतिष्ठान, बीकानेर
४ ऊनी खादी ग्रामोद्योग सस्थान, बीकानेर
५ खादी ग्रामो वि सस्थान, विकास भवन, मजफ तहसील कोलायत
६ नोखा खादी ग्रामो. सघ, ५१ सादुलगज, बीकानेर
७ राजस्थान ग्रामोद्योग समिति, बज्जू
८. ऊनी उत्पत्ति केन्द्र, खादी बोर्ड, बीकानेर
९ भानासर खादी व ऊन कताई बुनाई सह. समिति लि बीकानेर
१० क्षत्रीय समग्र लोक विकास सघ, बीकानेर
११ किलचू खादी ग्रा व बु स स किलचू, बीकानेर
१२ देशनोक खादी व ऊन कताई बुनाई स स, देशनोक
१३ खादी व ऊन कताई बुनाई स. समिति लि उदासर
१४ किसमीदेसर खा ऊन क बु सह. स, गगाशहर बीकानेर
१५ नापासर खादी व ऊन क बु सह लि, नापासर
१६ प्रगतिशील ऊन व सूत कताई बुनाई सह लि., रोशनी घर के पास, खरनाडा, बीकानेर
१७ बीकानेर खादी व ऊन क बु सह स लि चौतीना कुए के पास, बीकानेर
१८ कोलासर खादी व ऊन क बु सह स, कोलासर
१९ सर्वोदय खादी मण्डल, रिडमलसर
२० सुरघना खादी ग्रामोद्योग समिति, सुरघना
२१ ग्राम स्वराज्य समिति, उदयरामसर
२२ बीकानेर खादी ग्रामोद्योग सस्थान, के० जी० टाईल्स के पीछे, रानी बाजार, बीकानेर
२३ खादी ग्रामोद्योग विकास समिति, गगाशहर
२४ कुम्मासरिया खादी व ऊन क बु सह लि, कुम्मासरिया पो नागूसर, तहसील नोखा
२५ मगरा खादी व ऊन क बु सह स लि., पो गुडा
२६ मगरा खादी ग्रामोद्योग समिति, नालबडी

राजस्थान गोसेवा सघ--कालक्रम में अकाल यात्रायें

□ श्री भवरलाल कोठारी
महामंत्री, राजस्थान गोसेवा सघ

राजस्थान गो-सेवा सघ गोरक्षा, गोपालन और गोसवर्धन के क्षेत्र मे प्रदेश की एक अग्रणी सस्था है। पूज्य बापू की प्रेरणा से सस्थापित कृषि गो सेवा सघ के सहयोग से आजादी के वाद इसकी स्थापना की गई। बाबा बलवत सिहजी सर्वश्री रामेश्वरजी अग्रवाल, राधा-कृष्णजी बजाज, बद्रीनारायणजी सोढाणी, मोठालालजा काका, रामगोपालजी वर्मा, ब्रह्मदत्तजो शर्मा इसके सस्थापक सदस्य रहे हैं। श्री मीठालालजी काका एव श्री बद्री-नारायणजो सोढाणी इसके प्रथम अध्यक्ष एव मत्री रहे। पजीकरण सन् १६५४ मे कराया गया। राजस्थान के वयोवृद्ध नेता श्री गोकुल भाई भट्ट एव परम गो सेवक श्री राधाकृष्णजी बजाज कई बार अदल बदल कर अध्यक्ष पद पर आसीन हुए। वर्तमान मे राजस्थान उच्च न्यायालय के पूव मुख्य न्यायाधीश माननीय श्री दौलतमलजो भडारो सघ के अध्यक्ष हैं।

दुर्गापुरा-जयपुर मे गोशाला

स्थापना काल से ही सघ गो सेवा के कार्य में तत्परतापूर्वक कार्यरत है। दुर्गापुरा जयपुर मे एक आदर्श गोशाला की स्थापना सघ का प्रथम उल्लेखनीय कार्य रहा। वहा हरियाणा और थारपारकर नस्ल का उत्कृष्ट गोधन है। नस्ल सुधार की उत्तम व्यवस्था है। हरे चारे का उत्पादन और छोटे बडे गोबर गैस सयत्रा का वहा निर्माण करवाया गया है। सघ का प्रधान कार्यालय होने के साथ साथ वहा पशु आहार उत्पादन का कार्य भी बडे स्तर पर किया जा रहा है,

गोरस भण्डार योजना

गोरस भण्डार की स्थापना सघ का दूसरा उल्लेखनीय कार्य है, जिसके माध्यम से जयपुर नगर निवासियों को विगत ३० वर्षों से शुद्ध गोदुग्ध सुलभ मूल्यो पर उपलब्ध कराया जा रहा है। दूध का सग्रह जयपुर जिले के रामपुरा और बांडी क्षत्र के दूरस्थ ग्रामो से किया जाता है। पूर्व मे वह भेंस का क्षेत्र था। गाय केवल १५-२० प्रतिशत ही थी। सघ ने गाव गाव मे ग्वालो को ब्याज मुक्त ऋण देकर अच्छी गायें उपलब्ध करवाई। अच्छी नस्ल के साड नि शुल्क दिये। दूधवर्धक पशु आहार का अल्प मूल्य मे वितरण किया। वाहनो की व्यवस्था कर गाव गाव से सुबह-शाम दूध उठाया। गोपालको को दूध के अच्छे भाव दिये। जयपुर में दूध ठण्डा करने का प्लाट

लगाया। शुद्ध गोदूध उपभोक्ताओं को घर घर मे पहु चाने की व्यवस्था की।

गोपालको को अपने गाव मे ही दूध के अच्छे भाव मिल गये और जयपुर के उप–भोक्ताओं को घर बैठे गाय का शुद्ध दूध अल्प मूल्य मे मिल गया। अभी रोजाना ३००० लीटर दूध ग्रामाचलो से मगवाकर जयपुर के उपभोक्ताओं मे नियमित रूप से वितरित किया जा रहा है।

जोधपुर-जैसलमेर मे घी संग्रह

स्थापना के प्रारम्भिक वर्षो मे ही सघ ने जैसलमेर जिले से गाय के शुद्ध घी का सग्रह करके देश के कोने-कोने मे पहु चाने का कार्य प्रारम्भ किया। जोधपुर को घी सग्रह का केन्द्र बनाया गया। एग मार्क की व्यवस्था की गई। वहा मेडती गेट के अन्दर स्थित कुचामन ठाकुर सा. की हवेली खरीदकर सघ के क्षत्रीय कार्यालय की स्थापना हुई। दुग्धवर्धक सतुलित पशु आहार का उत्पादन भी वहा प्रारम्भ किया गया।

बीकानेर मे दूध संग्रह

जयपुर की तरह बीकानेर मे भी दूध सग्रह का कार्य प्रारम्भ किया गया। राठी नस्ल की उत्कृष्ट दुधारू गाय इस क्षेत्र का प्रकृति की विशेष देन के रूप मे मिली है। दूध उत्पादन की दृष्टि से यह क्षेत्र भारत का डनमाक है। सघ ने ३० वर्ष पूर्व ग्रामाचलो से दूध सग्रह शुरू किया था। देहली मिल्क स्कीम को यहा से रोजाना दूध के टैंकर भेजे जाने लगे। कांग्रेस अध्यक्ष माननीय ढवर भाई ने इस दुर्गम रेगिस्तानी क्षेत्र का प्रवास किया। केन्द्र व राज्य सरकार ने नस्ल सुधार की विशेष योजना बनाई। कालातर मे यहा राजस्थान की प्रमुख उमूं ल डेरी की राज्य स्तर पर स्थापना हुई।

सघ द्वारा ३० वर्ष पूर्व प्रारम्भ किये गये सतत प्रयत्नो का ही यह परिणाम है कि आज बीकानेर क्षेत्र देश मे दूध उत्पादन और सग्रह का एक प्रमुख केन्द्र बन गया है। यहा से रोजाना ढाई–तीन लाख लीटर दूध देहली व अन्यत्र भेजा जा रहा है।

अकाल से गोरक्षा-निष्क्रमण डिपो

अकाल मृत्यु से गोधन को बचाने के महत् कार्य मे सघ अपने स्थापना काल से ही प्रदेश मे अग्रणी रहा है। जब भी चारे-पानी का अभाव हुआ सघ ने स्पेशल ट्रेनो व ट्रको से से चारा मगवाकर उसे गावो मे पहु चाया और जल श्रोतो पर केटल केम्प लगाये अथवा गोधन को चारे व पानी के स्थानो पर पहुंचाने का प्रबन्ध किया। अनूपगढ के हमारे केन्द्र की स्थापना सन् १९६३–६४ के अकाल मे एक निष्क्रमण केम्प के रूप मे हुई थी। पाच हजार गोवश को राजाना उधर से चराई क्षेत्रो मे भिजवाया जाता था। बीकानेर लूण–करणसर, कोलायत क्षेत्र से आने वाले राठी नस्ल के गोधन का वह पडाव स्थल था। पाच-सात दिन वहा रखकर उन्हे चारा दाना दिया जाता था। फिर अभोर, फाजिल्का, फिरोजपुर के घास बहुल स्थानो पर भिजवाने की व्यवस्था की जाती थी। इस प्रकार कई निष्क्रमण केन्द्रो व गोसदनो का एक जालसा बिछा दिया गया था। चूरू जिले के बिग्गा गाव का गोसदन, जोधपुर जिले के खीचन, माप केन्द्र, जैसलमेर के बीजारा (फतेगढ), बीकानेर के छतरगढ और सवाई माधोपुर के

सघ पर आ गया। राजस्थान मुख्य नहर पर स्थित सघ के छतरगढ केन्द्र पर उनको रखने और हरा चारा उत्पादन कर उन्हें पालने का प्रयत्न किया गया।

सत विनोबा को भूदान मे प्राप्त देश के सबसे बडे छतरगढ के रकबे की १,४४,००० बीघा रतीले टीबो की वीरान भूमि मे से सघ को गोपालन के लिए २००० बीघो का सन् १९७४ मे आवटन किया गया था। तत्कालीन सघ मन्त्री श्री सोहनलाल मोदी एव मास्टरजी श्री नृसिहदत्त शर्मा न छतरगढ को विकसित करने का अथक परिश्रम किया। वहा खेती गोपालन के साथ गोबर गैस, विन्डमिल, शिक्षण, प्रशिक्षण, समग्र विकास शिविरो के आयोजन व प्रयोगात्मक अनेक कार्यक्रम सचालित किए गए। परम विदुषी, अध्यात्मयोगी विमला बहिन ठकार, सर्वोदयी विचारक दादा धर्माधिकारी, सत शिरोमणी स्वामीजी श्री रामसुखदासजो म सा व अनेक मनीषियो का वहा समय-समय पर पदार्पण हुआ। थार मरुस्थलो मे एक आदर्श कृषि गोपालन केन्द्र एव आध्यात्मिक आश्रम की स्थापना हुई।

गोसदन योजना-बाजूवाला

अकाल की मार से बचाये गये और तस्करो व कसाइयो व एजन्टो, बालदियो, बजारो की गिरफ्त से छुडवाये गये गोवश को परिपालना केवल छतरगढ मे कर पाना सभव नहीं था। हजारा गायो की परिवरिश मे लाखों रुपयो का व्ययभार था। सघ ने न केवल दानदाताओ से प्राप्त सहयोग राशि अपितु अपनी जमा पू जी के २० लाख रुपये भी इस हेतु खर्च कर दिये। फिर भी उनके पालने की स्थाई व्यवस्था एक विकट समस्या थी। इसका समाधान गाव-गाव मे किसानो को गोरक्षा, गोपालन और गोसवर्धन के रचनात्मक कार्यक्रम के साथ जोडकर ही निकाला जा सकता था। विकेन्द्रित स्वावलम्बी गोसदन इसका वास्तविक हल था। मुख्य व्यवस्थापक मास्टरजी श्री नृसिहदतजी शर्मा ने श्री गगानगर जिले के सिंचित क्षेत्रो के किसानो से व्यापक जन सपर्क कर गोसदनो के स्थापना की मुहिम चलाई। पहला गोसदन बाजूवाला मे स्थापित किया गया। जेतसर फार्म के पास एक मुरब्बा वीरान भूमि पर सन् १९८२ मे इसकी आधार शिला रखी गई। जन जागृति का अभियान चला। इलाके के किसानो और जमीदारो ने कसाइयो और तस्करो के हाथ गोधन नही जाने देने का सकल्प किया। गोसदन के लिए अपनी फसल मे से दाने चारे के गोग्रास अशदान देने की होड सी लग गई। दाना चारा सग्रह करने के लिए सघ ने ट्रक, ट्रेक्टर, ट्रोली व गाडो की समुचित व्यवस्था की। देखते ही देखते वहां विशाल गोशाला का निर्माण हो गया।

बाजूवाला के जन अभिक्रम से नहरी क्षेत्र मे गोसदनो की स्थापना का एक अभियान प्रारम्भ हो गया। रावलामडी, कोलाफार्म हनुमानगढ, मुण्डा, खाजूवाला के गोसदन इसी क्रम मे स्थापित हुए। घडसाना आदि अन्य मडियो व कम्बो गावो मे भी स्थानोय स्तर पर गाशालाओ की स्थापना की गई।

जैसलमेर के सेवण क्षेत्र मे "आपरेशन फोडर"

सन् १९८५ मे चारे का सकट और गहरा हो गया। जैसलमेर जिले के सीमावल क्षेत्र मे सेवण घास के प्रकृति प्रदत्त अथाह चारागाह

क्षेत्र के अलावा प्रदेश में कहीं भी चारा प्राप्ति का कोई स्त्रोत नही था। संघ के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री सोहनलालजी मोदी ने जैसलमेर एवं बीकानेर जिलाधीशों के साथ उस चारागाह क्षेत्र का तीन दिवसीय व्यापक दौरा किया। राज्य सरकार ने सेवण घास कटवाकर विभिन्न जिलो मे वितरण करने की योजना बनाई। योजनानुसार श्री मोदीजी के कर्मठ सचालकत्व मे सघ ने जैसलमेर जिले के पाली डिग्गा क्षेत्र मे हजारों मजदूर व सैकड़ो ट्रक, ट्रैक्टर, ऊंट गाड़े लगाकर उस निर्जन, निर्जल, दुर्गम क्षत्र मे सेवण घास की कटाई, कुतर कराई, तुलाई व दुलाई की मुकम्मिल व्यवस्था की। चारागाह ने घास कटाई छावनी का रूप ले लिया।

बीकानेर में चारा वितरण

बीकानेर जिला इस वर्ष सर्वाधिक सकट-ग्रस्त रहा। चारे का एक तिनका भी जिले मे कही उपलब्ध नही था। जैसलमेर से केवल ३५ हजार क्विटल चारा ही प्राप्त हुआ। जिले के गोधन को इस तृणाभाव से बचाने के लिए सघ ने पजाब और हरियाणा से बड़ी मात्रा मे चारा मगवाने का प्रबन्ध किया। कुल साढे तीन लाख क्विटल चारा बाहर से प्राप्त हुआ। गाव-गांव मे रियायती दरो पर चारा वितरण के डिपो प्रारम्भ किये गये। केवल बीकानेर जिले मे ८५ डिपो और अन्य सभी जिलो मे कुल मिलाकर २०७ डिपो पर सघ द्वारा चारा वितरण का प्रबन्ध किया गया। दानवीर सेठ श्री रामनारायणजी राठी से इस हेतु दस लाख रुपये ब्याज मुक्त ऋण के रूप में प्राप्त हुए। राज्य सरकार से ३० लाख का ब्याज रहित ऋण मिला। कुल रु. ३५० लाख का कार्य किया गया। सरकार से परिवहन अनुदान की राशि रु. १११ लाख मिले।

हरा चारा उत्पादन

चारा उपलब्ध कराने के साथ-साथ संघ द्वारा गो सेवा शिविरो का सचालन भी किया गया। हरा चारा उत्पादन के लिए विशेष प्रयत्न हुआ। छतरगढ केन्द्र मे ४०० बीघा सिंचित भूमि के अलावा ८०० बीघा बारानी जमीन पर स्प्रिंकल सेटो के सहारे बड़ी मात्रा मे हरा चारा पैदा किया गया। सघ के अथक प्रयत्नो के परिणाम स्वरूप राज्य सरकार ने हनुमानगढ़ जक्शन के पास नावा गाव मे स्थित गन्ना फार्म की १३०० बीघा भूमि हरा चारा उत्पादन हेतु सघ को आवटित की। विगत १०-१२ वर्षों से बन्द पडे हुए गन्ना फार्म को पुनः खेती योग्य बनाना दुष्कर कार्य था।

वर्ष १९८७-१९८८ का महाकाल

सन् १९७९-८० से प्रारम्भ हुई अकाल की यह शृ खला सन् ८७ और ८८ के वर्षों मे चरम सीमा तक पहुच गई। शताब्दी का यह क्रूरतम महाविकराल अकाल था। प्रलयकारी महाकाल था। कुछ जिले ही नहीं पूरा प्रदेश काल के गाल में समा गया था।

ऐसी विकट परिस्थिति और अपूर्व सकट की स्थिति मे सघ ने भगवान गोपाल कृष्ण की कृपा और करुणाभावी, सवेदनशील, सुहृदयजनो के प्रबल समर्थन के बल पर जन-जन के सहयोग से गोरक्षा का बीड़ा उठाने का सकल्प लिया। राज्य सरकार से विशद विचार-विमर्श करके नीतिगत निर्णय करवाये गये।

संघ ने इस वर्ष चारा-दाना वितरण और पशु सेवा शिविरों के संचालन में कई नये रेकार्ड कायम किये। कुल अठारह करोड़ रुपयों की लागत से करीब चौबीस लाख क्विंटल चारे का वितरण किया। सात करोड़ के व्यय से ७२ हजार गोवंश के भरण-पोषण की व्यवस्था की और एक करोड़ से अधिक मूल्य का पशु-आहार ७५ हजार गोवंश को नियमित रूप से उपलब्ध कराया।

चारा आपूर्ति का महाभियान

जनवरी, ८७ से ३१ जुलाई, ८८ तक बिना एक दिन अंतराल के लगातार चले इस महा भयंकर दुष्काल में जहां एक ओर हमारे अमूल्य पशुधन की अपरिमित क्षति हुई वहां दूसरी ओर उसे बचाने के अनेक चमत्कारिक प्रयोग और ऐतिहासिक कार्य भी हुए। तृणा-भाव की पूर्ति के लिए जितना चारा इस वर्ष देश के विभिन्न प्रांतों से मंगाया गया, उसका दशमांश भी आज तक के सभी अकालों में कुल मिलाकर प्राप्त नहीं हुआ। अकेले राजस्थान गोसेवा संघ ने इस अवधि में १८ करोड़ रुपयों की लागत से २४ लाख क्विंटल चारे का वितरण किया। केवल पंजाब और हरियाणा से ही नहीं महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और यू. पी. से भी ट्रकों और ब्रोडगेज, मीटर-गेज की स्पेशल ट्रेनों से लाखों क्विंटल सूखा हरा चारा व गन्ना मंगवाया गया।

गन्ने का चमत्कारिक प्रयोग

गन्ने का इस वर्ष चमत्कारिक प्रयोग हुआ। चीनी बनाने के लिए मीलों में जाने वाला गन्ना इस वर्ष बड़ी मात्रा में गाय के पेट में गया। प्रारम्भ में गोपालकों को आशंका थी कि गन्ना खाते ही गाय बीमार हो जावेगी, शीत में आ जावेगी, पेट छूट जायेगा, वह बच नहीं सकेगी। उन्होंने विरोध किया। पर संघ ने अपने केटल केम्पों में इसका निरन्तर प्रयोग करके उनकी भ्रांत धारणा को निर्मूल सिद्ध कर दिया। गन्ना खाकर गाय स्वस्थ रही। उसके दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों बढ़े।

नहरी क्षेत्र में गायों का निष्क्रमण

चारे पानी के स्थानों पर बड़ी संख्या में गोवंश को ले जाकर केटल केम्पों के जरिये ही उन्हें बचा पाना संभव था। संघ के सुझाव पर राज्य सरकार ने एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन कर अच्छी नस्ल के गोधन को श्री गंगानगर व बीकानेर जिलों के नहरी क्षेत्र में भिजवाने और वहां वृहत् केटल केम्पों के माध्यम से दो-ढाई लाख गायों को पोषण देने की एक महत्वपूर्ण योजना स्वीकार की। बाड़मेर, जेसलमेर से स्पेशल ट्रेनों व ट्रकों द्वारा हजारों की संख्या में गोधन श्रीगंगानगर जिले में भिजवाया गया। संघ ने हनुमानगढ़ स्थित गन्नाफार्म, कालाफाम, अनूपगढ, बाजू-वाला आदि स्थानों पर अपने गो सदनों में उनके भरण-पोषण की समुचित व्यवस्था की।

बड़ी संख्या में गो सेवा शिविरों का संचालन

केटल केम्पों की दृष्टि से भी इस वर्ष प्रदेश में कई नए रेकार्ड बने। पूर्व में कभी भी

२०-३० हजार गायों से अधिक के केम्प नहीं चले थे। इस वर्ष संख्या लाखों में पहुच गई। अकेले संघ ने बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, चूरू, श्रीगंगानगर जिलों में ७२ हजार गायों के केम्प चलाये। अनुदान की स्वीकृति ५०-५५ हजार के लिए ही मिली। पूर्व में एक केम्प में ५०० गायों की मर्यादा थी। इस वर्ष इसे बढ़ाकर ५००० कर दिया गया। संघ ने इन्दिरागांधी मुख्य नहर की आर. डी. ६८२ पर १५ हजार गायों का केम्प संचालित किया। ऊपर में संख्या १८ हजार तक पहुंच गई। अनुदान स्वीकृति १३ हजार की ही मिली। छतरगढ़ में १० हजार गायों के केम्प चले। जेसलमेर जिले के भादरियाजी में संघ द्वारा पूज्य भादरिया महाराजजी की देख-रेख में ८ हजार गायों के शिविर चलाये गये। जैसलमेर-बाड़मेर से ट्रेन व ट्रकों से सरकारी खर्च पर भिजवाये गये एवं चूरू-बीकानेर जिलों से वहां पहुंचे १० हजार गोवंश की व्यवस्था सघ द्वारा गन्नाफार्म हनुमानगढ़ में, ४ हजार की कोलाफार्म में, ३ हजार अनूपगढ़ में, २५०० बाजूवाला में की गई। चूरू जिले के सरदार शहर में गांधी विद्या मन्दिर परिसर मे २००० गायों का सेवा शिविर सघ ने संचालित किया। केला गांव के पास ४००० गायों का शिविर चला। जैसलमेर शहर के शिविर में १५०० गायें रही। इन हजारों गायों के बड़े शिविरों के साथ-साथ संघ ने अनेक छोटे गांवों में सौ, दो सौ, तीन सौ गायों के शिविर भी चलाये।

कार्य की एक झलक

सघ ने इस वर्ष चारा-दाना वितरण और पशु सेवा शिविरो के सचालन में कई नए रेकार्ड कायम किये। कुल अठारह करोड़ रुपयों की लागत से करीब चौबीस लाख क्विटल चारे का वितरण किया। सात करोड़ के व्यय से ७२ हजार गोवंश के भरण-पोषण की व्यवस्था की और एक करोड़ से अधिक मूल्य का पशु आहार ७५ हजार गोवंश को नियमित रूप से उपलब्ध कराया। राज्य सरकार से ७५ लाख रुपयों का ब्याज मुक्त ऋण मिला। तेरह करोड़ का अनुदान देय बना। पजाब हरियाणा व अन्य प्रांतों से रोजाना लाखों रुपयों का चारा मंगवाकर दूर-दूर के गांवों में वितरित किया गया। तीन लाख के लगभग गायें प्रतिदिन चारा वितरण से लाभान्वित हुई।

गोरक्षा के इस महायज्ञ में हमें जिन हजारों गोभक्तों, गोपालकों व सरकारी-असरकारी सहृदयजनों से तन-मन-धन का सर्वभावेन सहयोग मिला हम उन सब के प्रति श्रद्धावनत हैं। □

राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ

बजाज नगर, जयपुर (राज०)

खादी तथा ग्रामोद्योगो के कार्यों को व्यापक एव क्षेत्रीय ग्राधार पर विकेन्द्रित करने सबधी ग्रखिल भारतीय चर्खा सघ की नीति के फलस्वरूप राजस्थान मे भी ग्रनेक छोटी बडी सस्थाग्रो का उदय हुग्रा । इन सस्थाग्रो ने उत्साह, लगन एव सेवा भावना के साथ काय करते हुए प्रान्त के लाखो कत्तिन बुनकर एव कामगारो को रोजगार प्रदान किया । कार्य के विकास के साथ ही ग्रनेक प्रकार की कठिनाइया एव समस्याए भी उपस्थित हुई । खादी सस्थाग्रो के समक्ष ग्राने वाली बहुविध समस्याग्रो ने ही एक मध्यवर्ती सगठन के निर्माण का पथ प्रशस्त किया । इस प्रकार प्रान्त की सस्थाग्रों एव खादी ग्रामोद्योग कमीशन क सहयोग से विनोबा-जयन्ती 11 सितम्बर, 1957 के शुभ ग्रवसर पर खादी के प्रमुख सेवक श्री द्वारका नाथ जी लेले द्वारा 'राजस्थान खादी ग्रामोद्योग सस्था सघ' का शुभारम्भ किया गया । सघ के गठन एव विकास मे इसके सस्थापक ग्रध्यक्ष श्री रामेश्वर ग्रग्रवाल का प्रमुख हाथ रहा । प्रारम्भ मे प्रान्त की केवल 9 सस्थाए सघ की सदस्य बनी थी, इसमे उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई ग्रौर ग्रब 100 से ग्रधिक सस्थाए सघ की सदस्य हैं ।

सस्था सघ का प्रधान कार्यालय जयपुर मे गाधी नगर रेलवे स्टेशन के निकट स्वास्थ्यप्रद एव सुखद वातावरण मे स्थित है । 14 नवम्बर, 1959 नेहरु-जयती के दिन खादी ग्रामोद्योग ग्रायोग के तत्कालीन ग्रध्यक्ष स्वर्गीय श्रीयुत् वैकुण्ठ भाई मेहता ने सघ के वस्त्रागार भवन का शिलान्यास किया तथा सघ के नव निर्मित भवनो का उद्घाटन राष्ट्र नेता एव प्रधानमन्त्री स्व० ज्वाहर लाल नेहरू के कर-कमलो द्वारा दिनाक 19 नवम्बर, 1960 को सम्पन्न हुग्रा । इस ग्रवसर पर तत्कालीन योजना मन्त्री श्री गुलजारी लाल नन्दा तथा उद्योग मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री, सर्वोदय नेता श्री शकरराव देव ग्रादि महानुभावों की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही । इस ग्रायोजन के समय सघ के प्रागण मे ग्र. भा. खादी ग्रामोद्योग मण्डल एव देश भर के राज्य खादी बोर्डों का वृहद् सम्मेलन भी ग्रायोजित हुग्रा जिसमे देश भर से वरिष्ठ खादी सेवको व कार्यकर्ताग्रो ने भाग लिया ।

उद्देश्य ग्रौर कार्यक्रम

सस्था सघ ने ग्रपना उद्देश्य रखा है—'सर्व सेवा सघ की रीति-नीति व मर्यादानुसार खादी तथा ग्रामोद्योगो कार्यों को प्रश्रय ग्रौर प्रोत्साहन देना, खादी ग्रौर ग्रामोद्योगो के लिए सरकार से सब प्रकार की सुविधाए तथा सरक्षण प्राप्त करना, सस्थाग्रो

के मध्य पारस्परिक हितो और कार्य क्षेत्र आदि का समन्वय स्थापित करना, सदस्य सस्थाम्रो को सुदृढ आधार पर खडे होने मे सहायता और मार्गदर्शन पहुचाना, सदस्य सस्थाग्रो के लिए आवश्यकतानुसार कच्चे माल व सुघरे सरजाम आदि का सामूहिक प्रवन्ध करना, खादी-ग्रामोद्योगी सस्थाम्रो के लिए योग्य एव प्रशिक्षित कार्यकर्ताम्रो का प्रवन्ध करना ।"

कार्य नीति

प्रारभ से ही सघ उपरोक्त उद्देश्यो को पूर्ति के लिए सचेष्ट है। सघ की नीति सस्थाम्रो के लिए कच्चे माल की सामूहिक खरीद, प्रान्तीय पर-प्रान्तीय माल का सग्रह, रगाई-छपाई की व्यवस्था, ऊनी फिनिशिंग व अम्बर पूणी को सामूहिक व्यवस्था, तकनीकी सहयोग, सस्थाम्रो का समन्वय एव विकास, खण्डस्तर पर सस्थाम्रो का गठन और सर्वोदय साहित्य प्रचार आदि की रही है इसके साथ ही प्रदेश के खाली क्षत्रा मे नई सस्थाम्रो के गठन मे सहयाग देना, उन्हे आर्थिक मदद पहुचाना तथा कमजार सस्थाम्रो को भी अपनी मर्यादा मे आर्थिक व अन्य प्रकार से सहयोग देकर उन्हें ऊपर उठाने की सघ की नीति रही है। प्रत्यक्ष उत्पादन एव फुटकर विक्री का कार्य सघ की मर्यादा स बाहर रखकर उसकी जिम्मेदारी सस्थाम्रो को ही मानी गई है ताकि आपस मे किसी तरह की प्रतिस्पर्धा नही रहे ।

मुख्य प्रवृत्तिया एक दृष्टि मे

सस्था सघ को स्थापना के बाद पिछले 30 वर्षों मे जिन प्रवृतियो का विस्तार हुआ, वे निम्न हैं · –

(1) प्रधान कार्यालय
बजाज नगर, जयपुर-302 017
फोन कार्यालय, 74157 मत्री 62460
तार-सस्था सघ, जयपुर

(2) केन्द्रीय वस्त्रागार
बजाज नगर, जयपुर-302 017
फोन 78123,
तार-सस्था सघ जयपुर
रेलवे स्टेशन-गाधी नगर, जयपुर

(3) क्षेत्रीय वस्त्रागार
(क) बीकानेर
गगाशहर राड, बीकानेर
फोन–4625, तार सस्था सघ
(ख) जोधपुर
बख्तावर मल का बाग,
चौपासनी रोड, जोधपुर
फोन–23978 तार-सस्था सघ
(ग) उदयपुर
28 उत्तरी आयड, उदयपुर
फोन 6087 तार : सस्था सघ

(4) ऊनी फिनिशिंग प्लांट
(क) जयपुर
बजाज नगर, जयपुर
(ख) बीकानेर
औद्योगिक क्षेत्र, बीकानेर
फोन– 4516 तार सस्था सघ
(ग) जोधपुर
26 हैवी इण्डस्ट्रीयल एरिया, जोधपुर

(5) क्षेत्रीय रंगाई-शाला
बजाज नगर, जयपुर

(6) कार्डिंग प्लांट

(क) जोधपुर
26 हैवी इण्डस्ट्रीयल एरिया, जोधपुर

(ख) बीकानेर
औद्योगिक क्षेत्र, बीकानेर

(ग) ब्यावर
9 लालबहादुर शास्त्री, इण्डस्ट्रीयल एरिया, ब्यावर
फोन-6070 तार-सस्था सघ

(7) सूती-पूणी प्लांट
बजाज नगर, जयपुर

(8) ग्रामोद्योग आगार
बजाज नगर, जयपुर

(9) सरजाम कार्यालय एवं अम्बर स्पेयर पार्ट्स भण्डार : बजाज नगर, जयपुर

10. अन्य प्रवृत्तियां

(क) सदस्य सस्थाओ के सामूहिक हित एव गुण विकास हेतु विविध कार्य ।

(ख) शिविर सम्मेलनो का आयोजन

(ग) अन्य रचनात्मक कार्य (शराब-बन्दी, गौरक्षा, सर्वोदय विचार-प्रचार, सत्साहित्य प्रचार, प्रौढ शिक्षा व राहत कार्यक्रम आदि)

(घ) 'खादी पत्रिका' प्रकाशन

सस्था सघ के तीसवें स्थापना दिवस 11 सितम्बर, 86 के अवसर पर सस्था के सस्थापक श्रीयुत रामेश्वर अग्रवाल का अभिनन्दन किया गया । इस अवसर पर आयोजित समारोह मे खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के तत्कालीन अध्यक्ष श्री ए एम थामस तथा राज्य के मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी आदि ने भाग लिया । प्रदेश की संस्थाओ के प्रतिनिधि भी शरीक हुए ।

भावी योजनायें एवं कार्यक्रम

सस्था सघ के भावी विकास का प्रश्न राजस्थान मे खादी ग्रामोद्योगो के विकास क्रम के साथ जुडा हुआ है । विगत 30 वर्षों मे प्रदेश मे जैसे-जैसे कार्य का विकास हुआ, सस्था सघ द्वारा सस्थाओ के सामूहिक हित के कार्यों मे सदैव अपना योग देने का प्रयत्न किया गया है । प्रदेश मे खादी-ग्रामोद्योग के कार्य विकास की दृष्टि से वर्तमान चालु कार्यक्रम के साथ ही निम्न कार्य और योजनाओ पर सघ का शेष जोर रहेगा ।

1 प्रदेश मे विकास खण्ड स्तर पर और अधिक खादी सस्थाए गठित करने मे योग देना ।

2 कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण हेतु अल्पकालीन व दीर्घकालीन शिविर अभ्यास क्रम तथा प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्य का सयोजन करना ।

3 हिसाबी व्यवस्था एव आन्तरिक अकेक्षण की सुविधाए सदस्य सस्थाओ को उपलब्ध कराना तथा इस हेतु एक मार्गदर्शिका का प्रकाशन करना ।

4 कत्तिन कामगारो को खादी कार्य की रीढ मानकर उन्हें आवश्यक सहयोग देना, दिलाना तथा इस हेतु प्रोत्साहन-प्रतियोगिताओ का आयोजन करना ।

5. सूती व ऊनी खादी के विकास हेतु सदस्य सस्थाम्रो के लिए विशेपज्ञो द्वारा तकनीकी सेवाऐं उपलब्ध कराना ।

6 सूती खादी उत्पादन वृद्धि एव क्वालिटी सुधार हेतु कताई-बुनाई उपकरणो के लिये तकनीकी सहयोग देना ।

7. अम्बर विकास हेतु अम्बर चर्खा उत्पादन का कार्य हाथ मे लेना ।

8. प्रदेश मे ऊनी खादी के विकास हेतु स्कार्वरिंग प्लाट एव डिजाइन सैन्टर आरम्भ करना ।

9 ग्रामोद्योग के विकास की दृष्टि से इसके उत्पादन बिक्री मे सहयोग करना तथा कच्चे माल की व्यवस्था करना ।

10. शराब बन्दी, गोवध बन्दी, अस्पृश्यता निवारण, साम्प्रदायिक सद्भाव आदि राष्ट्रीय कार्यक्रमो को प्रोत्साहित करने मे आवश्यक सहयोग प्रदान करना ।

11. कार्यकर्त्ताम्रो व सस्थाम्रो के गुण विकास की दृष्टि से विचार प्रचार के कार्यक्रमो मे आवश्यक सहयोग करना ।

12 प्रदेश मे खादी ग्रामोद्योगो के विकास की दृष्टि से अन्य आयोजन, जैसे प्रान्तीय व क्षेत्रीय सम्मेलन, विचार गोष्ठिया करना, समस्याम्रो के निराकरण हेतु विशेप प्रकोष्ठ की स्थापना, प्रदर्शनियो का आयोजन, प्रतियोगिताऐं, अन्य प्रचार-प्रकाशन आदि कार्यक्रम निकट भविष्य मे हाथ मे लेने का कार्यक्रम है ।

पदाधिकारी

सस्था सघ का यह सौभाग्य रहा है कि इसके पदाधिकारियो के रूप मे खादी के वरिष्ठ सेवको की सेवा का लाभ इस सगठन को मिल सका है ।

सस्था सघ के प्रारम्भ 1957 से 1972 तक श्री रामेश्वर अग्रवाल सस्था सघ के अध्यक्ष रहे । तत्पश्चात् 1972 से 1980 तक श्री चिरजीलालजी शर्मा ने अध्यक्ष पद का भार सम्भाला । 1980 से 1986 तक श्री फूलचन्दजी अग्रवाल ने अध्यक्ष पद का दायित्व सम्भाला । सितम्बर 1986 से श्री छीतरमल गोयल अध्यक्ष तथा रामवल्लभ अग्रवाल उपाध्यक्ष पद पर हैं ।

मत्री पद पर क्रमश श्री मदनलालजी खेतान, श्री फूलचन्दजी अग्रवाल, श्री रूपलाल जी सोमानी, श्री छीतरमलजी गोयल एव श्री रामवल्लभ अग्रवाल रहे है । वर्तमान मे श्री बनवारीलाल गौड मत्री हैं । श्री भोजराज बाफना मुख्य व्यवस्थापक हैं ।

★

[बीकानेर जिले की सभी खादी ग्रामोद्योग तथा अन्य रचनात्मक संस्थाओं से अपना कार्य विवरण भिजवाने हेतु निवेदन किया गया था। हमें निम्न संस्थाओं से प्रगति विवरण प्राप्त हुए हैं। वे यहां संक्षेप में दे रहे हैं।—सं०]

बीकानेर खादी-ग्रामोद्योग संस्थान

रानी बाजार, बीकानेर फोन : ४७८१

स्था. ६-१-८१

पं. दि. ५२६/८०-८१

प्र. प. राज. ३५६१/१५-७-८२

स. वि. क्षेत्र में खादी प्रचार व व प्रसार, ग्रामोद्योग, अनाज, दाल प्रशोधन (पापड़) तथा मसाला इकाई, अम्बर चरखा यूनिट।

पदाधिकारी

अध्यक्ष : श्री सोहनलाल भोजक
उपाध्यक्ष : श्री बशीधर शर्मा
मंत्री : श्री ठाकुर दास खत्री

का.क्षे. बीकानेर शहर, करमीसर पचायत, करनीसर भाटियान, पचायत के अन्तर्गत ११ गाव।

कार्य. सख्या १७

श्र. कामगार १७ कत्तिन-१५००, बुनकर-४० अन्य-२०,

उ.वि. (८७-८८) खादी उत्पादन २६,५६,४४२.०० बिक्री थोक- (प्रांत) ८,२२,३७८.०० (पर प्रात) १६,६८,४५४.००

फुटकर बिक्री—	५,३०,११०.००
ग्रामोद्योग बिक्री—	७,१६,४८६.००
पारिश्रमिक	६,७२,२३८.००

सुरधणा खादी ग्रामोद्योग समिति

पो. सुरधणा, जिला बीकानेर

प्र. प. राज./३५६६

सं. वि. ऊनी माल (कम्बल, शाल, लेडीज शाल, कार्टिग, मलाई शाल) आदि का विशेष उत्पादन हो रहा है।

का क्षे. सुरधणा चौहान, किलचू देवडान, कसरदेशर

कार्य. १४

श्र कत्तिन-१२७५, बुनकर-८०, अन्य-२

उ. वि. (८७-८८) खादी उत्पादन—

	३२,८३,६०३.००
फुटकर बिक्री	५,५८,४५५.००
थोक बिक्री	३०,७१,५६१.००
पारिश्रमिक	६,३३,२०८.००

पदाधिकारी

मंत्री-श्री रूपाराम

कोलासर खादी व ऊन कताई-बुनाई सहकारी समिति लि०

कोलासर, बीकानेर (राज.)

स्था २६-१२-६३

प. वि. ३६६/१६७४

प्र. प. राज./३०५८/१२-१२-७४

सं. वि. ऊनी खादी उत्पादन तथा बिक्री कार्य कर रही हैं।

का.क्षे· कोलासर तथा उसके चारों ओर ५ मील का क्षेत्र

पदाधिकारी

अध्यक्ष-श्री मंगतूराम पडियार,
व्यवस्थापक-श्री गंगाराम पडियार

कार्य. १०
श्र. कत्तिन-१४००, बुनकर-७१, अन्य -३
उ. वि. (८७-८८)-खादी उत्पादन- २७ लाख-
फुटकर बिकी ३ ६० लाख,
थोक बिक्री-(प्रांत) २४.८६ लाख

पारिश्रमिक- ६,६६,५६८.००

●

खादी ग्रामोद्योग विकास समिति

गगाशहर, बीकानेर फोन. ५६७०

स्था. ३० सितम्बर, १६७६
प. दि ४४०/८०-८१
प्र. प. राज./३६३३
सं. वि. खादी-ग्रामोद्योग व पशुपालन के अतिरिक्त अन्य समाजपयोगी सेवा कार्य।
सस्था का मुख्य उत्पादन है-होजयरी, जर्सी, स्वेटर, कोटिंग, मलाई शाल, लेडीज शाल, रेशम मिक्स मेरीनो, मेरीनो प्लेन आदि।

का. क्षे. गंगाशहर बीकानेर, सुजान देशर, श्रीरामसर

सं. मं. अध्यक्ष : श्री हनुमानमल मारू,
उपाध्यक्ष : श्री अखाराम
मंत्री : श्री हजारीमल देवड़ा,
सदस्य : श्री खेताराम, श्री मोड़ाराम, श्री रेवतराम, श्री कोजूराम श्री केशराराम, श्री अमरचंद

कार्य. १३
श्र. कत्तिन-६७०, बुनकर-१५
उ. वि. (१६८७-८८) उत्पादन-१६.५१, १४५.००,
फुटकर बिक्री-५,८६,८६४ ००, थोक बिक्री-२०,१०,५६०.००

पारिश्रमिक ५.२०,२१७ ००

●

सर्वोदय खादी मण्डल

रिड़मलसर, बीकानेर (राज.)

स्था. १३ फरवरी, १६८१
पं दि. ३२१/२६-१२-१६७८
प्र. सं. ३४६८/१-४-१६८०
स. वि. मुख्य प्रवृत्तियां : गाधी विचार के अनुरूप समाज रचना

पदाधिकारी

अध्यक्ष-श्री रामलाल चन्देल,
उपाध्यक्ष : श्री भीखाराम, इणखिया
मन्त्री : श्री भवरलाल गडेर
सह मन्त्री : श्री हस्ताराम रेण,

काय सख्या—७
श्र. कतवारी—८००, बुनकर—४०
उ. वि. (८७-८८) खादी उत्पादन-१३, ३४, ६५६.००, फुटकर खादी बिक्री २,८०,७६०.००, खादी बिक्री थोक १५,०६,४६६.०६

पारिश्रमिक-३,६४,३४५.००

ग्राम स्वराज्य खादी समिति
उदयरामसर (बीकानेर)

पं. दि॰ १४७/१९७८-७९

प्र. प. राज /३३७६

सं. ध. सस्था क्षेत्र मे खादी ग्रामोद्योगों के जरिए ग्रामीणजन को रोजगार उपलब्ध करा रही है।

का. क्षे. ग्राम पचायत-उदयरामसर

पदाधिकारी

अध्यक्ष—श्री कालूराम हटीला,
मन्त्री : श्री किशनाराम वारूपाल,
सह मन्त्री : श्री हरजीराम

उ. वि. (८७-८८)
खादी उत्पादन-७,८२,८६६ ००
फुटकर बिक्री-३,३५,०६७ ००
थोक बिक्री—१४,८१,०५६.००

पारिश्रमिक-४,६२,६७४.००

●

प्रगतिशील ऊन व सूत कताई बुनाई खादी सहकारी समिति लि.
रावतसर हाऊस, जूनागढ के पीछे, बीकानेर

पं. दि. ४०३/दि. ८-१-८४
प्र. प. राज./२५१४
सं. वि. संस्था का उद्देश्य गरीबों को रोजगार प्रदान कर उनका सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक स्तर ऊचा उठाना तथा खादी व ग्रामोद्योगों का विकास करना है। समिति द्वारा निर्मित देशी, मिक्स नया मैरीनों ऊन के चादर, मलाई शाल, कोटिंग, शटिंग, बंडीशाल, मफलर तथा होजरी उत्पादन मे स्वेटर, जर्सी कोट, जुराब, दस्ता और रेडीमेड वस्त्रों मे कोट, गाऊन, जाकेट आदि उत्कृष्ट उत्पादन हैं।

पदाधिकारी

अध्यक्ष—श्री मूलाराम मेघवाल,
व्यवस्थापक—श्री केदारनाथ शर्मा

का. क्षे बीकानेर शहर के खुले क्षेत्र मे
शाखा उपशाखा-रावतसर हाऊस व जसोलाई

●

ग्राम स्वराज्य समिति
लाडनू (नागौर)

स्था. १९६६
प. दि. १०४
प्र प. राज./२७७७
का क्षे. लाडनू प्रखड/बीकानेर मे संस्था का वस्त्रागार है।
कार्य. १२
श्र. कतवारी-२,०००, बुनकर-१८, अन्य-५
उ. वि (८७-८८)
खादी उत्पादन-१६ लाख, खादी बिक्री (फुटकर)-१.३२ लाख, खादी बिक्री (थोक)-प्रात-परप्रात-१८ लाख।

पारिश्रमिक—४.३२ लाख।

पदाधिकारी—अध्यक्ष-श्री मालचन्द बोथरा
मन्त्री—श्री लादूराम वर्मा

●

स्वागत भाषण :

बीकानेर अधिवेशन 'सर्वोदय-तीर्थ' बनेगा

राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गाधी, विनोबा और जयप्रकाश जैसे जीवन साधको के भारत के कोने-कोने से पधारे हुए गाधी, विनोबा, जे पी प्रणीत लोक सेवक मनीषियो का त्याग और बलिदान से भरे राजस्थान मे वेदकालीन सरस्वती नदी के प्रवाह क्षेत्र कपिलमुनि की तपोभूमि बीकानेर मे इस क्षेत्र के नागरिको द्वारा हार्दिक स्वागत है, अभिनन्दन है। साथ ही सर्वोदय के उन महा मनीषियो का हम अभिवादन करते हुए उनके कृतज्ञ हैं, जिन्होने अपने नेतृत्व मे चल रही लोक गगा ग्रामस्वराज्य यात्राओ का यहा पावन मिलन कर बीकानेर को सर्वोदय की त्रिवेणी का सगम स्थल बना दिया है। निश्चय ही यह ऐतिहासिक सगम आपके विचार मथन से निकले नवनीत से आज के परिपेक्ष मे सर्वोदय का प्रकाश पुज बनकर बापू के ग्राम स्वराज्य के सपने को साकार करने के लिए दिशा बोध देने हेतु सर्वोदय तीर्थ' बनेगा।

एक तरफ बीकानेर न अनेक त्याग और बलिदानो से भरे वीरो, लक्ष्मी पुत्रो, दानवीरो, ऋषि-मुनियो, कुशल प्रशासको, साहित्यको, लेखको, विचारको, कवियो, समाज सेवको, कलाविदों तथा गाधी के साथ प्रथम पक्ति मे आये तपोधन श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू की जन्म-भूमि होने के कारण देश-दुनिया को हर क्षेत्र मे रास्ता दिखाया है। आजादी की लडाई मे भी जहा इस क्षेत्र के अनेक देश भक्तो-श्री सत्यनारायणजी सर्राफ, लाला श्री मुक्ताप्रसाद जी, श्री रघुवरदयालजी गोईल, श्री मघारामजी वैद्य आदि अनेक लोगो ने अपना सवस्व लगाया है वैसे ही इस रियासत के महाराजा श्री सार्दुलसिहजी ने नरेन्द्र मडल को तोडकर रियासतो के एकीकरण एव राष्ट्र को मजबूत और सगठित करने मे अपनी भागीदारी निभाई है।

अनेक छोटे बडे कार्यकर्ताओ ने राष्ट्र की आजादी की लडाई तथा गाधीजी के रचनात्मक कार्य, हरिजन उद्धार, साम्प्रदायिक एकता, खादी ग्रामोद्योग, गोरक्षण और सवर्द्धन, ग्राम स्वराज्य आन्दोलनो मे अपना योगदान दिया है। १६४८ के अस्पृश्यता निवारण एव छुआ-छूत मिटाने के आन्दोलन मे श्री विनोबाजी स्वय बीकानेर पधारे है। श्री राममनोहर लोहिया और श्री जयप्रकाश बाबू का तो अनेक बार बीकानेर आगमन हुआ। देश का सबसे बडा भूदान यहा बीकानेर जिले के छत्तरगढ में हुआ है, यहीं बीकानेर जिले मे सकल्पित जिलादान भी हुआ है जिससे प्रभावित होकर तथा श्री विनोबा जी

की प्रेरणा और महान् गांधीनिष्ठ नेता श्री गोकुलभाई भट्ट के प्रयासो से यहा की राज्य सरकार ने सुलभ ग्रामदान एक्ट भी बनाया है।

गोकुलभाई भट्ट के नेतृत्व मे चले शराब बन्दी आदोलनो मे बीकानेर जिले के कर्मठ कार्यकर्ताओ ने महीनो प्रखर आदोलन चला-कर शराब की दुकानो और डिस्ट्रीलरियो पर घरने दिये है। राजस्थान मे पूर्ण शराब बन्दी लागू कराने मे जिले का महत्वपूर्ण योगदान रहा। गोरक्षा सौम्य सत्याग्रह मे भी जिले के लाखो गोभक्तो ने सामूहिक उपवास किये।

भारत का डेनमार्क

इस प्रकार २७५० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का यह बीकानेर जिला जिसमे चार बडे कस्बे, रेत के टीबो के बीच दूर-दूर बसे ६४० छोटे गाव, आबादी सात लाख, यातायात के साधनों का अभाव, वर्षा का औसत बहुत कम, आजादी के ४० (चालीस) साल बाद भी गावों मे पीने के पानी की कठिनाई, निरन्तर अकालो का प्रकोप, इन सब के बीच कठोर परिश्रमी किसानो एव ग्रामीणो के कष्ट साध्य जीवन से यह जिला गोपालन मे भारत का डेनमार्क है। इस जिले में देश प्रसिद्ध राठी नस्ल का गोधन है तथा चोखला नस्ल की उत्कृष्ट भेड़े हैं। ऊन के मामले में बीकानेर एशिया की प्रमुख मण्डी है। यहा की २५ खादी सस्थायें और सहकारी समितिया करीब ७ करोड की ऊनी खादी का उत्पादन कर ग्रामीणों को रोजगार प्राप्त करा रही हैं। जिले के उत्तर पश्चिमी भाग मे इन्दिरा गाधी नहर का निर्माण हुआ है। जिससे करीब २५% लोगो को सिंचित कृषि का लाभ मिलेगा, लेकिन ७५% भाग के लोगों की आ-जीविका आज भी केवल कृषि पर नही बल्कि कृषि, पशुपालन, खादी ग्रामोद्योग इन सब पर मिले-जुले रूप मे आधारित है। गत चार वर्षों से जिले पर सतत् अकालों का प्रकोप रहा है। इसके कारण क्षेत्र के किसानो की आर्थिक स्थिति बिगड़ी है। प्रदेश मे गोसेवा का कार्य करने वाला प्रमुख सगठन राज. गोसेवा सघ व इस क्षेत्र के अन्य गोभक्तो एवं गोसेवा के कार्य मे लगी सस्थायें श्री रामनारायण राठी चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री गोपाल जनहित गोसेवा समिति के प्रयासो से सीमा क्षेत्र के लाखो गोधन को बचाने का प्रयास हुआ है।

आप सभी गाधीनिष्ठ, सर्वोदय समाज रचना और जयप्रकाशजी की सम्पूर्ण क्राति के वाहक मनीषियो का हम बीकानेर की इस मरूधरा पर स्वागत कर रहे हैं। आज देश और दुनिया विषम परिस्थितियों से गुजर रही है। दलगत प्रजातन्त्र चद बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के हाथ का खिलौना बन गया है। कुल दुनिया मे विकल्प की भूख जगी है। दुनिया के लोग गाधी के भारत की ओर आशा लगाए देख रहे हैं। देश मे आज गरीबी, बेकारी, बेरोजगारी, हिसा अराजकता और अनैतिकता का बोलबाला है। राष्ट्र के बडे से बडे आदमी की प्रमाणिकता सशंकित हो चुकी है। शराब की नदिया बहाई जा रही हैं। गाय की कत्ल इतनी तेज हुई है कि आने वाले १०–१५ वर्षों में देश का गोधन समाप्त होने का अन्देशा है। यदि हमारे कृषि प्रधान देश का, जिसमे आज भी ७० से ७५% खेती बैलो से हो रही है। गोधन समाप्त हुआ तो ग्रामवासी, गरीब का जीवनाधार और देश की अर्थव्यवस्था व संस्कृति नष्ट हो जावेगी।

किसानो के हाथ से भूमि निकल कर बहुराष्ट्रीय कपनियो के हाथ मे चली जायेगी। राष्ट्र का प्राण किसान भिखारी और निर्जीव बन जायेगा। इस प्रकार आज राष्ट्र एक भयानक सास्कृतिक सकट मे से गुजर रहा है। ऐसे समय में आपका बीकानेर मे पधारना और अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय परिस्थितियो पर चर्चा कर आगामी कार्यक्रम निर्धारित करना इस सम्मेलन की ऐतिहासिक उपलब्धि होगी। आशा है देश इस सकट से निकल कर पुन. गाधी के रास्ते पर आगे बढ सकेगा।

उज्जैन के सर्वोदय सम्मेलन मे इन सब परिस्थितियो पर चर्चा कर हमने परिस्थिति गाधी के सिवाय कोई रास्ता नही हैं। अनेक देश गाधी के रास्ते पर चलने और समाज परिवर्तन करने के प्रयास कर रहे हैं। लेकिन भोगवाद के गहरे फेर मे फसे उन देशो की परिस्थितिया इतनी अनुकूल नही है जितनी आज भारत की परिस्थितिया अनुकूल हैं। यदि सम्मेलन दृढ सकल्प के साथ देश की नैतिक चारित्रिक बुनियाद को मजबूत करके परिस्थिति एव व्यवस्था परिवर्तन का कार्यक्रम बना सका तो देश और दुनिया मे गाधी विचार को कार्यान्वित किया जा सकेगा।

इस सन्दर्भ मे निम्नोक्त बिन्दु विचारणीय हैं.-(१) आज हमारे बीच गाधी, विनोबा व

आज देश और दुनिया विषम परिस्थितियों से गुजर रही है। दलगत प्रजातत्र चन्द बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हाथ का खिलौना बन गया है। कुल दुनिया मे विकल्प की भूख जागी है। दुनिया के लोग गाधी के भारत की ओर आशा लगाये देख रहे हैं। देश मे आज गरीबी, बेकारी, बेरोजगारी, हिंसा अराजकता और अनैतिकता का बोलबाला है।

परिवर्तन के विचार को स्वीकार किया था। इस सम्मेलन मे हम उस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कोई एक सूत्री कार्यक्रम बनाकर और उसमे अपनी सामूहिक शक्ति लगाकर उसे कार्यान्वित करने का निर्णय लेंगे, यह अपेक्षा है।

व्यवस्था परिवर्तन का कार्यक्रम

हम यह मानते हैं कि उपरोक्त वर्णित सकटो का हल सर्वोदय सगठन के द्वारा ही सम्भव है। दुनिया के अनेक देशो के प्रबुद्ध लोगो, नोबेल पुरस्कार विजेताओं ने भी इसे स्वीकार किया है। यदि विश्व मे शान्ति कायम करनी है, मानवता को बचाना है तो जयप्रकाश जैसा नेतृत्व नही है। हमने गणसेवकत्व और नेतृत्व का स्वीकार किया है। अनेक महान मनीषी इस सगठन से जुड हैं और यहा मौजूद हैं। गाधी के रचनात्मक कार्यों मे लगे हैं। कुछ गोरक्षा और गोसेवा के कार्य मे, कुछ शराबबन्दी के कार्य मे, कुछ हरिजन सेवा, साम्प्रदायिकता निवारण, खादी ग्रामोद्योग, सघन क्षेत्र निर्माण के कार्य मे कुछ पर्यावरण शुद्धि मे, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेकारी उन्मूलन के कार्य मे लगे हैं। सभी कार्यक्रम आवश्यक हैं पर कोई एकाकी कार्यक्रम सफल नही हो सकेगा। नैतिक आध्यात्मिक जागरण, व्यवस्था-

परिवर्तन और सम्पूर्ण क्रांति के बिना ये सब प्रयास अधूरे ही रहेंगे। अधिवेशन मे होने वाली चर्चाओ के आधार पर एक निश्चित, व्यवहारिक, ठोस कार्यक्रम निर्धारित करने और पूरी शक्ति लगाकर उस पर अमल करने की आवश्यकता है। सबकी शक्ति लग सके ऐसा एक सूत्री कार्यक्रम यदि अधिवेशन दे सका तो निश्चय ही आम जनता की निराशा टूटेगी, लोगों की आस्था जगेगी और सभी कार्यक्रमों को सफल बनाया जा सकेगा।

(२) आज यह अभाव महसूस हो रहा है कि नये कार्यकर्ता एव युवक इस कार्यक्रम की अगुवाई नही कर रहे हैं। आवश्यकता है ऐसे स्वाध्याय केन्द्र और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने की जिससे नये विचारनिष्ठ कार्यकर्ताओ का निर्माण हो सके और वे इस कार्यक्रम की अगुवाई के भागीदार बन सके।

(३) परिस्थिति परिवर्तन का यह कार्य आज राजनेता राजनीतिक दलो से होना सम्भव नही रह गया है। इसके लिए आवश्यक है कि कुल विश्व मे मानवीय भाईचारे पर आधारित जन सगठन खडे हो। हमारे देश मे भी ८०% ग्रामीणो और किसानों को संगठित करने के कार्यक्रम को प्राथमिकता देनी होगी।

(४) आज आवश्यक हो गया है कि सभी राजनैतिक एवं गैर राजनैतिक लोगों, रचनात्मक कार्यकर्ताओ और बुद्धिवादियो के बीच विचार और कार्यक्रम का ताल मेल बैठाने हेतु सभी पक्षों के साथ वार्तालाप का रास्ता खोला जाये। सर्वोदय समाज इसमे पहल करें और उसकी मुख्य भूमिका निभायें।

इसी निवेदन के साथ अपेक्षा है बीकानेर मे आपका पधारना और इस अधिवेशन का होना ऐतिहासिक सिद्ध होगा और अन्धकार मे झूलती मानवता, विश्व और देश को हम गाधी की कल्पना के शोषण मुक्त, शासन-विहीन, श्रमनिष्ठ अहिंसक समाज रचना की ओर आगे बढाने के कार्य मे यशस्वी बन सकेंगे। इन्ही शब्दो के साथ आप सब का पुनः पुनः स्वागत करते हुए हमे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। हमारी व्यवस्थाओं मे कमिया रह सकती हैं। आशा है, यह गाधी परिवार उसे कुशल बनाने मे हमारा मार्गदर्शन करेगा।

भंवरलाल कोठारी
(स्वागताध्यक्ष)
सर्व सेवा सघ अधिवेशन

बीकानेर :
२५ अगस्त, १९८८

परिशिष्ट-2

सर्व सेवा संघ-अधिवेशन, बीकानेर

स्वागत समिति–सदस्य

श्री भवरलाल कोठारी	स्वागताध्यक्ष	श्री द्वारका प्रसाद सोनी	सदस्य
श्री रामदयाल खडेलवाल	स्वागतमत्री	श्री सुरेश कुमार पुरोहित	,,
श्री इन्दूभूषण गोईल	सदस्य	श्री शकरलाल शर्मा	,,
श्री सोहनलाल मोदी	,,	श्री हरिकृष्ण गुप्ता, दिल्ली	,,
श्री वी० के० जैन	,,	डा० कालीचरण माथुर	,,
श्री शम्भूनाथ खत्री	,,	श्री दीपसिह बडगूजर	,,
श्री अमरनाथ कश्यप	,,	श्री गोपाल राठी	,,
श्री कृष्णचन्द्र मिश्रा	,,	श्री भागीरथ राठी	,,
श्री रामधन वर्मा	,,	श्री रामनारायण राठी	,,
श्री के राज पेन्टर	,,	श्री रामेश्वर तापडिया	,,
श्री शिवभगवान बोहरा	,,	श्री कोडामल बोथरा	,,
श्री रामचन्द्र पुरोहित	,,	श्री जगमोहन दास मूंदडा	,,
श्री महावीरप्रसाद शर्मा	,,	श्री चम्पालाल पेडीवाल	,,
श्री चिरजी लाल सुनार	,,	श्री पन्नालाल अग्रवाल	,,
श्री नौरतनमल सुराणा	,,	श्री हनुमान दास चाडक	,,
श्री मूलचन्द पारीक	,,	श्री किशनचन्द्र बोथरा	,,
श्री नसिहदत्त शर्मा	,,	श्री दिनेश चन्द्र जैन	,,
श्री बलवन्तसिंह रावत	,,	श्री ठाकुरदास खत्री	,,
श्री किशनाराम, (उदयरामसर)	,,	श्री रामेश्वर गर्ग	,,
श्री वासुदेव विजयवर्गीय	,,	श्री गगाराम बोलासर	,,
श्री काशीनाथ शर्मा	,,	श्री विभूतिभूषण स्वामी	,,
श्री विपिन चन्द्र गोईल	,,	श्री रतनबाई दम्माणी, बीकानेर	
श्री राजेन्द्र	,,	श्री रूपाराम, (सुरधणा खा. ग्रा. स.)	,,
श्री अर्जुन दास स्वामी	,,	श्री शुभू पटवा	,,
श्री एस० डी० जोशी	,,	श्री ओमप्रकाश गुप्ता	,,
श्री सत्यनारायण पारीक	,,	श्री गिरधर पुरोहित	,,
श्री चौथलाल सुथार	,,	श्री धर्मचन्द जैन	,,
श्री राम किशन बिस्सा	,,	श्री राधेश्याम शर्मा	,,
श्री शिवदयाल गुप्ता	,,	चौधरी मघाराम	,,
श्री भागीरथ शिवरान	,,	श्री सुखदेव सुथार	,,

सर्व सेवा संघ अधिवेशन : विभिन्न समितियाँ

1. आवास-निवास समिति

श्री शम्भूनाथ खत्री	संयोजक
श्री सोहनलाल मोदी	सदस्य
श्री मूलचन्द पारीक	,,
श्री इन्दू भूषण गोईल	,,
श्री रामदयाल खंडेलवाल	,,

2. प्रचार प्रकाशन समिति

श्री गिरधर पुरोहित	सयोजक
श्री वासुदेव विजयवर्गीय	सदस्य
श्री दीपसिंह बडगूजर	,,
श्री धर्म चन्द्र जैन	,,
श्री सोहन लाल मोदी	,,
श्री रामदयाल खंडेलवाल	,,

3. पडाल एवं सभा-व्यवस्था समिति

श्री धर्म चन्द्र जैन	सयोजक
श्री शम्भू नाथ खत्री	सदस्य
श्री वी० के० जैन	,,
श्री रामदयाल खडेलवाल	,,

4 सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

श्री अमर नाथ कश्यप	संयोजक
श्री मुमताज अली	सदस्य
श्री वी० के० जैन	,,
श्री रामदयाल खडेलवाल	,,

5. भोजन व्यवस्था समिति

वैद्य महावीर प्रसाद शर्मा	संयोजक
श्री शम्भू नाथ खत्री	सदस्य
श्री भागीरथ राठी	
श्री सोहन लाल मोदी	,,
श्री शिव दयाल गुप्ता	,,
श्री गोपाल राठी	,,
श्री वीर देव कपूर	,,
श्री रामदयाल खंडेलवाल	,,

6. अर्थ समिति

श्री भवरलाल कोठारी	सयोजक
श्री सोहन लाल मोदी	सदस्य
श्री मूलचन्द पारीक	,,
श्री इन्दुभूषण गोइल	,,
श्री बलवन्तसिंह रावत	,,
श्री वी० के० जैन	,,
श्री रामदयाल खडेलवाल	,,

7. स्मारिका समिति

श्री मूलचन्द पारीक	संयोजक
,, सोहनलाल मोदी	सदस्य
,, भवरलाल कोठारी	,,
,, वी. के जैन	,,
,, वासुदेव विजयवर्गीय	
,, रामदयाल खण्डेलवाल	,,

4

विज्ञापन

□

जिन व्यक्ति और प्रतिष्ठानों ने,
की कृपा, दिखाया अपनापन ।
हम कृतज्ञ हैं उन सबके,
यहां दिया जिन्होंने विज्ञापन ॥

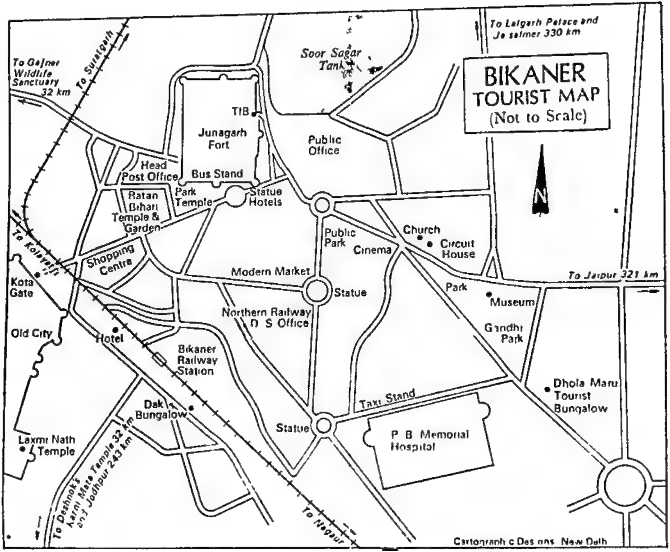
BIKANER
TOURIST MAP
(Not to Scale)
N
To Lalgarh Palace and Jaisalmer 330 km
Soor Sagar Tank
To Gajner Wildlife Sanctuary 32 km
To Suratgarh
TIB
Junagarh Fort
Public Office
Head Post Office
Bus Stand
Ratan Bihari Temple & Garden
Park Temple
Statue Hotels
To Kolayatji
Shopping Centre
Public Park
Church
Circuit House
Cinema
Modern Market
Statue
To Jaipur 321 km
Park
Museum
Kota Gate
Northern Railway D S Office
Gandhi Park
Old City
Hotel
Bikaner Railway Station
Dhola Maru Tourist Bungalow
Dak Bungalow
Taxi Stand
Statue
P B Memorial Hospital
Laxmi Nath Temple
To Deshnok's Karni Mata Temple 32 km and Jodhpur 243 km
To Nagaur
Cartographic Designs New Delhi

सर्व सेवा संघ-अधिवेशन, बीकानेर के अवसर पर
हमारी हार्दिक शुभकामनाएं

फोन . निवास 3971
4182
दुकान 4877

राजस्थान एजेन्सी

ग्रेन मर्चेन्ट्स एण्ड कमीशन एजेन्ट्स
५४, नई अनाज मण्डी, बीकानेर-३३४००१

शुभकामनाओ सहित :

तार : कमलशान्ति

फोन : दुकान 3904
4923
घर 6358

कमलचन्द शान्तिलाल

अनाज व किराने के थोक व्यापारी व कमीशन एजेन्ट्स
मालू कटला, फड बाजार, बीकानेर (राज०)

सम्बन्धित प्रतिष्ठान :

फोन · 43
कमलचन्द शान्तिलाल
पो० अनूपगढ (राज०)

फोन . 51
लूनकरनसर ट्रेडिंग कं०
पो० लूनकरनसर (बीकानेर)

घड़चन्द ज्ञानीराम
27, नई कृषि मण्डी, बीकानेर

With Best Compliments From

Each and every one of you should Consider himself to be a trustee for the rest of his fellow labourers and not be self seeking —Gandhi

Phone : 233403

M/s CHOADHRY BROTHERS

1-2 3/6 Domalguda, HYDERABAD-500 029

Authorised Dealers for

Bajaj Auto Ltd.
Autoricksshaw
Auto Track Trailer
Delivery Van, Pick up-Van & Spare Parts

Maharashtra Scooters Ltd
Priya Scooters and sparse parts

राव बीका की ऐतिहासिक नगरी में
सर्वोदय के साथियो का
सम्मानपूर्ण स्वागत !

लोकमत ही ऐसी शक्ति है, जो समाज को शुद्ध और स्वस्थ रख सकती है।
—गांधीजी

फोन : 4184

मैसर्स रामलाल जुगल किशोर खत्री

दाऊजी रोड़, बीकानेर

हमारे यहां छैने व मावे की सभी प्रकार की मिठाईयां थोक व खुदरा मिलती हैं।
सेवा का अवसर देकर अनुगृहीत करें।

शुभकामनाओ सहित :

खादी एवं ग्रामोद्योगो को अपनाकर
दरिद्रनारायण की सेवा मे सहयोग दें '

रजिस्टर्ड न० 327 प्रमाणपत्र नं० 3498

(खादी-ग्रामोद्योग आयोग से प्रमाणित)

❋ सर्वोदय खादी मंडल ❋

रिडमलसर (बीकानेर)

रामलाल चन्दल
अध्यक्ष

भंवरलाल गडेर
मन्त्री

शुभकामनाओ सहित :

विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था का संस्थान

लोक भारती समिति

शिवदासपुरा (जयपुर)

उत्पादन : सरसों व तिल्ली का शुद्ध तेल ।
लोक भारती साबुन ।
खादी व तैयार वस्त्र (सूती, ऊनी, रेशमी)

उत्पत्ति केन्द्र : चाकसू, कोटखावदा, गाधी कुटीर-शिवदासपुरा

विक्री केन्द्र : लोक भारती समिति, खादी ग्रामोद्योग भंडार टोंक फाटक, जयपुर ।

खादी भडार-चाकसू, शिवदासपुरा, कोटखावदा,
शुद्ध वस्तुओ का उपयोग कर अपनी स्वास्थ्य-रक्षा कीजिये ।

जवाहिरलाल जैन
अध्यक्ष

राधेश्याम रावत
मन्त्री

सिन्टेक्स

दुनियाकी नं. १ प्लास्टिक पानी की टंकिया

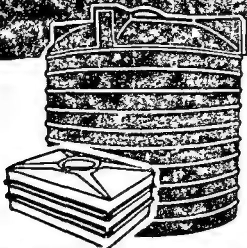

- मजबूत एव टिकाऊ
- १०० % लीकप्रूफ एव रस्टप्रूफ
- बहुत ही आरोग्यप्रद
- १०० लिटर मे २० ००० लिटर की विविध माईजो एव आकारो मे उपलब्ध

आनंद मोटर्स एन्ड इलैक्ट्रोनिक्स

स्टेशन रोड, बिकानेर.

फॉन · ६५२१

मेरा तुच्छ काम तो लोगों को यह दिखाना है कि वे अपनी कठिनाइयां स्वयं कैसे हल कर सकते हैं। —गांधीजी

शुभ कामनाओं के साथ

मैसर्स पेक बर्थ

एफ–177, बीछवाल इन्डस्ट्रियल एरिया,

बीकानेर (राज०)

★

राजभोग, रसमलाई रसगुल्ला, चमचम आदि छैने की
मिठाई के उत्पादक तथा थोक विक्रेता

कृपया, सेवा का अवसर देकर अनुग्रहीत करें

With best compliments from :

> Truth alone will endure, all the rest will be swept away before the tide of time.
>
> —Gandhiji

Cable : DALMIADARY

Phones : 3343, 3417 & 2056

Dalmia Dairy Industries

Prop. : Dalmia Dairy Industries Ltd.

MANUFACTURERS OF :

'Sapan' Ghee, Skimmed Milk Powder, Infant Milk Foods,

Whole Milk Powder, Milk Care Series Products.

Address :

Ghana Sewar Bypass Road,

BHARATPUR (Rajasthan)

काशी का वास खादी ग्रामोदय समिति
बजाज भवन, सीकर

हमारे प्रसिद्ध उत्पादन

सीकर की चोखला ऊन से निर्मित कम्बल, चैक, मलाई शाल, लेडीज शाल, टूवीड का उपयोग का क्षेत्र की जनता को रोजगार देने मे सहायक बनिये

राधाकृष्ण बजाज — अध्यक्ष
रामवल्लभ अग्रवाल — उपाध्यक्ष
जगदीशचन्द्र झरवाल — मंत्री

सीकर जिला खादी ग्रामोदय समिति
रींगस (सीकर)

हमारे

ऊनी खादी-कोटिंग, मलाई शाल, चादर, लेडीज शाल, हौजरी, स्वीटर, टूवीड

तथा

दो सूती, रेशम का उपयोग कर क्षेत्र की जनता को रोजगार देने मे सहयोग करें।

रामेश्वर अग्रवाल — अध्यक्ष
भवरलाल अग्रवाल — मंत्री

सत्ता से दूर, सेवा मे समर्पित साथियो को शुभकामनायें

(खादी ग्रामोद्योग कमीशन द्वारा प्रमाणित)

नोखा खादी ग्रामोद्योग संघ
नोखा (जिला बीकानेर) राजस्थान

बीकानेर पता
५१, सादुलगञ, बीकानेर (राज)

आलमसिंह नेगी — मन्त्री

सर्व सेवा सघ के अधिवेशन की सफलता की शुभकामनायें

फोन : ५१४१

बीकानेर खादी व ऊन कताई-बुनाई सहकारी समिति लिमिटेड
चौतीने कूआ के पास, बीकानेर

रामलाल — अध्यक्ष
धूड़ाराम — व्यवस्थापक

With Best Compliments From :

THE BIKANER WOOLLEN MILLS

- EXCLUSIVE MANUFACTURER OF 100% BIKANER CHOKLA YARN FOR IDEAL CARPETS
- EXPORTERS OF QUALITY CARPETS BETTER THAN PERSIAN CARPETS OUT OF BIKANER CHOKLA WOOL A SPECIALITY.

Mills and Main Office :

The Bikaner Woollen Mills, Post Box No 24, Industrial Area,
BIKANER (Rajasthan)

Phone : 3204/3356/4857 Gram : WOLYARN

Branch Office :

Srinath Katra, BHADOHI (Varanasi)

Phone : 778, 578 Gram : WOLYARN

Head Office :

4, Mir Bhor Ghat Street, CALCUTTA-7

Phone : 385960/250244 Cable : WOOALETRP

सर्व सेवा संघ अधिवेशन के अवसर पर

हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ

भगवान का कार्य करते हुए संयम-पूर्वक जीवन व्यतीत करना बड़ी दुर्लभ वस्तु है।

—गांधीजी

गंगा वूल ट्रेडर्स

डागों का मोहल्ला, भैरू जी की गली,

बीकानेर (राजस्थान)

★

ऊन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट, मशीन टैक्सटायल, स्पेयर पार्ट्स एण्ड कार्डिंग प्लेट सप्लायर्स, धागा मेरीनो टोप्स

सर्व सेवा संघ अधिवेशन, बीकानेर के अवसर पर

हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ

मैसर्स सतीशकुमार मनोजकुमार एण्ड कं०
नई मंडी, बीकानेर

□

मैसर्स गुजरात मिर्च भण्डार
नई मंडी, बीकानेर

□

मैसर्स वालचन्द रांका
नई मंडी, बीकानेर

□

मैसर्स दिनेश ट्रेडिंग कं०
नई मंडी, बीकानेर

□

मैसर्स धर्मचन्द सतीशकुमार
नई मंडी, बीकानेर

□

मैसर्स छोगमल किरणकुमार
नई मंडी, बीकानेर

With Best Compliments From .

"Real Swaraj will come not by the acquisition of authority by a few but by the acquisition of the Capacity by all to resist authority when it is abused In other words, Swaraj is to be attained by educating the masses into a sense of their Capacity to regulate & control authority."

—Gandhiji

Telephone [Offi . 3940 [Res . 3962

DARGAR TRADING COMPANY

General Merchants & Commission Agents

Phar Bazar BIKANER 334 001 (Rajasthan)

सर्व सेवा संघ के बीकानेर-अधिवेशन के अवसर पर शुभ कामनाओं सहित

खादी ग्रामोद्योग के माध्यम से

ग्राम स्वराज्य (सम्पूर्ण क्रांति) के लिए प्रयासरत

खादी ग्रामोद्योग आयोग द्वारा प्रमाणित

(प्रमाण पत्र नं० १ [illegible] ।ज)

क्षेत्रीय समग्र लोक विकास संघ

सर्वोदय सदन गोगा गेट, बीकानेर फोन 5953

कृपया, हमारा उत्पादन (सभी प्रकार की ऊनी खादी, शाल, चादर, लेडीज शाल, मफलर, कोटिंग, होजरी आदि) खरीद कर खादी के माध्यम से देश मे लगे लाखो व्यक्तियो को रोजगार उपलब्ध कराने मे सहयोग दीजिये ।

सोहनलाल मोदी
अध्यक्ष

रामदयाल खण्डेलवाल
मन्त्री

सर्व सेवा संघ अधिवेशन, बीकानेर में आये हुए सर्वोदय सेवकों का

हार्दिक अभिनन्दन

- मैसर्स विलायतीराम
  फड़ बाजार, बीकानेर
- मैसर्स रघुवरदयाल शर्मा
  फड़ बाजार, बीकानेर
- मैसर्स लालचन्द गोपालचन्द
  फड़ बाजार, बीकानेर
- मैसर्स सदासुख माणकचन्द
  फड़ बाजार, बीकानेर
- मैसर्स रघुनाथ ट्रेडिंग कं०
  फड़ बाजार, बीकानेर
- मैसर्स राधाकिशन राजेन्द्र कुमार
  फड़ बाजार, बीकानेर
- मैसर्स सेठिया एण्ड कं०
  नई मण्डी, बीकानेर
- मैसर्स मेघराज सोहनलाल
  बीकानेर

ग्रामीण एवं दस्तकारी का

अद्‌भुत संगम

ग्रामोद्योगों को अपनाइये

- ☐ आकर्षक लकड़ी लोहा फर्नीचर
- ☐ आकर्षक कोकरी
- ☐ अखाद्य साबुन
- ☐ शुद्ध मसाले
- ☐ चर्म-जूते, चप्पल रेडीमेड
- ☐ चूना व सन्दला
- ☐ शुद्ध खाद्य तेल

तथा

ग्रा
मी
ण

रोजगार में राष्ट्र के सहायक बनिये।

(स्व. बाबू श्री रघुवर दयाल गोईल द्वारा स्थापित)

खादी मन्दिर, बीकानेर

ग्रामोद्योग परिसर, औद्योगिक क्षेत्र, बीकानेर

फोन : 6789

बीकानेर में आयोजित सर्व सेवा संघ अधिवेशन के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ

卐

"सम्पूर्ण क्रांति की यह लड़ाई मूल्यों की और नैतिकता की लड़ाई है। इसलिए इस लड़ाई में यह जरूरी है कि परिवर्तन की आकांक्षा रखने वाला स्वयं भी बदले। जिन मूल्यों पर हम नये समाज को खड़ा करना चाहते हैं—समता, स्वावलम्बन, शांति, सच्चाई--वे सब हमारे जीवन और व्यवहार में भी उतरना चाहिए।"

—सिद्धराज ढड्ढा

सुरधणा खादी ग्रामोदय समिति

पो० सुरधणा, जिला-बीकानेर (राज०)

धौंकलराम	प्रो. गिरीशचन्द्र पंत	रूपाराम	चेतनराम
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	मंत्री	सहमंत्री

ग्राम–स्वराज्य समिति लाडनूं
(जिला नागौर)

राजस्थान की चोखला ऊन से बने
मैरीनो व मिक्स मैरीनो

* बढ़िया कोटिंग * बेबीशाल * मफलर * लोई * होजरी आदि

कत्तिन स०—2000 कार्यकर्ता—12 बुनकर संख्या—18

हमारे केन्द्र : * खादी भण्डार लाडनू
* वस्त्रागार, रानी बाजार, बीकानेर

उत्पादन—ऊनी 18 लाख, बिक्री थोक 18 लाख, फुटकर ऊनी सूती-2 लाख

कताई केन्द्र :

* सुनारी * उपकेन्द्र धोलिया * उपकेन्द्र मीठड़ी
* उपकेन्द्र कुसुम्बी * उपकेन्द्र रींगण * उपकेन्द्र तवरा

एक बार पधार कर अवश्य अनुग्रहीत करें।

मालचन्द बोथरा
अध्यक्ष

लादूराम वर्मा
मन्त्री

जिस चीज का आरम्भ करो, विचारपूर्वक करो और जिसे आरम्भ करदो, उसे अंत तक पहुँचाये बिना मत छोड़ो। —गांधीजी

सर्व सेवा संघ अधिवेशन के अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं

फोन : 36

नापासर खादी व ऊन कताई बुनाई सह० समिति लि०
नापासर (बीकानेर)

With Best Compliments From :

Phone Fac. 5416
Res 5953

MODI FOOD PRODUCTS

Manufacturers of :

Tin Pack Rasgulla, Rajbhog, Keshar Bati, Chamcham Gulab Jamun, Star Grapes, Paneer & All Types of Bikaneri Sweets, Bhujiya & Papad

F-200, BICHHWAL INDUSTRIAL AREA,
BIKANER-334002 (Raj.)

With Best Compliments From .

Prabha Cotton Industries

Manufacturers of :

Absorbent Cotton Wool I P., Bandage, Sanitary Napkins & Special Razai Etc.

Phone Off. : 4805/5905
Res. : 5805

123, INDUSTRIAL AREA
BIKANER-334001

वचन दिया न जाय, किन्तु देने पर देह देकर भी पाला जाय।

—गांधीजी

सर्व सेवा संघ के अधिवेशन की सफलता

की

शुभकामनाएँ

★

ग्राम-स्वराज्य खादी समिति

उदयरामसर (बीकानेर)

चालराम हटीला
अध्यक्ष

किशनाराम वारुपाल
मन्त्री

शुभकामनाओ सहित :

दैव को अनुकूल करने के लिए साधन कौन से हैं?
पहला प्रयत्न और दूसरा प्रार्थना, —विनोबाजी

★

फोन : घर 6297
आफिस 4657

सारड़ा ट्रेडिंग कम्पनी

जनरल मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

दुकान 16, नई अनाज मण्डी, बीकानेर

With Best Compliments From :

Gram : MARUDHARA
Phone : 6371 & 6771

BIKANER CERAMICS PVT. LTD.,
INDUSTRIAL AREA, BIKANER

Manufacturers of :

L. T. & H. T. INSULATORS AND PRESSED ELECTRICALS

and

OWNERS OF BALL CLAY MINES & SUPPLIERS

Branches :

JAIPUR
4, Malviya Marg,
"C" Scheme,
Jaipur.
Phone : 66559
Gram : KALINDI

CALCUTTA
12/1-B, Lindsay Street
Calcutta-700 087
Phone : 247231
245631
(2 Lines)
Gram : KALINDI

DELHI
91, Nehru Place,
Bhandari House,
6th Floor,
New Delhi-110 019
Phone : 6433048
6432521
Telex : 7212
Gram : GEOMILLOO

लोग कहते हैं "साधन आखिर साधन ही है।" मैं कहूंगा
"साधन ही आखिर सब कुछ है। जैसे साधन होंगे,
वैसा ही साध्य होगा। साधन और साध्य के
बीच दोनों को अलग-अलग करने
वाली कोई दीवार नहीं है।"

—गांधीजी

★

★

तार : खादीविकास

फोन : 6842

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन द्वारा प्रमाणित

खादी-ग्रामोद्योग विकास समिति

प्रधान कार्यालय, गंगाशहर

बीकानेर (राजस्थान), रेल्वे स्टेशन : बीकानेर (उ. रे.)

हनुमानमल मारू
अध्यक्ष

हजारीमल देवड़ा
मन्त्री

सर्वोदय सेवकों के सम्मेलन की
सफलता की आकांक्षा के साथ

●

सच्ची नम्रता हम से जीवमात्र की सेवाके लिए
सब कुछ अर्पण करने की आशा रखती है।
—गांधीजी

खादी ग्रामोद्योग विकास संस्थान, झझू

प्रधान कार्यालय :— विकास भवन, झझू
तह०श्री कोलायतजी जिला—बीकानेर (राज०)

चम्पालाल उपाध्याय
अध्यक्ष

जवाहरमल जैन (सेठिया)
मन्त्री

हार्दिक शुभेच्छा :

हर एक धर्म में जो रत्न की सी बात
हाथ आवे, उसको लेलें और अपने धर्म की
अच्छाई को बढ़ाते चलें। —गांधीजी

●

फोन : 3776

मैसर्स लालचन्द जुगल किशोर

कोटगेट, स्टेशन रोड़, बीकानेर

●

शुद्ध व स्वादिष्ट
जुगल के रसगुल्ले, मिठाइयाँ व भुजिया

सेवा का अवसर देकर अनुगृहीत करें।

बस्सी प्रखंड के सघन विकास में यह समिति पिछले
२० वर्षों से प्रयत्नशील है । अतः इसके द्वारा
उत्पादित खादी और ग्रामोद्योगी वस्तुओं
का उपयोग करके राष्ट्र निर्माण के
कार्य में हाथ बंटाइये ।

आप भी खादी ग्रामोद्योग अपनाइये
गांवों की उन्नति में भागीदार बनियें

खादी ग्रामोद्योग सघन विकास समिति

बस्सी (जयपुर)

छीतरमल गोयल
अध्यक्ष

लक्ष्मीचन्द भण्डारी
मन्त्री

सहज मिले सो दूध सम, मांगा मिले सो पानी ।
कह कबीर वह रक्त सम, जामें खेंचा तानी ।।
—कबीर

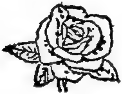

फोन घर -4451
दुकान-4001

बीकानेर का प्रसिद्ध

अग्रवाल भुजिया भण्डार

सुख लेचा कटला, कोटगेट, बीकानेर-334001

पिछड़े वर्ग एवं बेरोजगारो को राहत

तथा

विषमता निवारण में सहयोग देने हेतु

राजस्थान खादी संघ

के

जयपुर स्थित खादीघर, जौहरी बाजार भण्डार

आदर्श नगर भण्डार, बापूनगर भण्डार एव ग्राम शिल्प

तथा

जोधपुर, पाली, अजमेर, कोटा, बून्दी, रामगंज मण्डी

झालावाड़, झुंझुनू, खेतड़ी, चिड़ावा, पिलानी

सरदार शहर, निवाणा, हस्तेड़ा, राजगढ

कालाडेरा आदि बिक्री केन्द्रो से

सूती, ऊनी, रेशमी, खादी एवं ग्रामोद्योग वस्तुएँ खरीदिये ।

राजस्थान खादी संघ, खादीबाग

जयपुर (राज०) द्वारा प्रसारित

With Best Compliments From .

It is better to allow our life to speak
for us than our words. —Gandhiji

KAMAL SINGH NARENDRA KUMAR

Branch Office :
CHAURI SARAK,
NEAR SUNEHRI GURDWARA
LUDHIANA-141 008 (Punjab)

NAYA SAHAR,
BIKANER - 334 001
(RAJASTHAN)

Dealers in :

**TOPS, WOOL, WOOL-WASTE, SYNTHETIC FIBRES,
WOOLLEN COTTEN & STAPLE YARNS**

Phone [Res. : 3287
[Offi. : 4608

Cable : VICTORY

जिसमें यह अडिग श्रद्धा है कि सत्य की नित्य जय ही है, उसके शब्दकोष में 'हार' जैसा कोई शब्द ही नही होगा ।
—गांधीजी

सर्व सेवा संघ अधिवेशन में उपस्थित देश के सर्वोदय सेवकों का

हार्दिक अभिनन्दन

★

फोन : 4240

विश्वकर्मा इन्जीनियरिंग वर्क्स

5-ए, इण्डस्ट्रीयल एरिया, बीकानेर-334001 (राज०)

सर्व सेवा संघ अधिवेशन के अवसर पर पधारे हुए सर्वोदय सेवकों का

हार्दिक अभिनन्दन

बिल्कुल निर्दोष तो सिवा एक परमेश्वर के कोई नही है, उसी तरह केवल दोषपूर्ण भी इस ससार मे कोई नही है ।
—विनोबाजी

कोलासर खादी व ऊन कताई बुनाई सहकारी समिति लि०

कोलासर

(बीकानेर-राजस्थान)

मगतुराम
अध्यक्ष

गगाराम
व्यवस्थापक

प्राचीनता एवं आधुनिकता का
अनूठा संगम

* ऊनी खादी
* सूती खादी
* रेशमी खादी
* पीली खादी

खादी अपनाइये

(स्व. बाबू श्री रघुवर दयाल गोईल द्वारा स्थापित)

खादी मन्दिर, बीकानेर

पब्लिक पार्क के पास—बीकानेर

खादी परिसर
फोन : 4514

फिनिशिंग प्लान्ट
फोन : 4726

With best compliments from :

The power of the sword, money or intellect is only with a few, but that of love is with all. For everybody attends the god-designed school of love. There is universal education of love.

—Vinoba

R. S. T. No. 812/19

C. S. T. No. 1452/CTO/BKN

Phone : Off. 2
Resi. 5194
Fac. 5594

SURANA WOOL ENTERPRISES

Manufacturers & Suppliers of :

Carpet, Wollen Yarn, Wool Top, Raw Wool & Wool Waste.

DANTI BAZAR, BIKANER (RAJ.) 334 001

"My notion of democracy is that under it the Weakest should have the same opportunity as the strongest That can never happen except through non-violence —*Gandhiji*

With Best Compliments From :

J. R. TRANSPORT

RANI BAZAR,

BIKANER

(Rajasthan)

सर्व सेवा संघ अधिवेशन, [illegible] के अवसर पर

हार्दिक [illegible] नाएं

[illegible] ता अर्थ स्वराज्य
[illegible] सल्तनत
[illegible], उसके
[illegible] करती,
[illegible]
[illegible] जाय वह आज
[illegible]

—गांधीजी

जैसलमेर जिला खादी ग्रामोदय परिषद

जैसलमेर (राज०)

भगवानदास माहेश्वरी
अध्यक्ष

नन्दकिशोर भाटिया
मंत्री

With Best Compliments From :

Phone [4439 / 6639

SHRI D. M. KALYANI (NOHAR WALE)

Mal Godam Road, BIKANER

Firms :

SHRI HANUMAN PAPER INDUSTRIES

Manufacturers of :

CHETAK & SUMAN Brand Exercise & Long Books

Stockists of : All Kinds of Paper & Board

□

G. D. SALES AGENCIES

Distributors of :

□ CAMLIN Pvt. Ltd., Bombry □ GANGES Printing Inks, Bombay

Stockists of : All Kinds of STATIONERY & General Order Suppliers

KALYANI PRINTERS

House of Quality Printing & Binding

शुभ कामनाओं सहित :—

उत्तमोत्तम विचार प्रकट करने का चिन्ह कमल है। कमल स्वच्छ और पवित्र होकर भी अलिप्त रहता है। वैसा रहना सीखना चाहिए।

—विनोबाजी

फोन : 5781

बीकानेर खादी ग्रामोद्योग संस्थान

के० जी० टाइल्स फैक्ट्री के पीछे, रानी बाजार,

बीकानेर (राजस्थान)

हमारे ऊनी खादी-कोटिंग, मलाई शाल, चादर, लेडीज शाल, होजरी, स्वेटर, जरसी-उत्पादन को खरीदकर क्षेत्र में जनता को रोजगार प्रदान करने में सहयोग करें।

सोहनलाल भोजक	वशीधर शर्मा	ठाकुरदास खत्री
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	मंत्री

With Best Compliments From :

Tel.-Mahabir

Phone : Off. : 5725
Res. : 5825
4363

Mahabir Trading Co.

34, New Anaj Mandi,
BIKANER-334 001

With Best Compliments From :

Grams : 'Chemiclay'

Phone : 6567

G. S. Industries

Mfg. : Chinaclay Powder, Gypsum & Plaster of Paris

G-212, F-211, Bichhwal, Industrial Area,
BIKANER-334 002

सेवा के लिए छोटा क्षेत्र चाहिए। चिंतन के लिए व्यापकता चाहिए। अगर अपना चिंतन हमने छोटा बनाया, तो हम खतरे मे है। अगर हम सेवा को व्यापक बनाने की कोशिश करेंगे तो हमारे हाथ से सेवा ही नही होगी। चिंतन छोटा हो गया तो हम संकुचित हो जायेंगे, तो निष्फल हो जायेंगे। आख की व्यापकता और पाव की सेवावृत्ति।

—विनोबाजी

सर्व सेवा संघ अधिवेशन, बीकानेर के अवसर पर

हमारी हार्दिक शुभकामनाएं

हरिकृष्ण गुप्ता

कर सलाहकार

आर० पी०–4, मौर्य एनक्लेव, प्रीतमपुरा
नई दिल्ली–110034

फोन : 7128147, 588057

खादी-ग्रामोद्योग के माध्यम से

गांवों के पूर्ण एवं आंशिक बेरोजगारों को
अपने घरों में ही राहत दी जा सकती है

अतः

राज्य की प्रमाणित संस्थाओं द्वारा
संचालित खादी भण्डारों से खादी एवं
ग्रामोद्योगी वस्तुएं खरीद कर

समाज के कमजोर वर्ग को ऊपर उठाने व
विषमता निवारण में योग दीजिए

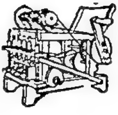

राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ,
जयपुर द्वारा प्रसारित

Best Wishes to

Sarva Seva Sangh Session at Bikaner

☆

Non—Violence is a Straight line and quick acting It leads to results which are undoubtedly substantials and lasting The delay lies in the attainment of non-Violence, not in its results

—Vinoba

☆

Phone : 6086,6286

M/s. Haldiram Bhujiawala

Mfg SHIVDEEP FOOD PRODUCTS

☆

F/196-199, Bichhwal Industrial Area,

BIKANER-2

शुभकामनाओं के साथ :

टोंक जिला खादी ग्रामोद्योग समिति

टोंक (राजस्थान)

पिछले २८ वर्षों से टोंक जिले में खादी तथा रचनात्मक कामों
को समर्पित भाव से कर रही है।

समिति का मुख्य उत्पादन :
दरी, फर्श, डोरिया, रेजा, दोसूती, गाढ़ा, प्रिन्टेड जाजम तथा कम्बल

समिति के बिक्री केन्द्र :
टोंक, निवाई, उणियारा, नैनवा, दूणी, पीपलू, कोटा, सवाई माधोपुर तथा जयपुर

समिति के वस्त्रागार : टोंक तथा जयपुर

इस समिति का माल भारत के सभी प्रान्तों में जाता है।
कृपया, पधार कर सेवा का अवसर अवश्य दें।

पूर्णचन्द्र जैन	महेन्द्रकुमार जैन	कैलाशचन्द गुप्ता
अध्यक्ष	मन्त्री	सहायक मन्त्री

सर्व सेवा संघ अधिवेशन में पधारे प्रतिनिधियों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं।

●

बीकानेर विश्वकर्मा फर्नीचर उत्पादक सहकारी समिति लि०

बीकानेर

(सरंजाम सामान, आधुनिक फर्नीचर, घरेलू व कार्यालय दरवाजे इत्यादि)

सेवा का अवसर देने की कृपा करें

असह्य अन्याय के विरुद्ध उठ खड़ होना प्रत्येक राष्ट्र व प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार ही नहीं, कर्तव्य और धर्म भी है । —गांधीजी

फोन : 3030

बाबा रामदेव टैन्ट हाउस

बागीनाडा रोड, रानी बाजार, बीकानेर
व्हाईट हाऊस के लिए सम्पर्क करें । फोन : 4225

बाबा रामदेव टाईल्स

पंचमुखा हनुमान जी के पास, रानी बाजार, बीकानेर
सीमेंट व मंजिया टाइल्स के निर्माता

लोक-सेवा-भाव से सार्वजनिक सेवा करना तलवार की धार पर चलने के समान है । — गांधीजी

फोन : 3875

(भुजिया एव सर्वप्रकार की नमकीन के निर्माता)

मैसर्स रूपचन्द मोहनलाल एण्ड को.

भुजिया बाजार, बीकानेर (राज.)

बीकानेर का सुप्रसिद्ध भुजिया, सीलबन्द डिब्बों मे रसगुल्ले उपलब्ध ।

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम्

छोटे से त्रिकोण मे जो सिद्धान्त होता है, बडे त्रिकोण को वह जैसा का तैसा लागू होता है। आज दुनिया के सामने जो बहुत सी समस्यायें हैं, छोटे पैमाने पर एक गांव मे भी वे हुआ करती हैं। उत्पादन बढाना शिक्षा की योजना, आरोग्य का प्रबन्ध, पडौसी गांव से सम्बन्ध, शांति की रक्षा, ये सब काम गांव मे भी उपस्थित हैं। इस लिए एक ओर समस्या-परिहार के लिए युनो (सयुक्त राष्ट्र सघ) जैसी सस्था आवश्यक है दूसरी ओर ग्रामस्वराज्य सस्था भी आवश्यक है। ग्रामस्वराज्य विश्व-समस्या को हल करने का ही एक प्रयोग है।

—विनोबा

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

फोन 4752
5423

जयपुर बीकानेर ट्रांसपोर्ट आर्गनाईजेशन

गंगाशहर रोड, ट्रान्सपोर्ट गली,

बीकानेर-334001

नागौर जिला खादी ग्रामोद्योग संघ

बासनी रोड, नागौर - 341001 (राज०) फोन : 464

हमारे विशिष्ट उत्पादन

आकर्षक व आधुनिक डिजाइनो मे मेरीनो, मिक्स मेरीनो और राजस्थान की प्रथम श्रेणी की देशी चोखला ऊन से निर्मित कोटिंग, शर्टिंग, लेडीज शाल, मफलर मलाई शाल, बरडी, पट्टू स्वेटर जर्सी आदि

रेडीमेड .– कोट, जाकेट गाऊन, कसीदाकारी के शाल आदि

थोक बिक्री केन्द्र – नागौर वस्त्रागार, खादी स्ट्रीट, रानी बाजार, बीकानेर फोन : 3800

फुटकर बिक्री केन्द्र .– नागौर, मेडता सिटी, डगाना

उत्पादन केन्द्र – नागौर, पाचौडी, साठिका श्री बालाजी, जोध्यासी गुडा भगवानदास होजरी प्लान्ट, कार्डिग मशीन सेवा के लिए उपलब्ध हैं।

गंगाविष्णु शर्मा
अध्यक्ष

ओंकारलाल स्वामी
मन्त्री

हार्दिक शुभेच्छा :

ऐसा अर्थशास्त्र जो व्यक्ति अथवा राष्ट्र के उत्थान को ठेस पहुचाता है—अनैतिक है। —गांधीजी

न व भा र त इ न्ड स्ट्री ज

(उच्चतम शालों के निर्माता)

★

ई-6, बीछवाल औद्योगिक क्षेत्र, बीकानेर-334002

नव समाज रचना मे अग्रसर

ग्रामोत्थान समिति, मारोठ (नागौर)

मारोठ-341507 स्टेशन नांवा शहर (उ रे)

उत्पादन :

1. सूती : गाढा एस.ई., दो सूती न 40 व कोमर दरी
2. ऊनी : कोटिंग देशी, मैरीना शाल, बर्डी व कम्बल
3. ग्रामोद्योग : ग्रामीण तेल व खल

उत्पादन व बिक्री स्थान : मारोठ, नांवा

सेवा का अवसर देकर अनुगृहीत करें

ब्रजमोहन धूत — अध्यक्ष
दुर्गालाल जोशी — मन्त्री

खादी ग्रामोद्योगों के माध्यम से समाज के कमजोर वर्ग को उठाने व विषमता निवारण में योगदान कीजिए।

हम ऊनी खादी में मैरीन, मिक्स मैरीन व देशी कोटिंग, मलाई शाल, लेडीज शाल, मफलर, कम्बल, बरड़ी आदि के अतिरिक्त च्यवनप्राश का भी निर्माण करते हैं।

सेवा का शुभ अवसर देकर अनुगृहीत करें।

खादी ग्रामोद्योग समिति

कुचामन सिटी (नागौर)

ब्रजमोहन धूत — अध्यक्ष
मोहनलाल शर्मा — मन्त्री

BEST WISHES TO

ALL INDIA SARVA SEVA SANGH SESSION, BIKANER

Phone : 3254

Shree Laxmi Auto Store

MOTOR SPARE PARTS DEALERS

Gangashahar Road,
BIKANER

Authorised Dealers of :

CEAT, MODI DUNLOP, GOODYEAR
AND INDROL LUBRICANTS

With best compliments from :

★

Telegrams : SHIVJI

Phones : Off. 3902
Mandi 4100
Res. 3902

M/s. Kundan Mal Mohan Lal

Grain Merchants & Commission Agents

55, New Mandi & Phar Bazar, Bikaner (Raj)

OTHER CONCERN :

Rajendra Trading Co. Bikaner

प्रत्यक्ष सेवा करने से ही जनता में विश्वास पैदा हो सकता है तथा हमारी कार्य-पद्धति ऐसी हो कि सबकी शक्ति का हम समुचित सहयोग अपनी दृष्टि से ले सकें। यह काम तभी बनेगा, जबकि हम किसी व्यक्ति या दल से विमुख नहीं, उसके सम्मुख हो।

—सुभाष वेदी

शुभ कामनाओं के साथ

फोन : 17
तार : गांधी आश्रम

गांधी आश्रम, सुजानगढ़

सुजानगढ़ - ३३१५०७ (राज०)

सत्यदेव सत्यार्थी
अध्यक्ष

सुभाष वेदी
मन्त्री

शुभकामनाओं के साथ :

मैसर्स छोटू मोटू जोशी

स्टेशन रोड़, बीकानेर

★

बीकानेरी छैने की मिठाइयो के प्रमुख
उत्पादक एव विक्रेता

शुभकामनाओ के साथ :

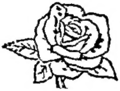

पन्नालाल सांखला

स्टेशन रोड, बीकानेर

शुभकामनाओ के साथ :

फान : 61473

मयूर प्रिन्टर्स

मिर्जा इस्माइल रोड़, जयपुर